वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 300
ISBN 978-81-906607-3-0

गणिनी ज्ञानमती महाकाव्य

–रचयिता–
पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश'
गंजबासौदा (म.प्र.)

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की हीरक जयन्ती-शरदपूर्णिमा 2008 के उपलक्ष्य में प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280236
Website : www.jambudweep.org
E-mail : ravindrajain@jambudweep.org

प्रथम संस्करण	आश्विन शुक्ला पूर्णिमा	मूल्य
500 प्रतियाँ	वी.नि. सं. 2534	100/-रु.
	14 अक्टूबर 2008, शरदपूर्णिमा	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–
धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना एवं सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

परमपूज्य गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी बीसवीं सदी की श्रेष्ठतम एवं ज्येष्ठतम साध्वी हैं। पूज्य श्री का बहुआयामी व्यक्तित्व आकाश की तरह असीम, सागर की तरह गंभीर एवं हिमालय की तरह उच्च है। ऐसे महनीय व्यक्तित्व एवं पचहत्तर वर्षीय अलौकिक कृतित्व को शब्दों में समेटने का साहस करना अत्यंत कठिन एवं श्लाघनीय प्रयास है। मनु के मन में जब श्रद्धाभक्ति का ज्वार उमड़ता है, तब उसे स्वयं की अल्पज्ञता का बोध होते हुए भी वह अपने आदर्श को मनमंदिर में विराजमान कर भक्तिविभोर हो उसके गुणगान करने में तल्लीन हो जाता है।

कविहृदय श्री पं. लालचंद्र जैन 'राकेश' ने पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के दिव्य जीवन को आधार बनाकर इस बृहत् महाकाव्य की रचना की है। कवि पूज्य माताजी की महत्ता और अपनी अल्पज्ञता से सुपरिचित है किन्तु श्रद्धा और भक्ति की प्रेरणा उसे काव्य लिखने हेतु विवश कर देती है। कवि ने स्वयं की इस भावभूमि को प्रतीकात्मक शैली में इस प्रकार व्यक्त किया है–

''चिड़िया तृण को चोंच दबाए, करने चली सिंधु बंधान।
जिसने देखा, उसने रोका, तू पगली-मूरख-अंजान।।''
लेकिन उसने एक न मानी, ''बोली करना मेरा काम।
पुरुषार्थी बढ़ते ही जाते, करते नहीं बीच विश्राम।।''

(इसी काव्य से)

कवि ने पूज्य माताजी के जन्म सन् 1934 से लेकर अद्यतन सन् 2008 तक की 74 वर्षीय दिव्य जीवन यात्रा पर काव्य रचना कर अपने जीवन को धन्य एवं लेखनी को पावन किया है। मैंने सद्यः प्रसूत इस महाकाव्य का आद्योपान्त पारायण किया है और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि श्रद्धा और भक्ति में डूबकर व्यक्ति कठिनतम कार्य करने में भी सफल हो जाता है। जैसे विविध व्यंजनों से सुसज्जित स्वर्णथाल को देखकर निर्माणकर्ता के श्रम और श्रद्धा का अनुमान सहज ही हो जाता है, उसी प्रकार जैन जगत् के मूर्धन्य कवि पं. लालचंद्र जैन 'राकेश' द्वारा मनहर हरिगीतिका छंद में रचित, पाँच खण्डों में निबद्ध, शताधिक पद्यप्रसूनों से ग्रथित, श्रद्धा-भक्ति और विनय से भरपूर, अलंकार की छटा से सुशोभित, पद लालित्य से अलंकृत, माधुर्य और प्रसादगुण से मंडित भक्ति रस के इस काव्यरत्न के पारायण से कवि की साधना एवं पूज्य माताजी के प्रति उसकी असीम श्रद्धाभक्ति का अनुभव मुझे हो गया क्योंकि

बिना अनथक श्रम और प्रगाढ़ श्रद्धा के ऐसे उत्कृष्ट, रमणीय एवं बृहदाकार महाकाव्य का सृजन संभव नहीं है।

कवि श्री लालचंद्र जैन 'राकेश' की लेखनी तपस्या की आग में तप कर कुन्दन बनी है अतः उनकी लेखनी से प्रसूत एक-एक वर्ण सुवर्ण की शोभा को धारण करता है। उनके द्वारा रचित यह काव्य ग्रंथ समाज में समादृत होगा, ऐसा विश्वास है।

माताजी के सुदीर्घ जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आये हैं। उनको समतापूर्वक पार करती हुईं आप आज एक महान तेजस्विनी, महातपस्विनी, परमविदुषी, श्रेष्ठ एवं ज्येष्ठ साधिका के रूप में सम्पूर्ण साधु समाज एवं जैन जगत में सुप्रतिष्ठित हैं। पूज्य माताजी के जीवन के सभी पारस एवं पावन पहलुओं का वर्णन काव्य में यथास्थान किया गया है।

काव्य के पारायण से तीर्थयात्रा एवं साधुसमागम का पुण्यलाभ पाठकों को सहज ही हो जाता है। विभिन्न स्थानों और अवसरों पर माताजी द्वारा दिये गये प्रवचनों का भी काव्यात्मक वर्णन रचना में है। फलतः यह काव्य ज्ञान और सिद्धान्तों से भी भरपूर है।

परमपूज्य माताजी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के वर्णन में कवि का मन खूब रमा है। श्वेत साटिका पहिने, पिच्छी-कमण्डलु लिए खड्गासन/पद्मासन मुद्रा के वैराग्योत्पादक अनेक शब्द चित्रों का अंकन संबंधित अध्याय में विस्तार से किया गया है। साहित्यिक रचनाओं का एक-एक पद्य में परिचय देकर गागर में सागर भर दिया है। कवि ने व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तार से वर्णन कर पूज्य माताजी के प्रति जो श्रद्धाका अर्घ्य समर्पित किया है, वह अप्रतिम एवं बेजोड़ है।

काव्य की भाषा सहज, सरल, सुबोध, प्रवाहमय एवं परिस्थितियों के अनुकूल है। उसमें मन्द-मन्द सरिता का कल-कल निनाद सुनाई देता है। विविध शैलियों के माध्यम से अभिव्यक्ति अधिक प्रभावक हो गई है। पद्यों की गेयता, लयबद्धता एवं कसावट सर्वत्र श्लाघनीय है। कुल मिलाकर एक महाव्यक्तित्व पर लिखा गया यह महाकाव्य स्वयं में सम्पूर्णता को धारण किए हुए है।

इस कृति से सभी भव्यजन लाभ उठाते हुए प्रेरणा प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

आभार

श्री अजय जैन

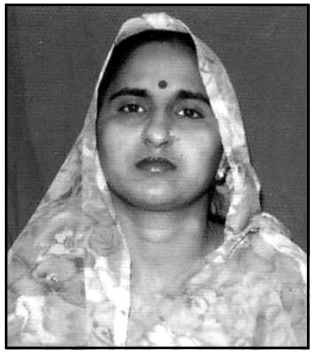

श्रीमती प्रमिला जैन

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 75वें जन्मदिवस, शरदपूर्णिमा–2008 ''हीरक जयंती महोत्सव'' के शुभ अवसर पर प्रकाशित इस **''गणिनी ज्ञानमती महाकाव्य''** ग्रंथ के प्रकाशन में श्रीमती प्रमिला जैन ध.प. श्री अजय कुमार जैन, बादशाहपुर (गुड़गाँवा-हरियाणा) वालों ने ज्ञानदानस्वरूप अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया है।

श्री जैन प्रकाश जैन (स्व.) एवं श्रीमती जैनमती जैन के सुपुत्र श्री अजय जैन वर्तमान में श्री दिगम्बर जैन समाज, बादशाहपुर के उपाध्यक्ष हैं। आपके एक पुत्र चि. सचिन जैन एवं दो पुत्रियाँ–कु. गीतू जैन व कु. अंशू जैन हैं।

आप देव-शास्त्र-गुरु के परम भक्त हैं तथा परिवार के सभी सदस्य भी धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत हैं।

हम आपके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं तथा आप सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए भगवान जिनेन्द्र से मंगल कामना करते हैं।

–सम्पादक

मंगल कामना

–चारित्रश्रमणी आर्यिका अभयमती

पं. लालचंद जी 'राकेश' ने पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की भक्ति में यह महाकाव्य लिखकर अपनी लेखनी का सदुपयोग किया है तथा गुरुभक्ति के महत्व को प्रदर्शित किया है।

जिस प्रकार रेलगाड़ी में अगर इंजन न हो तो वह यात्रियों को उनके गंतव्य स्थान तक ले जाने में समर्थ नहीं हो सकती है, उसी प्रकार मोक्षमार्ग की गाड़ी के इंजन के समान पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी भव्यात्माओं को मोक्षमार्ग में लगाने में सतत तत्पर रहती हैं। इस काव्य ग्रंथ में पूज्य माताजी के प्रति बहुत सुन्दर शब्दों का प्रयोग कवि ने किया है। पण्डित जी की लेखनी से सभी विद्वानों को प्रेरणा लेकर गुरुओं के प्रति गुणग्राहकता का भाव रखना चाहिए। विश्व में जितने भी सम्प्रदाय हैं, उन सभी ने गुरु के महत्व को ससम्मान स्वीकार किया है जैसा कि हमारे आचार्यों ने भी कहा है कि–

गुरुभक्ति संजमेण य, तरंति संसार सायरं घोरं।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मण मरणं ण पावेंति।।

इस प्रकार गुरु की महिमा को बताने वाले अनेकों उदाहरण जैनशास्त्रों में भरे पड़े हैं।

गुरु की महिमा का प्रतिपादन करने वाले इस महाकाव्य को पढ़कर आप सभी अपने जीवन को सफल बनाएँ, यही सबके लिए मंगल प्रेरणा है।

इस काव्य ग्रंथ के रचयिता पं. लालचंद जी के लिए मेरा आशीर्वाद है कि जिस प्रकार उन्होंने इस महाकाव्य की रचना की है, उसी प्रकार आगे भी देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में ही अपनी लेखनी का सदुपयोग करते रहें।

दो शब्द

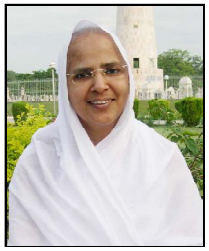

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

एक कवि ने बहुत ही सुन्दर बात कही है कि–

राम तुम्हारा चरित, स्वयं में काव्य है।
कोई कवि बन जाए, सहज संभाव्य है।।

पूज्य माताजी के जीवन चरित के प्रति भी यह पंक्तियाँ पूर्णरूपेण चरितार्थ होती हैं, इनका विराट व्यक्तित्व एवं अद्भुत कृतित्व जो भी एक बार पढ़ लेता है, उसके हृदय में काव्य स्वयं हिलोरें भरने लगता है और वह कुछ न कुछ लिखने के लिए आतुर हो उठता है।

पण्डित श्री लालचंद्र जी 'राकेश' ने पूज्य माताजी के बहुआयामी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर इस महाकाव्य की रचना की है, यह जहाँ उनकी गुरुभक्ति का परिचायक है, वहीं उनकी काव्य प्रतिभा से जन-जन को परिचित कराने का एक सुअवसर भी है।

यद्यपि पूज्य माताजी के विशाल व्यक्तित्व को शब्दों में सीमित करना अत्यन्त असंभव जैसा प्रयास लगता है किन्तु भक्तिवश प्रस्तुत किए गए टूटे-फूटे शब्द भी मोती का रूप धारण कर लेते हैं।

पण्डित लालचंद जी ने लगभग डेढ़ वर्ष पूर्व पूज्य माताजी के जीवन पर एक काव्य ग्रंथ लिखने की भावना व्यक्त की थी, तब मैंने उन्हें प्रोत्साहित भी किया था पुनः उन्होंने पूज्य माताजी के जीवन से संबंधित संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य प्राप्त करके यह एक भागीरथ प्रयास किया है। मुझे विश्वास है कि यह महाकाव्य विद्वत् समाज एवं जनसाधारण सभी के लिए प्रेरणास्पद होगा तथा इस महाकाव्य को पढ़कर अवश्य ही पूज्य माताजी के जीवन के विविध पहलुओं का ज्ञान सभी को प्राप्त होगा तथा एक पारिवारिक और सामाजिक जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करने के लिए भी अवश्य प्रेरणा प्राप्त होगी।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की हीरक जयंती-2008 के पावन अवसर पर रचित इस महाकाव्य के रचयिता पं. लालचंद जी के लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है कि वे इसी प्रकार अपनी लेखनी का सदुपयोग हमेशा देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति के लिए करते रहें, ताकि उनकी प्रतिभा दिनोंदिन वृद्धिंगत होती रहे।

अन्तर्भावना

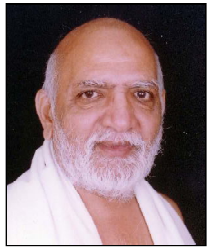

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

महान कार्यों को करने वाले ही महापुरुष कहलाते हैं। वे महान कार्य राजनैतिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र अथवा धार्मिक क्षेत्र में हो सकते हैं। ऐसे महापुरुषों की श्रृँखला युगानुयुग से चली आ रही है। महापुरुष बनाये नहीं जाते हैं वे अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व से स्वयं बन जाते हैं। उन्हीं में से एक हैं "पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी"।

महापुरुष किसी की बपौती नहीं होते हैं। वे किसी जाति, धर्म अथवा क्षेत्रविशेष से बंधे नहीं होते हैं। वे "सर्वजनहिताय-सर्वजनसुखाय" की सूक्ति को चरितार्थ करते हैं।

महापुरुष गुणों के भंडार होते हैं। वे जनसमुदाय के लिए मार्ग निर्माता हैं। वे वृक्षों के समान सबको सुखप्रद शीतल छाँव प्रदान करते हैं। "आप तिरें पर तारहीं" केमूलमंत्र को लक्ष्य में रखते हैं। महापुरुष किसी भी जाति, धर्म या क्षेत्र में उत्पन्न होते रहतेहैं।

पूज्य गणिनी माताजी ने उत्तरप्रदेश के बाराबंकी जिले में स्थित छोटे से ग्राम टिकैतनगर में जन्म लेकर अपने त्याग एवं ज्ञान से सारे विश्व को आलोकित कर दिया। समीचीन–सम्यक्–सच्चा ज्ञान इन्हें मानों पूर्व भवों से चले आ रहे सुसंस्कारों के कारण यहाँ सहज रूप में प्राप्त हो गया। इनका बचपन भी पचपन जैसा प्रौढ़ता को लिए हुए व्यतीत हुआ तथा पचपन नहीं पचहत्तर में भी इनमें बचपन जैसी स्फूर्ति परिलक्षित होती है।

विद्वान् लेखक पं. श्री लालचंद जी 'राकेश', गंजबासौदा (म.प्र.) ने पूज्य माताजी के विषय में वैसे ही लेखनी नहीं चलाई है प्रत्युत् इनके गुणोंरूपी बगीचे से कुछ अच्छे सुंदर एवं सुमधुर पुष्पों को चुनकर इस कृतिरूपी गुलदस्ते को सजाया है। यह कृति पुस्तक नहीं बल्कि रत्नाकर है जो व्यक्ति इसमें प्रविष्ट होकर गहरी डुबकी लगायेगा, वह रत्नों-मोती-माणक आदि को प्राप्त करेगा।

लेखक महोदय ने कृति को अतीव सरल बनाने का भरसक प्रयास किया है जिससे प्रत्येक पाठक सहजरूप से हृदयंगम कर सकें तथा पूज्य माताजी की पावन छवि को अपने अंतर्मन में अवतरित कर सकें। समस्त पाठकों के लिए मेरा यह सुझाव है कि इस काव्य कृति का अनेक बार पारायण करें जिससे आपको अभूतपूर्व उपलब्धियाँ प्राप्त होंगी। आपकी आध्यात्मिक चेतना स्फुरायमान होगी। संयम को धारण करने का अतीव साहस प्राप्त होगा। सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने की ललक जागेगी।

प्रस्तुत कृति के सृष्टा पं. लालचंद जी के लिए बहुत-बहुत आशीर्वाद।

महाकाव्य के संदर्भ में

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

जिस प्रकार सागर और नदी का, वृक्ष और फल का, दिन और प्रकाश का तथा रात्रि और अंधकार का परस्पर संबंध अनादिकाल से है, उसी प्रकार गुरु और शिष्य का संबंध भी अनादिकाल से चला आ रहा है। शास्त्रों में गुरु और शिष्य से संबंधित अनेकों उदाहरण हैं।

यह सच है कि कोई भी व्यक्ति गुरुसंज्ञा को तभी प्राप्त करता है जब उसके आधीन कोई शिष्य हो और कोई व्यक्ति तभी शिष्य कहलाने का अधिकारी होता है जब वह अपने जीवन में किसी को गुरु बना लेता है।

प्रस्तुत ग्रंथ जो आपके हाथ में है, इसका नाम है– **''गणिनी ज्ञानमती महाकाव्य''**, इसमें पं. लालचंद्र जी 'राकेश' ने पूज्य माताजी को अपना गुरु बनाकर उनके जन्म सन् 1934 से लेकर वर्तमान सन् 2008 तक के लगभग समस्त पहलुओं को लेखनीबद्ध किया है।

यद्यपि यह ध्रुव सत्य है कि पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जैसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के बारे में कुछ भी कहना अथवा लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है फिर भी पं. लालचंद जी ने इस महाकाव्य को लिखकर यह साबित कर दिया है कि सूर्य की आरती उतारने के लिए एक छोटा सा दीपक ही काफी होता है, सूर्य की आरती करने के लिए कभी दूसरा सूर्य नहीं लाया जा सकता। पाँच खण्डों में विभक्त इस महाकाव्य में 1692 पद्यों के द्वारा कवि ने पूज्य माताजी का गुणगान किया है तथा उनके जीवन की हर छोटी-बड़ी घटना को सुन्दरता से प्रस्तुत किया है।

पूज्य माताजी ने अपने जीवन में जितने भी कार्य किए हैं उन्हें देखकर सभी लोग आश्चर्य करते हैं। उन्होंने नारी होकर इतने कार्य कर दिये कि आज पुरुष समाज गौरव का अनुभव करता है, इन भावों को कवि ने काव्य के प्रारंभ में इस प्रकार निबद्ध किया है–

नारी होकर माताजी ने, किए कार्य अप्रतिम अनेक।
नर भी वैसा कर ना पाए, उत्तम-पूर्ण-सुष्ठु-प्रत्येक।।
आप भाव से दिव्य पुरुष हैं, दिव्य द्रव्य से नारी हैं।
इसीलिए तो आज पुरुष भी, माता के आभारी हैं।।

प्रथम दो खण्डों में कवि ने पूज्य माताजी के जन्म से लेकर व्रतग्रहण से पूर्व तक का रोमांचक वर्णन किया है जिसके अन्तर्गत मैना द्वारा पद्मनंदिपंचविंशतिका

ग्रंथ का स्वाध्याय, टिकैतनगर एवं आस-पास के नगरों से मिथ्यात्व दूर भगाना, भाईयों के चेचक का सम्यग्दर्शन के आधार से समुचित इलाज, मैना के हृदय में वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित होना आदि का यथार्थता से वर्णन किया गया है पुनः तृतीय खण्ड से लेकर पंचम खण्ड तक पूज्य ज्ञानमती माताजी द्वारा किए गए समस्त चातुर्मासों का, उनके सभी कार्यकलापों का विस्तार से वर्णन है।

आज सम्पूर्ण देश की जैन समाज इस बात का गौरव करती है कि पूज्य ज्ञानमती माताजी जिस काम को हाथ में ले लेती हैं, वह पूरा करके ही छोड़ती हैं। चाहे कितनी ही विघ्न बाधाएँ आवें, पर वे विघ्नों से घबराकर कार्य को छोड़ती नहीं हैं, इन भावों को कवि की भाषा में देखें–

उत्तम-मध्यम-जघन रूप से, मानव होते तीन प्रकार।
विघ्नाक्रांत जघन न होते, कोई कार्य करने तैयार।।
मध्यम कार्य शुरू कर देते, आते विघ्न छोड़ते भाग।
पर विघ्नों से डरें न उत्तम, कार्य पूर्ण करने बड़ भाग।।
माताजी की प्रकृति है उत्तम.....

वास्तव में कवि ने पूज्य माताजी के गुणों का निष्पक्षभाव से मूल्याकंन किया है। चूँकि वे भी एक विद्वान हैं अतः विद्वत्ता के महत्त्व को भली प्रकार जानते हैं, जैसा कि कहा भी है–

विद्वान् एवं जानाति, विद्वज्जन परिश्रमम्।
न हि बन्ध्या विजानाति, पुत्र प्रसव वेदनाम्।।

महाकाव्य के अंत में कवि ने ''मेरी अभिलाषा'' शीर्षक से अपनी मनोभावना को 5 पद्यों में प्रस्तुत किया है, जिसमें से एक काव्य आपके समक्ष प्रस्तुत है–

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, बनें स्वर्ग की अधिकारी।
पुरुषदेह पा मुनिव्रत धारें, हों द्वादश तप आचारी।।
श्रेणी मांड़ें, घात घातिया, पावें अक्षय केवलज्ञान।
भव्यजीव उपदेशन करके, अंतिम पद पावें निर्वाण।।

पूज्य माताजी की भक्ति में प्रस्फुटित ये सुन्दर पंक्तियाँ वास्तव में आज हर भक्त की अभिलाषा है।

इस प्रकार अत्यन्त सुन्दरता के साथ लिखे गये इस महाकाव्य को पढ़कर आप सभी पूज्य माताजी के आदर्श जीवन से तथा कवि की सशक्त लेखनी से परिचित हों, यही इसकी सार्थकता है।

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि : आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)
गृहस्थ का नाम : कु. मैना
माता-पिता : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत : ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा : चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में
आर्यिका दीक्षा : वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व : अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) विकास की प्रेरणा, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

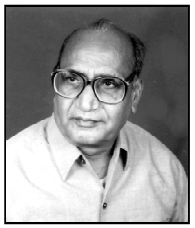

महाकाव्य के रचयिता

पं. लालचंद जैन 'राकेश' का परिचय

लेखक-अनिलकुमार जैन (एम.टेक.)
सहायकमंत्री, भोपाल

जन्म – 1 जुलाई, 1934, सिलगन (ललितपुर) पालन-किसलवास (उ.प्र.)
माता-पिता – श्रीमती कौंसाबाई जैन-श्री कालूराम जैन।
पत्नी – श्रीमती भगवतीबाई जैन।
पुत्र – श्री अनिल कुमार-श्रीमती रेखारानी जैन (चि.अनिरुद्ध, अरिहंत)
पुत्रियाँ – श्रीमती नीलम-श्री कमलेश कुमार जैन (चि.गगन, शिल्पी)
श्रीमती मंजू-श्री प्रमोदकुमार जैन (चि.प्रिया, प्रतीक, मोनिका)
श्रीमती शोभा-श्री नरेन्द्र कुमार जैन (चि.शशांक, शुभम्)
श्रीमती बरखा-श्री अनूप कुमार जैन (चि.अपूर्वा, देव)
शिक्षा प्राप्ति – श्री दिगम्बर जैन अनाथालय, बड़नगर।
श्री नाभिनंदन दि.जैन विद्यालय, बीना।
श्री सरसेठ हुकुमचंद दि. जैन संस्कृत महाविद्यालय, इंदौर।
शिक्षा – एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (संस्कृत), बी.एड. शास्त्री, साहित्यरत्न।
शिक्षण – निजी एवं मध्यप्रदेश के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में 40 वर्षों तक अध्यापन तथा प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त।
अभिरुचि – बाल्यकाल से ही उत्कृष्ट साहित्य के पठन-पाठन, सृजन एवं साहित्यिक आयोजनों में सक्रिय भागीदारी।
साहित्य सेवा –
1.महाकाव्य – सदलगा के संत, संस्कृति प्रहरी-मुनि सुधासागर, कलातीर्थ-सांगानेर, गणिनी ज्ञानमती महाकाव्य।
2.मुनि जीवनी – गुणों के आगर, ज्ञान के सागर
3.शतक – आचार्य ज्ञानसागर शतक, सहजानंद शतक, शास्त्रि परिषद का सुनहरा सफर, तरुण चिंतामणि
4.क्षेत्रपरिचय काव्य – सेरौन-सुषमा, कोनी दर्शन, सिरोंज के जैन मंदिर, पावन पावागिरि, नैनागिरि-गौरव, गंजबासौदा : एक परिचय
5.पद्यानुवाद – भक्तामर महाकाव्य, विद्यासागराष्टकम्।
6.आत्माख्यान – आत्मवृत्तम्।
7. पूजन-आरती चालीसा – उपाध्याय ज्ञानसागर, मुनि समतासागर, मुनि प्रमाणसागर, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सेरौन, साँची, सांगानेर, झिौलिया पारसनाथ, पटैरियाजी, रेवासा, पावागिरि।

8.स्तवन – भगवान पारसनाथ एवं आचार्य शांतिसागर छाणी परम्परा के समस्त आचार्य।

9.अष्टक – मुनि श्री सुधासागर, मुनि श्री अभयसागर, अनेकांत ज्ञान मंदिर इत्यादि अनेक।

10.सम्पादन – सन्मति-संदेश (पाक्षिक), जैनाचार्य, प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश अभिनंदन ग्रंथ : मनीषा।

11. स्फुट रचनाएँ – साहित्यसाधना के 55 वर्षों में सम-सामयिक छोटी-बड़ी सहस्राधिक कविताओं का सृजन। देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकशित।

पुरस्कार – 1. श्री आचार्य सूर्यसागर स्मृति श्रुत संवर्धन पुरस्कार-2002
2. श्रीमती स्व.चंदारानी जैन स्मृति विद्वत्महासंघ पुरस्कार-2002
3. महाकवि आचार्य ज्ञानसागर त्रयोदश पुरस्कार-2005

उपाधियाँ – 1. धर्म दिवाकर (भगवान शीतलनाथ दि.जैन मंदिर ट्रस्ट, साँची)
2. सुधांशु (श्री नाभिनंदन दि.जैन हितोपदेशिनी सभा, बीना)

सम्मान – 1. श्री दिगम्बर जैन परिषद, जिला रायसेन।
2. श्री भगवान महावीर 2500वां निर्वाण महोत्सव समिति, जिला रायसेन
3. श्री सकल दि.जैन समाज ललितपुर द्वारा सम्मान निधि सहित (मंगल सानिध्य प.पू.108 मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज)
4. श्री दि.जैन जौहरी बाजार नवयुवक मंडल, जयपुर (राजस्थान)
5. श्री दि.जैन गोलालारीय समाज, विदिशा, जबलपुर, भोपाल
6. श्री सकल दि.जैन समाज, जबलपुर (मंगल सानिध्य प.पू.आर्यिका 105 दृढ़मती माताजी)
7. श्री दि.जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर (दमोह)
8. श्री दि.जैन धर्मप्रभावनी सभा, कोटा, सूरत, उदयपुर इत्यादि।

पं. लालचंद जैन "राकेश" उदारमना व्यक्तित्व के धनी हैं। धर्म एवं समाज के लिए समर्पित हैं। देव-शास्त्र-गुरु के परम भक्त हैं। आप मूक एवं निःस्वार्थ तीर्थ सेवक हैं। आपने अनेक तीर्थ क्षेत्रों पर काव्य लिखे और निर्लोभ भाव से उन्हें क्षेत्रों को समर्पित कर दिया।

आप अखिल भारतवर्षीय दि.जैन शास्त्री परिषद की कार्यकारिणी के सम्माननीय सदस्य हैं तथा अखिल भारतवर्षीय विद्वत् परिषद एवं विद्वत् महासंघ के सदस्य हैं। आप अनेक स्थानीय संस्थाओं के गरिमामय पदों पर मानद् व्यक्तित्व के रूप में कार्यरत हैं। आपको परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की हीरक जयंती के शुभ अवसर पर दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर द्वारा "जम्बूद्वीप पुरस्कार-2008" से सम्मानित किया जा रहा है। हम आपके उज्ज्वल भविष्य एवं स्वस्थ दीर्घ जीवन की मंगल कामना करते हैं।

एक अद्वितीय जैन केन्द्र
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

–कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन (अध्यक्ष)

संक्षिप्त परिचय :

पिछले तीन दशकों में राजधानी दिल्ली की उत्तर दिशा में उत्तरप्रदेश के जिला मेरठ स्थित पौराणिक तीर्थ **हस्तिनापुर** में एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आकर्षण का केन्द्र उभर कर आया है। 200 फुट के व्यास में सफेद और रंगीन पत्थरों से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय वृत्ताकार रचना **'जम्बूद्वीप'** द्वारा अपने आधार पर वेष्टित हल्के गुलाबी संगमरमर से निर्मित 101 फुट ऊँचे **सुमेरु पर्वत** की शोभा आज किसके मन को आकर्षित नहीं करती है?

प्राचीन जैन साहित्य एवं भूगोल के परिचायक, वैज्ञानिकों के लिए शोध केन्द्र, आध्यात्मिक उन्नयन के लिए पवित्र स्थान, मानसिक शांति एवं जिनेन्द्र भगवान की पूजन-भक्ति के सम्पूर्ण साधनों तथा समस्त आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता सहित इस अनुपम तीर्थ की जनक संस्था का नाम है-**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान (रजि.)।** जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से 1972 में इस संस्थान का सूत्रपात किया गया। दिगम्बर जैन इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्मोग्राफिक रिसर्च **(Digambar Jain Institute of Cosmographic Research)** के नाम से प्रसिद्ध इस संस्थान का आधारभूत लक्ष्य था-जम्बूद्वीप का निर्माण और यह जम्बूद्वीप ही अंततः संस्थान का मुख्य कार्यालय बन गया।

जंबूद्वीप की 30 एकड़ पवित्र भूमि पर संस्थान के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं/रचनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है-

1. जंबूद्वीप रचना–जिनेन्द्र भगवान की 207 प्रतिमाओं से पावन भारतीय शिल्प और जैन भूगोल का अद्वितीय उदाहरण, आधुनिक आकर्षणों-बिजली के फौव्वारे, नौका-विहार इत्यादि सहित।

2. कमल मंदिर–भगवान महावीर की अतिशयकारी खड्गासन प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान हैं।

3. ध्यान मंदिर–24 तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं सहित **'ह्रीं'** रचना इस मंदिर में विराजमान हैं, जो कि 'ध्यान' (Meditation) करने हेतु उत्तमोत्तम माध्यम हैं।

4. त्रिमूर्ति मंदिर–भगवान आदिनाथ, भरत एवं बाहुबली की खड्गासन प्रतिमाओं से इस मंदिर का नाम सार्थक है। कमल पर विराजमान भगवान नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ से इस मंदिर की शोभा द्विगुणित हो गयी है।

5. वासुपूज्य मंदिर–इस मंदिर में 12वें तीर्थंकर-वासुपूज्य स्वामी की खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं।

6. शांति-कुंथु-अरहनाथ मंदिर–जिन भगवन्तों के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकों

से हस्तिनापुर की भूमि परम-पावन हुई है, उन शांति-कुंथु और अरहनाथ भगवंतों की खड्गासन प्रतिमाएं इस मंदिर में विराजमान हैं।

7. ॐ मंदिर—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठियों की प्रतिमाओं सहित **ॐ** (ओम) रचना इस मंदिर में विराजित है।

8. विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर—इस मंदिर में विदेह क्षेत्र के विद्यमान 20 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बीस कमलों पर विराजमान हैं।

9. सहस्रकूट मंदिर—जिनेन्द्र भगवान की 1008 प्रतिमाओं सहित।

10. भगवान ऋषभदेव मंदिर—धातु निर्मित भगवान ऋषभदेव की मूलनायक प्रतिमा एवं अन्य जिन प्रतिमाओं सहित।

11. भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ—'भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' में निर्मित, भगवान के जीवन चरित्र को प्रदर्शित करने वाला, 8 प्रतिमाओं से समन्वित 31 फुट ऊँचा कीर्तिस्तंभ।

12. तेरहद्वीप जिनालय—इस मंदिर के अंदर मध्यलोक के तेरहद्वीपों की अकृत्रिम रचना का अति सुन्दरता के साथ दिग्दर्शन कराया गया है, जिसमें पंचमेरु पर्वतों के साथ-साथ कुल 2127 प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

13. अष्टापद दिगम्बर जैन मंदिर—इस मंदिर के अंदर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि अष्टापद-कैलाशपर्वत की आकर्षक प्रतिकृति विराजमान है। कैलाशपर्वत का ही दूसरा नाम अष्टापद है। 4 फरवरी 2000 को लाल किला मैदान, दिल्ली में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इस प्रतिकृति के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाकर इसका उद्घाटन किया गया।

14. नवग्रह शान्ति जिनमंदिर—पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से उत्तर भारत में प्रथम बार निर्मित इस नवग्रहशांति जिनमंदिर में नवग्रह अरिष्ट निवारक नव तीर्थंकरों की धातु निर्मित सुन्दर प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जिनके दर्शन-पूजन करके भक्तगण अपने ग्रहों की शांति करते हुए देखे जाते हैं।

15. जम्बूद्वीप पुस्तकालय—प्राचीन हस्तलिखित एवं प्रकाशित लगभग 15000 ग्रंथों एवं पुस्तकों के संग्रह सहित।

16. जम्बूद्वीप औषधालय

17. ज्ञानमती कला मंदिरम्—हस्तिनापुर के पौराणिक इतिहास को प्रदर्शित करने वाली झांकियों सहित।

18. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला—1972 में संस्थापित इस ग्रंथमाला द्वारा अब तक लाखों की संख्या में 250 से अधिक ग्रंथों एवं पुस्तकों के संस्करणों का प्रकाशन हो चुका है।

19. सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका—यह पत्रिका सन् 1974 से लगातार प्रकाशित हो रही है, जिसमें जैन शास्त्रों के साररूप लेखों एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संकलन एक स्थान पर प्राप्त होता है।

20. राजा श्रेयांस भोजनशाला—आने वाले दर्शनार्थियों को प्रतिदिन शुद्ध (जैनचर्या के अनुरूप) भोजन उपलब्ध कराने वाला यह दिगम्बर जैन समाज का प्रथम भोजनालय है, जहाँ एक साथ 500 लोग बैठकर भोजन कर सकते हैं।

21. धर्मशालाएं—200 से अधिक फ्लैट, बंगले इत्यादि, जिनमें ठहरने संबंधी सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं।

22. मनोरंजन के साधन—तरह-तरह के झूले, बच्चों की रेल, नौका विहार, फौव्वारे, हरे-भरे लॉन, पूरे कैम्पस में घूमने के लिए ऐरावत हाथी (मोटर से संचालित), बिजली की आकर्षक व्यवस्था, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य इत्यादि बरबस ही दर्शनार्थियों को इस भव्य रचना की तुलना 'स्वर्ग' से करने के लिए प्रेरित करते हैं।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा आयोजित सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम

अक्टूबर 1981—जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार'**।

31 अक्टूबर 1982—फिक्की ऑडिटोरियम-दिल्ली में **'जम्बूद्वीप सेमिनार'** जिसका उद्घाटन श्री राजीव गांधी, तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा किया गया।

अप्रैल 1985—जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर **'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान'** विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, जिसका उद्घाटन उ.प्र. के तत्कालीन मंत्री प्रोफेसर वासुदेव सिंह द्वारा किया गया।

जून 1982 से अप्रैल 1985—लालकिला मैदान, दिल्ली से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी द्वारा 4 जून, 1982 को पूरे देश में भ्रमण करने हेतु **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति'** रथ का उद्घाटन किया गया। जनसाधारण में अहिंसा, चारित्र-निर्माण तथा विश्व बन्धुत्व के संदेश का प्रचार-प्रसार करते हुए 1045 दिन तक देश भर में भ्रमण करने के पश्चात् यह ज्ञान ज्योति तत्कालीन रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव (भूतपूर्व प्रधानमंत्री) द्वारा जम्बूद्वीप के मुख्य द्वार के समक्ष सदैव के लिए स्थापित कर दी गई।

1992—**'अंतर्राज्यीय चरित्र निर्माण संगोष्ठी'** का जंबूद्वीप स्थल पर श्री नेमीचंद जैन, विधायक (मध्यप्रदेश) की अध्यक्षता में आयोजन किया गया।

'जैन गणित' एवं **'चारित्र निर्माण'** आदि विषयों पर हुई संगोष्ठियाँ **मेरठ विश्वविद्यालय एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में** आयोजित की गईं।

1993—अयोध्या में अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद के संयुक्त तत्वावधान में **'भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता भगवान ऋषभदेव'** विषय पर संगोष्ठी।

अक्टूबर 1995—मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में पंचदिवसीय **'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी-95'**।

मार्च-अप्रैल 1998—तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 9 अप्रैल 1998 को तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली से देश भर में भ्रमण करने हेतु **'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ'** का उद्घाटन। 3 वर्ष तक देशभर में तीर्थंकर भगवन्तों के सर्वोदयी सिद्धांतों एवं

जैनधर्म की प्राचीनता का प्रचार-प्रसार करने के पश्चात् यह समवसरण इलाहाबाद उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश द्वारा तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ (इलाहाबाद) में स्थापित कर दिया गया।

अक्टूबर 1998—जम्बूद्वीप स्थल पर **'राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन'**, जिसका उद्घाटन किया गया-स्वर्गीय श्री राजेश पायलट (तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा)।

फरवरी 2000—तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा 4 फरवरी 2000 को लाल किला मैदान, दिल्ली में एक वर्ष तक चलने वाले **'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष'** का उद्घाटन किया गया।

इस युग में जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव पर 1008 संगोष्ठियों की श्रृंखला, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभों का निर्माण तथा अन्य अनेक सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष के अंतर्गत आयोजित किये गये ।

टोरण्टो, कनाडा, न्यूजर्सी आदि विदेश की भूमियों पर भी इन्हीं प्रेरणाओं के माध्यम से 4 फरवरी 2000 को निर्वाण महामहोत्सव मनाया गया।

जून 2000—जम्बूद्वीप स्थल पर 11 जून 2000 को **'जैनधर्म की प्राचीनता'** विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया।

फरवरी 2001—भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में **'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ'** का नवनिर्माण। इस तीर्थ पर भगवान के दीक्षा कल्याणक के प्रतीकस्वरूप धातु के वटवृक्ष के नीचे ध्यान में लीन महायोगी ऋषभदेव की सवा पांच फुट उत्तुंग पिच्छी-कमण्डलु सहित खड्गासन प्रतिमा, केवलज्ञान कल्याणक के प्रतीकस्वरूप भगवान की चतुर्मुखी प्रतिमा सहित दिव्य समवसरण रचना तथा निर्वाण कल्याणक के प्रतीक स्वरूप 51 फुट उत्तुंग 'कैलाशपर्वत' की भव्य रचना पर भगवान ऋषभदेव की 14 फुट उत्तुंग अत्यंत मनोहारी लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा तथा तीन चौबीसी के प्रतीक स्वरूप 72 जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। 'ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ' भी स्थापित है। 4 से 8 फरवरी 2001 तक 'भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा' एवं 1008 महाकुंभों से कैलाशपर्वत पर प्रतिष्ठित भगवान ऋषभदेव का 'महाकुंभमस्तकाभिषेक' कार्यक्रम।

सन् 2003-2004—भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में **'नंद्यावर्त महल तीर्थ'** का निर्माण। भगवान महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवग्रहशांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर और नंद्यावर्त महल (भगवान महावीर का जन्म महल) एवं उसमें स्थापित भगवान शांतिनाथ जिनालय इस तीर्थ के मुख्य आकर्षण हैं। महावीर की जन्मभूमि के प्रचार-प्रसार हेतु **भगवान महावीर ज्योति रथ** सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रवर्तन कर चुका है।

भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव—6 जनवरी 2005 को जन्मभूमि वाराणसी से इसका भव्य उद्घाटन होकर पूरे एक वर्ष तक (27 दिसम्बर 2005 तक) इसे विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया।

पुनः सन् 2006 में पूज्य माताजी ने भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि ''सम्मेदशिखर वर्ष'' घोषित किया तथा दिसम्बर 2007 में केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर भगवान पार्श्वनाथ

सहस्राब्दि महोत्सव का राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करके 4 जनवरी 2008 को भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का समापन किया।

वर्तमान में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ की 31 फुट उत्तुंग विशाल खड्गासन पाषाण प्रतिमा का निर्माणकार्य चल रहा है।

इस संस्थान के द्वारा समय-समय पर विविध पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होते रहते हैं। संस्थान के अद्भुत कार्यकलाप की श्रेणी में है**—णमोकार महामंत्र बैंक**, जहाँ प्रतिवर्ष श्रद्धालु भक्तों द्वारा लाखों की संख्या में णमोकार मंत्र लिखकर जमा कराए जाते हैं, तुमकूर (कर्नाटक) से एक करोड़ मंत्र एवं उदयपुर (राज.) से एक करोड़ मंत्र सन् 2006 में इस बैंक में जमा हुए अतः उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। करोड़ों महामंत्र विश्वशांति की किरणें प्रसारित करने में अतिशय धरोहरस्वरूप हैं।

संस्थान द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार

गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार—सन् 1995 से प्रत्येक पाँच वर्ष में यह पुरस्कार जैन धर्म पर उच्चस्तरीय शोध तथा संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों में सहयोग हेतु किसी भी जैन विद्वान या समर्पित कार्यकर्ता को 1,00,000/-(एक लाख) रुपये की नगद राशि, प्रशस्ति-पत्र इत्यादि के साथ प्रदान किया जाता था। अप्रैल 2006 में ''गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव'' के अवसर पर संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष इस पुरस्कार को देने का निर्णय लिया गया अतः अब यह पुरस्कार प्रतिवर्ष किसी वरिष्ठ विद्वान अथवा विशिष्ट समाजसेवी को प्रदान किया जाता है।

आर्यिका रत्नमती पुरस्कार—सन् 1999 में स्थापित 11,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

जम्बूद्वीप पुरस्कार—सन् 2000 में स्थापित 25,000/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

श्री छोटेलाल जैन पुरस्कार—सन् 2003 में स्थापित 11,000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

कुण्डलपुर पुरस्कार—सन् 2004 में स्थापित 25,000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

नंद्यावर्त पुरस्कार—सन् 2004 से प्रारंभ 25000/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

उपरोक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष' के अवसर पर घोषित 2,50,000/- रुपये की नगद राशि का **'भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड'** एवं 11,000/-रुपये की नगद राशि का **'ब्राह्मी पुरस्कार'** भी संस्थान द्वारा प्रदान किया गया। भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड सन् 2003 में 'कुण्डलपुर महोत्सव' के अवसर पर तत्कालीन सांसद एवं पूर्व वित्त राज्य मंत्री श्री वी.धनंजय कुमार जैन को भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में प्रदान किया गया।

इलाहाबाद-उ.प्र. में
तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ का निर्माण

सन् 2001 में संस्थान के अन्तर्गत भगवान ऋषभदेव दीक्षा एवं केवलज्ञानकल्याणक भूमि प्रयाग (उ.प्र.) में इस तीर्थ का निर्माण इलाहाबाद-बनारस हाइवे पर किया गया है। इस तीर्थ परिसर में ''ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक तपोवन'' एवं समवसरण रचना मंदिर के साथ-साथ भगवान की निर्वाणभूमि के प्रतीक में विशाल कैलाशपर्वत का भी निर्माण हुआ। इसमें 72 चैत्यालय हैं तथा पर्वत के नीचे गुफा मंदिर में भगवान ऋषभदेव की अतिशयकारी धातु प्रतिमा (सवा तीन फुट पद्मासन) विराजमान है। पर्वत के ईशान कोण में निर्मित 31 फुट ऊँचे कीर्तिस्तंभ में ऋषभदेव-महावीर स्वामी की 8 प्रतिमाएँ हैं। क्षेत्र पर यात्रियों के आवास-भोजन आदि की सम्पूर्ण आधुनिक व्यवस्था उपलब्ध है। इस तीर्थ का संचालन संस्थान के अंतर्गत गठित उपसमिति के द्वारा किया जा रहा है।

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ का विकास

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) का विकास करने हेतु संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति नाम से एक उपसमिति बनाई गई, जिसके माध्यम से वहाँ 'नंद्यावर्त महल' तीर्थ परिसर का निर्माण किया गया। वहाँ नंद्यावर्त महल तीर्थ परिसर में भगवान शांतिनाथ चैत्यालय के अतिरिक्त विश्वशांति महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवग्रहशांति मंदिर तथा तीन मंजिल का त्रिकाल चौबीसी मंदिर है। वहाँ यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधायुक्त आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है।

उपरोक्त सभी निर्माण योजनाएं, सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक कार्यक्रम**पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी** की पावन प्रेरणा से उनके ससंघ सानिध्य में इस संस्थान द्वारा आयोजित किये गये हैं। संघस्थ **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी** का मार्गदर्शन एवं **पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज**का निर्देशन इन समस्त कार्यों में अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है।

इस प्रकार यह संस्थान अपनी विभिन्न समर्पित कार्य योजनाओं द्वारा समाज की सेवा में प्रतिक्षण संलग्न है।

मानसिक शांति, आध्यात्मिक विकास, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं अन्य अनेक लाभ एक साथ प्राप्त करने हेतु यह संस्थान जंबूद्वीप दर्शन के लिए आपको सादर आमंत्रित करता है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।

परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

विषयानुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	सविनय समर्पण	1
2.	कृति नैपथ्य	2
3.	श्रद्धा की अनन्यता	12
4.	संकल्प/प्रतिज्ञा	13
5.	मंगलाचरण	14
	प्रथम खण्ड	
6.	कथावार	15
	द्वितीय खण्ड	
7.	कथावार	23
8.	सम्यक्त्व गुणोपेता मैना	30
9.	वैराग्य के अंकुर-1	32
10.	वैराग्य के अंकुर-2	35
11.	स्वप्न संकेत	37
12.	आचार्य श्री देशभूषण जी का टिकैतनगर में शुभागमन	40
	तृतीय खण्ड	
13.	सप्तम प्रतिमा-ब्रह्मचर्य व्रत धारण, सन् 1952	43
14.	क्षुल्लिका दीक्षा	50
15.	टिकैतनगर में प्रथम चातुर्मास, सन् 1953	54
16.	जयपुर में चातुर्मास, सन् 1954	58
17.	म्हसवड़ में चातुर्मास, सन् 1955	60
	चतुर्थ खण्ड	
18.	माधोराजपुरा में आर्यिका दीक्षा	65
19.	जयपुर (खानिया) चातुर्मास, सन् 1956-57	69
20.	श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र यात्रा	73
21.	ब्यावर चातुर्मास	77

22. अजमेर में चातुर्मास, सन् 1959 80
23. सुजानगढ़ चातुर्मास, सन् 1960 83
24. सीकर चातुर्मास, सन् 1961 85
25. लाडनूँ चातुर्मास, सन् 1962 88
26. श्री सम्मेदशिखर की यात्रा, सन् 1962 91
27. कलकत्ता चातुर्मास, सन् 1963 96
28. हैदराबाद में चातुर्मास, सन् 1964 99
29. श्रवणबेलगोला चातुर्मास, सन् 1965 102
30. सोलापुर चातुर्मास, सन् 1966 106
31. सनावद चातुर्मास, सन् 1967 108
32. प्रतापगढ़ चातुर्मास, सन् 1968 110
33. जयपुर चातुर्मास, सन् 1969 114
34. टोंक (राज.) में चातुर्मास, सन् 1970 117
35. अजमेर चातुर्मास, सन् 1971 120
36. दिल्ली चातुर्मास, सन् 1972-73-74 123
37. हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1975 130
38. खतौली चातुर्मास, सन् 1976 135
39. हस्तिनापुर में चातुर्मास, सन् 1977-78 137
40. मोरीगेट-दिल्ली चातुर्मास, सन् 1979 141
41. कूचा बुलाकी बेगम, चाँदनी चौक-दिल्ली चातुर्मास, सन् 1980 145
42. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1981 149
43. कूचा बुलाकी बेगम, साइकिल मार्केट-दिल्ली चातुर्मास, सन् 1982 152
44. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1983 156
45. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1984 160
46. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1985 165
47. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1986-87 168
48. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1987 170
49. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1988 174
50. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1989 176
51. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1990 181
52. सरधना चातुर्मास, सन् 1991 184
53. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1992 189

54. तीर्थक्षेत्र अयोध्या चातुर्मास, सन् 1993 196
55. टिकैतनगर चातुर्मास, सन् 1994 202
56. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1995 208
57. सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी चातुर्मास, सन् 1996 220
58. लाल मंदिर, चाँदनी चौक-दिल्ली चातुर्मास, सन् 1997 223
59. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 1998 230
60. राजाबाजार कनॉट प्लेस-नई दिल्ली चातुर्मास, सन् 1999 235
61. कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली चातुर्मास, सन् 2000 241
62. श्री अशोक विहार, फेस-1, दिल्ली चातुर्मास, सन् 2001 245
63. प्रयाग-इलाहाबाद चातुर्मास, सन् 2002 248
64. कुण्डलपुर (नालंदा) चातुर्मास, सन् 2003 255
65. कुण्डलपुर (नालंदा) चातुर्मास, सन् 2004 259
66. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 2005-2006 265
67. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 2006 272
68. जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् 2007 278

पंचम खण्ड

69. गणिनी आर्यिकाशिरोमणि 105 श्री ज्ञानमती माताजी का व्यक्तित्व 289
70. पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का कृतित्व 307
71. मेरी अभिलाषा 324
72. भजन (हीरक जन्मजयंती आई, ज्ञानमती माताजी की) 326
73. भजन (शरदपूनों का ये चांद है गणिनी श्री ज्ञानमति मात है) 327
74. भजन (शारद माता का रूप दिखाया) 328

सविनय समर्पण

थम योगिनी, बालब्रह्मचारित्र धनी।
क युगों में, ऐसी प्रतिभा महागुणी।।
जैन समाज सर्वोच्च साधिका, वरिष्ठतमा आर्यिका आप।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र त्रिवेणी, हरते वचन जगत् संताप।।१।।

गणिनीप्रमुख, आर्यिका शिरोमणि, रत्न आर्यिका, ज्ञानोदधि।
न्याय प्रभाकर, विश्वविभूति, जैनजगत् की महानिधि।।
जैन आर्यिका व्रत की पालक, चारित्र चंद्रिका, ज्ञाननिधान
राष्ट्र की गौरव, युग प्रवर्तिका, कालजयी व्यक्तित्व महान।।२।।

वाग्देवी, सिद्धान्त वाचस्पति, श्रुतदेवी वाचस्पति विधान।
नारी शक्ति प्रतीक, वत्सला, तीर्थोद्धारिका, दयानिधान।।
अभीक्ष्ण ज्ञानयोगिनी माता, श्रुत देवी हो प्रवचनकार।
मौलिक लेखन, टीकाकर्त्री, उद्घाटित जिन आगम सार।।३।।

यथानाम तथा गुण वेष्टित, रत्नत्रय की तीर्थ महान्।
''आदहिदं कादव्वं'' के सह, करती हैं पर का कल्याण।।
श्वेतसाटिका, पिछी-कमण्डलु, अष्टबीसगुण मूलाचार।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, कृति अर्पणसह नमन हजार।।४।।

पं.लालचंद जैन ''
गंजबासौदा (म
14 अक्टूबर 2008, श

कृति नैपथ्य

आज के इस वैज्ञानिक युग में मेरी समझ से किसी समुद्र को पार कर लेना या किसी उत्तुंग पर्वत को लाँघ जाना कोई कठिन कार्य नहीं है क्योंकि जलपोत एवं वायुयान द्वारा यह सहज-संभव हो गया है, किन्तु मैंने तो यह अनुभव किया है कि किसी असाधारण महान संत या साध्वी का वास्तविक, याथातथ्य जीवन चरित्र लिखना अत्यन्त कठिन कार्य है। कारण कि उस महाभाग्य की प्रत्येक सूक्ष्मता की चर्चा करना यथार्थता से परे है। बहुत सी बातें समाविष्ट होने से रह जाती हैं, संक्षिप्तता का सहारा लेना पड़ता है। फलतः चरितनायक के व्यक्तित्व के साथ न्याय नहीं होता। अन्य बात यह है कि जीवित चरितनायक के जिन कार्यों की चर्चा हमने पूर्ण की ही थी कि उनमें नये कार्य और जुड़ जाते हैं, तब हमारी चर्चा अधूरी ही बनी रहती है। संत के जीवन के सूत्र भी लेखक को ही खोजना पड़ते हैं यह भी एक कठिन कार्य है। सारांश यह है कि हम उस विशाल, विराट व्यक्तित्व की सम्पूर्णता को अंकित नहीं कर पाते।

जैसे किसी विशाल वृक्ष की जड़ें भूमि में बहुत गहरी होती हैं, एक जड़ के अनेक उपभाग होते हैं, उनको गिन पाना या उस वृक्ष की शाखाओं, प्रशाखाओं, पत्रों, पुष्पों, फलों एवं उसके दीर्घजीवी साक्ष्य में घटित असंख्य घटनाओं को कह पाना संभव नहीं है वैसे ही किसी महान, असाधारण व्यक्तित्व के धनी आत्महित के साथ परहित में संलग्न साधु या साध्वी की दीर्घ, दिव्य, देवोपुनीत जीवनयात्रा का सर्वांगीण, सम्पूर्ण वर्णन करना संभव नहीं है।

बड़े-बड़े विद्वान् हुए हैं, हैं और होंगे, मैं उनकी बात नहीं करता, मैं तो अपनी बात कहता हूँ। मैं एक अल्पज्ञ, मंद-बुद्धि शिशु हूँ जिसे न तो शास्त्रों का ज्ञान है, न भाषा पर अधिकार है, न व्याकरण में दक्षता प्राप्त है, न काव्य में नैपुण्य है तथा कथन की रमणीय शैली भी नहीं है। मैं स्वयं साधु नहीं हूँ, मेरे आचार-विचार भी साधु नहीं हैं इसलिए मुझे साधुचरित्र का लिखना समुद्र- संतरण एवं पर्वतारोहण से भी अधिक दुष्कर प्रतीत हो रहा है।

मेरे सामने एक लक्ष्य है, वह श्रेष्ठतम तो है पर वह इतना ऊँचा है कि उस तक मेरा तीर पहुँचना बहुत कठिन है। कार्य की कठिनता को देखते हुए मैंने मन को समझाया कि "भाई! वही कार्य करना उचित है जो आसान हो, सामर्थ्य के भीतर हो"। तब मंत्री मन ने कहा "श्रीमन्! आसानी की ओर आकर्षित होना व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी है। उन्नति शिखर पर वे ही विराजते हैं जो कठिन कार्य स्वीकार कर दृढ़ता से बाधाओं का तिरस्कार करते हुए आगे बढ़ते हैं।" उसने अपना रहस्य खोलते हुए कहा कि "संसारी व्यक्ति का मन सदा काल अशुभ में ही प्रवृत्ति करता रहता है। मन तो जंगली हाथी की तरह मतवाला होता है और जब अपनी मनमानी पर उतर आता है तो इसे कौन रोक सकता है? इसके लिए अंकुश का काम करता है स्वाध्याय। इसलिए अशुभ से निवृत्ति, पापों से विरक्ति, कर्मक्षय, मन की पवित्रता, चारित्र की उज्ज्वलता आदि शुभ प्रवृत्ति के लिए साधुचरित लेखन से श्रेष्ठतम कोई अन्य उपाय नहीं है और जब से मैंने मन की शुभमंत्रणा स्वीकार की, तब से अब तक डेढ़ दशक व्यतीत हो चुके हैं मैं इस पवित्र कार्य में संलग्न हूँ।

सन् 1998 में श्रीमान् भाई डॉ.शेखरचंद जी जैन-अहमदाबाद की वात्सल्यमयी अगुआई में मुझे परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि 105 श्री ज्ञानमती माताजी के दर्शन हस्तिनापुर-जम्बूद्वीप में आपश्री की जन्म एवं संयम जयंती के समय प्रथमबार दर्शन करने एवं मंगलाशीष पाने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्वेत साटिका धारण किए भक्तों से घिरी परम पूज्य माताजी ऐसी शोभायमान होती थीं, जैसे नक्षत्रों के बीच चंद्रमा की चाँदनी। उनका मुखमंडल तपस्या के तेज से ऊर्जस्वित था, आँखों से करुणा झलक रही थी।

उस समय माताजी की विस्मयविमुग्ध करने वाली अलौकिक प्रतिभा,

अपरिमित कार्यक्षमता तथा अनुपम सूझबूझ का परिचय सहज ही प्राप्त हो गया। मैंने जम्बूद्वीप परिसर के बीचों-बीच खड़े होकर जब चतुर्दिक् दृष्टि दौड़ाई तो ऐसा लगा कि यह तो कोई स्वर्गलोक का भाग ही धरा पर उतर आया है, तभी तो उत्तर-प्रदेश के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप से हस्तिनापुर की पहचान बताते हुए इसे एक अतुलनीय "मानव निर्मित स्वर्ग" की संज्ञा प्रदान की है। जम्बूद्वीप रचना के मध्य खड़ा सुमेरुपर्वत भी अपना शिर उठाकर मानो यही तो कह रहा है कि अगर सच्चा स्वर्ग कहीं पर है तो वह यही है, यही है। मुझे तो ऐसा प्रतीत है कि यह महत्तुंग सुमेरुपर्वत पूज्य माताजी की संयम साधना, साहित्य सर्जना एवं संस्कृति संरक्षा के अप्रतिम कार्यों का कीर्तिस्तम्भ ही है। यह सुमेरु पर्वत अपनी ऊँचाई के साथ ही माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की ऊँचाई का भी प्रतीक है।

पूज्य माताजी का जन्म उ.प्र. के बाराबंकी जिले में "टिकैतनगर" नामक नगर के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनीदेवी की प्रथम सन्तान के रूप में 22 अक्टूबर, सन् 1934 आश्विन शुक्ला पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) की रात्रि में 9 बजकर 15 मिनिट पर "मैना" नामक एक कन्या के रूप में हुआ। पूर्व जन्म के संस्कार एवं इस भव के प्रबल पुरुषार्थ के फलस्वरूप मैना ने सन् 1952 में शरदपूर्णिमा के ही दिन गृहत्याग कर सन् 1953 में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा एवं सन् 1956 में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथमपट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से आर्यिका दीक्षा धारण कर "ज्ञानमती" नाम प्राप्त किया।

पूज्य माताजी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। वह आकाश सा विस्तृत, सागर सा गंभीर एवं हिमालय सा ऊँचा और उज्ज्वल है। आपश्री में युगनेतृत्व की अपूर्व क्षमता है। आप ऐतिहासिक युगनायिका हैं। आपने नारियों के लिए आत्मस्वातन्त्र्य का सूत्रपात किया। आपने बीसवीं सदी में कुमारी अवस्था में प्रथम आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर एक स्वर्णिम इतिहास की रचना की है। आप जैन समाज की श्रेष्ठतम एवं वरिष्ठतम साध्वी हैं। आप युगप्रवर्तिका, गणिनीप्रमुख, आर्यिका शिरोमणि, श्रुतवारिधि, वाग्देवी, चारित्र चन्द्रिका इत्यादि अनेक उपाधियों से अलंकृत हैं।

ज्ञान के क्षेत्र में आप साक्षात् सरस्वती की अवतार हैं। दर्शन-धर्म-अध्यात्म-न्याय-गणित-भूगोल-खगोल-नीति एवं इतिहास इत्यादि अनेक विषयों

का आपको पारगामित्व प्राप्त है। आपको हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी इत्यादि अनेक भाषाओं पर असाधारण अधिकार है। आपने उक्त भाषाओं में अनेक ग्रंथ भी लिखे हैं। साहित्य की विविध विधाओं यथा– गद्य-पद्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, आत्मकथा, समीक्षा आदि पर आपने समान अधिकार के साथ लेखनी चलाकर उत्कृष्ट साहित्य की रचना की। आपने हर वर्ग के लिए उपयोगी साहित्य सृष्टि की है।

आपने मौलिक ग्रंथ लिखे तथा टीकाएँ भी कीं। चारों अनुयोगों के ग्रंथों पर लेखनी चलाकर उन्हें सुपाच्य बना दिया है। आपने दो हजार वर्ष प्राचीन षट्खंडागम ग्रंथ के सूत्रों की सोलहों पुस्तकों की सरल संस्कृत टीका का लेखन कार्य पूर्ण कर लिया है जो एक महत्तम उपलब्धि है। आपके लेखन में भाव एवं भाषा का मणिकांचन संयोग है। प्रत्येक शब्द स्वर्णमुद्रिका में जड़े मणि की शोभा को प्राप्त करता है। किं बहुना, आपके अतुल वैदुष्य को देखकर समाज, विद्वान् एवं संयमियों ने आपको अनेक उत्तमोत्तम–सिद्धांत- चक्रेश्वरी, चारित्रचन्द्रिका, वाग्देवी, श्रुतवारिधि जैसी अनेक उपाधियों से अलंकृत किया है। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (उ.प्र.) ने सन् 1995 में आपको ''डी.लिट्'' की मानद् उपाधि से अलंकृत कर अपने गौरव को बढ़ाया है। जैनधर्म की प्राचीनता, भगवान ऋषभदेव का विश्वस्तरीय प्रचार, स्कूली पाठ्य-पुस्तकों में प्रकाशित जैनधर्मसंबंधी भ्रान्तियों के संशोधन का प्रबल पुरुषार्थ आदि समसामयिक कार्य आपकी विशेष ज्ञानप्रतिभा, अनुपम सूझबूझ तथा अलौकिक कार्यक्षमता के परिचायक हैं।

पूज्य माताजी ने अनेक स्तोत्रों, पूजाओं एवं विधानों की हिन्दी भाषा में रचना कर भक्ति साहित्य के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी युग का सूत्रपात किया है। पूर्व में जो विधान थे, वे गिने-चुने हस्तलिखित एवं संस्कृत भाषा में थे। माताजी ने जनसाधारण की इस कठिनाई का अनुभव कर उनकी सरल-सरस हिंदी में रचना कर दी जिनमें अध्यात्म की गंगा, भक्ति की यमुना, सिद्धांत की सरस्वती प्रवाहित हो रही है। ये विधान साहित्य और सिद्धांत की तो अनुपम निधि हैं ही, भक्ति रस से भी भरपूर हैं। उनमें संगीत, लय, छंद, रस, भाव एवं भाषा का अद्भुत समन्वय है। आज माताजी द्वारा रचित विधानों की पूरे देश में धूम मची हुई है। माताजी द्वारा रचित पूजाएँ भी अत्यंत लोकप्रिय होकर भक्तों के

कण्ठों की हार बन गई हैं। माताजी द्वारा रचित 'नवदेवता पूजा' हर भक्त की पहली पसंद है।

महदाश्चर्य तो यह है कि पूज्य माताजी ने बीसवीं सदी में कुमारी अवस्था में आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर एक ओर तो प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका बनने का इतिहास रचा तो दूसरी ओर कुमारियों को घर की चहारदीवारी से मुक्त हो संयम धारण करने का मंगल मार्ग प्रशस्त कर दिया। तीसरी विस्मयकारी उपलब्धि यह है कि पूज्य माताजी ने अपने दीक्षित जीवन में लगभग तीन सौ उत्कृष्ट ग्रंथों की रचना कर भगवान महावीर की परम्परा में एक स्वर्णिम इतिहास लिख दिया, जबकि इसके पूर्व विगत ढाई हजार वर्षों में आर्यिकाओं द्वारा ग्रंथ लिखे जाने के कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। यह जानकर हर व्यक्ति का मस्तक माताजी के चरणों में श्रद्धा से झुक जाता है।

''चमत्कार को नमस्कार है'' इस कथन की चरितार्थता उस समय स्पष्ट हो जाती है जब हम अतिशय क्षेत्रों को तो सब तरह से समृद्ध देखते हैं और तीर्थंकरों की कल्याणक भूमियों को उपेक्षित, उनकी कोई सुधि लेने वाला नहीं है। ऐसी स्थिति में पूज्य माताजी ने तीर्थंकर कल्याणक भूमियों के विकास की प्रेरणा देकर उनका उद्धार कर दिया। हस्तिनापुर, अयोध्या, कुण्डलपुर, प्रयाग, अहिच्छत्र, रामचन्द्र आदि 99 करोड़ महामुनियों की निर्वाण भूमि मांगीतुंगी, काकंदी आदि ऐसे ही क्षेत्र हैं। इन कार्यों से उनका जैन संस्कृति के प्रति अमिट अनुराग झलकता है।

मेरी तो यह स्पष्ट मान्यता है कि जब हम पूज्य माताजी के समग्र संस्कृत साहित्य का पारायण करते हैं तो उसमें महाकवि कालिदास जैसी उपमा आदि अलंकारों की छटा, भारवि जैसा अर्थगाम्भीर्य एवं दण्ड जैसा पदलालित्य प्राप्त करते हैं। जैन परम्परा के आचार्य अकलंकदेव, समन्तभद्र एवं अमृतचंद्रसूरि आदि तो आपकी श्रुतसम्पदा के प्राण हैं ही। ऐसे सर्वगुणालंकृत साहित्य को एवं उसकी रचयित्री महाकवयित्री माता ज्ञानमती जी को हम सादर प्रणाम करते हैं।

इसी प्रकार जब हम पूज्य माताजी द्वारा हिन्दी भाषा में रचित स्तुतियों, पूजाओं एवं विधानों को पढ़ते हैं, तो उसमें भक्ति रस के समस्त उपादानों को पाकर हमें हिन्दी के भक्त कवि तुलसीदास की याद आए बिना नहीं रहती। भाव-भाषा-रस-छंद-अलंकार-गुण-रीति-शब्द शक्ति से सराबोर माताजी

की ये रचनायें भक्तों को अनंत पुण्य बंध का कारण हैं। माताजी का साहित्य को उत्कृष्ट है ही, उसमें उनके त्याग और संयम ने पूर्ण जीवन्तता भी उत्पन्न कर दी है।

माताजी के साहित्य की एक अमृतोपम विशेषता और है, और वह है जैन सिद्धांतों को ग्रंथों से निकालकर व्यवहारिक रूप प्रदान करना। हस्तिनापुर में जैन परम्परामान्य जम्बूद्वीप का मॉडल विशालरूप में मुक्त आकाश के नीचे बनाया गया जिसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व जैनभूगोल को हृदयंगम कर सके। यही नहीं, एक विशाल कक्ष में तेरहद्वीप की रचना भी जैन भूगोल को समझने का एक महान व्यवहारिक अभूतपूर्व सफल प्रयास है। इसके लिए माताजी की जितनी भी प्रशंसा की जाए, वह कम है। माताजी ने झाँकियों के माध्यम से बालकों को प्रथमानुयोग से परिचित कराने का उत्तम प्रयास किया है।

पूज्य माताजी जैसी विलक्षण, अलौकिक, असाधारण दिव्य प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व देश और समाज के पुण्योदय से शताब्दियों में कभी-कभी उत्पन्न होते हैं। अपने अमृत अवदान से धरा को धन्य करते हैं। आप चिरकाल तक भव्यों को अपनी छत्रछाया प्रदान करती रहें, यही मंगल कामना है।

ऐसे महिमामंडित व्यक्तित्व से भाई डॉ.शेखरचंद जी ने मुझे परिचित कराया, उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ एवं आभारी हूँ।

इसी समय सन् 1998 में ''भगवान ऋषभदेव विद्वत् महासंघ'' का गठन हुआ और मैं सदस्य बनकर उसके माध्यम से पूज्य माताजी के दर्शनों का तथा उनके विश्वव्यापी कार्यकलापों के परिचय का लाभ लेने लगा। सन् 2003 में भगवान महावीर के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका के लिए ''स्व.श्रीमती चंदारानी जैन-टिकैतनगर'' स्मृति पुरस्कार पूज्य माताजी के सानिध्य में भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग में मुझे प्राप्त हुआ। मैं माताजी के विशाल व्यक्तित्व एवं विराट कृतित्व से परिचित एवं प्रभावित तो था ही, मेरे मन में उनके प्रति दृढ़श्रद्धा भी थी अतः मैंने विचार किया कि माताजी की सुदीर्घ-विस्मयविमुग्धकारी-दिव्यजीवन यात्रा पर एक बृहद् काव्य रचना करके महान पुण्यार्जन के साथ अपनी लेखनी को पवित्र तथा जीवन को धन्य करना चाहिए। तब मैंने विद्वत् शिरोमणि, सहृदय श्रीमान् नरेन्द्र प्रकाश जी से अपने विचार प्रकट किए तथा निवेदन किया कि वे मुझे माताजी के श्रीचरणों तक पहुँचाने में

हस्तावलम्बन प्रदान करें। श्री प्राचार्य जी संवेदनशील व्यक्ति हैं तत्काल मुझे पूज्य माताजी के श्रीचरणों तक ले गए और माताजी से मेरा परिचय कराते हुए कहा कि ''ये पं.लालचंद जी ''राकेश'' हैं, निर्दोष कविता करते हैं तथा आप पर काव्यरचना करना चाहते हैं। ''मैं तो हाथों में श्रीफल लिये माताजी के श्रीचरणों में खड़ा ही था, माताजी ने मुझ पर कृपादृष्टि डाली और अत्यंत निस्पृह भाव से कहा कि ''मेरे जीवन चरित्र में तो कोई विशेषता नहीं है अतः मुझ पर काव्य न लिखकर किन्हीं तीर्थंकर या अन्य महापुरुष पर काव्य लिखें परन्तु मेरा मन तो माताजी पर ही काव्यरचना के लिए पूर्ण निश्चय कर चुका था अतः मैंने माताजी के चरणों में श्रद्धायुक्त प्रणाम करते हुए श्रीफल समर्पित किया। संत तो प्रणत को शुभाशीष देते ही हैं। माताजी ने भी मन्दमुस्कराहट के साथ दक्षिण कर उठाकर शिर पर पिच्छी रखते हुए मंगल आशीष दिया। यह आज मेरे महान् पुण्य का उदय था।

उस दिन से मेरे मन और मस्तिष्क में माताजी के दिव्यजीवन पर काव्य रचना के विचार वैसे ही उमड़ते-घुमड़ते रहे, जैसे प्रावृड् काल में बादल आकाश में दौड़ते रहते हैं। उनके बरसने में छह वर्ष, एक माह, सोलह दिन का दीर्घ समय लग गया।

समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। चार वर्ष व्यतीत हो गये, पर काव्य लेखन प्रारंभ न हो सका। सन् 2006 के अप्रैल माह में पूज्य ज्ञानमती माताजी का ''आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव'' मनाया गया तब निरपेक्ष बन्धु श्रीमान् डॉ.भागचंद जी ''भागेन्दु'' के साथ मैं हस्तिनापुर पहुँचा। पूज्य माताजी एवं सकल संघ के दर्शन किए तथा शुभाशीष प्राप्त किया। श्रीमान् डॉ.भागचंद जी की निस्पृह वात्सल्यमयी प्रेरणा एवं हस्तावलम्बन ने पूर्व संकल्प को क्रियान्वित होने की काललब्धि प्रदान की। सच पूछा जाये तो यह काव्य उन्हीं की देन है एतदर्थ मैं उनका हृदय से कृतज्ञ एवं आभारी हूँ।

पारिवारिक व्यस्तताओं एवं पूर्वनिश्चित साहित्यिक अपूर्णताओं की पूर्णता में संलग्नता के कारण प्रस्तुत काव्य का लेखन 21-3-07 बुधवार को प्रारंभ हो सका और लगातार 8-5-08 अक्षय तृतीया पर्व तक अत्यंत तन्मयता एवं एकनिष्ठता के साथ चलता रहा।

काव्य रचना प्रारंभ करने से पूर्व जिनालय जाकर जिनेन्द्र देव की पूजन की तथा काव्य की निर्विघ्न समाप्ति की कामना से श्रीजी के चरणों

में पूज्य माताजी की साक्षीपूर्वक श्रीफल समर्पित किया। स्वाध्याय की टेबिल पर पूज्य माताजी का चित्र विराजमान किया। छंद का नाम पूज्य माताजी के नाम पर ''ज्ञानमती'' रखा। इस प्रकार रचना का प्रारंभ हुआ।

लेखन के मध्य पूज्य माताजी अहर्निश, हरक्षण, मेरे देह देवालय की मनोवेदिका पर साक्षात्-सी विराजमान रही हैं। ऐसा अवसर कभी नहीं आया, जब वे मेरी कविदृष्टि से ओझल हुई हों। श्रद्धा, भक्ति और हर्ष से उद्भूत प्रासुकाश्रु जल से उनके चरणप्रक्षालन कर उन्हें अर्घ्य चढ़ाना और फिर लेखन प्रारंभ करना यह मेरा प्रतिदिन का क्रम रहा है। इससे मुझे प्रेरणा मिलती, कविता जगती और लेखनी गति पकड़ लेती। समय और श्रम का पता ही नहीं चलता। यह काव्य मैंने नहीं लिखा, यह तो पूज्य माताजी के प्रति मेरी अनन्य श्रद्धा का फल है।

पूज्य माताजी का चरित्र इतना विशाल, विराट एवं बहुआयामी है कि उसका सर्वांगीण और सम्पूर्ण चित्रण संभव ही नहीं है, इस बात को काव्य के प्रारंभ तथा व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व भाग में अच्छी तरह दर्शा दिया गया है। यह काव्य तो सिंधु का एक बिन्दु भी नहीं है। इस काव्य में पूज्य माताजी के जन्म से लेकर सन् 2008 तक के कार्यकलापों का स्पर्शमात्र ही मैं कर पाया हूँ। तब भी आकार काफी बढ़ गया है।

इस रचना में सर्वत्र परम पूज्य माताजी के दिव्य जीवन की पावनता तो है ही, काव्य की रमणीयता भी है क्योंकि कविता स्वयं में सुंदर होती है। जैसे माताजी का व्यक्तित्व बहुआयामी है इसी प्रकार यह काव्य भी जीवन के विविध पहलुओं, वर्ण्य विषयों को अपने में समाये हुए है। इसमें सिद्धांत, अध्यात्म, मुनि/आर्यिकाओं के अमृत उपदेश, महापुरुषों के स्वर्णिम जीवनप्रसंग, चारों अनुयोगों के विषय, तीर्थक्षेत्रों-महानगरों का काव्यमय वर्णन है। काव्य लेखन में सर्वत्र ''मेरी स्मृतियाँ'', चारित्र चंद्रिका एवं ''गणिनी ज्ञानमती माताजी के दीक्षित जीवन के स्वर्णिम 50 वर्ष'' कृतियों का आश्रय लिया गया है। इसके लिए मैं पूज्य दोनों माताजी एवं क्षुल्लक श्री मोतीसागर के श्रीचरणों में प्रणाम करता हूँ। सम्पूर्ण संघ का भी मुझे सहयोग मिला है एतदर्थ मैं सबके प्रति आभारी हूँ।

इसमें जो कुछ अच्छाई है वह तो पूज्य माताजी के पावन जीवन चरित्र का एवं उनके मंगल आशीष का प्रभाव है और जो कुछ न्यूनताएँ हैं वे मुझ अल्पज्ञ की हैं, विद्वज्जन सुधार कर पढ़ें।

1 जून 2007 से 7 जून 2007 तक हस्तिनापुर में ''ज्ञान ज्योति शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर'' आयोजित किया गया था। उस समय तक काव्य के लगभग 300 पद्य बन चुके थे। उसमें इस काव्य की प्रस्तुति शताधिक विद्वानों की उपस्थिति में कवि द्वारा की गई थी। उस समय काव्य सुनकर पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर एवं कर्मयोगी ब्र. श्री रवीन्द्रकुमार जी तथा प्राचार्य श्री नरेन्द्रप्रकाश जी, पं. श्री शिवचरणलाल, डॉ.भागचंद जी ''भागेन्दु'', प्राचार्य श्री निहालचंद जी प्रभृति विद्वानों ने काव्य की हार्दिक अनुशंसा व पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने ''शैली अच्छी है'' कहकर प्रशंसा तो की ही थी, काव्य की शीघ्र पूर्णता के लिए प्रेरणाप्रद मंगलाशीष भी दिया था। उनके आशीर्वाद से काव्य एक वर्ष की अल्पावधि में ही पूर्ण हो गया। श्रीमान् डॉ. शेखरचंद जी-अहमदाबाद विद्वत् सम्मेलन के समय मेरे घर पधारे थे। आपने भी अपनी शुभकामनाएँ प्रकट की थीं। श्रीमान् डॉ.अनुपम जैन-इंदौर से भी काव्य लेखन की हार्दिक अनुमोदना समय-समय पर प्राप्त होती रही है। मैं आप सभी के प्रति अपना यथायोग्य अभिवंदन एवं आभार प्रकट करता हूँ।

साहित्य-साधना एक महान तपस्या है। इसके लिए समय, श्रम, चित्त की एकाग्रता एवं अन्य कार्यों की निर्भरता अत्यंत आवश्यक है। परिवार में रहते हुए सम्पूर्ण अनुकूलताएँ साधना को सफल बना देती हैं। सो, मेरी पत्नी श्रीमती भगवतीबाई मेरे उत्तरदायित्व के सकल कार्य भी स्वयं सम्पन्न कर लेती हैं अतः मैं सभी घरेलू कार्यों से मुक्त रह साहित्य सपर्या में निश्चिंत भाव से लगा रहता हूँ अतः साहित्य सृजन का बहुत कुछ श्रेय तो उनको ही जाता है। मेरे पुत्र श्री अनिलकुमार एवं पुत्रवधू श्रीमती रेखारानी, पुत्रियाँ और जामाता श्रीमती नीलम-कमलेश, श्रीमती मंजू-प्रमोद, श्रीमती शोभा-नरेन्द्र एवं श्रीमती बरखा-अनूप तथा गृह फुलवारी के सभी सुमन अनिरुद्ध अरिहंत-गगन-शिल्पी-प्रिया-प्रतीक-अतिचि, शशांक-शुभम्, प्रिया-देव सबके द्वारा प्रेरणा और अनुशंसा प्राप्त होती रहती है जो साहित्यदीप को सदा प्रदीप्त रखने में घृत का काम करती है। इन सबके लिए मेरा हार्दिक आशीर्वाद है कि वे सदा हँसते-मुस्कराते जीवन पथ में आगे बढ़ें और उन्नति शिखर पर आरोहण करें, यह मेरी हार्दिक कामना है।

परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी,

परम पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी के श्रीचरणों में सादर त्रिकाल वंदामि, परम पूज्य पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज के श्रीचरणों में बारम्बार इच्छामि, कर्मयोगी ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्रकुमार जी को सादर वंदना एवं संघस्थ सभी ब्र.बहनों को सादर वंदना। आप सभी रत्नत्रय की साधना करते हुए आगामी अनेक वर्षों तक भव्यजनों को आशीर्वाद प्रदान करते रहें, यह मंगल कामना है।

हस्तिनापुर में विराजमान सकल जिनदेवों को सादर प्रणाम।

हम माता के आभारी हैं

नारी होकर माताजी ने, किए कार्य अप्रतिम अनेक।
नर भी वैसा कर न पाये, उत्तम-पूर्ण-सुष्ठु प्रत्येक।।
आप भाव से दिव्य पुरुष हैं, दिव्य द्रव्य से नारी हैं।
इसीलिए तो आज पुरुष भी, माता के आभारी हैं।।

श्रद्धा की अनन्यता

(1)

देह देवालय, मनोवेदिका, में माता को बैठाकर।
पल-पल अर्घ्य चढ़ाया मैंने, श्रद्धा पूर्वक गुण गाकर।।
जब से मैंने माताजी के, पाये पावन चरणकमल।
तब से अब तक मेरी श्रद्धा, दूध से धोई महाधवल।।

(2)

रहें कहीं पर भी माताजी, चरण तो मेरे मन में ही।
मेरी देह कहीं भी रहती, मन माता के पद में ही।।
माताजी का शुभाशीष पा, मेरा जीवन धन्य हुआ।
गुण गा पुण्य कमाया इतना, भाग्यवन्त नहिं अन्य हुआ।।

(3)

सदा काल ही माताजी के, श्री चरणों का साथ रहे।
मेरे शिर पर आप श्री के, शुभाशीष का हाथ रहे।।
जन्म-जन्म हों गुरू आप ही, मैं भी शिष्य का पद पाऊँ।
चंदन-मोती-रवि संग बैठूँ, माताजी के गुण गाऊँ।।

संकल्प/प्रतिज्ञा

चिड़िया तृण को चोंच दबाये, करने चली सिंधु बंधान।
जिसने देखा, उसने रोका, तू मूरख, पगली अंजान।।
लेकिन उसने एक न मानी, बोली करना मेरा काम।
पुरुषार्थी चलते ही रहते, करते नहीं बीच विश्राम।।1।।

चींटी चढ़ती है पहाड़ पर, गिर जाती है बेचारी।
लेकिन चढ़ना नहीं छोड़ती, रखती है प्रयास जारी।।
किन्तु अंत में चढ़ ही जाती, सिर के ऊपर लेकर भार।
सच प्रयत्न व्यर्थ नहिं जाते, कृष्ण रचित गीता का सार।।2।।

देखो! चींटी होती छोटी, दूर की यात्रा कर न सके।
पर, यात्री के वस्त्र बैठकर, वह भी दिल्ली जा पहुँचे।।
सद्गुरु चरण पकड़कर जब हम, हो सकते भव सागर पार।
तो रचना है बात कौन सी, समझ हुआ करने तैयार।।3।।

समझ रहा हूँ हिमगिरि ऊँचा, रहूँगा मैं असफल, नाकाम।
पर, गुरुभक्त लेखनी मेरी, लेती नहिं रुकने का नाम।।
यथा चंद्र लख ज्वार का आना, सागर की मजबूरी है।
तथा भक्ति में लीन भक्त को, ज्ञात न होती दूरी है।।4।।

बादल देख पपीहा खुद ही, करने लगता पिऊ-पिऊ।
बौर देख मदमाती कोयल, करने लगती कुहू-कुहू।।
जाता कौन कमल से कहने, होना विकसित प्रातःकाल।
खिल जाता है स्वतः सद्य ही, लखकर सूर्य किरण का जाल।।5।।

स्वतः कुमुद वन विकसित होता, ज्यों ही होता चन्द्रोदय।
वैसे गुरुमुख चंद्र देखकर, हुआ भक्त का भाग्योदय।।
श्री माताजी ज्ञानमती को, मनोवेदिका बैठाकर।
महाकाव्य का अर्घ्य चढ़ाऊँ, स्वर्णवर्ण युत रचना कर।।6।।

मंगलाचरण

नाभिराय-मरुदेवी-नंदन, विश्वचक्षु-आत्मज्ञ-जिनेश।
श्रीमत्-स्वयंभू-सर्वभूतहित, पर-सहिष्णु-अच्युत-परमेश।।
श्रीलीलागृह प्रभुपदपंकज, कीर्ति-मोद-जय-मंगलधाम।
बसूँ उन्हीं में नख-शशि बनकर, ज्ञानप्राप्तिहित आठों याम।।1।।

कामदेव-चक्री-तीर्थंकर, त्रय पद शोभित श्रीजिनराज।
जिनकी कृपा कोर बन जाती, भवदधि तारण-तरण-जहाज।।
शरणागत रक्षक, प्रतिपालक, सब जिनका गुणगान करें।
शांतिप्रदाता, शांतिनाथ जिन, हमको शांति प्रदान करें।।2।।

मोहमहातमहरण दिवाकर, भवातापहर चंद्रसमान।
सप्ततत्त्व-षट्द्रव्य-कालत्रय-नवपदार्थ-निक्षेप-प्रमाण।।
ज्ञान दिया श्रुतदेवी माता, जग पर किया महत् उपकार।
तीर्थंकर मुख कमलनिसृते! नमन हमारा बारम्बार।।3।।

श्री भगवन् अरहंतदेव तो, मोक्ष पधारे दे उपदेश।
मुखकमलोद्भव माँ जिनवाणी, देतीं सदा मौन संदेश।।
मन-वच-काया करें प्रेरणा, गुरु बतलाते मोक्षसदन।
श्री गुरुवर के पद पंकज में, सविनय बारम्बार नमन।।4।।

गणिनी प्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि, मात शारदा की अवतार।
चारित्रचंद्रिका, बालयोगिनी, युगप्रवर्तिका-तीर्थोद्धार।।
वत्सलमूर्ति, राष्ट्र की गौरव, युग की साध्वी श्रेष्ठतमा।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, वंदन करते शीश नमा।।5।।

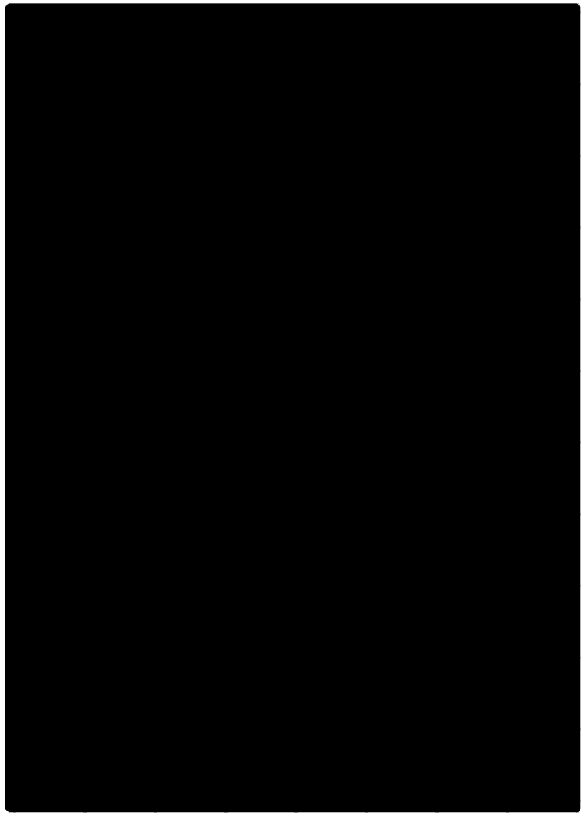

कथावार

समाहित विषयवस्तु

1. **अलोकाकाश और लोकाकाश।**
2. **लोक की स्थिति और भेद।**
3. **मध्यलोक में जम्बूद्वीप, जम्बूद्वीप में भरत क्षेत्र।**
4. **भरतक्षेत्र में अयोध्या, तीर्थंकरों की जन्म नगरी।**
5. **आज भरत का 'भारत'**
6. **अयोध्या-लखनऊ-बाराबंकी-टिकैतनगर।**
7. **टिकैतनगर-धार्मिक नगर।**
8. **टिकैतनगर में चरितनायिका के पूर्वज आदि।**
9. **चरितनायिका के माता-पिता।**
10. **चारितनायिका का परिवार–एक विहंगमदृष्य।**
11. **श्री छोटेलाल-माँ मोहिनीदेवी–एक परिचय।**

काव्य पद

(ज्ञानमती छंद)

श्री जिनेन्द्र षड्द्रव्य बताये, उनमें एक द्रव्य आकाश।
उसके भेद कहे दो जिनवर, लोकाकाश-अलोकाकाश।।
सकल द्रव्य जहाँ देखे जाते, वह कहलाता लोकाकाश।
जहाँ मात्र आकाश द्रव्य है, कहते उसे अलोकाकाश।।1।।

द्रव्य अलोकाकाश असीमित, दशों दिशाओं आर-न-पार।
अनंतप्रदेशी, द्रव्यवृहत्तम, रखता है अनंत विस्तार।।
छोटा छींका लटका रहता, वृहत् कक्ष के बीचों खास।
बस, वैसे ही लोक हमारा, स्थित मध्य अलोकाकाश।।2।।

अधः मध्य अरु ऊर्ध्व भाग में, लोक हमारा बँटा हुआ।
हाथ कमर पर, पग फैलाये, कोई पुरुष ज्यों खड़ा हुआ।।

अधोलोक में रहें नारकी, मध्य मनुष-तिर्यंच निवास।
ऊर्ध्वलोक में सुरगण रहते, लोक अंत सिद्धों का वास।।3।।

द्वीप-समुद्र असंख्ये शोभें, मध्यलोक में वलयाकार।
जम्बूद्वीप बीच में स्थित, एक लाख योजन विस्तार।।
गिरि सुमेरु नाभि है इसकी, रखता झालर का आकार।
लवण समुद्र करधनी पहने, षड्गिरि, सप्तक्षेत्र हृदिधार।।4।।

सप्तक्षेत्र में प्रथमक्षेत्र है, नाम 'भरत' अतिशय सुंदर।
जम्बूद्वीप की दक्षिण दिक् में, शोभित यथा धनुष मनहर।।
गंगा-सिंधु-विजयार्द्ध गिरि से, भरतक्षेत्र बँटता छह भाग।
पाँच खंड रहते म्लेच्छ हैं, एक खंड आर्य बड़भाग।।5।।

वृषभनाथ के पुत्र ''भरत' ने, चक्रवर्ति का पद पाया।
भरतक्षेत्र के षट्खण्डों पर, केतु विजय का लहराया।।
वृषभाचल पर नामांकित कर, शासक बने भरत महाराज।
नाम 'भरत' से देश हमारा, कहलाता 'भारत' है आज।।6।।

आर्यखण्ड बड़भाग इसलिये, इसमें होते तीर्थंकर।
पुरुष शलाका पैदा होते, होते हैं उत्तम ऋषिवर।।
अनंतानंत चौबीसी आयीं, हुआ समय पर मोक्ष गमन।
वर्तमान में प्रथम तीर्थंकर, 'वृषभ' अयोध्या लिया जनम।।7।।

भोगभूमि का अंत हुआ जब, कल्पवृक्ष सब लुप्त हुये।
वृषभनृपति ने प्रजाजनों को, कर्म भूमि नव सूत्र दिये।।
प्रभु आज्ञा से इंद्र ने रचे, नगर अयोध्या जिनमंदिर।
कौशल-मालव-पल्लव आदिक, देश बनाये अति सुंदर।।8।।

लघू-वृहत् बहु ग्राम बनाये, खेटक-खर्वट-मडंब-द्रोण।
उनमें प्रजा व्यवस्थित करके, इंद्र किया सुरपुर को गौन।।

'असि-मसि-कृषि-विद्या आदिक से, जीवनवृत्ति चलायें जन।
वर्णत्रय की करी व्यवस्था, वृषभनाथ-नरपति-भगवन्।।9।।

वर्ष असंख्ये बीत गये फिर, 'महावीर' का हुआ जनम।
अनादि-अनिधन वस्तुतत्त्व का, पुनः किया प्रभु उद्घाटन।।
श्रावक-साधु द्विविध धर्म का, दे उपदेश गये निर्वाण।
उनके पावन श्री चरणों में, सविनय बारम्बार प्रणाम।।10।।

चक्र काल का कभी न रुकता, वह बढ़ता ही जाता है।
जो भविष्य है, वर्तमान बन, फिर अतीत हो जाता है।।
शासन सत्ता रहे बदलती, होते हैं उत्थान-पतन।
सीमाएँ भी रहें बदलतीं, होता उनका पुनर्गठन।।11।।

जब क्रमशः अतीत से बढ़ हम, वर्तमान में आते हैं।
राज्यों-नगरों-सब ग्रामों का, मेल ही भारत पाते हैं।।
सकल राज्य तो अंग हैं इसके, मिलकर बनता भारत देश।
है अनेकता बीच एकता, नूतन भारत का संदेश।।12।।

रखे कमर पर हाथ, खड़े हों, बनती 'भारत' की तस्वीर।
पैर हमारे तमिलनाडु हैं, माथा है जम्मू-कश्मीर।।
गल पंजाब, पेट एम. पी. दाँयी कुहनी राजस्थान।
बाँयी ओर बिहार-उड़ीसा, दिल्ली दिल, यू.पी. है जान।।13।।

यू.पी. की लखनऊ रजधानी, 'बाराबंकी' एक जिला।
'टिकैतनगर' है कस्बा उसमें, मानो सुंदर सुमन खिला।।
शाश्वत तीर्थ 'अयोध्या' अंचल, बसा अवध की कहते शान।
धर्म ध्वजा हर घर पर फहरे, 'टिकैतनगर' कस्बे का नाम।।14।।

लखनऊ नवाब 'आसिफ उद्दौला', उनके आला रहे बजीर।
राजा 'श्री टिकैतराय' ने, बसा, लिखी इसकी तकदीर।।
रही शताब्दी अट्ठारहवीं, उत्तरार्द्ध में जन्म हुआ।
धीरे-धीरे धर्म नींव पर, इसका उचित विकास हुआ।।15।।

जैनी जन के सौ घर इसमें, दो जिनमंदिर आलीशान।
पच्चीस सहस्र की आबादी है, "चारित्र चंद्रिका जी" पहचान।।
मंदिर-शिखर दूर से दिखते, केशरिया लहराते हैं।
हिला-हिला कर दर्शन करने, हमको निकट बुलाते हैं।।16।।

अहो! जिनालय अति ही सुंदर, बनीं वेदिका महामनोज्ञ।
उन पर जिनवर प्रतिमा शोभें, जुड़ते मन-वच-काय-त्रियोग।।
बीचों-बीच वेदिका ऊपर, पारसनाथ विराजे हैं।
डम-डम मुक्ति नगाड़े बजते, नित जिनके दरवाजे हैं।।17।।

जैन समाज यहाँ की धार्मिक, प्रतिदिन जिनवर का अभिषेक।
तन्मय हो प्रभु पूजन करती, निज में जिन प्रतिमा को देख।।
जैन समाज उदार यहाँ की, साधुभक्त अतिशय गुणवान।
सदा-सदा आयोजित करती, पूजन-मंडल-महाविधान।।18।।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती का, मंगलमय सानिध्य मिला।।
"श्री महावीर जिनालय नूतन", अतिशयकारी कमल खिला।।
मंदिर-मूरत अति ही सुंदर, शिखर कलात्मक मनहारी।
श्रीमाताजी ज्ञानमती के, शुभाशीष की बलिहारी।।19।।

इसी नगर रहते इक दम्पति, धन्य कुमार जी-फूलमती।
छोटेलाल सुपुत्र आपके, अद्वितीय, व्युत्पन्नमती।।
नाम था 'छोटे' किन्तु बड़े थे, उन था गुणसमूह का वास।
जिनवर दर्शन, पूजन करना, स्वाध्याय रुचि स्वर्ण सुवास।।20।।

शांत-सरल-संतोषी प्राणी, दान-धर्म अतिशय उत्साह।
सन् उन्निस बत्तीस ईसवी, 'छोटेजी' का हुआ विवाह।।
अवधप्रांत में जिला सीतापुर, है महमूदाबाद मुकाम।
श्रावक थे 'सुखपालदास' जी, मत्तोदेवी' पत्नी नाम।।21।।

धर्मपरायण इस दम्पति का, धर्मयुक्त ही था हर काम।
समय प्राप्त जन्मी इक कन्या, रखा "मोहिनी देवी" नाम।।

धीरे-धीरे बड़ी हो गईं, पढ़ा-लिखा, स्वाध्याय किया।
'पद्मनंदिपंचविंशतिका' को पढ़, जीवन उद्धार किया।।22।।

धार्मिक कन्या मोहिनी देवी, जिनप्रतिमा को साक्षी कर।
ब्रह्मचर्यव्रत आठें-चउदश, लिया शीलव्रत जीवन भर।।
सन् उन्नीस सौ बत्तीस ईसवी, 'छोटेलाल' संग हुआ विवाह।
पिता-पति कुल किया सुपावन, धर्म-कर्म, मन भर उत्साह।।23।।

सुंदर जोड़ी मन को भाती, था प्रसन्न परिवार सभी।
क्या उपमा दें, समझ न आये, घर में दीपावली सजी।।
'पद्मनंदिपंचविंशतिका', मात-पिता ने दिया दहेज।
छोटेलाल-मोहिनीदेवी, सादर-सविनय रखा सहेज।।24।।

प्रायः जन देते दहेज में, रुपया-पैसा-खेत-मकान।
किन्तु महज्जन संस्कार दे, संतति को करते गुणवान।।
लाला श्री सुखपालदास ने, बेटी को संस्कार दिये।
'पद्मनंदिपंचविंशतिका', ग्रंथ सदृश उपहार दिये।।25।।

'मोहिनीदेवी' धर्म परायण, संस्कृति-शिष्ट-सुमहिला रत्न।
पद्मनंदिपंचविंशतिका, ज्ञान-चरित-हित किया प्रयत्न।।
जीवन एक महायात्रा है, पति-पत्नी हैं चक्र समान।
रखें समन्वय, तो फिर जीवन, बन जाता है सुख की खान।।26।।

छोटेलाल-मोहिनीदेवी, का जीवन था ऐसा ही।
मिलकर रहे दूध-पानी ज्यों, रहा समय हो कैसा ही।।
धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष ये, जिन पुरुषार्थ बताये चार।
अर्थ-काम पुरुषार्थ का पालन, श्लाघनीय धर्म अनुसार।।27।।

अर्थ-काम में लिप्त हुए ना, रखकर धर्म-मोक्ष का ध्यान।
पहली पुत्री 'मैना' पायी, क्रमशः कुल तेरह सन्तान।।
चार पुत्र हैं, नौ हैं पुत्री, बेटा-बेटी एक समान।
नहीं पुत्रियाँ भारस्वरूपा, था उनका आदर्श महान।।28।।

मैना-शांति-कैलाश-श्रीमती, मनोवती व प्रकाश-सुभाष।
श्रीकुमुदनी-रवीन्द्र-मालती, कामिनी-माधुरी-त्रिशला खास।।
सब सन्तानें रत्न अमोलक, धार्मिकता से ओतप्रोत।
बनी हुई हैं जगज्जनों को, धर्म प्रेरणा-ऊर्जा स्रोत।।29।।

उनमें पहली पुत्री अद्भुत, 'मैना' माता 'ज्ञानमती'।
बालयोगिनी, चारित्रचंद्रिका, वरिष्ठ आर्यिका बीसशती।।
एक कुमारी 'मनोवती' हैं, आज आर्यिका 'अभयमती'।
ज्ञान-ध्यान-तप में संलग्ना, संघ आर्यिका ज्ञानमती।।30।।

जैसे कमल पंक से उठकर, ऊपर खिलता सरवर में।
तथा कुमारी श्री माधुरी, रमीं नहीं किंचित् घर में।।
लघुवय वर्ष त्रयोदश में ही, आजन्म ब्रह्मचर्य धारा।
क्रमशः भाव विशुद्धि बढ़ाकर, पाने चलीं मोक्षद्वार।।31।।

सन् उन्नीस सौ नवासी आया, आप आर्यिका दीक्षा ली।
हस्तिनागपुर तीर्थ माधुरी, हुईं 'चंदना' माताजी।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने, दीक्षा दे उद्धार किया।
भववन भटके विपुल जनों का, माता ने उपकार किया।।32।।

रवीन्द्रकुमार जी पुत्र श्री इक, ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर।
जैनधर्म-समाज सेवा में, रात्रि-दिवस रहते तत्पर।।
कर्म है पूजा, कभी न रुकते, सूझबूझ से लेते काम।
चलते रहते एक अकेले, 'कर्मयोगी' है सार्थक नाम।।33।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में, बना अनूठा धर्म स्थान।
निरतिचार व्रत पालन करते, रहते निरत स्व-पर कल्याण।।
स्वर्ग धरा पर, उपमा झूठी, होते साध्वी-संत नहीं।
धर्म साधना, साधन-सुविधा, है ऐसी अन्यत्र नहीं।।34।।

तीन पुत्रियों, एक पुत्र ने, मोक्षसाधना स्वीकारी।
उत्तम गेही शेष बने हैं, सब हैं अणुव्रत के धारी।।

छोटेलाल-मोहिनीदेवी, ने अति धार्मिक कार्य किये।
करी अनेक तीर्थ यात्रा हैं, बढ़-चढ़ चउ विधि दान दिये।।35।।

छोटेलाल-मोहिनीदेवी, द्वितिय रहा दोनों का क्रम।
पर उनकी जीवन-शैली को, अद्वितीय कह सकते हम।।
छोटे लाल का सन् उनहत्तर, हुआ शांतिमय समाधिमरण।
पंचनमस्कृति सुनते-सुनते, किया आपने स्वर्ग गमन।।36।।

विदुषी महिला मोहिनीदेवी, किया पति को सम्बोधन।
अंतसमय तक रखा विरागी, सावधान जागृत-चेतन।।
जीव अकेला ही आता है, जाता आप अकेला है।
जीवन तो है आँख मिचौनी, चार दिनों का मेला है।।37।।

माता - पिता, पुत्र - पुत्रियाँ, पत्नी - भगिनी - रिश्तेदार।
कोई साथ नहीं जा सकते, है सब स्वारथ का संसार।।
अतः उचित है मोह छोड़कर, पंचनमस्कृति जाप करें।
''ज्ञानमती जी' आशीष भेजा, कोई विकल्प न आप करें।।''38।।

जब हम जाते ग्राम निकट के, शकुन मनाते सभी प्रकार।
अतः जनक परलोक गमन में, करें न अशकुन किसीप्रकार।।
माताजी के वचन यादकर, सब समता से काम लिया।
जनक सामने रुदन न करके, समाधिमरण सहयोग किया।।39।।

पति के जीवनकाल 'मोहिनी', पंचमप्रतिमा पालन की।
हुए दिवंगत यदा पतिश्री, सप्तम प्रतिमा धारण की।।
सन् उन्नीस इकहत्तर आया, सप्तपंचाशत आयु हती।
आचार्य श्री धर्मसागर से, हुईं आर्यिका 'रत्नमती'।।40।।

तेरह सन्तानों की माता, रहीं आर्यिका तेरह वर्ष।
मोह शृंखला तोड़ आपने, धर्मक्षेत्र पाया उत्कर्ष।।
धन्य श्राविका 'मोहिनीदेवी', धन्य आर्यिका 'रत्नमती'।
रही श्रेष्ठता उभय पक्ष में, जग में एक मिसाल रची।।41।।

तेरह वर्ष रही दीक्षा फिर, ''पंद्रह-एक-पचासी सन्।
ज्ञानमती माताजी सन्निधि, हुआ समाधि युक्त मरण।।
गृहजीवन में रहीं जो बेटी, धर्म क्षेत्र में बनीं गुरू।
पूजनीय संयम वरिष्ठता, दीक्षा जीवन नया शुरू।।42।।

जीवन है उनका ही सार्थक, जिसका होता अंत भला।
खाक जिया वह, मरा न उत्तम, मरना भी है एक कला।।
छोटेलाल-मोहिनीदेवी, का जीवन आदर्श ललाम।
उनको श्रद्धाञ्जलि अर्पण कर, अब हम लेते अल्प विराम।।43।।

स्व. डॉ. दरबारीलाल कोठिया के उद्गार

अत्यन्त प्रमोद की बात है कि केवल अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग में ही नहीं, चारित्राचारादि पंचाचार में सतत निरत पूज्य ज्ञानमती माताजी ने अष्टसहस्री जैसे दुरूह न्याय ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद के अभाव की पूर्ति का सफल एवं स्तुत्य कार्य किया है। अष्टसहस्री जितना जटिल और दुरवगाह दार्शनिक ग्रंथ है, इसे तज्ज्ञ विद्वान् ही जानते हैं। एक ही स्थल पर बौद्ध दर्शन की चर्चा करते-करते अन्य दर्शनों की भी चर्चा आ जाती है, जिसे समझना साधारण बुद्धि का कार्य नहीं है। उसे समझने-समझाने के लिए बुद्धि का बहु-आयाम करना पड़ता है। जिसका सभी भारतीय दर्शनों में गहरा प्रवेश हो वही अष्टसहस्री का मर्मोद्घाटन कर सकता है। माताजी ने इस दुरवगाह ग्रंथ का अति सरल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करके जिस साहस एवं बुद्धि वैभव का परिचय दिया है वह निःसंदेह स्तुत्य है।''

5 जुलाई 1974, वाराणसी

द्वितीय खण्ड

कथावार

समाहित विषयवस्तु

1. **महान आत्मा के आगमन पूर्व प्रकृति में हर्ष।**
2. **'शरद पूर्णिमा' पर प्रकृति का विशेष रूप।**
3. **टिकैतनगर की शोभा।**
4. **श्री छोटेलाल-मोहिनीदेवी के घर पुत्री-जन्म।**
5. **घर में खुशियों का वातावरण।**
6. **पुत्री का नाम 'मैना'।**
7. **'मैना' नाम की सार्थकता।**
8. **मैना का बाल्यकाल, क्रीड़ाएँ आदि।**
9. **मैना की प्रतिभा अत्यन्त विलक्षण।**
10. **मैना में 'उत्तम संस्कारों' का बीजारोपण।**

काव्य पद

महान-भव्य-दिव्य आत्मा, आने वाली है भू-पर।
समझ प्रकृति सज्जित होती है, उसके स्वागतार्थ सत्त्वर।।
सर्वप्रथम वह निर्मल होने, करती है वर्षा-स्नान।
फलतः पृथ्वी-वृक्ष-लतायें, धुलकर हो जाते अमलान।।44।।

नदी-सरोवर जल पूरित हो, जग की प्यास बुझाते हैं।
ग्रीष्मतपन से मुक्ति प्राप्त कर, सब प्राणी सुख पाते हैं।।
चौतरफा हरियाली दिखती, मखमल का होता आभास।
बादल जाते, वर्षा थमती, निर्मल हो जाता आकाश।।45।।

धीरे-धीरे शरद ऋतू का, हो जाता है शुभागमन।
सरवर कमलों से भर जाते, निर्मल होता उनका मन।।
प्रकृतिसुंदरी सजधज के अब, नये रूप में आती है।
फूलों छिटकी हरी साटिका, सबका चित्त लुभाती है।।46।।

बड़े-बड़े फूलों के गुच्छे, उसके केश सजाते हैं।
मधुलोभी समूह भौंरों के, गुन-गुन, गुन-गुन गाते हैं।।
शशि मुख यामा, स्वच्छ चाँदनी, हर्ष उमंगों वाली है।
मानों कहती भव्य आत्मा, कोई आने वाली है।।47।।

उन्निस-सौ, चौंतीस ईसवी, अक्टूबर बाईस रहा।
शरद पूर्णिमा लेकर आयी, अति हितकर संदेश अहा।।
वृक्ष-लतायें-पक्षी कहते, मौसम अतिशय धुला-धुला।
नर-नारी सब कहें परस्पर, मन है मिश्री घुला-घुला।।48।।

टिकैतनगर शोभा अति मनहर, शरद चाँदनी, शुभ्र निशा।
था निरभ्र आकाश पूर्णतः,सुप्रसन्न थी दिशा-दिशा।।
लगती प्रकृति दूध से न्हाई, मंद-मंद चल रहा पवन।
शशि किरणों से हर्षित होते, खिलते कुमुद-कुमुदनी वन।।49।।

शारद शशि की सकल कलायें, फैलाती हैं अमित प्रकाश।
चादर श्वेत ओढ़ लेते हैं, नगर-भवन, धरती-आकाश।।
कहते हैं इस रात सुधाकर, अमृतकण बरसाते हैं।
इसीलिये जन रखी चाँदनी, खीर प्रात उठ खाते हैं।।50।।

कहीं-कहीं पर चंद्र चाँदनी, घी-बूरा रख खाते लोग।
कहते दीर्घकाल सेवन से, भग जाते आँखों के रोग।।
नेत्र ज्योति की करें परीक्षा, सुई छिद्र में धागा डाल।
अगर सफल हों, नेत्र ठीक हैं, वृद्ध-युवा अथवा हों बाल।।51।।

पाठकवृन्द! चलें ऐसे में, कस्बा श्री टिकैतनगर।
छोटेलाल-मोहिनी देवी, दम्पति रहते श्रेष्ठी वर।।
पुण्यवन्त हैं, भाग्यवंत हैं, धार्मिकता जिनकी पहचान।
उनके घर हो रही बधाई, कन्या जन्मी गुण की खान।।52।।

कन्या अद्भुत, रत्न महत्तम, प्रसूतिगृह में हुआ प्रकाश।
मुख सुंदर, जैसे भू उतरा, शरद पूर्णिमा शशि आकाश।।
पैदा होते रोई न किंचित्, लक्षण महाविलक्षण हैं।
यह कन्या सामान्य नहीं है, ये ''देवी'' के लक्षण हैं।।53।।

चाँद गगन का अति अचरज में, क्या मेरी परछाई है।
पता नहीं यह कौन चंद्रिका, आज धरा पर आई है।।
मेरे अंक कलंक समाया, यह तो है निकलंक छवी।
मैं डूबूँगा, लेकिन इसकी, कीर्ति कौमुदी नहीं कभी।।54।।

बहुत समय तक गृह गवाक्ष से, कन्याश्री के दर्श किये।
फिर किरणों से शरच्चंद्र ने, पावन चरणस्पर्श किये।।
धन्य हुआ कहकर संकोचे, विनत भाव से गमन किया।
हर वर्ष आ नमन करूँगा, पूर्णचंद्र व्रत ग्रहण किया।।55।।

जब घर में बेटा होता है, पर्व मनाये जाते हैं।
अंग्रेजी बाजे बजते हैं, खूब नाचते-गाते हैं।।
धन-दौलत भी खूब लुटाते, याचक जाय न खाली है।
लेकिन कन्या अगर जन्म ले, बजे न फूटी थाली है।।56।।

किन्तु जीव जो पुण्य बाँध कर, पूर्व भवों से लाते हैं।
उनके जन्मकाल में हार्दिक, हर्ष मनाये जाते हैं।।
माता-पिता, कुटुम्बीजन सब, फूले नहीं समाये थे।
बहुत क्या कहें! टिकैतनगर ने, गीत खुशी के गाये थे।।57।।

यह खोटी परिपाटी कब से, और चली क्यों पता नहीं।
पर, जो हर्ष दिया यह बेटी, कवि तो सकता बता नहीं।।
लगे गूँजने घर औ आँगन, किलकारी सह-स्मित हास।
मुख छवि सुंदर, लख कर परिजन, हृदय समाया अति उल्लास।।58।।

जिनका मन उदास हो जाता, लड़की जन्मी सुनकर नाम।
इस लड़की के शुभलक्षण लख, उनके होते शुभ परिणाम।।
कहते ऐसी बेटी घर में, ले लेती गर जन्म हमार।
हम तो धन्य भाग्य हो जाते, तर जाते घर-घर-परिवार।।59।।

यथा चंद्रमा, सूरज, नदियाँ, वृक्ष-लताएँ किसी प्रकार।
भेद न करतीं, देतीं सबको, साम्यभाव से निज उपहार।।
तथा भेद न करें किसी विध, बेटा-बेटी मात-पिता।
मानों यह शिक्षा देने को, क्रमशः आते शशि-सविता।।60।।

छोटेलाल-मोहिनीदेवी, की कन्या पहली सन्तान।
भाग्यवती है, अपर लक्ष्मी, पल-पल इसका रखते ध्यान।।
अतिशय रूपवती सन्तति को, अपलक देखा करते लोग।
कहते, जब से जन्मी घर में, मिटे हमारे चिन्ता शोक।।61।।

गौरवर्ण, भालपट उन्नत, मुख जैसे शारद का चंद्र।
लोचन सुंदर, नीलकमल में, छिपकर बैठा कृष्ण मिलिन्द।।
नाक नुकीली, अधर लाल हैं, कर-पग छोटे मन मोहैं।
फूट रही शैशव की आभा , अंग-अंग अनुपम सोहैं।।62।।

चरण समय के रुकें कभी ना, प्रतिक्षण बढ़ते जाते हैं।
तथा लाड़ली इस कन्या को, हम भी बढ़ती पाते हैं।।
शुभ मुहूर्त काल आने पर, रखा गया पुत्री का नाम।
नाम रहा पहचान बाह्य की, अन्तः चेतन रहा अनाम।।63।।

"मैना" नाम रखा पुत्री का, सदा बोलती मीठे बोल।
सबका मन करती थी मोहित, रखती आँगन अमृत घोल।।
रहीं बालक्रीड़ाएँ ऐसी, मात-पिता का शंकित मन।
रुचते नहीं कभी मैना को, स्वर्ण रचित गृह के बंधन।।64।।

नाम न केवल सम्बोधन है, नियति बता देता है वह।।
'मैं'-'ना' घर में रह पाऊँगी, 'मैना' नाम बताता कह।।
अहंकार का है प्रतीक 'मैं', नहीं करेगी यह बाला।
भवकानन में रहे भटकता, अहंकार करने वाला।।65।।

ग्रह-नक्षत्र-तिथि आदि का, जातक पड़ता अमित प्रभाव।
ज्योतिषशास्त्र बताता सब है, होंगे कैसे जातक भाव।।
"शरच्चंद्र यह बतलाता है, जातकधारी सम्यग्ज्ञान।
भूतल पर जातक पायेगा, यशः कीर्ति, निर्मल सम्मान।।66।।

शुभ्र चाँदनी बतलाती है, ज्ञान क्षयोपशम दूध धुला।
खिले कुमुदवन भव्यमनों को, जातक देगा खिला-खिला।।
शारद शुभ्र चाँदनी जन्मा, कैसा होगा जातक भ्रात?
मिथ्यातम को दूर हटाकर, कर देगा सम्यक्त्व प्रभात।।67।।

स्वच्छ गगन में शांत चमकता, क्या कहता है हमसे चंद्र।
महाव्रती बन करके जातक, सब को देगा हर्ष अमंद।।
यथा चाँदनी शीतल होती, वैसे होंगे शांत विचार।
स्वच्छ और विस्तीर्ण गगन-सा, उसका होगा हृदय उदार।।68।।

मुख से निकले शब्द-शब्द में, होगा अक्षय अमृत वास।
उसके मुख मंडल के ऊपर, करेगा झिलमिल दिव्य प्रकाश।।
वर्तमान में से होकर ही, होता है भविष्य निर्माण।
वर्तमान से ही भविष्य का, बुधजन कर लेते अनुमान।।69।।

'मैना' नाम रखा पुत्री का, सबकी राजदुलारी है।
है सबकी आँखों का तारा, सबको प्राणों प्यारी है।।
नाम नहीं केवल संज्ञा है, इसमें रहता छिपा भविष्य।
आज न सही, कल तो निश्चित, प्रगटित होगा निहित रहस्य।।70।।

कार्यव्यस्ततावश जब माता, बिटिया खिला न पाती थी।
तब पलने में लेटी 'मैना', जब-तब रुदन मचाती थी।।
माता आती, दूध पिलाती, चुम्बन लेकर गाती थी।
प्रत्युत्तर में जननी मन को, 'मैना' किलक रिझाती थी।।71।।

धीरे-धीरे बढ़ती जाती, यथा दोज की चंद्रकली।
वैसे क्रमशः बड़ी हो गयी, 'मैनादेवी' नाम लली।।
''होनहार बिरवान के होते, चिकने पत्ते'' सत्य कथन।
उज्ज्वलतम भविष्य बतलाता, 'मैना' का सुंदर बचपन।।72।।

'ललना के लक्षण पलना में, दिख जाते' सब कहते हैं।
पग से चलती कहती 'मैना', पदविहार हम करते हैं।।
मैं महलों में नहीं रहूँगी, जाऊँगी संतों के संग।
क्रीड़ायें भी ऐसी करती, होता भरा विरागी रंग।।73।।

'मैना' नाम सार्थक करती, वाणी सबको भाती थी।
जो भी सुनता, अमृत लगता, जब 'मैना' तुतलाती थी।।
माता यदा आरती पढ़ती, पूजा करती, गाती थी।
छोटी 'मैना' साथ बैठकर, ताली खूब बजाती थी।।74।।

जा एकान्त बैठ पूजा का, खेल खेलती थी मैना।
साध्वी बनना, साधुजनों को, किस प्रकार भोजन देना।।
साधु-संत जब नगर पधारें, लाभ उठाना कर सत्संग।
स्वाध्याय नवनीत मिला जो, उसे बनाया जीवन अंग।।75।।

काल का पंछी उड़ता जाता, पता नहीं कुछ चल पाता।
प्रातः-सायं-रजनी आती, फिर प्रभात है आ जाता।।
इस प्रकार क्रमशः 'मैना' ने, वर्ष सातवाँ प्राप्त किया।
वर्ष आठवाँ जाते-जाते, लौकिक शिक्षा प्राप्त किया।।76।।

बुद्धि बड़ी विलक्षण इनकी, एक बार में सब कुछ याद।
ऐसी लगन कि क्षण भर 'मैना', करती नहीं व्यर्थ बर्बाद।।
हेडमास्टर बोला ''छोटे! बेटी सरस्वती-अवतार।
इससे आगे बढ़ा न कोई, सब लड़के हारे झकम्सार।।77।।

खतम हो गई लौकिकशिक्षा, आगे साधन कोई नहीं।
साध नहीं पूरी हो पायी, अतः साधिका रुकी नहीं।।
जैन पाठशाला में जाकर, धार्मिक शिक्षा लाभ लिया।
पाठ वहीं का वहीं याद कर, सबको विस्मय डाल दिया।।78।।

समय पे आना, समय पे जाना, पढ़-लिख तत्क्षण पूरा काम।
एकचित्तता गुरुमुख सुनना, नहिं प्रमाद-आलस का नाम।।
बुद्धि तीव्रता, लगनशीलता, विनयशीलता, अनुशासन।
मिलते हैं विरले छात्रों में, हर लेते शिक्षक का मन।।79।।

रहीं सदा दर्जे में अव्वल, सदा सहेली मात दिया।
सच पूछो तो इन्हीं गुणों ने, मैना जी का साथ दिया।।
पुस्तक पढ़ना, स्वाद न चखना, इसे नहीं कहते हैं ज्ञान।
किन्तु पढ़ा जो, उतरे जीवन, वस्तु तत्त्व होना पहचान।।80।।

इस अनुपम संतान जन्म दे, माँ मोहिनी का मातृत्व।
धन्य हो गया सभी तरह से, छोटेलाल का पितृत्व।।
अंग-अंग थी प्रकृति विहर्षित, टिकैतनगर की गली-गली।
पुत्र से बढ़कर हर्ष मनाया, जब यह चटकी प्रथम कली।।81।।

जैसी घूटी पिलाई जाती, वैसे लक्षण आते हैं।।
धीरे-धीरे वृद्धिंगत हो, अपना असर दिखाते हैं।।
''शुद्ध-बुद्ध हो, अलख-निरंजन, जग माया से रहितपना।''
माता से लोरी-सुन बालक, कुंदकुंद आचार्य बना।।82।।

माताश्री मोहिनीदेवी, विदुषी-धार्मिक-शिष्ट अती।
माँ गुण ''मैना'' रक्त समाये, वैसी हो गई बालमती।।
पद्मनंदिपंचविंशतिका, सुना-पढ़ा माँ गर्भदशा।
अतः धर्म अनुराग पूर्णतः, मैना देवी हृदय बसा।।83।।

प्रातः उठते ईशस्मरण, करतल तीर्थंकर दर्शन।
महामंत्र श्री णमोकार का, करना नवधा उच्चारण।।
कर स्नान जिनालय जाना, हर्षित होना लख अभिषेक।
गन्धोदक को शिरोधार्य कर, पूजन करना भाव समेत।।84।।

अनुशासन-आज्ञा का पालन, शिष्ट-सौम्य-सत्य व्यवहार।
मात-पिता से 'मैना' पाये, सहजरूप उत्तम उपहार।।
'मैना' बिटिया बड़ी चतुर थी, कार्य कठिन हों कैसे ही।
झटपट सुंदर कर देती थीं, माता कहती जैसे ही।।85।।

दादा-दादी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई की संतान।
प्रेमभाव से रहते हिलमिल, कभी न होती खींचातान।।
सेवाभाव, समर्पण, आदर, सहनशीलता, अतिथि सत्कार।
सकल गुणान्वित इस कुटुम्ब में, मैना पाये शुचि संस्कार।।86।।

सम्यक्त्व गुणोपेता मैना

समाहित विषयवस्तु

1. **परतंत्र देश में अशिक्षा का बोल-बाला।**
2. **टिकैतनगर में चेचक की महामारी।**
3. **सभी के द्वारा शीतलादेवी की पूजा-जल चढ़ाना।**
4. **मैना के भगवान शीतलनाथ की पूजन करने के लिए सभी को प्रेरित किया।**
5. **'मैना' ने भ्राता-सुभाष-प्रकाश चेचकग्रस्त।**
6. **मैना द्वारा शीतलनाथ की पूजन एवं रोगियों पर गंधोदक छिड़कना।**
7. **पं. मनोहरलाल जी सिलगन के विचारः ''ये अम्मा कोई देवी हैं''।**
8. **सभी द्वारा 'मैना' के सम्यक्त्व विचार की प्रशंसा।**
9. **मैना ने बड़े होकर अलौकिक इतिहास रचा।**
10. **मैना में 'उत्तम संस्कारों का बीजारोपण।**

काव्य पद

पूर्व समय परतंत्र देश में, शिक्षा का था नहीं प्रकाश।
अतः अधिकतर लोग अशिक्षित, रहते ग्रस्त अंध विश्वास।।
इस कारण जब चेचक निकले, या हो मोतीझरा बुखार।
लोग मनाते रहें देवता, नहीं कराते थे उपचार।।87।।

टिकैतनगर में चेचक फैली, घर-घर बालक थे बीमार।
''सुभाष-प्रकाश-अनुज मैना के, भी चेचक के हुए शिकार।।
परिजन-पुरजन जोर लगावें, चलो पूजने शीतल माई।
लेकिन 'मैना' ने बतलाई, जिन गंधोदक सही दवाई।।88।।

''शीतलनाथ करो प्रभु पूजा, गंधोदक छिड़को लाकर।
श्रीपाल का कुष्ठ मिटाया, मैना ने जिनपूजा कर।।
सेठ धनञ्जय ने पाया था, अपना पुत्र भक्ति के जोर।''
गृह फैली मिथ्यात्व श्रृंखला, क्रमशः मैना ने दी तोड़।।89।।

'मैना' प्रतिदिन भक्तिभाव से, करती जिनवर का पूजन।
करे प्रार्थना युगल अनुज को, स्वास्थ्य लाभ दें हे स्वामिन्।।
लाकर छिड़के गंधोदक को, बंधु युगल पर श्रद्धा संग।
कुछ ही दिन में, स्वास्थ्य लाभ कर, दोनों पाया रूप अनंग।।90।।

उधर पड़ौसी एक मात के, युवा पुत्र को खाया काल।
मिथ्या-मोह-अज्ञान के कारण, हुआ मात का यह था हाल।।
पद्मनंदिपंचविंशतिका, छहढाला से पाकर ज्ञान।
बाल्यकाल में ही 'मैना' ने, पाया सम्यक्दर्शन-ज्ञान।।91।।

मैना ने भगवान से कहा, भगवन्! लाज तुम्हारे हाथ।
करें धर्म-भक्तों की रक्षा, ठहरे आप त्रिलोकी नाथ।।
अपने व्रत का ध्यान रखें प्रभु, करें बंधुजन रोग शमन।
अटल-अचल श्रद्धान आप पर, आयी हूँ मैं चरण-शरण।।92।।

सिलगन जिला ललितपुर वासी, पंडित श्री मनोहरलाल।
मैना सम्यक् क्रिया देखकर, अनुभव से बोले तत्काल।।
"यह कन्या कोई देवी है, दिखती है होनहार बहुत।"
करवा चौथ, बायना देना, छुड़वाये इसने सब कुछ।।93।।

क्या है सत्य, असत्य कौन है, क्या है सम्यक्, क्या मिथ्यात्।
सत्य न समझे जिन ग्रथों से, फिर तुमने क्या समझा खाक।।
'मैना' दृष्टि महानुकीली, जैनधर्म सिद्धांत खरे।
जब भी कोई संकट आया, 'मैना' निर्णय सच निकरे।।94।।

'मैना' के मिथ्यात्व त्याग की, जैनाजैन प्रशंसा की।
सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान-चरित की, सब हार्दिक अनुशंसा की।।
सफल कार्य उसके ही होते, जिसका श्रद्धाभाव अटल।
सम्यक् दर्शन पहली सीढ़ी, अगर चाहिए मोक्ष महल।।95।।

व्यक्ति एक व्यक्तित्व बहुत से, सभी अनन्य असाधारण।
बाल ब्रह्मचारिणी मैना, सम्यक् अष्ट अंग धारण।।
अनादिकालीन मिथ्यात्व शत्रु से, निज परिवार बचाया है।
वीरमती फिर ज्ञानमती ने, जग शिवमार्ग दिखाया है।।96।।

'मैना' से बढ़ 'वीरमती' फिर, 'ज्ञानमती' सीढ़ी चढ़ना।
है अतिशय ही विस्मयकारी, सदी बीसवीं की घटना।।
उल्लेखनीय इतिहास बन गया, स्वर्ण-मणि-खचित जीवनवृत्त।
पढ़े पृष्ठ इतिहास मिला न, इससे कोई श्रेष्ठ चरित्र।।97।।

वैराग्य के अंकुर-१

समाहित विषयवस्तु

1. **जैन पाठशाला का वार्षिकोत्सव।**
2. **पंद्रह वर्षीय मैना का उत्सव में माँ के साथ जाना।**
3. **अकलंक और निकलंक नाटक का मंचन।**
4. **मैना पर ''नाटक का प्रभाव''-गृह बंधन में नहीं बँधने का निर्णय''**
5. **अपना निर्णय माँ को सुनाया।**

काव्य पद

पाठकवृन्द! चलें हम मिलकर, जैन पाठशाला प्रांगण।
जहाँ हो रहा संस्था के, "वार्षिक' उत्सव का आयोजन।।
साधारणजन को ये उत्सव, करते मात्र मनोरंजन।
किन्तु विशिष्ट, विवेकीजन का, उठ जाता इनसे जीवन।।98।।

धीरे-धीरे 'मैना देवी', आगे कदम बढ़ाती हैं।
समय बीतता जाता 'मैना', वर्ष पंचदश पाती हैं।।
दर्शकगण के मध्य मातृ संग, हम 'मैना' को पाते हैं।
'मैना' के जीवन में इससे, चार चाँद लग जाते हैं।।99।।

उपादान जब जाग्रत होता, लघुनिमित्त कर जाता काम।
वरना जीव भटकता रहता, पा नहिं पाता लक्ष्य मुकाम।।
संस्कारित 'मैना' का मन था, धर्म बीज को उत्तम क्षेत्र।
अप्रमत्त रहती जब चर्या, खुल जाते विवेक के नेत्र।।100।।

"अकलंक और निकलंक" का मंचन, तदा हुआ उत्सव के बीच।
यह निमित्त पाकर 'मैना' ने, त्यागा जगत् मोह का कीच।।
पाठकवृंद! शुरू होता है, देखो नाटक का मंचन।
तीर्थंकर श्री महावीर को, करते सब सादर वंदन।।101।।

श्री दिगम्बर जैन जिनालय, राजित थे मुनिराज श्री।
किसी भव्य दम्पति ने आकर, उनकी चरण वंदना की।।
शुभ विचार आया दम्पति मन, बोले मुनिवर कृपा करें।
हमें अठाई पर्व काल तक, व्रत ब्रह्मचर्य प्रदान करें।।102।।

करुणावंत श्री मुनिवर ने, व्रत आशीष प्रदान किया।
"ओम्" शब्द कहकर दम्पति ने, मुनिपद विनत प्रणाम किया।।
साथ में आये पुत्र युगल के, मन में जागे भाव महान।
श्री गुरुवर! हम दोनों को भी, यह पावन व्रत करें प्रदान।।103।।

दक्षिण कर आशीष दिया गुरु, बच्चों! करना धर्मप्रचार।
निर्भर है तुम जैसों पर ही, जैनधर्म-रक्षा का भार।।
पंख लगा कर समय उड़ गया, बालक दोनों हुए जवान।
इनका परिणय सुकरणीय है, मात-पिता जागे अरमान।।104।।

पुत्रों शिक्षा-पूर्ण हो चुकी, अब दोनों का करें विवाह।
नहीं पिताजी! हम न करेंगे, अपना जीवनवृक्ष तबाह।।
ब्रह्मचर्य व्रत करी प्रतिज्ञा, साक्षी श्री मुनिराज चरण।
केवल पर्व अठाई तक ही, किया तदा ब्रह्मचर्य वरण"।।105।।

नहीं पिताजी! नहीं था उसमें, सीमा का उल्लेख कहीं।
जीवनभर पालेंगे उसको, हम तो करें विवाह नहीं।।
यह क्या मात-पिता के उर पर, तुमने किया कुठाराघात।
अहो! हमारे अरमानों पर, मानों हुआ है उल्कापात।।106।।

"वंशवेलि अब बढ़ेगी कैसे, कैसे रहेगा जग में नाम।"
"नाम आपका करेंगे रोशन, करेंगे जग में सुंदर काम।।"
नयन अश्रु भर कर माता ने, ममता का जादू डाला।
तथा पिताजी लगे पिलाने, हृदय प्यार भर-भर प्याला।।107।।

लेकिन दृढ़व्रती पुत्रों पर, हुआ न इसका कोई असर।
बोले "निज कल्याण करेंगे, पंच महाव्रत धारण कर।।"
"पहले बेटों शादी कर लो, परम्परा निर्वाह करो।
तदनंतर दीक्षा लेकर के, आतम का कल्याण करो"।।108।।

विनय सहित अकलंक ने कहा-"नहीं, पिताजी ठीक नहीं।
पहले कीचड़ में पग करना, फिर धोना यह नीति नहीं।।
इससे तो उत्तम यह होगा, हम कीचड़ में करें न पग।
दीक्षा लेकर मुनिव्रत पालें, अपना लें शिवपुर का मग"।।109।।

श्री अकलंक के एक वाक्य ने, 'मैना' जीवन बदल दिया।
"मैं गृह बंधन नहीं बँधूंगी, तत्क्षण दृढ़ संकल्प किया।।"

उचित समय, उत्तम निर्णय की, जिसमें क्षमता होती है।
वही आत्मा जीवनपथ में, बीज सफलता बोती है।।110।।

'मैना' माँ से कहा कान में, "यह संसार कठिन कारा।
नहीं फंसूँगी गृह बंधन में, चाहूँ भव से छुटकारा।।
करना है कल्याण स्वयं का, व्यर्थ न खोना मानव भव।"
माँ मोहिनीदेवी ने सुन, किया तत्त्व हृदयंगम सब।।111।।

माँ ने सोचा "यह बच्ची है, भोली है, नादान अभी।
जब उत्तम अवसर आयेगा, समझा दूँगी, बात सभी।।
अथवा जब यौवन आयेगा, समझ स्वयं आ जायेगी।
बहुत कठिन स्नेह का बंधन, तोड़ नहीं यह पायेगी।।112।।

'पद्मनंदिपंचविंशतिका', का 'मैना' स्वाध्याय किया।
पढ़ 'देहाष्टक' अशुचि देह का, सच्चा परिचय प्राप्त किया।।
स्वाध्याय वह ही कहलाता, जिसका आतमहित उपयोग।
नाटक-ग्रंथ देख-पढ़ 'मैना', किया आत्महित सत् उद्योग।।113।।

ज्ञान नहीं रक्षित ग्रंथों में, किन्तु आत्मा का है धन।
अतः जरूरी ज्ञान प्रकट हो, बसे आचरण के आँगन।।
पढ़ते-पढ़ते 'शास्त्र-व्यक्ति' की, देह जीर्ण हो जाती है।
किन्तु, हन्त! मन बसी आत्मा, जीर्ण नहीं हो पाती है।।114।।

'मैना' पढ़ती नहीं थी केवल, किन्तु मनन भी करती थी।
जो अन्तस् को अच्छा लगता, उसको वह आचरती भी।।
माता-पिता, सकल परिजन ने, जब विवाह पर डाला जोर।
लेकिन 'मैना' एक न सुनी, देखा नहीं उधर मुख मोड़।।115।।

औरों के रोके से सूरज, कभी न पथ से रुकता है।
कैसे भी तूफाँ आये पर, गिरि सुमेरु न डिगता है।।
झरने की बहती धारा को, कोई रोक न पाता है।
जिसमें होती ऐसी दृढ़ता, वही प्रगति कर पाता है।।116।।

यह प्रणम्य निर्णय 'मैना' का, बना जगत् को महदादर्श।
ब्रह्मचर्य-संयम द्वारा ही, आत्मा पाती है उत्कर्ष।।
जगत् वंद्य पावन निर्णय की, भूरि प्रशंसा करते हम।
चलते हैं 'मैना' के घर पर, बढ़ रहे त्याग के जहाँ कदम।।117।।

वैराग्य के अंकुर-२

समाहित विषयवस्तु

1. **एक दिन ग्वालिन घी का घड़ा लेकर आयी।**
2. **मैना ने घी में मरी चीटियाँ देखकर घी वापस किया।**
3. **मैना द्वारा आज से बाजार का घी एवं सभी वस्तुएँ त्याग।**
4. **मैना द्वारा नीरस भोजन।**
5. **हम भी मैना से शिक्षा लें।**

काव्य पद

टिकैतनगर तो अवधक्षेत्र के, भूमि भाग में आता है।
द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव भी, अपना असर दिखाता है।।
दीक्षा ले कल्याण किया था, ब्राह्मी-सुंदरि दोनों ने।
फिर क्यों 'मैना' देर लगाये, व्रती-आर्यिका होने में।।118।।

एक दिवस ग्वालिन लायी थी, देशी घी मुख बाँध घड़ा।
ऊपर से तो स्वच्छ-सुगंधित, दिखता था स्वादिष्ट बड़ा।।
किन्तु किया जब मुख उद्घाटन, भरा चीटियों के शव से।
घी की ऐसी देख दुर्दशा, गृह सदस्य सब विस्मित थे।।119।।

'मैना' का तो बुरा हाल था, लख हिंसा मन हुआ विदीर्ण।
भू-तल पर आँसू की लड़ियाँ, मोती-सी हो गयीं विकीर्ण।।
भवसागर संतरण सेतु बन, करना जिसे जीव उद्धार।
वह कैसे भोजन-पानी में, कर सकता हिंसा स्वीकार।।120।।

'मैना' बोली ''नहीं चाहिये, यह घी वापस ले जाओ।''
'इसे छान कर अन्य को दूँगी, कल तुम अच्छा घी पाओ।।'
''अगर कहीं तुम यही छान कर, हमको लाओगी दादी।
तदा हमारे दयाधर्म की, हो जायेगी बर्बादी''।।121।।

'मैना' माँ से सविनय बोली'', त्याग आज से घृत बाजार।
मैं भोजन रूखा कर लूँगी, नहीं चाहिए सरसाहार।।

मात्र नहीं घी, सभी वस्तुयें, त्यागी मैं बाजार बनीं।
घर में ही तैयार सभी हो, शुद्ध-स्वच्छ हों धुली-छनी।।122।।

सब धर्मों में श्रेष्ठ धर्म है, दया-अहिंसा-करुणा-प्रेम।
किसी जीव को नहीं सताना, चिन्तन करना सबकी क्षेम।।
भोजन-पानी करे प्रभावित, मन-वाणी-आचार-विचार।
अतः उचित जीवन स्वीकारें, वस्त्रपूत जल, शाकाहार।।123।।

वस्तु बजारू खायें न कुछ भी, अशुद्ध-अभक्ष्य-अस्वस्थपना।
नहिं मर्यादित, जीवराशिशव, बिना छना जल, रात्रि बना।।
दूध-दही-मिष्ठान्न-तेल-घृत, पिसे मसाले त्याग करें।
दया हृदय को यही उचित है, दिवा असन स्वीकार करें''।।124।।

बालवयस इतना संवेदन, विवेक-जागृति-संयम-त्याग।
पहले के संस्कार महत्तम, लायी संग 'मैना' बड़भाग।।
सुप्त बीज को मात मोहिनी, सिंचित कर वातास दिया।
काललब्धि पा हुये अंकुरित, अब विरक्ति का रूप लिया।125।।

'मैना' नीरस भोजन करती, मन रहता अति तोष भरा।
सच्चा त्याग यही कहलाता, रहता नहीं विकल्प जरा।।
आकुल-व्याकुल वह होता है, जिस मन होता मोह निवास।
मोह मनुज का प्रबल शत्रु है, कर देता जीवन का नाश।।126।।

धन्य-धन्य हैं 'मैनादेवी', धन्य-धन्य है उनका त्याग।
जननी-जनक धन्य हैं उनके, जिनसे पोषित रहा विराग।।
धन्य-धन्य हम लोग सभी हों, संयम-त्याग प्रशंसा कर।
और एक दिन दृढ़ प्रतिज्ञ हो, बतलायें उस पर चलकर।।127।।

अधिक नहीं तो इतना कर लें, छोड़ें तीन महा मक्कार।
सप्त-व्यसन-रात्रि का भोजन, जल अनछना, माँसाहार।।
अण्डा-मछली-शीत पेय सब, फास्ट फूड न ग्रहण करें।
सच्चे देव-गुरू का पूजन, जिनवाणी का मनन करें।।128।।

स्वप्न संकेत

समाहित विषयवस्तु

1. **स्वप्न संसार-विभिन्न मत।**
2. **मैनादेवी ने स्वप्न देखे।**
3. **स्वप्नों का फल-साध्वी जीवन सुन-पिता चिंतित, मैना प्रसन्न।**
4. **एक दिन मैना ने माता से कहा-मैं विवाह नहीं करूँगी।**
5. **माता का समझाना।**
6. **मैना द्वारा दृढ़ संकल्प दुहराना।**

काव्य पद

स्वप्न शास्त्र हमको बतलाता, आगे होने वाला जो।
पहले ही संकेतित होता, जब निद्रा में जाते सो।।
शुभ या अशुभ कौन-सा सपना, इस पर भी हम करें विचार।
तीर्थंकर माता ने देखे, सोलह सपनों का संसार।।129।।

हाथी-घोड़ा-सिंह देखना, बतलाता होना यशवान।
श्वेत सर्प से धन मिलता है, गजारोह ऐश्वर्य महान्।।
स्वर्ण-रजत-पात्र में पायस, खाना देता धन भरपूर।
शिर-दाढ़ी के केश कटाना, कर्म भार करता है दूर।।130।।

दाँत-हाथ-कान का कटना, कहता मृत्यु या कि धननाश।
शुष्क वृक्ष दर्शन बतलाता, महादुःख सम्पूर्ण विनाश।।
कांटों पर सोना यदि देखा, तुम्हें लगेगा झूठा दोष।
शुभ दर्शन कर फूल न जाना, नहीं अशुभ-लख खोना होश।।131।।

प्रथम प्रहर में स्वप्न जो देखा, एक वर्ष में देगा फल।
द्वितिय प्रहर का अष्ट माह में, तृतीय प्रहर त्रैमास सकल।।
चतुर्थ प्रहर स्वप्न जो देखा, इसमें लग जाते दश दिन।
सूर्योदय से पूर्व स्वप्न का, फल मिल जाता उस ही क्षण।।132।।

यह तो कथन हुआ शास्त्रों का, अब सुन लो अनुभव की बात।
जो विचार गहरे मन बैठा, वह ही दिख जाता है रात।।
अतः रखें मन अपना निर्मल, प्रेम-दया-उपकार करें।
प्रभु सुमरन कर शैया-त्यागें, प्रभु सुमरन कर ग्रहण करें।।133।।

दिन जाता है, संध्या आती, संध्या जाती, आती रात।
रात बीत जाती स्वप्नों में, आ जाता है पुनः प्रभात।।
इस प्रकार मानव जीवन का, ओस बिन्दु ज्यों होता अंत।
किन्तु एक क्षण व्यर्थ न खोते, सम्यक्दृष्टी श्रावक-संत।।134।।

एक निशा 'मैनादेवी' ने, प्रभु सुमरन कर किया शयन।
रजनी बीती सुख-निद्रा में, शेष रही बस अल्प रयन।।
अंत प्रहर 'मैना' ने देखे, उत्तम-अद्भुत सपने चार।
प्रातकाल परिवारजनों संग, इन सपनों पर हुआ विचार।।135।।

"श्वेत वस्त्र मैं, पूजन थाली, ले मंदिर कर रही गमन।
साथ-साथ चल रहा है मेरे, पूर्ण चंदमा नील गगन।।
मेरे ऊपर, निकट ही मेरे, खूब चाँदनी छिटक रही।
और कहीं अन्यत्र न जाती, ऊपर-ऊपर मटक रही"।।136।।

सपने लख आह्लादित 'मैना', प्रातकाल प्रभु किया नमन।
स्नापित हो गई जिनालय, सोत्साह की प्रभु पूजन।।
फिर भाई कैलाश से कहे, जो देखे थे सपने चार।
"साध्वी महा बनेंगी जीजी, दश दिश होगा यशः प्रसार"।।137।।

पूज्य पिताश्री-छोटेलाल जी, चिन्तित स्वर में बोले यों।
घर पिंजड़े को छोड़ के मैना, उड़ जायेगी जल्दी क्यों।।"
माता-पिता, भाई-भगिनी का, फल विचार चित हुआ उदास।
पर मैना के रोम-रोम से, फूट पड़ा अनुपम उल्लास।।138।।

सबकी बात सुनी मैना ने, खुद भी गलत विचार किया।
सपनों भेजा खुला निमंत्रण, मैना ने स्वीकार किया।।
"मानव तन, उत्तम कुल पाया, जिनवाणी की मिली शरण।
मैं तो सफल करूँगी जीवन, करके उत्तम व्रताचरण"।।139।।

विनय भाव से मैना देवी, माता से बोलीं उस रोज।
''विवाह पंक में नहीं फँसूंगी, करें पिता ना वर की खोज।।
कर्म विनाशी जिनवर दीक्षा, पंच महाव्रत धारण कर।
आतम का कल्याण करूँगी, गुरुवर के चरणों जाकर''।।140।।

मैना जी का निर्णय सुनकर, माता का दिल टूट गया।
लगा कि जैसे माँ-बेटी के, प्रेम का दामन छूट गया।।
बोलीं ''बेटी सहज न इतना, दीक्षा का धारण करना।
शूलों से भी कठिन कार्य है, पंच महाव्रत आचरना।।141।।

नारी जीवन अबला का है, रक्षा बोलो कैसे हो।
अतः रहो घर के ही भीतर, पूर्व परम्परा जैसे हो।।
शादी करके, मेरे जैसी, घर में पूजा-पाठ करो।
दान और स्वाध्याय के द्वारा, अपना जीवन सफल करो।।142।।

लेकिन जिसने ठान लिया हो, करना अपना पूर्ण विकास।
वह अबला, प्रबला कर देती, बाधाओं का सत्यानाश।।
और एक दिन पौरुष पाकर, जय कर लेती कर्म किला।
आतम से परमातम बनकर, शोभित होती सिद्धशिला।।143।।

मुक्तक

नैराश्यमद में डूबते, नर के लिए नव आस हो।
कोई अलौकिक शक्ति हो, अभिव्यक्ति हो विश्वास हो।।
कलिकाल की नव ज्योति हो, उत्कर्ष का आभास हो।
मानो न मानो सत्य है, तुम स्वयं में इतिहास हो।।

आचार्य श्री देशभूषण जी का टिकैतनगर में शुभागमन

समाहित विषयवस्तु

1. **संत आगमन से नगर हर्षित।**
2. **मैना द्वारा प्रथम बार मुनिदर्शन।**
3. **मैना ने आचार्यश्री को अपनी प्रतिभा से प्रभावित किया।**
4. **आचार्यश्री का केशलोंच देख मैना के मन में भी केशलोंच के भाव।**
5. **आचार्यश्री का विहार-साथ में जाने का मैना का विचार।**
6. **मैना द्वारा घर पर ही छहढाला, रत्नकरण्ड आदि कण्ठस्थ करना।**
7. **आचार्यश्री के शुभाशीष से घर पर ही साधना करना।**

काव्य पद

संत राष्ट्र के भाग्यविधाता, पथदर्शक, मंगलकर्ता।
प्रेम बरसता है नयनों से, वाणी से अमृत झरता।।
जग कल्याण वास करता है, उनके शुभाशीषमय हाथ।
निम्बवृक्ष चंदन हो जाता, यदि रहता चंदन के साथ।।144।।

गंगा पाप शमन करती है, चंद्र शमन करता है ताप।
कल्पवृक्ष हर लेता सबका, दुःख-हीनता का संताप।।
सबको हरले युक्ति न कोई, हमें दिखाई देती है।
किन्तु अकेली संत की संगति, तीनों को हर लेती है।।145।।

संत नगर में जब आते हैं, आ जाता है स्वतः बसंत।
सुख-संस्कृति मुस्काने लगती, हो जाता पापों का अंत।।
संत जगा देते सोतों को, जागों को कर देय खड़ा।
खड़े हुओं की नस के भीतर, देते तेज खून दौड़ा।।146।।

श्री आचार्य देशभूषण जी, टिकैतनगर जब पधराये।
जैन दिगम्बर मुनि के दर्शन, प्रथम बार मैना पाये।।
संत हमारे नगर पधारे, यह सौभाग्य हमारा है।
पा उनका सान्निध्य मोह का, मिटा सघन अंधियारा है।।147।।

यथा दिवाकर के उगने से, खिल जाते हैं पंकज-वन।
तथा यतीश्वर के दर्शन से, खिले सकल भव्यों के मन।।
मैना ने माता संग जाकर, दर्शन-प्रवचन लाभ लिया।
सहस्रनाम स्तोत्र सुना कर, गुरु अमृत उपहार दिया।।148।।

सहस्रनाम स्तोत्र अलौकिक, सकल मनोरथ करता पूर्ण।
प्रकृति तीर्थंकर बंध-सुकारण, करता कर्म प्रकृतियाँ चूर्ण।।
इसका प्रतिदिन पाठ करो तुम, आचार्यश्री आशीष दिया।
सुन मैना के पाठ भक्ति से, प्रतिदिन करना शुरू किया।।149।।

आचार्यश्री के केशलुंच का, हुआ भव्यतम आयोजन।
जैनाजैन सकल जनता का, पुलकित हुआ विरागी मन।।
मन ही मन मैना यों बोली, कृपा करो मुझ पर भगवन्।
अचिर दिवस आये जीवन में, मैं भी करूँ केशलुंचन।।150।।

डूब गई चिन्तन में मैना, ऐसा दिन कब पाऊँगी।
तोड़ सकल जग द्वंद्व-मोह, मैं निज आतम को ध्याऊँगी।।
जिनवर दीक्षा धारण करके, पंचमहाव्रत धारण कर।
आतम का कल्याण करूँगी, श्रीगुरु चरणों में जाकर।।151।।

रमता जोगी, बहता पानी, आचार्यश्री का हुआ विहार।
धरती-अम्बर लगे गूंजने आचार्यश्री की जय-जयकार।।
मैना का मन चाह रहा था, आचार्यश्री के संघ चलूँ।
येन-केन-विध गुरुचरणों में, जाकर जिनवर दीक्षा लूँ।।152।।

काल लब्धि बिन कार्य न होता, विद्वज्जन का सही कथन।
गृह पिंजड़े में बंद रह गई, मैना देवी मारे मन।।
स्त्री पर्याय की निंदा करती, पूरी देर रोती-रोती।
दृढ़ प्रतिज्ञ संघ मिल जाती, अगर कहीं मैना होती।।153।।

आचार्य श्री देशभूषण का, धर्मवृद्धिमय पा आशीष।
रत्नकरण्ड, कण्ठस्थ कर लिया, ली छहढाला मैना सीख।।
जिसको गहरी प्यास लगी हो, कर लेता है कूप खनन।
जिज्ञासू घर में रहकर भी, कर लेता है ज्ञानार्जन।।154।।

जैसे मिट्टी पानी पाकर, मृदुता को पा जाती है।
शास्त्रों के अभ्यास से वैसे, बुद्धि प्रखर हो जाती है।।
पद्मनंदिपंचविंशतिका, मात दिये धार्मिक संस्कार।
सबने मिलकर मैना जी के, खोले मुक्तिमार्ग के द्वार।।155।।

आचार्यश्री के शुभाशीष से, रहने लगीं साधनारत।
प्रातसामायिक, जिनवर पूजन, शुद्ध असन का पाला व्रत।।
मुझे एक दिन गृह पिंजरे से, निश्चित ही उड़ जाना है।
यही मनौती करके मैना ने, यह नियमित व्रत ठाना है।।156।।

अनुज रवीन्द्र की वय दो वर्ष थी, खाता-पीता मैना हाथ।
हिला-मिला था पय-पानी ज्यों, सोता था मैना के साथ।।
जीजी कहीं चली न जाये, आँचल रखता हाथ गहे।
रोने लगता यदि सुन लेता, जाने के भी शब्द कहे।।157।।

माता-पिता, भाई-भगिनी सब, महामोह में डूबे थे।
पर विरागिनी मैना के पल, कटते ऊबे-ऊबे से।।
नाथ! परम करुणा के सागर, गृह-कूप से निरवारो।
करावलम्ब देकर के स्वामिन्। जगत्महोदधि से तारो।।158।।

व्याकुल पक्षी पंख फड़फड़ा, चाह रहा था उड़ जाना।
किन्तु खड़ी ऊँची दीवारें, रोक रहीं बाहर जाना।।
बाहर नहीं सुरक्षा कुछ भी, खड़े भेड़िये खाने को।
ऐसे में वैराग्य विवश था, मन मसोस रह जाने को।।159।।

तृतीय खण्ड

सप्तम प्रतिमा-ब्रह्मचर्य व्रत धारण, सन् १९५२

समाहित विषयवस्तु

1. आचार्य श्री देशभूषण का बाराबंकी में चातुर्मास।
2. मैना का आचार्यश्री के दर्शन करने अनुज कैलाश के साथ जाना।
3. रूढ़ी तोड़कर संयम धारण करने का प्रबल पुरुषार्थ।
4. मैना का पिंजरे से उड़ना, फिर नहीं लौटना।
5. आचार्यश्री का केशलोंच उत्सव।
6. माता-पिता द्वारा बार-बार घर चलने का आग्रह।
7. 'मैना' द्वारा अपना केशलोंच शुरू करना।
8. पिताजी का अन्यत्र जाना और माता का मूर्च्छित हो जाना।
9. मैना द्वारा मंदिर जाना और व्रतग्रहणपर्यंत घर तथा चतुराहार का त्याग।
10. मंदिर मे रात भर माँ-बेटी का वार्तालाप।
11. अगर आप मेरी सच्ची माता हैं तो व्रत धारण की अनुमति दें, मेरा उपकार करें।
12. माता द्वारा स्वीकृति और स्वयं के उद्धार का निवेदन।
13. प्रातःकाल आचार्यश्री से सप्तमप्रतिमा के व्रतग्रहण।
14. शरद पूर्णिमा-जन्म और संयम का एक ही दिन।
15. आचार्यश्री के प्रवचन।
16. व्रत ग्रहण की घर-समाज पर प्रतिक्रिया।

काव्य पद

टिकैतनगर से साठ मील है, बाराबंकी शुभ स्थान।
आचार्य श्री देशभूषण का, उस ही ओर हुआ प्रस्थान।।
चातुर्मास काल नियराया, किया निवेदन सकल समाज।
धर्मलाभ का अनुपम अवसर, हमको देवें श्री महाराज।।160।।

आचार्य श्री देशभूषण जी, करुणा सागर संत महान्।
भारतगौरव, विद्यालंकृत, आचार्य रत्न, अतिशय विद्वान्।।
सकल समाज निवेदन को सुन, सब पूर्वापर किया विचार।
सन् उन्नीस बावन ईसा का, चातुर्मास किया स्वीकार।।161।।

चिनगारी ज्वाला बन जाती, जब मिल जाता पवन निमित्त।
सतत साधना-श्रुताभ्यास से, हुआ शुद्ध मैना का चित्त।।
समाचार मैना तक पहुँचे, बाराबंकी चातुर्मास।
फिर क्या था वैराग्य का धनुष, शोभित हुआ हृदय आकाश।162।।

निर्मम-निर्मोही-मैना मन, गृह-तन-भोग विरत संसार।
पल-पल काटा एक वर्ष-सा, थमता नहीं हृदय का ज्वार।।
होते पंख अगर उड़ जाती, जाती गुरुवर चरण-शरण।
कहती जिनवर दीक्षा दे दो, मिटे जन्म-मृतु भव भ्रमण।।163।।

माँ-मन होता मोम-सा कोमल, दयापूर्ण, ममता का कोष।
सुखी मानती सदा स्वयं को, जिससे हो सन्तति संतोष।।
मैना ने रट लगा रखी थी, दर्शन करने जाना है।
आचार्यश्री ने दिये पाठ जो, उनको मुझे सुनाना है।।164।।

पिघली ममता से अनुमति पा, कैलाश अनुज को लेकर साथ।
पहुँची मैना गुरुचरणों में, बोली कृपा करो मुनिनाथ।।
अनादिकाल से भव भ्रमण में, फँसी हुई हूँ बुरी तरह।
तारण-तरण, पोत भव सागर, मुझे बचा लो किसी तरह।।165।।

तोता जब उड़ता पिंजरे से, पुनः लौटकर नहिं आता।
मैना ने गृह-त्याग दिया अब, कोई नहीं लौटा पाता।।
रहने लगीं वहीं अब मैना, आहारदान, श्रुतज्ञान निमित्त।
कैलाश अनुज को पड़ा लौटना, करते रुदन, दुखी हो चित्त ।166।।

तदा काल नारी का जीवन, अबला भरी कहानी था।
आँचल में था दूध और, आँखों में प्रासुक पानी था।।
नहीं सयानी क्वांरी कन्या, घर से बाहर जा सकती।
एक गाँव से, गाँव दूसरे, जाये उसकी क्या हस्ती।।।167।।

पर, मैना ने रूढ़ि तोड़ दी, संयम के सोपानों चढ़।
महिमा मंडित किया नारि को, साहस से आगे बढ़कर।।
नारी तो है नर से भारी, पुण्य कथन चरितार्थ किया।
संयम स्यंदन संचालन कर, जीवन का पूर्णार्घ दिया।।168।।

आदि-काल में ब्राह्मी-सुंदरी, जो प्रस्तुत आदर्श किया।
अनंतमती चंदनबाला ने, जिसको आगे बढ़ा दिया।।
उसी महत्तम संयम पथ को, मैना जीवित किया पुनः।
फलस्वरूप मिल रहीं देखने, व्रती-साधिकाएँ अधुना।।169।।

समय का पंछी उड़ा दूर तक, बीत गये दो-तीनेक माह।
रवि की किरणें मंद-मंद थीं, पर मैना मन था उत्साह।।
आश्विन शुक्ल चतुर्दशी आयी, केशलुंच मुनि उत्सव आज।
टिकैतनगर दरियाबादादिक, से जुड़ आई सकल समाज।।170।।

मात-पिता भी आये उनके, मैना बोली वचन संभार।
दीक्षा मुझे दिला दें गुरु से, होगा यह मेरा उपकार।।
अष्टमूलगुण पास नहीं हैं, गुरु साक्षी व्रत लिया नहीं।
अतः एकदम दीक्षा देने, का कोई औचित्य नहीं।।171।।

चलो! चलो! घर ज्यादा आग्रह, करने लग गए मातपिता।
केशलुंच प्रारंभ कर दिया, गुरुवर साक्षी वहीं तदा।।
अतिशय भाव विशुद्धि आई, कोई रोक न पाया है।
पिता गये अन्यत्र क्षेत्र तज, माँ मूर्च्छा वर पाया है।172।।

जितने मुँह उतनी थीं बातें, भव भ्रमण है एक बला।
मानव तन को सार्थक करने, संयम धारण श्रेष्ठ कला।।
नाबालिग लड़की को रोको, जल्दी लाओ पुलिस बुला।
करो वही जो पूर्ण उचित हो, पहले तौलो न्याय तुला।।173।।

इसी मध्य आई कुछ बाधा, मैना ने पथ किया चयन।
और अन्त पहुँची जिनमंदिर, प्रभु सम्मुख यों कहे वयन।।
जब तक मुझको मिलें नहीं व्रत, त्याग किया मैं चतुराहार।
घर जाने का त्याग है मेरा, प्रभु उपसर्ग निवारण हार।।174।।

देख केशलुंचन गुरुवर का, मैना ने भी किया शुरू।
अपना केशलोंच करने को, शक्ती पाई देख गुरू।।
उनका साहस देख-देख कर, जनता में खलबली मची।
रोको रोको इस कन्या को, यह है इसकी नासमझी।।175।।

शांत हो गया कुछ क्षण में सब, केशलोंच किया आचार्यश्री।
केशलुंच का क्या महत्त्व है, सुष्ठु हुआ उपदेश तभी।।
दिशा-दिशा से आये पक्षी, लौट गये सब अपने घर।
"अहो! लौह बाला विरागिनी, अमर रहे" कहते इक स्वर।।176।।

वेदी सम्मुख बैठी मैना, प्रभु से करे प्रार्थना यों।
तीन लोक के नाथ आप हैं, मेरी अरज न सुनते क्यों।।
ध्यान लगाकर सुन लो स्वामी, हाथ जोड़ सविनय कहती।
दुःखों से छुटकारा दे दो, हार गई सहती-सहती।।177।।

महामंत्र का जाप करे कभी, दुःख हरण विनती पढ़ती।
संकटमोचन स्तुति द्वारा, बार-बार विनती करती।।
प्रभु के सम्मुख लगन लगाये, बीत गया बहुतेरा काल।
अहो! निशा के नौ-दश बज गये, माता ने समझाया बाल।।178।।

बेटी उठो! चलो घर अपने, करूँगी वैसा, तुम चाहो।
कौन मात चाहेगी ऐसा, मेरी बेटी सुखी न हो।।
पहुँची वहाँ, जहाँ ठहरी थी, चला रात्रि भर वार्तालाप।
पहलू हुए उजागर सब ही, माँ मन लगी विरागी छाप।।179।।

पाठकवृंद चलें हम सब ही, सुनें विरागी के संवाद।
जिनको हम पढ़ते पुराण में, आज उन्हीं को कर लें याद।।
अप्रमत्त रह जम्बूस्वामी, फँसे नहीं भोगों के जाल।
तथा विरागी मैना देवी, फँसी न बैरी राग-कराल।।180।।

देखो बेटी! पिता तुम्हारे, दुख में पागल कहाँ गये।
पता नहीं उनका क्या होगा, हम तो विधि से छले गये।।
मोह कर्म ही तो अनादि से, हमको जग में घुमा रहा।
जिसका जो होना सो होगा, मुझे न कोइ विकल्प रहा।।181।।

पहले बेटी घर में रहकर, करो साधना अरु अभ्यास।
सफल रहो तो, संघ में आकर, फिर रहना गुरु चरणोंपास।।
कल की बात व्यर्थ है माते, कल को किसने जाना है।
कल के विश्वासी अज्ञों को, शेष रहा पछताना है।।182।।

माँ की ममता बिलख-बिलख कर, आँसू लगी बहाने जब।
ज्ञानपूर्ण शब्दों के द्वारा, मैना ने समझाया तब।।
माता-पिता, पुत्र-पुत्री सब, झूठे रिश्ते-नाते हैं।
अनादिकाल से बनते-मिटते, यों ही आते-जाते हैं।।183।।

देखो बेटी! भाई तुम्हारा, वह रवीन्द्र अति छोटा है।
वह तो हँसना भूल गया है, हरदम रोता-रोता है।।
जीजी बिना जियेगा कैसे, तुम्हीं बता मेरी मैना।
कुसुम हृदय वज्र बन बोली-मैं तो कुछ भी जानूँ ना।।184।।

अगर आप सच्ची माता हैं, तो मेरा उपकार करें।
व्रतधारण की अनुमति दे, मम जीवन का उद्धार करें।।
ममता बदल गई समता में, लिखी स्वीकृति कागज पर।
मेरी बेटी जो व्रत माँगे, वह दे दें आचार्यप्रवर।।185।।

विराग और राग की वर्षा, लगी बरसने नयनों से।
मंगलमय हो पंथ तुम्हारा, ममता बिखरी वयनों से।।
जैसे तुझको पार लगाने, तेरा कहना माना है।
वैसे मुझे भी मोक्षमार्ग पर, तुझको ही ले जाना है।।186।।

ब्रह्ममुहूर्त हुआ यह निर्णय, हुआ क्रियान्वित प्रातः काल।
ब्रह्मचर्य व्रत सप्तमप्रतिमा, गुरु से ग्रहण करी तत्काल।।
देखो, यह कैसा सुयोग है, योग मिलाया श्री भगवन्।
शरद पूर्णिमा जन्म दिवस है, वही रहा दीक्षा का दिन।।187।।

पुनर्जन्म प्राप्त कर मैना, नूतन जीवन शुरू किया।
गुरु चरणों के सन्निधान में, गृह का भी परित्याग किया।।
रोते रहे मोह के पुतले, पर मैना कुछ दिया न ध्यान।
बिन विरक्ति, मोह के त्यागे, हो नहिं सकता निज कल्याण।।188।।

चकाचौंध के इस युग में, जब नृत्य वासना करती है।
है आश्चर्य महा मैना, ब्रह्मचर्य को धारण करती है।।
वही वीर अति, वही धीर अति, कहती है उसकी गाथा।
बालयोगिनी उस मैना को, सभी नमाते हैं माथा।।189।।

जब प्रातकाल के आठ बजे, आचार्य संघ मण्डप आया।
तब श्रोताओं ने मैना को, श्वेत साटिका में पाया।।
हर श्रोता मन जिज्ञासा थी, कल का क्या परिणाम हुआ।
तब श्वेत साटिका ने सबकी, शंका को पूर्ण विराम दिया।।190।।

जनसमूह अति भारी था, कल की हलचल मन मची हुई।
मात-पिता, भाई-भगिनी, मन राग की मेंहदी रची हुई।।
पर मैना मन समता थी, ज्यों शांत सरोवर होता है।
शरद निशा का पूर्ण चंद्र, उसमें प्रतिबिम्बित होता है।।191।।

आचार्यश्री के प्रवचन का, नहिं शब्द छूटने पाता था।
कर्ण अंजलि से मन में, सीधा प्रवेश कर जाता था।।
मान सरोवर का हंसा, ज्यों मोती चुग सुख पाता है।
त्यों बालयोगिनी मैना को भी शब्द-शब्द मन भाता है।।192।।

जैसे ग्रह-नक्षत्र सभी, सूरज की परिक्रमा करते हैं।
वैसे ही व्रतधर्म आदि, ब्रह्मचर्य के भीतर रहते हैं।।
ब्रह्मचर्य तो अंक सदृश है, और सकल व्रत शून्य समान।
ब्रह्मचर्यबिन सकलव्रतादिक, रह जाते हैं शून्य प्रमाण।।193।।

ईसा सन् उन्नीस सौ बावन, असौज शुक्ल पूर्णिमा जान।
शरदपूर्णिमा पर्व स्वयं में, आज हो गया पर्व महान।।
बालयोगिनी मैना द्वारा, सदी बीस में पहला लेख।
लिखा गया इतिहास त्याग का, अब तक मिला न यह उल्लेख।।194।।

जैसी उत्तम भाव विशुद्धि, मैना के उर आई थी।
वैसी उज्ज्वल श्वेत साटिका, माता ने पहनाई थी।।
श्वेत साटिका धारे मैना, लगती सभा बीच ऐसे।
मानों कोई ज्योतिपुंज ही, उतरा हो भू-पर जैसे।।195।।

श्वेत साटिका धारे मैना, श्रीफल धारे युगल करों।
किया नमोऽस्तु, श्रीफल अर्पण, आचार्यश्री पावन चरणों।।
ब्रह्मचर्यव्रत-सप्तमप्रतिमा, गुरुवर मुझे प्रदान करें।
जगत्ताप-दुखदावानल से, हे गुरुवर उद्धार करें।।196।।

प्रवचन हुए समाप्त श्रीगुरु, सभाविसर्जित सभी प्रकार।
किन्तु खड़ा था आश लगाये, मैना का मोही परिवार।।
सूज रही थीं सबकी आँखें, रो-रो अश्रु बहाने से।
लेकिन पिघला नहीं हिमालय, राग की आग जलाने से।।197।।

अनुज रवीन्द्र दौड़कर पकड़ा, जीजी की धोती का छोर।
रोकर बोला अच्छी दीदी, चलो-चलो अब घर की ओर।।
पर पत्थर दिल लेश न पिघला, परिजन से मुँह मोड़लिया।
वर्ष अठारह, बालयोगिनी, गृह से नाता तोड़ लिया।।198।।

हो निराश लौटे सब घर को, मैना-मैना रटन लगा।
लेकिन इस दुनिया के भीतर, कोई भी तो नहीं सगा।।
हमने जो सपना देखा था, अपनों से ही पूर्ण हुआ।
इस प्रकार मैना दीदी का, प्रथम व्रतोत्सव पूर्ण हुआ।।199।।

आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर महाराज कहते थे –

पारसमणि तो लोहे को सोना बनाता है, पारसरूप नहीं बनाता। किन्तु ज्ञानमती माताजी वह पारस हैं, जो लोहे को सोना ही नहीं किन्तु पारस बना देती हैं। प्रत्युत् ''निज सम की बात तो जाने दो, निज से महान कर देती हैं।'' अर्थात् अपने ब्रह्मचारी शिष्यों को मुनि पद दिलाकर उन्हें नमस्कार करके असीम उदारता एवं आगमनिष्ठता का परिचय प्रदान करती हैं।

मई १९८८, लूणवां (राज.)

क्षुल्लिका दीक्षा

समाहित विषयवस्तु

1. **आचार्यश्री का लखनऊ विहार-ब्र.मैना का भी संघ साथ जाना।**
2. **संघ श्रीमहावीर जी पहुँचा।**
3. **आचार्यश्री से दीक्षा की प्रार्थना।**
4. **आचार्यश्री द्वारा क्षुल्लिका दीक्षा देना।**
5. **नाम क्षुल्लिका वीरमती रखा गया।**
6. **आचार्यश्री द्वारा शुभाशीष।**
7. **माता मोहिनी का दर्शनार्थ आना।**
8. **माता मोहिनी द्वारा स्वयं को घर से उद्धार का निवदेन।**
9. **माता मोहिनी की गृह वापसी-टिकैतनगर को शुभ समाचार।**

काव्य पद

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, आचार्यश्री का हुआ विहार।
सत्य अहिंसा ध्वज फहराते, पग-पग करते धर्म प्रचार।।
अवधप्रांत, लखनऊ रजधानी, डालीगंज में ठहरा संघ।
बालयोगिनी संघ साथ में, मैना चलती सहित उमंग।।200।।

लखनऊ से श्री महावीर जी, यात्रा लक्ष्य बना गुरुवर।
कर विहार चंद्रप्रभ चरणों, संघ था पहुँचा सोनागिर।।
पुण्यप्रदा तीर्थ की यात्रा, पावन हो जाते पग-माथ।
सहस गुणा पुण्य बढ़ जाता, यदि हो साधु-संघ के साथ।।201।।

कोमल अंग, बालवय कन्या, मार्ग बिछे कंकण-पत्थर।
माघ-पौष की सर्द हवायें, शरीर काँपता है थर-थर।।
मन विरागिनी, कष्ट सहिष्णु, धीर-वीर यह कन्या है।
एक ही साड़ी, ठंड निकाली, एक अशन अति धन्या है।।202।।

आचार्यश्री देशभूषण जी, संघ चतुर्विध किया प्रधान।
सोनागिरि से महावीर जी, क्रमशः पहुँच गया शुभ थान।।
फाल्गुन पर्व अठाई पहले, हुआ क्षेत्र पर शुभागमन।
बड़े भाग्य से पाये सबने, महावीर प्रभु के दर्शन।।203।।

ब्रह्मचारिणी मैना दीदी, के मन रही एक इच्छा।
अचिरकाल प्राप्त हो जाये, जग कल्याणी जिन दीक्षा।।
समय-समय बहु किये निवेदन, पुनः यहाँ भी विनती की।
देख पात्रता श्रीगुरुवर ने, शुभाशीष-सह स्वीकृति दी।।204।।

चैत्रकृष्ण एकम् सन् त्रेपन, आई घड़ी वह मंगलमय।
भवसागर से पार उतरने, का आया उपयुक्त समय।।
प्रातकाल मैना दीदी ने, प्रभु आराधन-पूजन की।
फिर सुहागिनी महिलाओं ने, की मंगल स्नान विधी।।205।।

श्रीफल ले पाण्डाल में गईं, आचार्यश्री से विनती की।
तारण-तरण जहाज श्रीगुरु, सुन लीजे मेरी अरजी।।
हे गुरुवर! मैं तो अनादि से, भव-वन में हूँ भटक रही।
मोह महावैरी ने लूटा, दुख दावानल झुलस रही।।206।।

नरक-निगोद चार गतियों में, दुःख अनंते पाई हूँ।
अब उनसे छुटकारा पाने, शरण आपकी आई हूँ।।
आचार्यदेव! जिनदीक्षा देकर, मेरा जीवन धन्य करें।
निरतिचार व्रत करूँगी पालन, कोई विकल्प न अन्य करें।।207।।

श्रीफल किया समर्पित मैना, गुरुचरणों में किया प्रणाम।
स्वास्तिक रचित चौक में बैठी, शुरू हुआ दीक्षा का काम।।
दीक्षा शब्द स्वयं कहता है, सुकरणीय है आत्म रमण।
तथा जरूरी भाव विशुद्धि, अतः कषाय करें उपशम।।208।।

दीक्षार्थी के मस्तक ऊपर, हस्त रखा आचार्यश्री।
विधिविधान से श्रीगुरुवर ने, मैना क्षुल्लिका दीक्षा दी।।
धैर्य-वीरता मूर्ती इसने, सदा वीरवत् काम किया।
गुणानुरूप आचार्यश्री ने, वीरमती शुभनाम दिया।।209।।

सकल उपस्थित जनसमूह ने, सहर्ष जय-जयकार किया।
तदुपरान्त आचार्यश्री ने, समयोचित उपदेश दिया।।
बहुत कठिन मानव तन पाना, उत्तम कुल जिनवाणी संग।
तदपि कठिन आना जीवन में, संयम-दीक्षा धरण प्रसंग।।210।।

इस दुर्लभ अवसर को पाकर, जो जन सफल बनाते हैं।
वे जन निश्चित स्वल्प भवों में, मोक्ष परम पद पाते हैं।।
मैंने इसमें शुरूआत से, बहुत वीरता देखी है।
इस युग में अन्यत्र न वैसी, कहीं वीरता पेखी है।।211।।

जैसे गुण हैं, नाम हो वैसा, अतः वीरमति रक्खा नाम।
आगे भी सार्थकता देना, वीरमती तुम रखना ध्यान।।
प्रतिभा तुमरी महाविलक्षण, इसे और चमकाना तुम।
पढ़ो-पढ़ाओ संघ में रहकर, सूरज पूर्ण उगाओ तुम।।212।।

मेरा यह आशीष है तुमको, अगर रखा क्रम यह जारी।
तो तुम विदुषी श्रेष्ठ बनोगी, पाओ यशःकीर्ति भारी।।
श्रीगुरु का आशीष प्राप्तकर, वीरमती कहा गद्गद स्वर।
मेरा जीवन धन्य हो गया, दीक्षा पा आचार्यप्रवर।।213।।

तदनन्तर गुरुवर आज्ञा से, मंदिरजी दर्शन करने।
गईं क्षुल्लिका वीरमती जी, भगवन् की स्तुति करने।।
नाथ आपका अतिशय सच्चा, जो मैंने दीक्षा पाई।
बना रहे आशीष भक्त पर, सदा-सदा हे जिनराई।।214।।

चैत्र कृष्ण एकम सन् त्रेपन, दिवस रहा अतिशयकारी।
बीसविं सदि में प्रथम कुंवारी, कन्या ने दीक्षा धारी।।
संयम के इस स्वर्ण क्षेत्र में, रचा गया मणिमय इतिहास।
फैलाया इस वीरमती ने, अनुपम संयम-ज्ञान प्रकाश।।215।।

ब्राह्मीमती क्षुल्लिका माता, रहें संघ में सदा समय।
वीरमती जी साथ उन्हीं के, करें साधना रत्नत्रय।।
एक दिवस माँ मोहिनी देवी, दर्शनार्थ थीं आई तदा।
हर्ष-विषाद द्वय झलक रहे थे, एक साथ ही मुख मुद्रा।।216।।

माता श्री मोहिनीदेवी, करती थीं अतीत मन याद।
लेकिन माता वीरमती मन, लेश न आया हर्ष-विषाद।।
इच्छामि की माताजी से, धर्म वृद्धि आशीष मिला।
वयोवृद्ध होता है छोटा, रहा संयमी सदा बड़ा।।217।।

आचार्यश्री से सम्बोधन पा, मन ने पाई शांति सुधा।
इष्ट वियोगे अविवेकी ही, करते है दुःख शोक मुधा।।
आदि न अंत महा भवसागर, इसमें किसका कौन नहीं।
सच पूछो तो एक आत्मा, अपना दूजा कोई नहीं।।218।।

बहुत देर तक रहीं देखतीं, बैठी रहीं यथा हो चित्र।
फिर बोली निज की आत्मा ही, होती है निज की ही मित्र।।
वह पावन दिन कब आएगा, मैं भी संयम धारूँगी।
तुम जैसी दीक्षा धारण कर, अष्ट कर्म को जारूँगी।।219।।

माताश्री मोहिनी देवी, कहा परस्पर हो उपकार।
मैंने संयम अनुमति देकर, तुम्हें लगाया भव से पार।।
बेटी तू भी भव बंधन से, मुझे दिलाना छुटकारा।
वीरमती ने धर्मवृद्धि-सह, शुभ विचार को स्वीकारा।।220।।

माता यात्रा पूरी करके, टिकैतनगर विश्राम किया।
गृहीजनों को वीरमती की, दीक्षा बाबत ज्ञान दिया।।
मोहनृपति के वशीभूत हो, दुखी हुए परिवार-स्वजन।
किन्तु नियति को अटल जान फिर, मोहताप का किया शमन।।221।।

परम पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज ने कहा–

मैं और आर्यिका ज्ञानमती जी दोनों ने आचार्य श्री वीरसागर महाराज से दीक्षा ली, किन्तु ज्ञानमती माताजी ने आत्मकल्याण एवं शिष्य निर्माण के साथ-साथ साहित्य सृजन एवं तीर्थ निर्माण आदि जो लोकोत्तर कार्य किये हैं उसके लिए साधु समाज एवं सम्पूर्ण जैन समाज उनका उपकार भूल नहीं सकता है।

अक्टूबर 1982, लोहारिया (राज.)

टिकैतनगर में प्रथम चातुर्मास-सन् १९५३

समाहित विषयवस्तु

1. **आचार्य संघ का टिकैतनगर में मंगल प्रवेश।**
2. **क्षुल्लिका वीरमती जी का प्रथम नगरागमन।**
3. **क्षुल्लिका वीरमती की निरंतर स्वाध्याय में संलग्नता।**
4. **क्षुल्लिका जी की आँखों में पीड़ा-माता मोहिनी द्वारा उपचार।**
5. **दादी द्वारा रुपये रखने का आग्रह-वीरमती द्वारा मना करना।**
6. **आचार्य संघ का विहार।**

काव्य पद

चाँदनपुर श्री महावीर के, चरणों शीश नमा, कर जोर।
आचार्यश्री देशभूषण का, संघ चला लखनऊ की ओर।।
नगर-ग्राम बहु पावन करते, लखनऊ नगर किया आबाद।
फिर विहार कर पहुँचे गुरुवर, टिकैतनगर ढिंग दरियाबाद।।222।।

टिकैतनगर में हलचल मच गयी, दीवाली मन भरी उमंग।
चलो-चलो सब दर्शन करने, दरियाबाद विराजित संघ।।
पुण्य उदय आया हम सबका, हुआ हमारे अघ का नाश।
करें निवेदन श्रीगुरुवर से, टिकैतनगर हो चातुर्मास।।223।।

भक्ति-उमंग लिये हृदिसागर, दौड़ी आयी सकल समाज।
श्रीफल अर्पित कर श्री चरणों, बोली अर्ज सुनो महाराज।।
हम चातक हैं अति ही प्यासे, और आप पर्जन्य महान्।
टिकैतनगर ही आप पधारें, पूरै हम सबके अरमान।।224।।

क्षुल्लिका माता वीरमती के, चरणों अर्पित की अरदास।
करें निवेदन, आचार्यश्री से, टिकैतनगर हो चातुर्मास।।
गुरु होते हैं बड़े पारखी, हम तो घर आ जाते कह।
कौन है सच्चा, कौन है झूठा, वे पा लेते मन की तह।।225।।

छोटे-बड़े सभी ने मिलकर, बारम्बार प्रयास किया।
टिके रहे शिर गुरुवर चरणों, गुरुमन सा स्वीकार किया।।
फलस्वरूप आचार्यश्री का, टिकैतनगर में पहुँचा संघ।
इस प्रकार हो गया उपस्थित, टिकैतनगर में धर्म प्रसंग।।226।।

टिकैतनगर की गली-गली को, सबने खूब सजाया था।
आबालवृद्ध नर-नारी का, चेहरा खिल मुस्काया था।।
द्वार-द्वार पर बनीं अल्पना, तोरणद्वार लगाये थे।
बहुत कहें क्या भक्त गगन से, पुष्प तोड़कर लाये थे।।227।।

परम पूज्य आचार्य संघ का, जब मंगलमय हुआ प्रवेश।
पदप्रक्षालन, करी आरती, जनता जैनाजैन अशेष।।
बहुविधि वाद्य चल रहे आगे, बीचों-बीच चल रहा संघ।
हुई धर्ममय नगरी सारी, रँगे धर्म में सकल प्रसंग।।228।।

बालयोगिनी, वयसुकुमारी, पूज्य क्षुल्लिका वीरमती।
आकर्षण का केन्द्र सभी की, नगर पधारी बालसती।।
छोटेलाल की यही लाड़ली, मात मोहिनी की प्यारी।
अवध की शोभा, नगर की गौरव, धर्मक्षेत्र की निधि न्यारी।।229।।

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, हुआ स्थापित चातुर्मास।
पूर्णयोग से जो करते हैं, उनके होते सफल प्रयास।।
आचार्यश्री वत्सलरत्नाकर, दयानिधी, करुणा भंडार।
बहुभाषाविद्, ज्ञानमहोदधि, उनसे हुआ महद् उपकार।।230।।

आ जाते हैं संत जहाँ पर, छा जाता है वहीं बसंत।
मुद्रा-चर्या देख संत की, आ जाता पापों का अंत।।
अमृत प्रवचन सुनकर उनके, खिल जाता जीवन उद्यान।
शुभाशीष से मिल जाता है, मनवांछित उत्तम वरदान।।231।।

श्री क्षुल्लिका वीरमती जी, रखतीं मौन अधिकतम काल।
वे हर पल चखती रहती थीं, श्री जैनागम ग्रंथ रसाल।।
समंतभद्र आचार्यश्री रचित, रत्नकरण्ड श्रावकाचार।
अर्थ-उच्चारण सुष्ठु कर लिया, गुरुवर की आज्ञा शिरधार।।232।।

नेमिचंद्र आचार्यश्री रचित, गोम्मटसार ग्रंथ है नाम।
जीवकाण्ड सात सौ गाथा, अमरकोष रट लिया तमाम।।
भगवती आराधन, परमात्मप्रकाश का, कई बार स्वाध्याय किया।
कातंत्र रूपमाला व्याकरण को, पढ़कर ज्ञान का लाभ लिया।।233।।

सतत अनवरत अध्ययन कारण, शिर भारीपन, आँखें श्रान्त।
माँ मोहिनि निज दूध का फाहा, रखकर पीड़ा करती शांत।।
टिकैतनगर के चातुर्मास का, वीरमती अति लाभ लिया।
मौन मंत्र पढ़, ज्ञानामृत का, निश-दिन तन्मय पान किया।।234।।

वैयावृत-आहारदान के, मिले सभी को अवसर पूर्ण।
व्रत-संयम धारण के द्वारा, किये सभी ने कल्मष चूर्ण।।
धार्मिक चर्चा-चर्या बीते, चतुर्मास के दिवस सकल।
और एक दिन समयवृक्ष पर, लग आया विदाई का फल।।235।।

रोज-रोज मरहम लगने से, व्रण भर होती पीड़ा शांत।
छोटेलाल-मोहिनीदेवी, के मन की मिट गई अशांति।।
धर्ममयी चर्या को लखकर, कर वैयावृत, दे आहार।
विरह के छाले ठीक हो गये, मनस्तुष्टि पाई परिवार।।236।।

मोह महातम, बहूरूपिया, आया रूप दादी का धर।
माताजी ये रुपया ले लो, रख दिखलाये अपने कर।।
मैंने तो सब त्याग कर दिया, मंदिर में कर देना दान।
अरे! किताब मँगा तुम लेना, नहीं नहीं, अनुचित, अज्ञान।।237।।

हो निराश वे चली गईं जब, सोचा माता वीरमती।
भटक रहे अज्ञानी प्राणी, मोह अँधेरा घोर अती।।
दो कौड़ी का है वह साधु, जो रखता कौड़ी की आस।
वह श्रावक है दो कौड़ी का, नहीं है कौड़ी जिसके पास।।238।।

जैसे जल बहता ही रहता, जल-जीवन का यही प्रमाण।
साधु एक ठौर न रहता, सत्य साधुता की पहचान।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, आचार्य संघ का हुआ गमन।
संघ साथ प्रस्थान कर दिया, वीरमती धर समता मन।।239।।

बहुत दूर तक गये भक्तगण, संघसाथ भर अश्रु नयन।
पर निर्मोही साधुसंघ को, रोक न पाये हुआ गमन।।
नमन किया, आशीष प्राप्त कर, वापस आयी सकल समाज।
अप्रमत्त रह धर्म को पालें, सबने करी प्रतिज्ञा आज।।240।।

मौन साधना मूल मंत्र है, बिना मौन के व्रत-तप व्यर्थ।
राग द्वेष कृश होयं मौन से, मौन मुक्ति औषध अव्यर्थ।।
शक्ति अपव्यय रुक जाता है, शांति चित्त में आती है।
सामायिक-स्वाध्याय के लिए, समय बचत हो जाती है।।241।।

नियमसार की स्याद्वादचन्द्रिका टीका साहित्य जगत के मस्तक का टीका है –

पूज्य गणिनी आर्यिका माता ज्ञानमती जी ही एक ऐसी साध्वी मणि हैं, जिन्होंने नियमसार की संस्कृत टीका लिखकर नारी जगत् को ही नहीं सम्पूर्ण जैन समाज को एक महान उच्चासन पर बैठा दिया है। यदि उस स्याद्वादचन्द्रिका टीका को वर्तमान साहित्यजगत् के मस्तक का टीका कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। संस्कृत ग्रंथों की टीकाएँ तो बहुत हैं किन्तु वे सब पुरुष विद्वानों द्वारा की हुई टीकाएँ हैं। किसी आर्यिका माता के द्वारा की गई यह पहली ही टीका है, जो शब्द, अर्थ और अभिप्रायों से सम्पन्न है। ज्ञानमती माताजी ने जो भी कार्य किये हैं, वे सभी महान और अभूतपूर्व हैं।

अप्रैल सन् १९८५ **स्व. डॉ. लाल बहादुर शास्त्री**

(अध्यक्ष-अ.भा.दि. जैन शास्त्री परिषद)

जयपुर में चातुर्मास, सन् १९५४

समाहित विषयवस्तु

1. **टिकैतनगर से महावीर जी।**
2. **महावीर जी का वर्णन।**
3. **महावीर जी से जयपुर।**
4. **विलक्षण प्रतिभा की धनी क्षुल्लिका वीरमती।**
5. **व्युत्पन्नमति क्षुल्लिका वीरमती।**
6. **व्याकरण का अध्ययन-लोहे के चनों को सत्तू बनाना।**

काव्य पद

बाराबंकी लखनऊ होकर, महावीर जी पहुँचा संघ।
वीरप्रभू के शुभ दर्शन का, फिर से आया पुण्य प्रसंग।
यह अति ही रमणीय क्षेत्र है, मूरत है अतिशयकारी।
प्राप्त नहीं अन्यत्र कहीं पर, ऐसी सूरत मनहारी।।242।।

पता नहीं कब से क्यों, कैसे, यह टीले में दबी रहीं।
इक ग्वाले को सपना देकर, टीले से बाहर निकली।।
अपवाद लगा दीवान साब को, इनका ध्यान लगाया है।
तीन-तीन तोप गोलों से, प्रभु ने उन्हें बचाया है।।243।।

माताजी श्री वीरमती के, मन में छाया हर्ष अपार।
वीर प्रभू के दर्शन करने, पहुँची लेकर भक्ति ज्वार।।
तुम सचमुच अतिशयकारी हो, तुम्हीं बने मेरी पतवार।
तुम चरणों में दीक्षा पाई, परम्परा पाऊँ भव-पार।।244।।

जैन नगर जयपुरवासी जन, मन आया उत्साह अपार।
आचार्यश्री के श्रीचरणों में, किया नमोऽस्तु बारम्बार।।
हे करुणाधन! ज्ञान के सागर! हम पर इतनी कृपा करें।
अगला चातुर्मास मुनीश्वर, जयपुर का स्वीकार करें।।245।।

स्वीकृति पा आचार्यश्री की, जयपुरवासी हर्ष विभोर।
यथा मेघ ध्वनि को सुन करके, नर्तन करने लगते मोर।।

आचार्य संघ जयपुर पधराया, फिर निवाई-टोंक आया।
यत्र-तत्र करते प्रभावना, संघ नगर जयपुर भाया।।246।।

महाविलक्षण प्रतिभा धारी, पूज्य क्षुल्लिका वीरमती।
सिद्धांत-व्याकरण को पढ़ने की, रही बुभुक्षा तीव्र अती।।
मानों ज्ञानप्राप्त करने को, हुआ हो भस्मक रोग महान्।
ज्ञान बुभुक्षा बुझा न पाते, अल्प ज्ञान, शाक्तिक विद्वान्।।247।।

अद्भुत सुमरन शक्ति आपकी, मानों रहे पूर्व संस्कार।
तीव्र-तीक्ष्ण मेधा- सम्पन्ना, सकल, सहज प्राप्त उपहार।।
इकपाठी अकलंक योग्यता, ग्रहण शक्ति भी अतिशय मान।
फलतः इन्द्रलाल जी रक्खा, व्युत्पन्नमती जी सार्थक नाम।।248।।

व्याकरणविद्या लौह चने-सी, बड़ी कठिन से आती है।
लेकिन वीरमती के उर में, हलुआ-सी पच जाती है।।
दो वर्षीय कोर्स कातंत्र का, दो माह से कम में पूर्ण किया।
एक बार पढ़ लौह चने को, सत्तू-मीठा बना लिया।।249।।

अन्तराय आहार में हुये, अतः शक्ति तन क्षीण हुई।
ज्ञान बुभुक्षा वीरमती की, पर बढ़कर अक्षीण हुई।।
सपने में भी अध्ययन करतीं, करतीं सिद्ध व्याकरण रूप।।
दिन में पढ़तीं सपने रटतीं, करतीं विषय आत्मतद्रूप।।250।।

सर्वार्थसिद्धि-कातंत्रव्याकरण, अध्ययन जयपुर पूर्ण किया।
स्वाध्याय कर बढ़ो निरंतर, आचार्यश्री आशीष दिया।।
वीरमती की ज्ञान बुभुक्षा, भी अब हो गई किंचित् शांत।
समय का पंछी उड़ते-उड़ते, बैठा चतुर्मास दिनांत।।251।।

छोटा संघ, सकल मन भाया, आचार्यश्री, इक क्षुल्लकजी।
दो ही मात्र क्षुल्लिका माता, विशालमती औ वीरमती।।
श्रावकजन के भक्ति अधिक थी, मन में उमड़ा अति उत्साह।
सौ-सौ चौके प्रतिदिन लगते, तदा कुतर्क, सुनी अफवाह।।252।।

चार साधु, सौ चौके लगना, उचित नहीं यह खर्च फिजूल।
तथाकथित सुधारवादीजन, दिया बात को अनुचित तूल।।
चौका लगना कार्य पुण्य का, मिलता भोजन करने शुद्ध।
पड़गाहन से पुण्य दान का, हों दाता के भाव विशुद्ध।।253।।

म्हसवड़ में चातुर्मास, सन् १९५५

समाहित विषयवस्तु

1. संयमियों में शिरोमणि आचार्य शांतिसागर जी।
2. आचार्य श्री शांतिसागर जी द्वारा सल्लेखना ग्रहण की खबर।
3. क्षुल्लिका वीरमती का दर्शनार्थ पहला आगमन।
4. आचार्यश्री का आशीष और उपदेश।
5. क्षुल्लिका वीरमती का लौटकर आचार्य श्री देशभूषण से 'जोबनेर' में मिलना।
6. गुरु आज्ञा से विहार-फल्टन में श्रुतपंचमी पर अभूतपूर्व प्रवचन।
7. निर्धूम अग्नि का स्वप्न दर्शन।
8. आर्यिकादीक्षा के लिए कुंथलगिरि शांतिसागर जी के पास पहुँचना।
9. आचार्यश्री की आज्ञा मैंने दीक्षा देना छोड़ दिया है, वीरसागर से तुम दीक्षा लो।
10. लौटकर म्हसवड़ में चातुर्मास।
11. म्हसवड़ में स्वपर कल्याणी ज्ञान का दान।
12. प्रभावती-सोनूबाई-पढ़कर ज्ञानमती के साथ हुईं।
13. आचार्य श्री शांतिसागर जी समाधिस्थ हुए-वीरमती जी ने दर्शन किए।
14. म्हसवड़ से जयपुर-वीरसागर के पास।
15. आचार्य वीरसागर से आर्यिका दीक्षा हेतु निवेदन।
16. संघ माधोराजपुरा आया।

काव्य पद

जैसे नभ में दिनमणि सूरज, सबसे उत्तम आभावान।
जैसे गिरियों में सुमेरु है, सबसे विस्तृत, तुंग, महान्।।
जैसे सुमनों में गुलाब ही, पाता है नृप का आदर।
वैसे संयम, तपस्त्याग में, श्री आचार्य शांतिसागर।।254।।

श्री आचार्य शांतिसागर जी, अतिशय पुण्यवन्त, गुणखान।
करुणा सागर, आगमज्ञाता, महापुरुष, निर्भय, बलवान।।

उपसर्गजयी, लोकोत्तर साधक, चारित्र चक्रवर्ती, ऋषिराज।
साध्वाचार यंत्र दिक्सूचक, मोहतिमिर हर श्री महाराज।।255।।

सल्लेखन लेने वाले हैं, वीरमती के श्रवण पड़ी।
उनके दर्शन सुकरणीय हैं, मन उत्कण्ठा हुई बड़ी।।
जब तक श्रीगुरु दर्श नहीं हों, उनने किया नमक का त्याग।
पता चला आचार्यश्री को, दर्शन अनुमति दी महाराज।।256।।

विशालमती क्षुल्लिका जी सह, वीरमती जी कृतप्रस्थान।
जयपुर से प्रयाण कर दोनों, रुकी शहर मुम्बई में आन।।
महामुनि श्री नेमिसिंधु के, दर्शन का शुभलाभ लिया।
ऐतिहासिक रथयात्रा देखी, पूना-बाल्हा शमन किया।।257।।

बाल्हा से चल नीरा पहुँची, राजित थे आचार्यश्री।
वंदन कर, रत्नत्रय पूछी, दोनों क्षुल्लिका माताजी।।
कौन? क्षुल्लिका वीरमती हैं, वय है केवल विंशति वर्ष
आचार्यश्री देशभूषण से, दीक्षा ले, पाया उत्कर्ष।।258।।

अभी हुए दो वर्ष हैं केवल, सामाजिक जन किया विरोध।
किन्तु गजब की दृढ़ता इनकी, कोई सका न इनको रोक।।
सुन प्रसन्न आचार्यश्री ने, शुभाशीष-सह शिक्षा दीं।
अल्प वयस्का, तीस वर्ष तक, कभी अकेली रहो नहीं ।।259।।

अनागार धर्मामृत पीना, अध्ययन करो समय का सार।
भगवती आराधन भी पढ़ना, स्वयं पढ़ा मैं छत्तिस बार।।
शिक्षायें आचार्यश्री की, उत्तम से भी हितू महान्।
कोल्हापुर-बेलगाँव-भ्रमणकर, जयपुर आयीं गुरुस्थान।।260।।

जयपुर निकट जोबनेर जा, दर्श किए श्री गुरु महाराज।
पा आशीष, प्राप्त गुरु आज्ञा, पहुँच गईं सूरत गुजरात।।
तदनंतर फल्टन में आकर, श्रुतपंचमी का पर्व मना।
श्रुतावतार पर वीरमती ने, दिया प्रथम प्रवचन अपना।।261।।

अल्प वयसि, अति सुंदर प्रवचन, वाह! वाह! जन शब्द किया।
चातुर्मास यहीं पर करने, आग्रह-अनुनय विनय किया।।

जिसके मन जो गहरे बसता, वहीं उसे दिखता दिन-रात।
निर्धूम अग्नि को जलते देखा, वीरमती ने स्वप्न प्रभात।।262।।

आर्या दीक्षा लेकर के मैं, बढूँ आचरण के पथ पर।
बारम्बार विशुद्धि आती, आत्म चित्रवत् के अवसर।।
आचार्यश्री से कुन्थलगिरि में, किया निवेदन दया निधान।
भवदधि से मुझ पार लगाने, आर्यिका दीक्षा करें प्रदान।।263।।

श्री कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र है, सुंदर एक पहाड़ी पर।
देशभूषण-कुलभूषण मुनिवर, यहाँ से मुक्ति गये तपकर।।
बने हुए हैं सात जिनालय, आदि-बाहुबली-नंदीश्वर।
श्री आचार्य शांतिसागर जी, आये तन तजने नश्वर।।264।।

श्री आचार्य शांतिसागर जी, सुना निवेदन भली प्रकार।
बोले त्याग दिया है मैंने, दीक्षा देना सभी प्रकार।।
यम सल्लेखन धारण कर मैं, पट्ट दे दिया वीर यती।
उनसे जाकर, दीक्षा लेना उत्तर अम्मा वीरमती।।265।।

आचार्य श्री की वाणी सुन मन, उमड़ी भाव विशुद्धि तभी।
अहो! आर्यिका दीक्षा लेना, मैं तो चाहूँ अभी-अभी।।
किन्तु रोकना पड़ा स्वयं को, बीच पड़ा है चातुर्मास।
श्री गुरु की सल्लेखन लखकर, मुझको पुण्य कमाना खास।266।।

श्रीगुरु का उद्बोधन पाकर, अपना जीवन धन्य किया।
सामाजिक अतिशय आग्रह पा, म्हसवड़ चातुर्मास किया।।
चातुर्मास बीच में जाकर, आचार्यश्री के दर्श किए।
सल्लेखन आरूढ़ क्षपक लख, लोचन-जीवन धन्य किया।।267।।

क्षुल्लिका माता वीरमती ने, चतुर्मास उपयोग किया।
स्व-पर कल्याणक, मुक्ति प्रदायक, ज्ञानदान उद्योग किया।।
ज्ञानदान तो सब दानों में, रखता है वैशिष्ट्य महान्।
जितना देते उतना बढ़ता, घट जाता यदि करें न दान।।268।।

किन्तु जिन्हें मंजिल है प्यारी, वे रुकते हैं बीच नहीं।
यहाँ से चल बारामती पहुँची, थे शांति सिंधु आचार्य यहीं।।

मोक्ष शास्त्र-तत्त्वार्थसूत्र है, उमास्वामी पीयूष कलश।
भरा हुआ है इसके भीतर, जिनवाणी का अमृत-रस।।269।।

सप्ततत्त्व जिनवाणी गाये, उनका वर्णन सूत्र प्रधान।
टीका-भाष्य-वार्तिक-इस पर, बड़े-बड़े विरचे विद्वान्।।
इसका पाठन माताजी ने, सुष्ठुतया सम्पन्न किया।
ज्ञानसूर्य को उद्घाटित कर, भव्यों का उपकार किया।270।।

नेमिचंद आचार्यश्री का, द्रव्य संग्रह लघु प्राकृत ग्रंथ।
षट्द्रव्यों का वर्णन इसमें, सुष्ठुरूप वर्णित निर्ग्रंथ।।
जिनवाणी का हार्द समझने, यह ग्रंथ है नींव समान।
इसको आत्मसात् करके ही, ज्ञान महल चढ़ते विद्वान्।।271।।

माताजी श्री वीरमती ने, सब रहस्य बतलाया है।
जहाँ द्रव्य षट् पाये जाते, वही लोक कहलाया है।।
कातंत्रव्याकरण भी माताजी, चातुर्मास पढ़ाया है।
उत्तम ज्ञानक्षयोपशम लखकर, जनसमूह हर्षाया है।।272।।

हुईं प्रभावित प्रभावती जी, सोनूबाई, सुहागवती।
अध्ययन कर श्रीवीरमती से, हो गई दोनों ज्ञानवती।।
जीवन में संयम धारण कर, पूज्य आर्यिका पद पाया।
समाधिस्थ जिनमति-पद्मावति, नाम साध्वियों में आया।।273।।

आचार्यश्री शांतिसागर जी, सल्लेखन आरूढ़ रहे।
भादों शुक्ला दोज के प्रातः,सिद्धनमन समाधिस्थ हुए।।
म्हसवड़ से जा वीरमती जी, रहीं उपस्थित कुंथलगिरि।
करती रहीं क्षपक के दर्शन, भाव विशुद्धि बढ़ाये उर।।274।।

वैराग्यभाव को धारे उर में, म्हसवड़ पुनरागमन किया।
राजगिरा रोटिका, चावल, छोड़ अन्न सब त्याग दिया।।
चातुर्मास अनंतर जयपुर, पधराईं श्री वीरमती।
गुरु आज्ञा पा मिलीं संघ, आचार्य प्रवर श्री वीरयती।।275।।

आचार्य श्री वीरसागर से, किया निवेदन माताजी।
पुण्य आर्यिका दीक्षा देकर, उपकृत करें महाराजश्री।।

ठहरो अभी, संघ में रहकर, समाचार समझो-जानो।
अनुभव करो संघचर्या का, देंगे दीक्षा तब मानों।।276।।

वीरमती मन था उतावला, दीक्षा जल्दी मिल जाये।
एक-एक दिन लगे वर्ष-सा, चैन नहीं मन में आये।।
सोचा जब तक समय न पकता, वृक्ष नहीं फल पाते हैं।
जो उतावला, वही बावला, बुद्धिमान बतलाते हैं।।277।।

बीत गये कुछ माह इस तरह, ऊहा-पोह विचारों में।
सोना वही खरा होता है, जो तपता अंगारों में।।
जो उन्नति के मतवाले हैं, सब्र रखें, नहिं करें त्वरा।
कर विहार संघ जयपुर से, पहुँचा माधोराजपुरा।।278।।

पूज्य माताजी विश्व की प्रथम भारतीय नारी हैं, जिन्होंने जैन गणितीय त्रिलोक संरचना में से जम्बूद्वीप की रेखागणित को साकाररूप प्रदान किया। यह इतिहास की प्रथम गणितीय घटना कही जा सकती है, जिसने सम्पूर्ण लोक, विश्व, देश, समाज तथा व्यक्ति के ध्यान को आकर्षित किया है। जैन गणित के गांभीर्य को उन्होंने ही प्रथम बार मूल्यांकित किया, प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव प्रभु की द्वितीय सुपुत्री सुन्दरी की विद्या को प्रोज्ज्वल रूप से प्रकाशित किया, जिसकी ओर इस युग में किसी का लक्ष्य नहीं गया था। यही नहीं, वरन् न्याय एवं साहित्य में भी उनकी अभूतपूर्व प्रतिभा प्रखर रूप से प्रकाशन में आई और उन्होंने जो इस ओर भी अंशदान दिया, वह ब्राह्मी की विद्या को निखारता चला आया।

इस प्रकार दोनों विद्याओं में निपुण पूज्य ज्ञानमती माताजी का जीवन एक नये दर्शन को सामने लाया है, नये आदर्श को लिए भारतीय एवं जग जीवन में क्रांति लेकर आया है।

-प्रो. एल.सी. जैन, जबलपुर

चतुर्थ खण्ड

माधोराजपुरा में आर्यिका दीक्षा

समाहित विषयवस्तु

1. **आचार्यश्री से दीक्षा हेतु निवेदन-स्वीकृति।**
2. **प्रथमाक्षर केशलुंचन क्रिया।**
3. **आर्यिकादीक्षा क्रियाएँ।**
4. **'ज्ञानमती' नामकरण एवं उपदेश।**
5. **दीक्षा सभा में सांड़ का आगमन।**
6. **दीक्षा का महत्व।**

काव्य पद

एक दिवस गुरु निकट पहुँचकर, किया निवेदन हे स्वामिन्।
पुण्य आर्यिका दीक्षा देकर, मुझ पर कृपा करें भगवन्।।
करुणानिधि आचार्यश्री ने, सब पूर्वापर सोच-विचार।
वैशाखकृष्णा दिन द्वितिया की, दीक्षा दिवस किया निर्धार।।279।।

आचार्यश्री का शुभाशीष पा, रोम-रोम हर्षाया था।
मानों महारंक ने कोई, रत्न चिन्तामणि पाया था।।
मंगल चौक पुरे मण्डप में, स्वास्तिक निर्मित चौके पर।
था बैठाया दीक्षार्थी को, बिछा श्वेत वस्त्र ऊपर।।280।।

आचार्यश्री के चरण कमल में, अर्पित किया श्रीफल एक।
फिर दीक्षा हित किया निवेदन, पुलकित रोम-रोम प्रत्येक।।
अनादिकाल से स्वामिन् मैंने, भोगे दुःख निगोद मंझार।
लाख चौरासी फिर-फिर भटकी, मिटा नहीं मेरा संसार।।281।।

पंचपरावर्तन के दुःख से, हे गुरुवर घबराई हूँ।
आत्यन्तिक छुटकारा पाने, शरण आपकी आई हूँ।।
करुणाधन आचार्यश्री ने, दक्षिण कर आशीष दिया।
विराग भाव से दीक्षार्थी ने, केशलुंच प्रारंभ किया।।282।।

केशलुंच संयम प्रथमाक्षर, दयाधर्म पहला सोपान।
रहे अयाचकवृत्ति सुरक्षित, स्वावलम्ब रत्न गुणखान।।
तन विरक्तता, भावविशुद्धि, अप्रमत्तता आती है।
अतः पूर्व दीक्षा लेने के, लुंचनविधि की जाती है।।283।।

केशलुंच पश्चात् श्रीगुरु, विधि-विधान संस्कार किये।
मस्तक ऊपर मुनि दीक्षा के, संस्कार सम्पन्न किये।।
संयम हेतु उपकरण पिच्छी, कमण्डलु शौच उपकरण दान।
दिये शास्त्रजी श्रीगुरुवर ने, परमोपकारी स्वपर कल्याण।।284।।

प्रतिभा के अनुकूल आपका, ज्ञानमती शुभ नाम दिया।
समुपस्थित विशाल जनता ने, उच्चैः स्वर जयनाद किया।।
जैसा नाम दिया है तुमको, करना अपना सार्थक नाम।
तब से अब तक "ज्ञानमती" का, ज्ञानार्जन बस एक ही काम।।285।।

हुआ तभी अचरज बहुभारी, आया सांड़ सभा प्रांगण।
मंच के सम्मुख खड़ा हो गया, शांत भाव से करे नमन।।
फिर भू मस्तक टेका मानों, आचार्य संघ को किया प्रणाम।
खड़ा रहा आशीष प्राप्त कर, रहा देखता दीक्षा काम।।286।।

आचार्यश्री के प्रवचन सुनकर, शांतभाव से गमन किया।
भव्य जानकर सकल जनों ने, बहुमोदक उपहार दिया।।
आचार्यश्री वीरसागर ने, दीक्षार्थी उपदेश दिये।
उन्हें श्रवणकर मोहान्धों के, हुए उद्घाटित नयन-हिए।।287।।

अष्टाविंशति मूलगुणों का, ज्ञानमती को ज्ञान दिया।
पद आर्यिका प्राप्त आपने, अपना जीवन धन्य किया।।
अरहंतदेव जो पथ बतलाया, जो जिनवाणी गाया है।
उस पर अडिग-अचल रहना है, जो गुरुओं से पाया है।।288।।

तदनन्तर दीक्षा महत्व को, बतलाया आचार्यप्रवर।
परोपकार की तुलना में है, स्वोपकार करना हितकर।।
पर-हित करना कार्य पुण्य का, श्रावक-साधुद्वय करणीय।
निजहित बाधक बने अगर तो, पर-हित करना है भजनीय।।289।।

परोपकार जो करना चाहें, पहले शिक्षा प्राप्त करें।
स्वोपकार करने के इच्छुक, जिनदीक्षा स्वीकार करें।।
शिक्षा से होता है व्यक्ति का, बहिर्मुखी-बहुमुखी विकास।
दीक्षा से दीक्षित पाता है, आभ्यन्तर का दिव्य प्रकाश।।290।।

शिक्षा भोग ओर ले जाती, दीक्षा योग्य कराती योग।
शिक्षा से इहलोक सुधरता, दीक्षा से सुधरें द्वयलोक।।
जीवन में उपयोगी दोनों, किन्तु मुख्यता दीक्षा की।
अतः विवेकीजन जीवन में, ग्रहते हितकर दीक्षा ही।।291।।

दीक्षा और प्रव्रज्या दोनों, एक वाच्य के वाचक दो।
सर्वपाप का मूल परिग्रह, उसका त्याग सर्वथा हो।।
ग्रंथमुक्ति ही पापमुक्ति का, कारण कहते हैं जिनदेव।
मूल शुष्क यदि हो जाये तो, वृक्ष शुष्क होता स्वयमेव।।292।।

दीक्षा करती कर्महानि है, पुण्यवृद्धि, संस्कृति का क्षय।
ग्रहता वही, न होता जिसको, अप्रत्याख्यानावरण उदय।।
देव तरसते हैं दीक्षा को, ले ना सकते बेचारे।
अप्रत्याख्यानावरण उदय के, रहते काषायिक मारे।।293।।

सुर दुर्लभ पर्याय मनुज की, पाते इसको जीव विरल।
धन्य, विवेकी, पुण्यवन्त वे, दीक्षा लेकर करें सफल।।
शिक्षा कोई भी ले सकता, किं बहुना पशु-पक्षी भी।
लेकिन विरले नर-नारी ही, हो पाते हैं दीक्षार्थी।।294।।

पक्षी-विप्र-दांत की तरह, संत द्विजन्मा होते हैं।
प्रथम जन्म देती है माता, दूजा गुरुवर देते हैं।।
दीक्षा मानें जन्म दूसरा, इसमें होता सभी नया।
नव पर्याय प्रकट हो जाती, नाम पुराना चला गया।।295।।

दीक्षातिथि ही साधु की अब, जन्मतिथि कहलाती है।
क्षुल्लक-ऐलक-मुनि-आर्यिका, पर्याय मिल जाती है।।
नाम बदल जाता साधु हो, मति-सागर जुड़ जाता है।
छोटे घर-परिवार न रहते, जग कुटुम्ब हो जाता है।।296।।

यह तो बात रही बाहर की, आभ्यन्तर अंतर आता।
जीवनशैली, चिंतन-चर्या, सोच-विचार बदल जाता।।
भोजन का विचार अब तो भजन, ले लेता है सभी प्रकार।
सुविधा या कि असुविधा पर अब, ध्यान न जाता किसी प्रकार।।297।।

अतः असुविधा में सुविधा का, साधक अमृत पीता है।
गर्मी-सर्दी-वर्षा में भी, साधक सुख से जीता है।।
भौतिक सुख तो क्षणभंगुर हैं, आत्मलीनता शाश्वत है।
यह विचार कर साधक हरक्षण, रहता आतम में रत है।।298।।

इस प्रकार ध्यानरत साधू, कर लेता कर्मों का क्षय।
जगत् भ्रमण की दीर्घ श्रृंखला, तोड़ पहुँचता शिव आलय।।
सफल साधना की हो जिसने, पूर्वभवों में भली प्रकार।
दीक्षा के पावन प्रसंग का, उनको मिलता है उपहार।।299।।

बाल्यकाल से ही थी मैना, शांत-सौम्य-सुकुमार मति।
शिष्ट-सभ्य-संस्कृत-मृदुभाषी, व्यवहार रहा शालीन अति।।
पूर्वजन्म के संस्कारों से, भव्यभाव भी लायी साथ।
सत्य-शोध की मनोवृत्ति है, रहे तीव्र ज्ञान की प्यास।।300।।

संघर्षों को झेल आपने, तोड़ी मुश्किल गृहकारा।
आचार्यश्री देशभूषण से, सप्तम प्रतिमा व्रत धारा।।
धारण किये क्षुल्लिका के व्रत, आज आर्यिका दीक्षा ली।
ज्ञानमती तुमने नारी की, यह पर्याय सफल कर ली।।301।।

मंगलमय हो पंथ तुम्हारा, हो सफल साधना रत्नत्रय।
मोक्षमार्ग पर बढ़ो निरंतर, हो निःशंक-अडिग-निर्भय।।
लोकत्रय के नाथ वीर का, ध्यान रहे नित अंतर्मन।
यह पर्याय छेद अंततः, लोक शीर्ष पर करो गमन।।302।।

अति विराग, गौरव-गरिमा से, पूर्ण हुआ यह आयोजन।
जैनधर्म के जयकारों से, गूँज उठा तब धरा-गगन।।
हुई विसर्जित सभा अंत में, श्रीगुरुवर को किया प्रणाम।
ज्ञान-आर्यिका चर्या लखने, हम लेते हैं यही विराम।।303।।

जयपुर (खानिया) चातुर्मास

सन् १९५६-५७

समाहित विषयवस्तु

1. **माधोराजपुरा से विहार-जयपुर जैन नगर।**
2. **जयपुर में चातुर्मास।**
3. **चूलगिरि में साध्वी संघ में अध्यापन।**
4. **स्वयं भी न्याय-साहित्य का अध्ययन।**
5. **चातुर्मास अनंतर सम्पूर्ण नगर उपकृत हुआ।**
6. **ज्ञानार्णव पर सुंदर संस्कृत टीका लिखी।**
7. **खानिया चातुर्मास-1957**
8. **गुरु आदेश से लघु संघ बनाकर विहार।**
9. **गुरु अस्वस्थता श्रवणकर जयपुर आगमन।**
10. **गुरु वियोग-शिवसागर जी आचार्य बने।**

काव्य पद

जल का एक नाम है जीवन, जीवन है चलने का नाम।
प्रतिपल आगे बढ़ते रहना, है असली जीवन पहचान।।
रुकने से जीवन मर जाता, बढ़ने से आती है जान।
इसीलिये जल-जीवन दोनों, सदा-सतत रहते गतिमान।।304।।

साधुचरण जीवन प्रतीक है, रुकने का नहिं लेते नाम।
आज यहाँ तो कल वहाँ है, सुबह यहाँ होती वहाँ शाम।।
सकल जिनालय करी वंदना, श्रीजिनवर को किया नमन।
आचार्य श्रीवीरसागर संघ, पूर्व क्षेत्र तज किया गमन।।305।।

माधोराजपुरा से चलकर, आचार्य संघ जयपुर आया।
जयपुर निकट क्षेत्र चूलगिरि, सबके मन अतिशय भाया।।
आचार्यश्री से किया निवेदन, जयपुर जैन समाज सकल।
चातुर्मास प्रवास यहीं कर, करें हमारा जन्म सफल।।306।।

चिंतन किया संघ अनुरूपी, सब सुविधायें प्राप्त यहाँ।
जिज्ञासु-विद्वान् गुणीजन, नर-नारी उपलब्ध यहाँ।।
सुंदर मंदिर, जिनप्रतिमायें, रम्य प्रकृति की गोद यहाँ।
ज्ञान-ध्यान-तप-साधन करने, है सब कुछ उपयुक्त यहाँ।।307।।

जयपुर जैन नगर की जनता, किया निवेदन बार हजार।
श्रीफल अरपे चरण कमल में, खोले पूर्ण हृदय के द्वार।।
तब बोले आचार्यश्री यों, तुम्हें लगी है सच्ची प्यास।
अतः तुम्हें आशीष हमारा, यहीं पै होगा चतुर्मास।।308।।

श्री आर्यिका ज्ञानमती का, आचार्य संघ सह हुआ गमन।
धर्मप्रचार कर नगर-ग्राम में, पहुँचीं चूलगिरि प्रांगण।।
पुष्प जहाँ पर भी जाता है, हो जाता सुरभित वातास।
ज्ञानमती का तीव्र क्षयोपशम, हर मन भरता ज्ञानप्रकाश।।309।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती यहाँ, साध्वी संघ किया पाठन।
गोम्मटसार, न्याय दीपिका, परीक्षा मुख का अध्यापन।।
इनकी सुंदर पाठन शैली, लख हर्षित आचार्यश्री।
प्रमुदित मन सब से कहते थे, नव सूरज आभा बिखरी।।310।।

पंडित लालाराम शास्त्री, अति विनम्र, अतिशय विद्वान्।
पंडितजी श्री खूबचंद जी, को था प्रखर न्याय का ज्ञान।।
आचार्यश्री से प्राप्त अनुज्ञा, मिला उभय-वात्सल्य उदार।
चरित चन्द्रप्रभ, प्रमेय कमल का, ज्ञानमती पाया उपहार।।311।।

आचार्यश्री वीरसागर के, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरित।
अनुशासित संयम चर्चा ने, चुरा लिया जयपुर का चित्त।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, चूलगिरी को किया नमन।
नगर जिनालय वंदन करने, सकल संघ ने किया गमन।।312।।

नगर गुलाबी जयपुरवासी, फूले नहीं समाये थे।
झूम-झूम कर नाचे गाये, रोम-रोम हर्षाये थे।।
बहुतों के नयनों से प्रकटी, स्वच्छ-शुभ्र-मोती-माला।
अहो भाग्य है, पुण्योदय जो, मिला हमें अवसर आला।।313।।

सज्जित हुए गली चौराहे, चौक, अल्पना, वंदनवार।
हर जिनमंदिर, जिनप्रतिमा को, किये संघ ने नमन हजार।।
जिस कॉलानी या कि नगर में, आचार्य संघ के पड़ें चरण।
वहाँ-वहाँ अमृत वर्षा से, आया था असमय श्रावण।।314।।

जहाँ-जहाँ संघ पधराता, बढ़ जाता था आकर्षण।
भीड़ उमड़ पड़ती थी करने, नई आर्यिका के दर्शन।।
सुदर्शनीय व्यक्तित्व आपका, नवदीक्षा, अल्पायु रही।
लेकिन चर्या, ज्ञान-ध्यानमय, आगम के अनुकूल रही।।315।।

आचार्यश्री शुभचंद्र रचित है, श्री ज्ञानार्णव नामक ग्रंथ।
द्वादशानुप्रेक्षा का वर्णन, किया सुटीका गुरु निर्ग्रंथ।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, अतिशय भाया वह वर्णन।
संस्कृत टीका लिखी आपने, अर्पित की गुरुराज चरण।।316।।

गुरुवर बोले अति सुंदर, यह प्रथम प्रयास तुम्हारा है।
ज्ञान सूर्य बनकर के चमको, शुभ आशीष हमारा है।।
हर श्रावक को मिला सु-अवसर, आचार्यसंघ देना आहार।
उपदेशामृत पान किया सब, वैयावृत्ति मिला उपहार।।317।।

नगर जिनालय वंदन करके, जयपुर हुआ विराजित संघ।
लूण्यापाण्या के जिनमंदिर, मुनि प्रवास का रहा प्रसंग।।
फिर खजांची की नशिया में, हुये महत्तम आयोजन।
सिद्धचक्र मंडल विधान की, हुई महोत्सव-सह पूजन।।318।।

सन् उन्नीस सत्तावन में भी, हुआ खानिया चातुर्मास।
जैन समाज जयपुर के उर में, छाया अतिशय हर्ष हुलास।।
गुरुवर की पावन छाया में, चउविध संघ विराज रहा।
चातुर्मास में ज्ञानमती के, ज्ञान का वहाँ प्रकाश रहा।।319।।

आचार्यश्री महावीर कीर्तिजी, संघ सहित पधराये यहाँ।
जो सौभाग्य मिला जयपुर को, औरों को उपलब्ध कहाँ।।
उभय संघ सानिध्य प्रदान कर, ज्ञानमती मन कुंज खिले।।
स्वाध्याय जिज्ञासा तृप्ति, के अवसर पर्याप्त मिले।।320।।

तदनतर आचार्यश्री ने, किया प्रभावना का सुविचार।
आदेश दिया तब साधु-साध्वी, संघ बनाकर करें विहार।।
आस-पास के नगर-गाँव जा, धर्म-आचरण-उपदेशें।
अपने चिन्तन चर्या द्वारा, आर्षमार्ग को संपोषें।।321।।

शिरोधार्य करके गुरु आज्ञा, ज्ञानमती जी किया विहार।
बगरू-झाग-मोजमा-चोरु, किया संघ-सह धर्मप्रचार।।
साधु-साध्वी कर अध्यापन, किया ज्ञान का उद्योतन।
पुनः गुरु अस्वस्थ जानकर, वापस जयपुर किया गमन।।322।।

चातुर्मासिक मध्यकाल ही, गुरुवियोग अवसर आया।
आचार्यश्री वीरसागर ने, देवलोक में पद पाया।।
आश्विन वदी अमावस्या को, समाधिपूर्ण हुआ अवसान।
श्री मुनिवर शिवसागर जी को, आचार्यपट्ट कर दिया प्रदान।।323।।

लख वियोग आचार्यश्री का, सकल संघ में छाया शोक।
पर विचार कर वस्तु तत्त्व को, सब क्रमशः हो गये विशोक।।
आना-जाना जीवन का क्रम, यह तो यात्रा है अनबार।
अब प्रसंग को छोड़ यहीं पर, चलें तीर्थराज गिरनार।।324।।

निज सृष्टी को निर्मिता, 'वेधा' जग विख्यात।
धर्मसृष्टि सर्जन किया, नमत मिटे भव आर्त।।१।।

समवसरण में चहुँदिशी, मुख दीखे प्रभु आप।।
अतः 'विश्वतोमुख' तुम्हीं, नमत हरूँ संताप।।३।।

कर्मभूमि की आदि में, उपदेशा षट्कर्म।
अतः 'विश्वकर्मा' तुम्हीं, जजत मिले निजशर्म।।४।।

— गणिनी ज्ञानमती

श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र यात्रा

समाहित विषयवस्तु

1. गुरु-वियोग के मेघ छाए रहे।
2. आचार्य श्री शिवसागर जी का गिरनार यात्रा का विचार।
3. हीरालाल जी निवाई संघपति बने।
4. संघ का विहार-अजमेर में प्रथम पड़ाव।
5. विहार काल में भी ज्ञानमती माताजी अपनी शिष्या जिनमती को मुखाग्र ग्रंथ अध्यापन करातीं।
6. ज्ञानमती ने सभी से राजमार्ग से ही चलने को कहा।
7. एक माताजी पगडंडी से चलीं-आधा संघ भटक गया।
8. ब्यावर होते हुए संघ गिरनार पहुँच गया।
9. तीर्थक्षेत्र की माताजी ने लगातार 7 वंदनाएँ की।
10. तीर्थक्षेत्र का वर्णन।

काव्य पद

श्रावक हो अथवा हो साधु, योग-वियोग का पड़े प्रभाव।
आचार्य श्री वीरसागर का, अनुभव करता संघ अभाव।।
यदपि समय की चादर दुख को, क्रमशः क्रमशः करती कम।
पर, सब बोले गुरु वियोग को, नहीं भुला पाते हैं हम।।325।।

अंतरंग में गुरु का सुमरन, बार-बार हो आता है।
सुधियों में घिर कर अतीत भी, वर्तमान बन जाता है।।
अज्ञानी की हृदय वेदना, आँसू बन बह जाती है।
ज्ञानीजन की अंतस् पीड़ा, धर्म रूप ढल जाती है।।326।।

गुरु वियोग उत्पन्न भार से, हृदतंत्री के झंकृत तार।
नवाचार्य शिवसागर जी ने, तीर्थयात्रा का रखा विचार।।
सकल संघ अनुमोदन पाया, आचार्यश्री आशीष दिया।
हीरालाल निवाई पाटनी, पद संघपति स्वीकार किया।।327।।

चला संघ गिरनार क्षेत्र को, प्रथम चरण अजमेर रहा।
धवला में श्री वीरसेन ने, गिरि को मंगलक्षेत्र कहा।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, संघ साथ में किया गमन।
पद विहार कर माताजी का, हुआ नगर में शुभागमन।।328।।

श्री सरसेठ भागचंद सोनी, करी संघ की अगवानी।
अनुनय-विनय-भक्ति-गद्गद स्वर, बोले स्वर्णमयी वाणी।।
सफल हुआ जन्म अजमेरा, शिवसागर से संत मिले।
रोम-रोम पुलकित हैं सबके, हर्षे मानस कंज खिले।।329।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती की, प्रतिभा बड़ी विलक्षण है।
ज्ञानपुंज, विदुषी माता की, शैली में आकर्षण है।।
अतः पूज्य आचार्यश्री ने, करा दिया नशिया प्रवचन।
किया श्रवण विस्मय विमुग्ध हो, रोम-रोम पुलकित जन-जन।।330।।

मिल समाज ने किया निवेदन, आचार्यश्री के चरणों जा।
माताजी के प्रवचन होवें, नगर बीच सार्वजनिक सभा।।
यह गौरव की बात संघ की, मुस्काये आचार्य प्रवर।
पहुँच गई ईर्ष्यालू जन तक, किसी तरह यह बुरी खबर।।331।।

आचार्यश्री के श्रवण द्वार तक, जा पहुँची यह दाह-जलन।
रहे शांत सद्भाव संघ में, मना कर दिया माँ-प्रवचन।।
निन्दा-स्तुति, सुक्ख-दुक्ख में, बुध लेते समता का स्वाद।
अतः नहीं माताजी मन में, किंचित् आया हर्ष-विषाद।।332।।

जयपुर से अजमेर गमन में, उभयकाल था चला विहार।
सोलह मील रोज संघ चलता, मध्यकाल करता आहार।।
कहीं वृक्ष की छाया मिलती, माताजी करतीं विश्राम।
इतने स्वल्पकाल में माता, कर लेतीं अध्यापन काम।।333।।

गुरुवर होते बड़े पारखी, अनुभव से लेते सब जान।
किसको कितनी प्यास लगी है, उसको उतना देते ज्ञान।।
माताजी, जिनमति शिष्या को, तीन बार में छह-छह-छह।
गाथाएँ-श्लोक पढ़ातीं, सैद्धान्तिक ग्रंथों की-कह।।334।।

बैठ के पढ़तीं, राह में गुनतीं, सोने के पूर्व सुना देतीं।
अगर नहीं तो याद करातीं, माता तदा सुला देतीं।।
लौकिक माँ होती अपूर्ण हैं, गुरु पूर्णिमाँ होती है।
वही पूर्ण छवि ज्ञानमती में, हमें दृष्टिगत होती है।।335।।

कर विहार अजमेर नगर से, पहुँचा संघ नगर ब्यावर।
रुका तीन दिन, कर प्रभावना, गया वहाँ से अन्य शहर।।
एक-एक पग चलते-चलते, आ जाता है पथ का पार।
धर्म प्रभावना करता-करता, बृहद् संघ पहुँचा गिरनार।।336।।

पाँच-एक मुनि, नौ आर्यिका, क्षुल्लक एक, क्षुल्लिका चार।
एकादश-नौ ब्रह्म-ब्रह्मचारी, चौके वाले कई उदार।।
जहाँ कहीं भी संघ ठहरता, वहीं तीर्थ बन जाता था।
जिनशासन का डंका बजता, सब मंगल हो जाता था।।337।।

संघ जा रहा राजमार्ग से, तब पगडंडी आन मिली।
कहा आर्यिका वीरमती ने, चलें इसी से राह भली।।
ज्ञानमती ने टोका उनको, राजमार्ग ही चलें सभी।
पगडंडी भटकन का कारण, हो सकती है कभी-कभी।।338।।

राय हमेशा भाई से लें, चाहे हो कितना ही बैर।
राजमार्ग से चलने में ही, रहती सदा पथिक की खैर।।
माता से ही करना भोजन, चाहे हो कितना नीरस।
वत्सलता के कारण उसमें, आ जाता है अनुपम रस।।339।।

किन्तु नहीं मानी माताजी, उनके पीछे चलीं सभी।
संघ छूटकर भटक गयीं सब, विपत्ति महत्तम आन पड़ी।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, यद्यपि वय में रहीं कनिष्ठ।
लेकिन अनुभव, ज्ञान-ध्यान में, अनुपम-उत्तम-सकल वरिष्ठ।।340।।

जो पहले ही त्याग चुके सब, शेष न कुछ करने को त्याग।
बोलो, अब क्या त्याग करें वे, मुनि-आर्यिका जी बड़भाग।।
फिर भी क्षेत्र वंदना तक को, नमक आदि का त्याग किया।
सच है जिसने रसना जीती, वह ही जग में सही जिया।।341।।

यात्रा काल साधुगण सब ही, अरिष्ट नेमिप्रभु जाप करें।
हो निर्विघ्न सभी की यात्रा, पथ में चिन्तन सतत करें।।
गुरु आज्ञा पा ज्ञानमती ने, सवालाख मंत्रों का जाप।
मग मन ही मन किये निरंतर, भागे विघ्न स्वतः चुपचाप।।342।।

श्री गिरनार क्षेत्र का कण-कण, पावन है अतिशयी महान्।
कोटि बहत्तर, सात शतक मुनि, गिरिवर से पाया निर्वाण।।
पाँच टोंक शोभित गिरनारी, कहीं जिनालय, कहीं चरण।
इनका जो वंदन करता है, उनके मिटते जन्म-मरण।।343।।

प्रथम टोंक पर गोमुख गंगा, जिनमंदिर चौबीस चरण।
माताजी श्रीज्ञानमती ने, सादर सबको किया नमन।।
द्वितीय टोंक निर्वाण पधारे, श्रीमुनिवर अनिरुद्धकुमार।
दर्शन करके माताजी ने, कीना पाप-पुंज को क्षार।।344।।

तृतिय टोंक से शिवपुर पहुँचे, परम तपस्वी शंबुकुमार।
चतुर्थ टोंक अक्षयपद पाया, श्री मुनिवर प्रद्युम्न कुमार।।
चतुर्थ टोंक से सब भय खाते, कम ही भक्त चढ़ें उस पर।
लेकिन जिसने ठान लिया हो, उसे न लगता किंचित् डर।।345।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, चढ़ीं वंदना हित गिरनार।
भक्ति-भाव से, गद्गद स्वर से, करी वंदना श्रुत अनुसार।।
पग-पग प्रभु की स्तुति करतीं, टोंक-टोंक पर टेका माथ।
नेमिनाथ प्रभु चरण शरण में, पहुँच गयीं गुरुवर के साथ।।346।।

माताजी सुकुमारी नारी, अतः थकावट हुई अधिक।
तद्यपि धर्म प्रेरणा प्रेरित, सप्त वंदना कीं अनथक।।
टोंक पाँचवीं मोक्ष को गये, तीर्थंकर श्री नेमिनाथ।
माताजी श्री ज्ञानमती ने, सविनय नमन किया मुनिनाथ।।347।।

सकल भक्तियाँ की माताजी, चरण वंदना की सात।
शीघ्र सिद्धपद प्राप्त मुझे हो, करी भावना प्रभु के द्वार।।
समाधिभक्ति पढ़ करी वंदना, लिया पुनः दर्शन की आश।
वापस आयीं संघ साथ में, मनसि तोष-आनंद का वास।।348।।

नहीं सीढ़ियाँ, नहीं सहारा, आरोहण है कठिन अती।
बिना सहारे ऊपर पहुँचीं, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।।
यही नहीं औरों को कराया, आरोहण दे कर अवलम्ब।
तृण का भी यदि योग प्राप्त हो, मिले सफलता बिना विलम्ब।।349।।

ब्यावर चातुर्मास

समाहित विषयवस्तु

1. **गिरनार की यात्रा कौन कर सकता है?**
2. **माता ज्ञानमती द्रव्यलिंग से नारी, पर भाव से पुरुषोत्तम वेद।**
3. **गिरनार से शंत्रुजय आगमन।**
4. **श्वेताम्बर जिनालयों के बीच दि.जैन मंदिर की शोभा।**
5. **यात्राकाल में दो श्वेताम्बर साध्वियों से वार्तालाप।**
6. **शंत्रुजय से ब्यावर आगमन।**
7. **ब्यावर में माताजी द्वारा संघस्थ साधुओं को अध्यापन।**
8. **संघ का अजमेर आगमन।**
9. **माताजी द्वारा ऐलक पन्नालाल ग्रंथमाला के हस्तलिखित ग्रंथों का अवलोकन।**
10. **माताजी द्वारा हर क्षण का ज्ञानार्जन में सदुपयोग।**

काव्य पद

नौ हजार नौ सौ निन्यानूं, भू से गिरि-शिख तक सोपान।
नौ चौकौ यदि पढ़ें पहाड़ा, तो होते छत्तीस प्रमाण।।
जो जग से छत्तीस बन रहें, वे ही चढ़ सकते गिरनार।
वे ही जन उत्तम पद पाते, करते अष्ट कर्म रिपु क्षार।।350।।

माताजी श्री ज्ञानमती में, सकल योग्यता पाते हम।
द्रव्यलिंग से वे नारी हैं, किन्तु भाव से पुरुषोत्तम।।
दृढ़संकल्प-धीरता-साहस, ज्ञान-ध्यान-तप-समताभाव।
सघनरूप से अविचल रहते, ज्ञानतरू माता की छाँव।।351।।

सिद्धक्षेत्र श्री गिरनारी को, सबने सविनय नमन किया।
सिद्धक्षेत्र श्री शत्रुंजय को, सकल संघ ने गमन किया।।
जिनालयों का गढ़ शत्रुंजय, पालीताना नाम शहर।
साढ़े तीन हजार श्वेत में, एक दिगम्बर जिनमंदिर।।352।।

जैसे मणिमाला के मध्य में, शोभित होता है लॉकिट।
वैसे सबमें शोभा पाता, जैन दिगम्बर मंदिर इक।।

अर्जुन-भीम-युधिष्ठिर-पांडव, आठ करोड़ द्रविड़ राजा।
मोक्ष पधारे शत्रुंजय से, स्मृति हो जाती ताजा।।353।।

पर्वत के सोपानों ऊपर, चढ़ती जातीं ज्ञानमती।
जल से पूर्ण घड़े ले जाती, संघ श्वेताम्बर दो साध्वी।।
क्या उपयोग करोगी जल का, प्यास सताती बारम्बार।
पर्वत ऊपर जल नहिं मिलता, इससे कर लेतीं उपचार।।354।।

चर्या योग्य आपकी ही है, मोक्षमार्ग भी सही वही।
पर श्वेती अपवाद मार्ग से, मोक्ष मिलेगा पता नहीं।।
श्रम से चढ़तीं सोपानों पर, पहुंचीं बढ़ा-बढ़ा पग एक।
मन मयूर हो गया प्रफुल्लित, जिनमंदिर समूह को देख।।355।।

द्वितिय टोंक पर शोभित है इक, श्री दिगम्बर जिनमंदिर।
पाण्डव चरण, वेदिकाएँ नौ, राजित हैं उसके अंदर।।
मुख्य वेदिका पर राजित हैं, शांतिनाथ जिनदेव ललाम।
क्रम-क्रम पावन श्री चरणों में, माताजी ने किया प्रणाम।।356।।

श्री दिगम्बर जैन जिनालय, श्वेतों मध्य लगे इस भाँति।
जैसे मुख में जीभ अकेली, मध्य रहे बत्तीसों दाँत।।
सिद्धक्षेत्र सबके मन भाया, किया प्रवास दिवस दो-चार।
वापस राजस्थान पहुँचने, सकल संघ ने किया विहार।।357।।

इसी बीच श्री माताजी को, आये बहुतेरे अंतराय।
फलतः तन दुर्बलता आई, तदपि रहा मन धर्मोत्साह।।
आगमसम्मत चर्या पालन, माताजी मन मुदित किया।
संघ साथ में दीर्घ गमन भी, अप्रमत्त सम्पन्न किया।।358।।

जैसे सरिता बढ़ती क्रमशः, जाती पहुँच लक्ष्य सागर।
वैसे धर्मध्वजा फहराता, आचार्यसंघ पहुँचा ब्यावर।।
नशिया चम्पालाल सेठ जी, मुनि संघ का रहा प्रवास।
ऐलक पन्ना भवन सरस्वती, संघ आर्यिका जी का वास।।359।।

हार्दिकता से किया निवेदन, ब्यावर जैन समाज सभी।
चातुर्मासिक धर्मलाभ हो, करुणा धन आचार्यश्री।।

आचार्यश्री शिवसागर जी ने, किया निवेदन सोच-विचार।
द्रव्य-क्षेत्र अनुकूल देखकर, चातुर्मास किया स्वीकार।।360।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, प्राप्त आज्ञा श्री आचार्य।
किये अध्यापित संघस्थों को, राजवार्तिक-गोम्मटसार।।
जिनग्रंथों को श्रीगुरु मुख से, पढ़ा नहीं आर्यिका श्री।
उन्हें स्वतः ही आत्मसात् कर, ज्ञान दिया अन्यों को भी।।361।।

स्वाध्याय कर तत्व समझना, यद्यपि यह भी कार्य कठिन।
स्वयं समझ, पर को समझाना, है अति दुष्कर संप्रेषण।।
पर माताजी ज्ञानमती की, शैली सब को भाती थी।
पन्नालाल सदृश विज्ञों की, खूब प्रशंसा पाती थी।।362।।

धन्य धन्य माताजी तुमको, तुम दुष्कर को किया सरल।
जड़मति को जिनमति में बदला राजमल्ल को किया कमल।।
अभीक्ष्ण ज्ञानयोगिनी माता, हर पल का करतीं उपयोग।
अध्ययन करतीं या कि करातीं, लिखती, लखतीं आतम योग।।363।।

दिन का क्षण-क्षण व्यर्थ ना जाता, रहता ज्ञान समर्पित क्रम।
अर्द्धरात्रि तक करतीं माता, हस्तलिखित शास्त्रों में श्रम।।
ऐलक पन्नालाल जी द्वारा, स्थापित सरस्वती सदन।।
हस्तलिखित शास्त्रों का माता, करतीं निशि में अवलोकन।।364।।

इतः पूर्व खानिया जयपुर, बनी निषद्या वीर निधि।
चरण पादुका हुईं स्थापित, संघे सन्निधि यथाविधि।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, आचार्य संघ ने करी न देर।
जयपुर मानस्तंभ प्रतिष्ठा, करके संघ पहुँचा अजमेर।।365।।

अजमेर में चातुर्मास, सन् १९५९

समाहित विषयवस्तु

1. **माताजी संग्रहणी रोग से ग्रस्त हुईं।**
2. **माताजी ने समता भाव से सहन किया।**
3. **रोग ग्रस्त-कमजोर अवस्था में भी, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों को पढ़ाया।**
4. **गृहस्थ जीवन के माता-पिता दर्शनार्थ आये।**
5. **मोहिनी को मोहनीय ने जकड़ा।**
6. **संगति का प्रभाव।**

काव्य पद

यह शरीर व्याधि का मंदिर, रोम-रोम में रोग भरे।
बड़े-बड़े चक्री-मुनि देखे, वे भी इसके फेर परे।।
सनतकुमार, वादिराज मुनि, के मिलते पढ़ने आख्यान।
अतः न तन से मोह बढ़ाते, स्व-पर ज्ञान वाले मतिमान।।366।।

रोग बहुत हैं किन्तु सभी का, मूल एक है उदर विकार।
इसीलिए पेट को पकड़ा, मानतुंग आद्यंत विचार।।
मुनि-आर्यिका बड़भागी हैं, उन्हें न कर्म सताते हैं।
किन्तु असाता के आने पर, वे भी बच न पाते हैं।।367।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, कर्म असाता आया जब।
संग्रहणी इक रोग ने आकर, अपना पैर जमाया तब।।
किन्तु नहीं माताजी विचलित, हुईं असाता कर्मों से।
क्योंकि वे है पूर्ण सुपरिचित, जैनागम के मर्मों से।।368।।

जो आया है वह जायेगा, समय के सब पाबंद हैं।
कर्मचक्र के चरण न रुकते, चलते तीव्र या मंद हैं।।
साता गया, असाता आया, इक दिन यह भी जायेगा।
लेकिन मेरे साम्य भाव को, कोई डिगा न पायेगा।।369।।

जो कुछ कर्म किये पूरब में, वे ही उदय में आते हैं।
कर्ज अदा करने में विज्ञजन, लेश नहीं घबराते हैं।।

जो बोते हैं वही काटते, यह दुनिया की रीति अटल।
किया कर्म भोगना पड़ता, निश्चित आज नहीं तो कल।।371।।

ऐसे अवसर पर ज्ञानी जन, खेद न मन में लाते हैं।
लेकिन सतत धर्मचर्या में, अपना समय बिताते हैं।।
दुहराते रहते हैं मन में, कथित पुराणों के आख्यान।
उनसे समताभाव सीखते, तथा नशाते कर्म महान्।।371।।

जिनवचनौषधि मान मातुश्री, नहीं रोग पर ध्यान दिया।
अन्तराय के जलाभाव से, रोग रूप विकराल लिया।।
अब तक छूटा पिण्ड न उससे, स्थिति बनती सल्लेखन।
किन्तु पूर्ववत् चर्या रखकर, करती रहीं पठन-पाठन।।372।।

पंचाध्यायी ग्रंथ महत्तम, पूज्याश्री स्वाध्याय किया।
पात्रकेसरी नाम स्तोत्र का, अन्यों को भी ज्ञान दिया।।
ब्रह्मचारिणी विद्याजी को, सर्वार्थसिद्धि पढ़ाई है।
बाई अंगूरी (आदिमती) को, पढ़ा साथ ही लाईं हैं।।373।।

घर जीवन के मात-पिताजी, मोहिनी देवी-छोटेलाल।
प्रथमबार दर्शन को आये, बुरा हुआ दोनों का हाल।।
ज्ञानमती से चिपट मोहिनी, फूट-फूट कर रुदन किया।
पर, माताजी समझ न पाईं, कर्म मोहनी जकड़ लिया।।374।।

कर्म मोहनी महाप्रबल है, भव-भव में भटकाता है।
जिससे कुछ संबंध न उसको, अपना सगा बताता है।।
कौन यहाँ किसकी माँ-बेटी, कौन पिता, भगिनी, दारा।
पर, ठगिया इस मोह के कारण, जीव फिरे मारा-मारा।।375।।

सात वर्ष पश्चात् मिलन था, गहरे थे वियोग के व्रण।
था उफान, बन अश्रु बह गया, विनत भाव से किया नमन।।
कुशल-क्षेम पूछी रत्नत्रय, माताजी भी प्रश्न किया।
मनोवती को नहिं लाये हैं, निष्ठुरता का काम किया।।376।।

माता-पिता, प्रकाश, माधुरी, रहे यहाँ सन्तुष्ट हुये।
आचार्य संघ के दर्शन पाकर, हर्षित-मुदित-प्रसन्न हुए।।

गुरु उपदेश सुने मन लाकर, आहार-दान भी लाभ लिया।
चुम्बकीय व्यक्तित्व ने यहाँ, श्री प्रकाश को रोक लिया।।377।।

अतिप्रभाव पड़ता संगति का, कीट प्राप्त कर संग सुमन।
महज्जनों के शिर ऊपर भी, कर जाता है आरोहण।।
उससे भी बढ़कर, सत्संगति, कर लेती है आप समान।
रत्नत्रय के दृढ़ाचरण से, भव्य पुरुष बनते भगवान।।378।।

एक-एक बिन्दु के रिसते, हो जाता है रिक्त घड़ा।
एक-एक क्षण घटते-घटते, घट जाता है वर्ष बड़ा।।
चतुर्मास भी पूर्ण हो गया, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
नगर लाडनूं लक्ष्य बना, आचार्य संघ ने किया गमन।।379।।

श्री सेठ भागचंद सोनी, तीन लोक का किया विधान।
श्रीफल चढ़े माड़ने ऊपर, रहा राज वैभव उपमान।।
हुई समापन पर रथ यात्रा, रजत उपकरण निकले सब।
अति प्रभावना हुई धर्म की, मुनि संघ की सन्निधि तब।।380।।

वास्तव में 'जैन' नाम से खोली गई शिक्षण संस्थाओं में यह हिंसामय बायलोजी शिक्षण नहीं होना चाहिए। अरे! आटे का मुर्गा बनाकर बलि करने वाले यशोधर राजा ने दस भवों तक जो दुःख भोगे हैं, वह कथा पढ़कर हर किसी को सोचना चाहिए कि भले ही इन मेंढकों के मारने में डाक्टरी सीखकर, आगे हजारों रोगियों का आपरेशन कर उन्हें जीवनदान देंगे किन्तु हजारों जीवनदान के पुण्य से एक जीव का बुद्धिपूर्वक घात करना, उस पुण्य से अधिक गुणा बड़ा महापाप है।''

(मेरी स्मृतियाँ, पेज-२३२)

सुजानगढ़ चातुर्मास, सन् १९६०

समाहित विषयवस्तु

1. **अजमेर से संघ लाडनूं पधराया।**
2. **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न।**
3. **संघ का सुजानगढ़ आगमन।**
4. **मुनि एवं आर्यिका दीक्षाएँ।**
5. **आर्यिका ज्ञानमती सभी को संयम-तप पर बढ़ने की प्रेरणा देतीं।**
6. **माताजी ने संघ को पढ़ाया।**
7. **संघ का सीकर को विहार।**

काव्य पद

आचार्य संघ अजमेर से चला, नगर लाडनूं पधराया।
श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक, का उत्तम अवसर आया।।
महावीर स्वामी की प्रतिमा, चन्द्र भवन में पधराई।
शांति-वीर-चंद्र प्रतिमाओं, ने भी प्रतिष्ठा थी पायी।।381।।

मानस्तम्भ निर्माण के लिए, शिलान्यास सम्पन्न हुआ।
कर प्रभावना विविध रूप से, संघ सुजानगढ़ गमन हुआ।।
परम पूज्य श्री माताजी ने, संघ साथ ही गमन किया।
जहाँ चरण रखतीं माताजी, वहाँ-वहाँ पर चमन किया।।382।।

बृहद् संघ से हुआ प्रभावित, गढ़ सुजान की जैन समाज।
हाथ जोड़ कर बोली मुनिवर, अतिशय पुण्य फला है आज।।
चातुर्मास हमें मिल जाये, परमपूज्य आचार्यश्री।
मुनिभक्त, धार्मिक समाज की, पुनः पुनः हार्दिक विनती।।383।।

करुणाधन आचार्यश्री ने, सब पूर्वापर किया विचार।
द्रव्य-क्षेत्र अनुकूल जानकर, चातुर्मास किया स्वीकार।।
आबाल वृद्ध, नर-नारी मन में, लहर हर्ष की दौड़ गई।
चर्या-चर्चा-उपदेशों से, धर्म प्रभावना बहुत हुई।।384।।

चौके लगते पूर्ण शहर में, धार्मिक चर्चा गली-गली।
साधुसंघ के पड़गाहन को, भक्तजनों की होड़ लगी।।
जगह-जगह सतरंगी शोभा, श्रीफल-कलश सुहाते थे।
जिस घर हो जाते अहार, नर धन्य-धन्य हो जाते थे।।385।।

कुल का प्रमुख चाहता जैसे, मेरे कुल की वृद्धि हो।
ज्ञानमती जी सतत चाहतीं, साधु-सुकुल अभिवृद्धि हो।।
सबको सदा प्रेरणा देतीं, भव-तन-भोग विरक्त बनो।
प्रतिमा धारो, बनो आर्यिका, शक्ति सम्हालो मुनि बनो।।386।।

सर्व परिग्रह पाप मूल है, सुकरणीय ही उसका त्याग।
जो कर देते त्याग परिग्रह, वो जन होते हैं बड़भाग।।
सुनकर कुछ बड़भागी जन ने, त्याग परिग्रह की इच्छा।
उन्हें पूज्य आचार्यश्री ने, दी आर्यिका-मुनि दीक्षा।।387।।

किया अध्यापित माताजी ने, जैनेन्द्र व्याकरण, मूलाचार।
श्री क्षुल्लिका जिनमती का, विविध रूप कीना उपकार।।
ऐसे नाम अनेक न जिनका, किया गया उल्लेख यहाँ।
पर बहुतों को माताजी ने, दिया ज्ञान का दान यहाँ।।388।।

आचार्य श्री के प्रतिदिन प्रवचन, माताजी के समय-समय।
पर्व-महोत्सव जो भी आये, गये मनाये यथासमय।।
बहुप्रकार से कर प्रभावना, आचार्य संघ का गमन हुआ।
शेखावटी के प्रवेश द्वार-सम, सीकर में आगमन हुआ।।389।।

सीकर चातुर्मास, सन् १९६१

समाहित विषयवस्तु

1. **सीकर का सौभाग्य।**
2. **संयमियों को जिन दीक्षा दिलवायी।**
3. **माताजी द्वारा कर्तृत्वबुद्धि का त्याग।**
4. **बाबूलाल जी जमादार का सीकर आगमन, माताजी से प्रभावित हुए।**
5. **सब समस्या का समाधान-आर्यिका ज्ञानमती।**
6. **माताजी द्वारा संघ को लब्धिसार आदि पढ़ाना।**
7. **माता मोहिनी जी को संयम पर आरूढ़ किया।**
8. **अन्य जो भी आये, कुछ-कुछ व्रत पाये**

काव्य पद

जैसे सब सुमनों में सुंदर, होता है गुलाब का फूल।
जैसे सब नदियों में पावन, होते हैं गंगा के कूल।।
जैसे संत चरित होता है, सुंदर बाहर औ भीतर।
वैसे ही मरु में गुलशन-सा, लगता है सुंदर सीकर।।390।।

उन प्यासों की बात करो तुम, जिनको मिला न हो पानी।
मिल जाये पीने को अमृत, जीवन होता कल्याणी।।
सीकर को शुभयोग मिला जब, फूला नहीं समाया था।
ईसा सन् उन्नीस-सौ इकसठ, पुण्य वर्ष यह आया था।।391।।

ना जाने कितने वर्षों का, महा पुण्य फलवंत हुआ।
शिवसागर आचार्य श्री का, मंगल नगर-प्रवेश हुआ।।
धन्य जन्म सब ही ने माना, बरसी मरु में अमृतधार।
आचार्यश्री से किया निवेदन, कर दो जीवन का उद्धार।।392।।

मार्ग-गली-चौक-चौराहे, गये सजाये भली प्रकार।
आचार्य संघ किया अभिनंदन, पग प्रक्षालन, आरती उतार।।
चातुर्मास हुआ स्थापित, अति उत्साहमयी वातास।
अद्वितीय उपलब्धी लाया, सीकर का यह चातुर्मास।।393।।

श्रद्धा-ज्ञान-त्याग-त्रिवेणी, बहने लगी नगर प्रांगण।
सन्निधान आचार्यश्री के, हुआ दीक्षा का आयोजन।।
दीक्षा क्या है पुनर्जन्म है, साधु सुबुध इसे पाते हैं।
भव-तन-भोग विरक्त भव्य ही, दीक्षा को ले पाते हैं।।394।।

निरापेक्ष निस्पृह साध्वी हैं, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।
पर कल्याण निरत नित रहतीं, प्रतिफल चाह नहीं रखतीं।।
राजमल्ल-जिनमति-अंगूरी, रतनीबाई संभवमती।
दत्त प्रेरणा संयम पथ की, अंत दीक्षा दिलवा दी।।395।।

किन्तु आर्यिका ज्ञानमती ने, इसका कुछ न श्रेय लिया।
कर्तृत्वबुद्धि को त्याग आपने, पात्र पुण्य को श्रेय दिया।।
धन्य-धन्य माताजी सचमुच, आप तो हैं आदर्श महान्।
सब कुछ करके, किया न कुछ भी, जो माने वह है विद्वान्।।396।।

पंडित जी श्री बाबूलालजी, जमादार सीकर आये।
जाति-व्यवस्था, यज्ञोपवीत के, प्रमाण बहुत से दिखलाये।।
हुए प्रभावित माताजी से, श्रद्धा रखने लगे अपार।
रहे ज्ञान ज्योतिरथ संचालक, माना माता का उपकार।।397।।

ज्ञानमती माताजी ऊपर, आचार्यश्री को था विश्वास।
कोई जटिल समस्या आती, समाधान माताजी पास।।
कभी विशिष्ट प्रवचन करना हो, देते ज्ञानमती आदेश।
आज तुम्हारा प्रवचन होगा, कठिन समस्या, विषय विशेष।।398।।

अभीक्ष्ण ज्ञान योगिनी माता, अध्ययन-अध्यापन ही काम।
किसने, क्या, लिक्खा है कहाँ पर, पृष्ठ, पंक्तियाँ याद तमाम।।
कहते सब अवतार शारदा, पूर्व जन्म श्रम अनथक है।
ज्ञानमती मस्तिष्क के भीतर, कोई कम्प्यूटर फिट है।।399।।

जिनमत्यादि शिष्यमंडली, का लखकर दीक्षा संस्कार।
माताजी को प्राप्त हुआ ज्यों, अनुपम खुशियों का संसार।।
गुरु की सदा भावना रहती, शिष्य चढ़ें उन्नति सोपान।
जिनवर दीक्षा धारण करके, प्राप्त करें अक्षय निर्वाण।।400।।

संघस्थों को माताजी ने, यहाँ पढ़ाया लब्धिसार।
प्रमेय कमल मार्तण्ड पढ़ाया, जिनमति को देकर विस्तार।।
पहले माँ ने नहीं पढ़ा था, ग्रंथ न्याय का महाकठिन।
किन्तु क्षयोपशम अतिशय करी, हुआ सरलतम दिन पर दिन।।401।।

जीव परस्पर करें उपग्रह, उमास्वामी जी सूत्र दिया।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, जीवन में चरितार्थ किया।।
मात मोहिनी ने मैना को, गृहकारा से मुक्त किया।
उनको यहाँ पर ज्ञानमती ने, व्रत संयम आचरण दिया।।402।।

दर्शन करने जो भी आता, उन्हें समझती थीं परिवार।
सबको संयम पथ दिखलाकर, माताजी करतीं उपकार।।
मनोवती-कैलाश-श्रीमती, प्रकाश-मोहिनी जो आये।
परमोपकारी माताजी ने, कुछ न कुछ व्रत दिलवाये।।403।।

समय बीतते देर न लगती, पंख लगा उड़ जाता है।
आँख झपकते रात हो गई, आँख खुले दिन आता है।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
संघ साथ में माताजी का, हुआ लाडनूं ओर गमन।।404।।

सर्व जगत इक समय में अवलोकें प्रभु आप।
नमूँ 'विश्वदृक्' को सतत, समकित हो निष्पाप।।१।।

सब प्राणी के ईश तुम, अतः 'विश्वभूतेश'।
नमत ज्ञान कलिका खिले, मिलता सौख्य अशेष।।२।।

सकल विश्व को तेज से, व्याप्त किया भगवान।
'विश्वज्योति' को नित नमूँ, नशें कर्म बलवान।।३।।

तुम से बढ़कर नहिं कोई, जग में ईश्वर होय।।
नमूँ 'अनीश्वर' को सतत, कर्मकालिमा धोय।।४।।

– गणिनी ज्ञानमती

लाडनूँ चातुर्मास, सन् १९६२

समाहित विषयवस्तु

1. **लाडनूं में मानस्तंभ-जिनबिम्ब प्रतिष्ठा।**
2. **अनुजा मनोवती का संघ में प्रवेश।**
3. **मोहिनीदेवी ने आचार्यश्री से दूसरी प्रतिमा ग्रहण की।**
4. **माताजी संघ में समन्वयक का काम करतीं।**
5. **माताजी द्वारा जिनमती को अध्यापन।**
6. **अजितसागर जी को संघ त्याग नहीं करने हेतु समझाया।**
7. **संघ जोड़ने के लिए जीवनभर के लिए कई वस्तुओं का त्याग।**
8. **आचार्यश्री से शिखरजी यात्रा के लिए अनुमति।**
9. **लघु संघ के साथ माताजी का शिखर जी को विहार**

काव्य पद

दूजोद-मूँडवाड़ा-होकर, कूकनवाली किया विहार।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, जैन धर्म का किया प्रचार।।
वहाँ से चलकर गईं लाडनूं, आचार्य संघ मिलीं ऐसे।
प्रयागराज में गंगा-जमुना, आपस में मिलतीं जैसे।।405।।

आचार्यश्री शिवसागर सन्निधि, हुए धार्मिक आयोजन।
मानस्तंभ जिनबिम्ब प्रतिष्ठा, का सुंदरतम संयोजन।।
मानस्तंभ देख मानी का, मान-भंग हो जाता है।
श्री जिनवर के दर्शन करके, तमस्तोम भग जाता है।।406।।

जब तक काल लब्धि न आती, तब तक बनें न कोई काम।
कितना ही पुरुषार्थ करो तुम, व्यर्थ ही जाते यत्न तमाम।।
लेकिन काल लब्धि आने पर, शीघ्र सफलता मिल जाती।
होनहार जैसी होती है, बुद्धि भी वैसी हो जाती।।407।।

मनोवती का रहा मनोरथ, माताजी के दर्श करें।
संयम के पथ पर चल करके, अपना जीवन धन्य करें।।
किन्तु पिता का मोह हमेशा, मार्ग में बाधक बन जाता।
मात मोहिनी का प्रयास भी, उन पर कुछ न चल पाता।।408।।

मनोवती का भाग्य एक दिन, माँ संग लाडनूं ले आया।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, उन्हें ब्रह्मचर्य दिलवाया।।
मनोवती का मन वैरागी, नहीं चाहता लौटूँ घर।
अतः साधनालीन हो गईं, ज्ञानमती जी संघ रहकर।।409।।

एक दिवस माँ ज्ञानमती ने, खुद का किया केशलुंचन।
वैराग्यभाव पैदा करने में, केशलुंच बन गया पवन।।
माताश्री मोहिनीदेवी, संयम नौका हुईं सवार।
शिवसागर आचार्यश्री से, दो प्रतिमा कीनी स्वीकार।।410।।

धर्म प्यास जिसके मन जगती, अन्य न उसे सुहाता है।
सम्यग्दर्शनज्ञानचरित ही, उसके मन को भाता है।।
जैन समाज लाडनूं में भी, इस ही गुण का रहा निवास।
शिवसागर आचार्य संघ ने, किया यहीं पर चातुर्मास।।411।।

कुछ होते हैं विघ्नसंतोषी, कुछ करते विघ्नों का नाश।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, संघ शांति हित रहा प्रयास।।
रहे संघ सौहार्द-समन्वय, हो न किसी को नाराजी।
पूर्वापर गुण दोष बताकर, समझा देतीं माताजी।।412।।

आचार्यश्री वीरसागर जी, पाठ पढ़ाया उत्तम नेक।
सदा काम तुम सुई से लेना, कैंची को तुम देना फेंक।।
जैसे सुई जोड़ती सबको, माताजी ने जोड़ा संघ।
अति समझाया अजितसिन्धु को, संघ त्याग जब उठा प्रसंग।।413।।

गद्य-पद्य-व्याकरण-न्याय पर, माताजी का पूर्णाधिकार।
लेखन-प्रवचन-ध्यान-साधना, इत्यादिक हैं क्षेत्र अपार।।
गद्य चिन्तामणि, धर्म शर्माभ्युदय, शब्दार्णव चंद्रिका इत्यादि।
जिनमतिजी को किए अध्यापित, माताजी श्री ज्ञानमती।।414।।

अहो! धन्य माताजी तुमको, संघ जोड़ना काम किया।
संग्रहणी हित अमृत औषधि, तक्र का तुम परित्याग किया।।
जीवन की परवाह नहीं की, वह भी दाँव पर लगा दिया।
किया कार्य अकलंक देवजी, तुम भी करके दिखा दिया।।415।।

भोजन की वस्तुएँ छोड़ना, क्या यह भी कोई है त्याग।
सकल ग्रंथियाँ त्याग चुके जो, अब वे क्या त्यागें बड़भाग।।
जिसके पास जो कुछ होता है, वही त्याग है कर सकता।
रस परित्याग महत्तम तप को, महातपस्वी कर सकता।।416।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, चिन्तन-मनन अनन्य करें।
सम्मेदशिखर वंदना करके, अपना जीवन धन्य करें।।
हाथ जोड़कर गुण चरणों में, किया निवेदन सहित प्रणाम।
सिद्धक्षेत्र वंदना करने, गुरुवर अनुमति करें प्रदान।।417।।

जैसे पिता, सुता का अपनी, नहीं चाहता कभी वियोग।
वैसे गुरू शिष्य अपनों का, सदा चाहता है संयोग।।
तदपि पुण्य का कार्य जानकर, अनुमति दी आचार्यश्री।
श्री गुरुवर के चरण पखारे, श्रद्धायुत श्रीमाताजी।।418।।

श्रावक हों अथवा हों साधु, सबमें होता संवेदन।
सजल नयन हो गये गुरू के, जब आये वियोग के क्षण।।
सकल संघ ने करी विदाई, आचार्यश्री आशीष दिया।
अपने संघ सहित माताजी, सिद्धक्षेत्र को गमन किया।।419।।

चार विध दान का फल

ज्ञानवान् ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानतः।
अन्नदानात्सुखी नित्यं निर्व्याधिर्भेषजाद् भवेत्।।

अर्थ – मनुष्य ज्ञानदान से अर्थात् शास्त्रों के दान से या विद्या के दान से ज्ञानवान् होता है। अभयदान देने से निर्भय हो जाता है। आहारदान देने से हमेशा सुखी होता है और औषधिदान के देने से हमेशा निरोग रहता है।

श्री सम्मेदशिखर की यात्रा, सन् १९६२

समाहित विषयवस्तु

1. तीर्थयात्रा का महत्त्व।
2. तीर्थयात्रा के लिए प्रस्थान।
3. पद्मपुरी-महावीर-मथुरा-जम्बूस्वामी की स्मृति।
4. आगरा-फिरोजाबाद-रत्नपुरी-अयोध्या यात्रा।
5. अयोध्या तीर्थंकरों की जन्मस्थली से टिकैतनगर।
6. टिकैतनगर में धर्म प्रभावना।
7. माता-पिता द्वारा परिषहजय श्रवण करना।
8. संघ बनारस-पटना-राजगृही-पावापुरी-गुणावां-चम्पापुर-कुण्डलपुर होकर सम्मेदशिखर पहुँचा।
9. नगर-नगर और शहर-शहर में धर्मप्रभावना।
10. सम्मेदशिखर की यात्रा-पूरे मार्ग में मंत्र जप।
11. प्रभु चरणों में प्रार्थना।
12. तीर्थों की वंदना का महत्त्व।
13. ईसरी में आगमन-प्रवचनसार का स्वाध्याय।

काव्य पद

सब तीर्थों में महातीर्थ है, सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर।
मोक्ष गये सब, सदा जायेंगे, इसी क्षेत्र से तीर्थंकर।।
अनंतानंत अन्य मुनिवर भी, इसी क्षेत्र पाया निर्वाण।
शाश्वत-पावन तीर्थक्षेत्र को, सादर बारम्बार प्रणाम।।420।।

जिनने किये न जिनवर दर्शन, ऐसे नेत्रों से क्या काम।
जिनने सुनी नहीं जिनवाणी, नहीं सुशोभित हों वे कान।।
तीर्थवंदना करी न जिनने, वे पग क्या पाएँ शिवधाम।
ऐसी रसना में रस-ना है, जिसने लिया न प्रभु का नाम।।421।।

यह विचार कर श्री माताजी, तीर्थवंदना किया प्रयाण।
साथ रहीं आर्यिका जिनमति, पद्मावती, आदिमति नाम।।

क्षुल्लिका श्री श्रेयांसमती जी, सुगनचंद जी ब्रह्मचारी।
ब्रह्मचारिणी गल्कू-मूली, मनोवती, भँवरी बाई।।422।।

पद्मपुरी-श्रीमहावीरजी, होकर मथुरा पहुँचा संघ।
जम्बूस्वामी के जीवन के, मुखर हो गये सकल प्रसंग।।
बाल्यकाल में पढ़ा था मैना, जम्बूस्वामी चरित महान्।
उससे ही मैना ने पाया, ब्रह्मचर्यव्रत-शीलनिधान।।423।।

पद्मनंदिपंचविंशतिका, पढ़ मन उपजा भाव विराग।
जम्बूस्वामी चरित ने उसको, बना दिया शोले की आग।।
फलस्वरूप मैनादेवी ने, गृहकारागृह छोड़ दिया।
वीरमती फिर ज्ञानमती मन, मोक्षमार्ग से जोड़ दिया।।424।।

मथुरा से संघ चला आगरा, तदा फिरोजाबाद नगर।
किये सुदर्शन बाहुबली के, बिम्ब तुंग, मनहर-सुंदर।।
मैनपुरी-कन्नौज-कानपुर, फिर संघ पहुँचा रत्नपुरी।
तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जिन, जन्मभूमि शोभा बिखरी।।425।।

रतनपुरी को वंदन करके, नगर अयोध्या पहुँचा संघ।
अनादिनिधन यह तीर्थ महत्तम, आगम वर्णित सकल प्रसंग।।
सभी तीर्थंकर यहीं जनमते, सम्मेदशिखर पाते निर्वाण।
वर्तमान में आया अंतर, इसे भूल हुण्डा की मान।।426।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, जानो जन्म अयोध्या ही।
बारह योजन, मील छ्यानवै, सीमा आगम में वरनी।।
टिकैतनगर संघ गया यहाँ से, तोरण द्वारे बने कई।
गया सजाया जैसे दुल्हन, सजती कोई नई-नई।।427।।

जैनाजैन हुए लाभान्वित, सप्तदिवस तक रहा प्रवास।
प्रवचन-चर्चा-चर्या द्वारा, धर्म प्रभावना किया प्रयास।।
संघ आर्यिका मध्य शोभती, माताजी श्री ज्ञानमती।
यथा देवियों बीच शोभती, मात शारदा सरस्वती।।428।।

साधू होते पवन स्वभावी, रुकते नहीं सदा गतिमान।
आज यहाँ अमृत बरसाते, कल वहाँ देते जीवनदान।।

नीच-ऊँच का भेद न करते, सबको स्वस्थ बनाते हैं।
जो रहते गतिमान सर्वदा, वे पावन हो जाते हैं।।429।।

श्री प्रकाश से मात-पिता, सब सुनते चर्चा काल विहार।
करुणा दृश्य उपस्थित होते, बह पड़ती असुंअन की धार।।
यहाँ शयन करतीं गद्दों पर, रखा न धरती पैर कभी।
वे अब करतीं पद विहार हैं, कांटे-पत्थर की धरती।।430।।

हाड़ कँपाने वाली सर्दी, दाँत करें वीणा का काम।
कोमल तन पर रहें झेलती, समता से वर्षा औ घाम।।
उभय काल चलता विहार है, दुपहर बाद करें आहार।
नीरस, स्वल्प, पाणिपुट बैठे, संयम धारण असि की धार।।431।।

संघ साथ चलने वाले भी, करते थे नीरस आहार।
किन्तु भूख में ऐसा लगता, जैसे हो अमृत का सार।।
घर के छप्पन भोजन में वह, स्वाद कहाँ जो इसमें है।
सन्तों के आशीर्वाद से, सबका जीवन सुख में है।।432।।

टिकैतनगर से गमन हो गया, सकल संघ आरा आया।।
वहाँ से चलकर क्रमशः क्रमशः, नगर बनारस पधराया।।
सुपार्श्वनाथ, श्री पार्श्वनाथ का, नगर बनारस जन्मस्थान।
भक्तिभाव से करी वंदना, पढ़ी स्तुति सहित प्रणाम।433।।

पटना के गुलजार बाग से, सेठ सुदर्शन मोक्ष गये।
पंचपहाड़ी राजगृही के, सकल संघ ने दर्श किए।।
सिद्धक्षेत्र श्री पावापुर से, वीरप्रभू पाया निर्वाण।
माताजी ने भाव सहित, श्रीसिद्धक्षेत्र को किया प्रणाम।।434।।

श्री गुणावां सिद्धक्षेत्र है, गौतम स्वामी मोक्ष गये।
चम्पापुर में वासुपूज्यप्रभु, सभी कल्याणक पूर्ण हुए।।
महावीर की जन्मभूमि है, नालंदा का कुण्डलपुर।
क्रम-क्रम सबको वंदन करते, संघ पहुँचा सम्मेदशिखर।।435।।

सुकरणीय आत्महित पहले, बने तो करना पर उपकार।
आचार्यों ने बतलाया है, यही रहा आगम का सार।।

दीक्षा लेकर माताजी ने, आतम हित प्राधान्य दिया।
किन्तु साथ में समय-समय पर, सर्वभूत उपकार किया।।436।।

नगर-गाँव जो मिले मार्ग में, सबको धर्मोपदेश दिया।
दया-अहिंसा पाठ पढ़ाया, वत्सल-व्रत आचार दिया।।
साध्वी वेष-मधुर वचनावलि, हिताचरण-मंगल उपदेश।
सुनकर जन-जन हुये प्रभावित, त्याग किये सामान्य-विशेष।437।।

सातों व्यसन किसी ने त्यागे, किसी ने त्यागे तीन मकार।
किसी ने त्यागा बिना छना जल, किसी ने त्यागा निशि आहार।
किसी ने धारे पाँच अणुव्रत, कोई नियम लिया पूजन।
करी प्रतिज्ञा स्वाध्याय की, प्रतिदिन करें देव दर्शन।।438।।

जैसे गंगा जहँ-जहँ बहती, करती जाती जीवन दान।
वैसे माता ज्ञानमती जी, करती गईं जगत् कल्याण।।
जैसे बादल भेद न करता, सब पै करता जल की वृष्टि।
वैसे माता ज्ञानमती की, रही सभी पर समता दृष्टि।।439।।

जल को यथा यंत्र मिल जाये, ऊपर को चढ़ जाता है।
मन को तथा मंत्र मिल जाये, ऊर्ध्व गमन कर जाता है।।
सकल मार्ग में माताजी ने, किया महामंत्र का जाप।
पूंछ दबाकर भाग गये सब, विघ्न-अमंगल अपने आप।।440।।

परिषहजयी श्रीमाताजी,नहीं देह प्रति लेश ममत्व।
पथ की विकट विषमताओं में, रखतीं मन में सदा समत्व।।
छाले-काँटे कुछ न कर सके, रही खेलती मधुमुस्कान।
सुख-दुख हर्ष-विषाद न करतीं, इन्हें वसुन्धरा बन्धु समान।441।।

कृष्णा ज्येष्ठ सप्तमी प्रातः, कर अहार संघ चढ़ा पहार।
सीता नाले पर सामायिक, फिर आगे बढ़ना स्वीकार।।
पूरे मार्ग मंत्र जप करके, संघ ने पा ली कुंथु शरण।
मस्तक टेका प्रभु चरणों में, मेटो भगवन्! जन्म मरण।।442।।

माताजी के कमल नयन से, हर्ष की धारा बह निकली।
हुआ सुनिश्चित भव्य हम सभी, भव की सीमा अल्प रही।।

भाव सहित जो करे वंदना, नहीं नरक-पशु गति पाता।
है अचिन्त्य माहात्म्य क्षेत्र का, महातीर्थ है कहलाता।।443।।

जीवन्त तीर्थ ने, महातीर्थ की, संघ सहित वंदना किया।
टोंक-टोंक पर स्तुति-वंदन, भावों से अर्चना किया।।
शिखर-शिखर की रज शिर धारी, अद्भुत भक्ति व्यंजना की।
किया समर्पण, तन-मन-कण-कण, पल-पल कर्म भंजना की।।444।।

जीवन है श्वांसों की यात्रा, मुक्ति पूर्व तक परिभ्रमण।
नियति जीव की बनी हुई है, तन परिवर्तन, जनम-मरण।।
अनादिकाल से रोग लगा यह, दुःख भोगता है प्राणी।
भव सागर से पार उतारो, हे प्रभु! पार्श्वनाथ स्वामी।।445।।

जगज्जाल छिन्न करने की, जिसने मन में ठानी है।
घर-आँगन को त्याग साधना, को अर्पित जिन्दगानी है।।
विषयों से मुख मोड़ लिया है, अब नहीं घूमना चतुर्गति।
माताजी से यहाँ प्राप्त की, सप्तम प्रतिमा मनोवती।।446।।

मधुबन में कुछ दिन प्रवासकर, संघ ईसरी में आया।
प्रवचनसार ग्रंथ आध्यात्मिक, स्वाध्याय सभी को करवाया।।
एक माह रुक कर माताजी, सरलमार्ग श्रम शमन किया।
तीर्थराज की कर परिक्रमा, कलकत्ता को गमन किया।।447।।

तीर्थराज सम्मेदशिखर का, है महत्त्व अचिन्त्यकारी।
अरबों-खरबों उपवासों का, फल पाता वंदनकारी।।
नरक-पशूगति टल ही जाती, उनचास भवों में हो भव पार।
ऐसे पावन तीर्थक्षेत्र को, नमन हमारा बारम्बार।।448।।

कलकत्ता चातुर्मास, सन् १९६३

समाहित विषयवस्तु

1. **कलकत्ता में रक्त-रंजित पैरों से आगमन।**
2. **महानगर में हर्ष की लहर।**
3. **बेलगछिया ने धार्मिक मेलों के स्थान का रूप ले लिया।**
4. **माताजी की सभा में प्रश्न पूछने के खूब अवसर।**
5. **सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन।**
6. **कु.सुशीला ने ब्रह्मचर्य व्रत लिया।**
7. **कलकत्ता से सम्मेदशिखर का विचार।**
8. **वंदना एवं विहार।**

काव्य पद

आषाढ़ सुदी चौथ दोपहर, संघ आर्यिका गमन हुआ।
दो सौ मील यात्रा करके, कलकत्ता आगमन हुआ।।
बहने लगा रक्त तलवों से, दुखते खूब, न चैन लिया।
चतुर्दशी आषाढ़ सुदी को, पहुँचा संघ बेलगछिया।।449।।

महानगर यह चाह रहा था, महासंत कोई आ जाए।
चातक जैसे हम प्यासों की, कोई प्यास बुझा जाये।।
आचार्यश्री शिवसागर जी के, शुभाशीष ने पूरी आश।
सन् तिरेसठ में माताजी का, हुआ स्थापित चातुर्मास।।450।।

महानगर ने माताजी का, किया हार्दिक अभिनंदन।
पग प्रक्षालन-करन आरती, जयकारे, शत शत वंदन।।
आबाल वृद्ध नर-नारी का गण, फूला नहीं समाया था।
महानगर ने महातीर्थ को, महायत्न से पाया था।।451।।

भरने लगा धर्म का मेला, सन्तों से रौनक आई।
पूजन-प्रवचन-भजन-आरती, नृत्य-गान मंगलदायी।।
कई एक चौके गये लगाये, पड़गाहें सौ-सौ नर-नार।
धन्य भाग वह माताजी के, जिस घर में हो जाँय अहार।।452।।

श्रोता मन जिज्ञासा होना, प्रश्न पूछना योग संभार।
पूर्ण सभा होती लाभान्वित, यह भी तप का एक प्रकार।।
प्रश्न तो मानो एक सुमन है, सुरभित होता सब वातास।
एक दीप से , दीप बहुत से , प्रज्ज्वलित होते करें प्रकाश।।453।।

प्रश्न बहुत से माताजी से, पूछे जाते यदा-कदा।
सब ही समाधान पा जाते, सप्रमाण, सौ-टंच सदा।।
माताजी तो ज्ञानमूर्ति हैं, करें प्रशंसा लोग सभी।
लेकिन धन्य-धन्य माताजी, हुआ ज्ञानमद नहीं कभी।।454।।

माताजी का रहा निरंतर, अध्ययन-अध्यापन जारी।
समाधिशतक-पंचसंग्रह ग्रंथ, अध्याये बारी-बारी।।
हुआ प्रशंसित संघ सब तरह, किंचित् याचकवृत्ति नहीं।
ज्ञान-ध्यान-तप ही प्रधान है, कलह-प्रपंच-अशांति नहीं।।455।।

किसी मुनि-साध्वी-साधु की, माँ को निंदा नहीं पसंद।
जो करता है अशुभ कर्म का, होता उसको बंध अनंद।।
शीघ्र रोक देतीं निंदक को, उपगूहन गुण पालन कर।
उचित नहीं निंदा करना, हो वशीभूत माया-मत्सर।।456।।

आर्षमार्ग विपरीत बोलकर, भीड़ नहीं अभिप्रेत कदा।
आगमसम्मत प्रवचन करना, ही इनको अभिप्रेत सदा।।
बार-बार कहते थे कुछ जन, करे शांति में धर्म निवास।
सप्रमाण समझाया इनने, धर्म में रहे शांति का वास।।457।।

सिद्धचक्र मण्डल विधान का, हुआ महत्तम आयोजन।
माताजी के प्रतिदिन होते, सारपूर्ण मार्मिक प्रवचन।।
कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी दिन, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
तदनन्तर श्री संघ आर्यिका, किया शिखर जी ओर गमन।।458।।

आचार्य कल्प श्रुतसागर जी की, पुत्री श्री सुशीलाबाई।
उसको माताजी ने, भव-विराग की घूंटी थी पिलाई।।
हुई प्रभावित माताजी से, ब्रह्मचर्यव्रत धारणकर।
रहीं संघ में, आगे चलकर, हुईं श्रुतमती आर्यिका वर।।459।।

पूज्य आर्यिका माताजी के, विहार काल में हुई सभा।
कहा सभी ने चर्चा-चर्या, अनुशासन उत्कृष्ट प्रभा।।
निंदक या कि प्रशंसक के प्रति, रहा न माता हर्ष-विषाद।
हम कृतज्ञ हैं उपकारों को, सदा-सदा रक्खेंगे याद।।460।।

सिद्धचक्र मंडल विधान की, कोई नहिं महिमा का पार।
इस विधान में कई विधान हैं, भरा हुआ जिनवाणी सार।।
मैनासुंदरि इसे रचाया, पति का कुष्ट मिटाया था।
जन्म-जरा-मृतु कुष्ट रोग भी, इससे ही मिट पाया था।।461।।

कलकत्ता से कर विहार जब, संघ बढ़ा आगे की ओर।
दिया चतुर्दिक् शब्द सुनाई, हिन्दू-मुस्लिम दंगा का शोर।।
पर माताजी सम्यग्दृष्टि, उन्हें लगा न कुछ भी डर।
चल धनबाद-खरखरी हो के, संघ पहुँचा सम्मेदशिखर।।462।।

तीर्थराज की करी वंदना, सबने मिल माताजी संग।
श्री नंदीश्वर द्वीप प्रतिष्ठा, आयोजन का रहा प्रसंग।।
पुनः पुनः आग्रह भक्तों का, अतः वहाँ रुक लाभ दिया।
तदनन्तर सम्मेदशिखर से, गमन पुरलिया ओर किया।।463।।

क्या सारा जगत कुमार्ग से रहित हो सकता है?

जिनैरपि कृतं नैतत्सर्वज्ञैर्निः कुमार्गकम्।
जगत् किमुत शक्येत कर्तुमस्मद्विधैर्जनैः।।

जब सर्वज्ञ जिनेन्द्रदेव भी इस संसार को कुमार्ग से रहित नहीं कर सके, तब फिर हमारे जैसे लोग कैसे कर सकते हैं?

– श्री रविषेणाचार्य

हैदराबाद में चातुर्मास, सन् १९६४

समाहित विषयवस्तु

1. **सम्मेदशिखर से पुरलिया में प्रवास।**
2. **सराक बंधुओं की बस्ती में कुछ दिन बिताए।**
3. **उड़ीसा-खंडगिरि-उदयगिरि, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश।**
4. **अंडा-मछली-मांसाहार त्याग का उपदेश।**
5. **संग्रहणी रोग का प्रकोप।**
6. **हैदराबाद में नाजुक स्थिति और रोग शमन।**
7. **मनोवती को क्षुल्लिका दीक्षा-अभयमती नाम रखा।**
8. **नगर में प्रथम बार जिनालय पर शिखर का निर्माण।**
9. **हैदराबाद चातुर्मास की अनेक उपलब्धियाँ।**

काव्य पद

बिहार पुरलिया वन अंचल में, सराक जाति जन करें निवास।
वत्सलतावश माताजी ने, कुछ दिन वहाँ पर किया प्रवास।।
काल संक्रमण श्रावक बिछुडे, अब कहलाने लगे सराक।
धर्म अहिंसा, जीवन सात्विक, कृषि-पशुपालन, भोजन शाक।464।।

क्रमशः कर विहार माताजी, कटक उड़ीसा किया प्रवेश।
खंडगिरि उदयगिरि, गुफा क्षेत्र के, संघ ने दर्शन किए विशेष।।
प्रान्त उड़ीसा छोड़ संघ जब, आँध्रप्रदेश में किया विहार।
पाया बहुतायत से प्रचलित, अंडा-मछली-मांसाहार।।465।।

इस प्रदेश के विहार काल में, किया अहिंसा धर्म प्रचार।
अंडा-मछली-माँस त्याग ही, रहता इन प्रवचन का सार।।
हुए प्रभावित श्रोताओं ने, त्याग कर दिया मांसाहार।
मांस पकाते बर्तन फेंके, स्वीकारा सात्विक आहार।।466।।

घर जाकर लोगों ने अपने, मात-पिता को समझाया।
बालक-बूढ़ों सभी से उनने, त्याग माँस का करवाया।।

धीरे-धीरे मार्ग पार कर, पहुँची हैदराबाद नगर।
सबने खुशियाँ खूब मनाईं, नगर सजाया डगर-डगर।।467।।

आषाढ़ माह में माताजी ने, अति ही करी चलाई थी।
भीषण गर्मी-संग्रहणी ने, इन पर करी चढ़ाई थी।।
रस-पय-दवा न पचती कुछ भी, निकल वमन से जाती थी।
फलस्वरूप दुर्बल तन माता, उठ या बैठ न पाती थीं।।468।

एक बार ही भोजन-पानी, साथ उसी के औषध पान।
जीवित रखना कठिन था इनको, वैद्य-डाक्टर का अनुमान।।
सकल समाज हुई अति चिंतित, करें परस्पर वार्तालाप।
अल्पवयस्का साध्वी माता, हैं अनन्य अपने में आप।।469।।

विदुषी, प्रवचनकला दक्ष हैं, आगमोक्त चर्याधारी।
यदि समाधि हो गई यहाँ पर, हमें लगे अपयश भारी।।
किंकर्तव्य विमूढ़ हुए सब, कुछ उपाय न सूझा है।
कलकत्ते वालों ने भेजा, कुशल वैद्य तब दूजा है।।470।।

इनकी नाजुक स्थिति देखी, हुए वैद्य के होश हवा।
आयुकर्म जब शेष रहे तो, कर जाती है काम दवा।।
इन सलाह से कर परिवर्तन, वैद्य ने दिया दवाई है।
धीरे-धीरे रोग शमन हो, तन स्फूर्ती आई है।।471।।

चातुर्मास हुआ स्थापित, हर्ष लहर की आई है।
आबाल-वृद्ध-नर-नारी सबके, चेहरे रौनक आई है।।
हुए कार्यक्रम समय-समय पर, माँ के प्रवचन रोज हुए।
माताजी से धर्मामृत के, चषक सभी ने खूब पिये।।472।।

आचार्यश्री शिवसागर जी से, स्वीकृति पाकर दीक्षा की।
माताजी ने मनोवती को, तदा क्षुल्लिका दीक्षा दी।।
श्रावण शुक्ला सातें शुभतिथि, मोक्षकल्याणक पारसनाथ।
अभयमती माता इच्छामि, करके सबने नमाया माथ।।473।।

परम पूज्य माताजी सन्निधि, अति ऐतिहासिक कार्य हुए।
पर्वपर्यूषण-चातुर्मास में, छप्पन विविधविधान हुए।।

नहीं शिखर था जिनमंदिर पर, शासनकाल मुसलमानी।
माताजी से प्राप्त प्रेरणा, शिखर बन गया मनहारी।।474।।

शांतिनाथ जिन हुए विराजित, कलशारोहण किया गया।
प्रथमबार रथयात्रा का भी, महदायोजन किया गया।।
प्राप्त प्रेरणा माताजी से, जो ऐतिहासिक कार्य हुए।
वैसे अब तक नहीं किसी के, शुभाशीष सम्पन्न हुए।।475।।

हैदराबादिक चतुर्मास की, रहीं उपलब्धि अनेकानेक।
सबसे उत्तम माताजी का, स्वास्थ्य लाभ है उनमें एक।।
बहु विधान, क्षुल्लिका दीक्षा, मंदिरजी पै शिखर बना।
संघ चला मन बाहुबली भज, शांतिनाथ को शीश नमा।।476।।

पाप बंध किनके नहीं है

पावागमदाराइं अणाइरूवट्ठियाइ जीवम्मि।
तत्थ सुहासवदार उग्घादेंतो कड सदोसो।।५०।।
घडियाजलं व कम्मे अणुसमयमसंखगुणियसेढीए।
णिज्जरमणे संते वि महव्वईणं कुदो पावं।।६०।।

जीव में पापास्त्रव द्वार अनादिकाल से स्थित हैं उनके रहते हुए जो जीव शुभास्त्रव के द्वार का उद्घाटन करता है अर्थात् शुभास्त्रव के कारणभूत कामों को करता है वह सदोष कैसे हो सकता है? अर्थात् वह निर्दोष है।

जब महाव्रतियों के प्रतिसमय घटिकायंत्र के जल के समान असंख्यात गुणित श्रेणी रूप से कर्मों की निर्जरा होती रहती है तब उनके पाप कैसे संभव है? अर्थात् मुनियों के पाप का आस्त्रव नहीं होता है।

— जयधवला- श्री वीरसेन स्वामी

श्रवणबेलगोला चातुर्मास, सन् १९६५

समाहित विषयवस्तु

1. **अद्भुत अलौकिक जिनबिम्ब दर्शन एवं प्रवास।**
2. **रात्रि में प्रभु चरणों में ध्यान लगाया।**
3. **एक रात्रि में ध्यानकाल में जम्बूद्वीपादि रचनाओं के दर्शन हुए।**
4. **यहीं बाहुबली स्तोत्र एवं बाहुबली चरित्र की रचना की।**
5. **15 दिन में कन्नड़ भाषा सीखी और कौशल प्राप्त किया।**
6. **जम्बूद्वीप एवं तेरहद्वीप रचना हस्तिनापुर में बनवाई।**
7. **अनेक स्तोत्रों-स्तुतियों की रचना।**
8. **कन्नड़ भाषा में भद्रबाहु स्तुति की रचना।**
9. **एक वर्ष और प्रवास।**
10. **आस-पास के क्षेत्रों के दर्शन।**

काव्य पद

जैसे सूरज निज स्वभाव से, हरता है जग का अँधकार।
वैसे संत प्रकृतिवश अपनी, करते रहते हैं उपकार।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, ऐसी ही हैं साध्वी एक।
उनके पावन श्रीचरणों में, शत-शत वंदन माथा टेक।।477।।

कई वर्षों से गोम्मट स्वामी, दर्शन इच्छा रही प्रबल।
कर विहार माताजी पहुँचीं, बाहुबली के चरण कमल।।
श्री जिनेन्द्र की अनुपम-अद्भुत, मनहरमूरत तुंग विशाल।
नयनों के सम्मुख आते ही, माँ कर जोड़ नमाया भाल।।478।।

नयन खुले के खुले रह गये, तन रोमांचित, गद्गद स्वर।
गोम्मटेश श्री बाहुबली की, ध्यानलीन छवि को लखकर।।
लगा कि जैसे स्वप्न हो कोई, अति विस्मय, आश्चर्य महा।
हर्षातिरेक बहा नयनों से, शब्दों से नहिं जाय कहा।।479।।

पथ का श्रम काफूर हो गया, रोगादिक सब दूर हुए।
निर्धन को मिल गया खजाना, कर्म कुलाचल चूर हुए।।

चंद्र-विन्ध्यगिरि करी वंदना, किन्तु मिटी न मन की प्यास।
अतः दिवस पन्द्रह माताजी, रहीं बाहुबलि चरणों पास।।480।।

चरणों बैठ ध्यान थी करतीं, स्तुति पढ़तीं-चिंतन-मौन।
पूर्ण निराकुलता अपनाई, शिष्या-संघ हमारे कौन।।
रात्रिशयन कम करें, चाँदनी, बाहुबली छवि निरखें खूब।
मनोवेदिका उन्हें बिठाकर, नयनकपाट लगातीं डूब।।481।।

एक रात्रि के अंत प्रहर में, ध्यान मग्न थीं माताजी।
हुए अलौकिक क्षेत्र के दर्शन, गिरि-द्वीप-मंदिर आदी।।
जम्बूद्वीप - खंड धातकी - पुष्करवर - नंदीश्वर सब।
द्वीप-कुलाचल-मंदिर-मूरत, माताजी ने देखे तब।।482।।

घन्टों बैठीं रहीं ध्यान में, देखा दिव्य प्रकाश हिए।
लगा कि जैसे पूर्व जन्म में, इनके दर्शन खूब किए।।
चार शतक अष्टपंचाशत, जिनमंदिर के सुंदर दृश्य।
स्मृति पटल से माताजी के, अद्यावधि नहिं होय अदृश्य।।483।।

यथादृष्ट जिनमंदिर संख्या, त्रिलोकसार में पाते हम।
इसमें है संदेह न कुछ भी, देखे मात ने पूर्व जनम।।
बाहुबली स्तोत्र की रचना, प्रभु चरणों गिरि ऊपर की।
एक पंचाशत श्लोकों में, सुंदर-सरस भक्ति रस की।।484।।

बाहुबली का चरित आपने, एक शतक एकादश पद्य।
रचा मनोहर अनुपम सुंदर, लगी देर ना अतिशय सद्य।।
एक शतक एकादश पद्यों, की मणिमाला स्वर्ण गुणी।
माताजी ने अर्पित की हैं, अद्वितीय गोम्मटेश मुनी।।485।।

माताजी की प्रतिभा अद्‌भुत, महाविलक्षण अकलंकी।
पंद्रह दिन में कन्नड़ भाषा, कौशल पाया माताजी।।
यही नहीं शिष्याओं को भी, सिखा दिया पढ़ना-लिखना।
अति आश्चर्यजनक घटना यह, महज्जनों का है कहना।।486।।

स्वप्न देखना चीज अलग है, किन्तु उसे करना साकार।
बहुत ही टेढ़ी खीर बंधु वह, रह जाते जन झक को मार।।

मध्यलोक-तेरहद्वीपों के, चार शतक पंचाशत आठ।
अकृत्रिम जिन चैत्यालय को, हस्तिनागपुर उतरा ठाठ।।487।।

यह किसका कमाल है बोलो, किसने सब साकार किया।
किसने जैनागम को भू-पर, याथातथ्य उतार दिया।।
जम्बू - द्वीप - समुद्र - सुमेरू, पर्वत - क्षेत्र - नदी - सरवर।
देव-तीर्थंकर-कर्मभोगभू, आर्य-म्लेच्छ नर किये अमर।।488।।

तेरहद्वीप याद रख पाना, उनकी सब रचना का ज्ञान।
कागज पर भी लिख ना पाते, काल पाँचवें के विद्वान्।।
अहो! धन्य माताजी तुम हो, सबको दिया अमर आकार।
एतदर्थ तव चरण कमल में, नमन हमारा बारम्बार।।489।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, रचे यहाँ स्तोत्र अनेक।
जम्बूस्वामी, गुरूवीर-शिव, स्तुतियाँ सुंदर प्रत्येक।।
सांगत्यराग में माताजी ने, महावीर स्तुति रची।
भद्र-बाहु स्तुति, अनुप्रेक्षा, कन्नड़ भाषा में विरची।।490।।

जम्बूद्वीप रचना का मन में, आया यहीं दिव्य आभास।
अनुपम साहित्यिक कृतियों से, पूर्ण रहा यह चातुर्मास।।
याद रहेगी सदाकाल यह, जीवन की उपलब्धि महान्।
बाहुबलि के चरणकमल का, रहा श्रेष्ठ उत्तम वरदान।।491।।

पादमूल में बाहुबली के, जब-जब माता करें प्रवास।
आगन्तुक जिज्ञासुजनों को, तब-तब दें सम्बोधन खास।।
दिगम्बरत्व का क्या महत्त्व है, बाहुबली का चरित महान।
समझा देतीं अंग्रेजों को, माताजी देकर व्याख्यान।।492।।

गोम्मटेश-श्रीबाहुबली की, अनुपम छवि मन को भायी।
पर्वतमाला पर हरीतिमा, ने ली चहुँदिशि अँगड़ाई।।
ज्ञानावरणी कर्म क्षयोपशम, तेरहद्वीप दिव्य आभास।
सब विचार कर माताजी ने, किया यहीं पर चातुर्मास।।493।।

यही नहीं श्रीमाताजी ने, एक वर्ष यहाँ किया प्रवास।
कार्य असंभव संभव होते, यदि हो मन में सच्ची प्यास।।

दृढ़ संकल्पी पा जाते हैं, जो लेते हैं मन में ठान।
माताजी अभिषेक को पाया, असमय श्री गोम्मट भगवान।।494।।

एक वर्ष तक बाहुबली जी, निश्चल रहकर धारा योग।
माताजी भी एक वर्ष तक, यहाँ रहीं अद्भुत संयोग।।
फाल्गुन कृष्णा अंक चतुर्थी, आना-जाना एक तिथि।
बाहुबली छवि को निहारते, चला संघ मूडविद्री।।495।।

मूड़विद्री में संघ ने किये, दर्शन प्रतिमा फटिक मणी।
रत्नमयी जिन प्रतिमाओं के, कई अवगाहना, वर्ण कई।।
कारकल-हुम्मच-धर्मस्थल से, पहुँच गया संघ बीजापुर।
धर्म प्रभावना करते-करते, संघ आ गया सोलापुर।।496।।

मनहस्ती को वश में करो

जह चंडो वणहत्थी उद्दामो णयररायमग्गम्मि।
तिक्खंकुसेण धरिदो णरेण दिढसत्तिजुत्तेण।।
तह चंडो मणहत्थी उद्दामो विसयराजमग्गम्मि।
णाणंकुसेण धरिदो रुद्धो जह मत्तहत्थिव्य।।

अर्थ—जैसे जिसके गंडस्थल से मद झर रहा है और जो अत्यन्त कुपित हो रहा है ऐसा वनहस्ती यदि सांकल आदि बंधनों से रहित होकर नगर के राजमार्गों में दौड़ रहा है तो दृढ़ शक्तिशाली मनुष्य तीक्ष्ण अंकुश के द्वारा ही उसे वश में कर सकता है। उसी प्रकार से पंचेन्द्रियों के विषयरूपी राजमार्ग में उद्दंड फिरता हुआ मनरूपी हस्ती ज्ञानरूपी अंकुश के द्वारा ही वश में किया जाता है एवं जैसे मदोन्मत हस्ती भी वशीभूत हो जाने से स्वच्छंद कुछ भी करने में समर्थ नहीं होता है उसी प्रकार से मुनि भी जब अपने मनरूपी हस्ती को वश में कर लेते हैं तो वे उसे जहाँ लगाते हैं, वहीं पर ठहर जाता है, व्यर्थ के दुःखदायी आर्तरौद्र ध्यान की तरफ नहीं जाता है, ऐसा अभिप्राय है।

—भगवान कुंदकुंद देव, मूलाचार

सोलापुर चातुर्मास, सन् १९६६

समाहित विषयवस्तु

1. **ज्ञान-भक्ति वात्सल्य की त्रिवेणी यहाँ प्रवाहित हुई।**
2. **अनगिनत ग्रंथों का स्वाध्याय।**
3. **अनेक स्तोत्रों एवं ग्रंथों की रचना।**
4. **प्रारंभिक जिज्ञासुओं एवं महिलाओं को ज्ञानदान।**
5. **जैन भूगोल को भूमि पर उतारा।**

काव्य पद

जैसे बादल जल बरसाता, करता चलता जग उपकार।
वैसे संत जहाँ पर जाते, आती-जाती वहाँ बहार।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, संघ सहित कर रहीं गमन।
महाराष्ट्र की सुंदर नगरी, हुआ सोलापुर शुभागमन।।497।।

जैन जगत की अनुपम साध्वी, आगम की उत्तम ज्ञाता।
लख चर्या, सुनकर वचनामृत, जन-जन को आनंद आता।।
पाकर ऐसी निधि अमूल्य को, किया निवेदन पूरो आस।
हे माताजी! सोलापुर में, करें स्थापित चातुर्मास।।498।।

धर्मध्यान अनुकूल क्षेत्र है, भक्त-पंथ, अनुकूल रहा।
जलवायू अनुकूल संघ के, विमल सिंधु सान्निध्य महा।।
श्रेष्ठी-श्रावक गुणी व्रतीजन, अनुनयविनय विलोकी खास।
परम पूज्य श्रीमाताजी ने, किया स्थापित चातुर्मास।।499।।

सोलापुर का चतुर्मास यह, विस्मृत होगा नहीं कदा।
ज्ञानाराधन-चिंतन में ही, लीन रहा उपयोग सदा।।
स्वाध्याय-प्रवचन-चर्चा का, सदाकाल वातास रहा।
ज्ञान-भक्ति-वात्सल्य त्रिवेणी, का प्रवाह दिन-रात बहा।।500।।

प्रातकाल स्वाध्याय में रहा, लब्धिसार ग्रंथ का नाम।
समयसार तदनंतर चलता, अतिविशुद्धि पाते परिणाम।।

त्रिलोकसार श्लोकवार्तिक, मध्य दिवस होता स्वाध्याय।
चर्चा-तत्त्व अहर्निश चलती, फलतः होती मंद कषाय।।501।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती की, कलम न लेती कभी विराम।
वह तो नित बढ़ती ही रहती, ज्यों पावन गंगा अभिराम।।
माताजी ने रचे यहाँ पर, संस्कृत में स्तोत्र अनेक।
त्रिलोक-चन्द्रप्रभ-शिखर-प्रभाती, महासाहित्यनिधि प्रत्येक।।502।।

माताजी वैदुष्य अतिशयी, विविध विधाओं पर अधिकार।
संस्कृत-न्याय-छंद-व्याकरण, सिद्धांत ज्ञान है अमित अपार।।
बहुभाषा विज्ञा माताजी, गद्य-पद्य-में परम प्रवीण।
अनुवादन में दक्ष आप हैं, रहतीं ज्ञानध्यान में लीन।।503।।

प्रारम्भिक जिज्ञासुजनों को, द्रव्य-संग्रह सुज्ञान दिया।
संस्कृत में सामायिक पढ़ना, महिलाओं को सिखा दिया।।
ज्ञानामृत दे पा ली शिष्या, अम्मा का पाया सम्मान।
ज्ञान समान वात्सल्य भी दिया, तेरहद्वीप कराया ध्यान।।504।।

जैनागम भूगोल विषय का, माताजी को अनुपम ज्ञान।
उसके बल पर रचा आपने, उत्तम इन्द्रध्वज का विधान।।
जम्बूद्वीप सकल रचना को, सफल दिया भू-पर आयाम।
पत्थर-पत्थर बोल रहा है, ज्ञानमती माता का नाम।।505।।

नारी होकर माताजी ने, किए अप्रतिम कार्य अनेक।
नर भी वैसा कर ना पाये, उत्तम-पूर्ण-सुष्ठु-प्रत्येक।।
आप भाव से दिव्य पुरुष हैं, दिव्य द्रव्य से नारी हैं।
इसीलिए तो आज पुरुष भी, माता के आभारी हैं।।506।।

सनावद चातुर्मास, सन् १९६७

समाहित विषयवस्तु

1. **सोलापुर से विहार।**
2. **कुंथलगिरि-पैठण-एलोरा-मांगीतुंगी-गजपंथा-बड़वानी-सिद्धवरकूट होते हुए इंदौर में प्रवास।**
3. **इंदौर में शिक्षण शिविर का आयोजन।**
4. **आलाप पद्धति एवं पात्रकेसरी स्तोत्र का अनुवादन।**
5. **सनावद में चातुर्मास।**
6. **श्री 105 क्षुल्लक मोतीसागर जी की जन्मभूमि।**
7. **मोतीचंद्र संत मोतीसागर हो गये।**
8. **शिक्षण शिविर का आयोजन।**
9. **चातुर्मास की अनेक उपलब्धियाँ।**
10. **यशवंत छात्र ने ब्रह्मचर्यव्रत लिया जो आज आचार्य श्री वर्धमानसागर हैं।**
11. **मुक्तागिरि को विहार।**
12. **मुक्तागिरि नाम की सार्थकता।**

काव्य पद

श्रावक के पद स्थिर रहते, दौड़ लगाता रहता मन।
किन्तु संत मन स्थिर रखते, चलते रहते सदा चरण।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, सोलापुर से संघ चला।
कुंथलगिरि - पैठण - एलोरा - मांगीतुंगी - तीर्थ मिला।।507।।

फिर गजपंथा यात्रा करके, बड़वानी संघ पधराया।
बड़वानी से ऊन, वहाँ से, सिद्धवरकूट क्षेत्र आया।।
तदनंतर इंदौर में किया, शिक्षण-शिविर सु आयोजन।
किया यहीं पर माताजी ने, आलापपद्धति अनुवादन।।508।।

पात्रकेशरी स्तोत्र का किया, संस्कृत भाषा पद्यानुवाद।
मोतीचंद जी किये प्रकाशित, सकल समाज दिया धन्यवाद।।
इंदौर चाहता हार्दिकता से, माताजी का चातुर्मास।
उधर सनावदवासी प्यासे, बैठे पूर्ण लगाये आश।।509।।

बैठे-बैठे काम न चलता, है उद्योग सफलता वास।
भाग्य साथ उसका ही देता, जो करता है पूर्ण प्रयास।।
श्री गुरुवर तक दौड़ लगाई, आज्ञा लाये हाथों-हाथ।
माताजी ने शिरोधार्य की, नगर सनावद किया सनाथ।।510।।

संघ सहित श्री माताजी का, यदा नगर आगमन हुआ।
लगा कि जैसे सूखे मरुथल, गुलशन-गुलशन चमन हुआ।।
इसी नगर के रत्न अमोलक, क्षुल्लक जी श्री मोतीचंद।
माताजी संघस्थ संयमी, मोतीसागर जी गुणवन्त।।511।।

नगर सनावद रहते दम्पति, रूपाबाई-अमोलकचंद।
उनके एक पुत्र वैरागी, ब्रह्मचारी श्री मोतीचंद्र।।
महाजौहरी माताजी ने, एक दृष्टि सब जान लिया।
मुझे गोद दे दो बेटा, माता ने उनसे माँग लिया।।512।।

मात-पिता की स्वीकृति पाकर, लगे फूटने मोतीचूर।
गृह-तज हुए संघ में शामिल, माँ आशीष मिला भरपूर।।
सज्जन के मस्तक चढ़ जाता, कीट सुमन का पाकर संघ।
मानव संत संग को पाकर, खुद भी बन जाता है संत।।513।।

शिक्षण शिविर हुआ आयोजित, चातुर्मास का सफल उपाय।
छहढाला-तत्त्वार्थसूत्र सह, अध्याये पुरुषार्थ उपाय।।
नगर सनावद चतुर्मास का, एक और है अनुपम फल।
यशवन्त छात्र ने ब्रह्मचर्य ले, अपना जीवन किया सफल।।514।।

जिनवर दीक्षा धार अनंतर, वर्धमानसागर मुनि मान्य।
आज आप आचार्य बने हैं, चढ़कर रत्नत्रय सोपान।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
संघ सहित श्रीमाताजी ने, मुक्तागिरि को किया गमन।।515।।

मुक्तागिरि के तुंग शिखर पर, एक गुफा है मनहारी।
उसमें राजित शांतिनाथ की, प्रतिमाद्वय अतिशयकारी।।
लगभग तीस जिनालय शोभित, प्रकृति छटा सर्वत्र ललाम।
होती थी मुतियन की वर्षा, अतः पड़ा मुक्तागिरि नाम।।516।।

प्रतापगढ़ चातुर्मास, सन् १९६८

समाहित विषयवस्तु

1. मुक्तागिरि से बांसवाड़ा।
2. बांसवाड़ा में माताजी के प्रवचन।
3. बांसवाड़ा की उपलब्धि-कलादेवी से आर्यिका कैलाशमती।
4. पिता-पुत्री-शिष्या सम्बन्ध।
5. माताजी का गुरु संघ में पुनर्मिलन।
6. चातुर्मास की स्थापना।
7. माताजी द्वारा धर्म प्रभावना।
8. माताजी द्वारा मोतीचंद-यशवंत कुमार आदि को अध्यापन।
9. श्री रवीन्द्र दर्शनार्थ आये-माताजी द्वारा सम्बोधन।
10. चातुर्मास अनंतर महावीर जी को विहार।
11. माताजी की निर्दोष चर्या।
12. माताजी द्वारा अनेक ग्रंथों का अध्ययन।
13. कोटा-चमत्कार जी होकर महावीर जी में आगमन।
14. महावीरजी में आचार्य श्री शिवसागर जी की समाधि।
15. आचार्यपट्ट धर्मसागर जी को।
16. एकादश मुनि एवं आर्यिका दीक्षाएँ।
17. संयमियों की मूलप्रेरक माताजी रहीं।
18. माताजी ने इतिहास सुरक्षा के लिए संघ के चित्र खिंचवाये।
19. माताजी स्व-पर कल्याण में संलग्न।
20. महावीर जयंती पश्चात् संघ का विहार।

काव्य पद

मुक्तागिरि में पुण्यार्जन कर, संघ बांसवाड़ा आया।
माताजी के प्रवचन सुनकर, जन-जन का मन हर्षाया।।
एक ग्राम से इक-इक श्रावक, देवें मुझको पुत्री एक।
मैं विदुषी कर उन्हें बना दूँ, मनोरमा-सीता सी नेक।।517।।

हुये प्रभावित पन्नालाल जी, कनक-कला दो पुत्री ला।
माताजी के चरण कमल में, वंदामि सह दीं बिठला।।

पाँच वर्ष को सौंप रहा हूँ, माताजी दें रत्न बना।
ब्रह्मचर्यव्रत देकर उनको, माँ आशीष दिया अपना।।518।।

कनकलता औ कला उभय को, व्रत संयम की घुटी पिला।
खूब पढ़ाया, खूब सिखाया, जिससे जीवन सुमन खिला।।
समय प्राप्त श्री कलादेविजी, ज्ञान-ध्यान-तप हुईं प्रवीण।
कैलाशमती आर्यिका होकर, आत्म-धर्म में अधुना लीन।।519।।

पुत्री रहे कहीं भी लेकिन, सकती नहीं पिता को भूल।
रहती चाह पिता के मन में, पुत्री हो आँखों के कूल।।
गुरुवर होते पिता से बढ़कर, मिट्टी को देते आकार।
संस्कार के प्राण फूँकते, गुरू पूर्ण माँ का अवतार।।520।।

शिष्या भी पुत्री से बढ़कर, रखती सदा गुरू का ध्यान।
गुरु ही उसके मात-पिता हैं, गुरुवर ही उसके भगवान।।
पाँच वर्ष पश्चात् श्री माँ, शिवसागर में मिलीं तथा।
मिलती है सागर में जाके, जल भर सरिता समय यथा।521।।

गुरुवर संघ राजित करावली, किए श्रीशिवनिधि दर्शन।
हर्ष अश्रु बह पड़े नयन से, हुआ संघ-सह संघ मिलन।।
बढ़ा संघ लख निज शिष्या का, श्रीगुरु अति ही हर्षाए।
कुशल-क्षेम, रत्नत्रय पूछा, वत्सलभाव उमड़ आए।।522।।

नगर प्रतापगढ़ शोभन सुन्दर, राजस्थानी शान रहा।
आचार्य संघ शिवसागर जी का, स्थापित चातुर्मास रहा।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, चर्या-चर्चा-प्रवचन कर।
की प्रभावना जैन धर्म की, सकल समाज बोध देकर।।523।।

माताजी ने किये अध्यापित, मोतीचंद-यशवंत कुमार।
अन्यानेक शिष्य-शिष्याओं, पायी शिक्षा भली प्रकार।।
यही नहीं मोती-यशादि नौ, कक्षा शास्त्री की उत्तीर्ण।
और आज सान्निध्य उन्हीं के, लगे भवोदधि करने तीर्ण।।524।।

प्रतापगढ़ के चातुर्मास का, लेखनीय है एक प्रसंग।
मात-पिता संग सुत रवीन्द्र भी, आये दर्शनार्थ मुनि संघ।।

माताजी ने अवसर पाकर, ब्रह्मचर्य दी घुटी पिला।
कालान्तर में संघ आर्यिका, को यह अनुपम रत्न मिला।।525।।

माताजी की चर्या निर्मल, उनकी समता करेगा कौन?
पिता बात जब करते घर की, धारण कर लेतीं तब मौन।।
अनुमति त्याग धरा व्रत जिसने, गृह चर्चा में लगता दोष।
धन्य-धन्य माताजी तुम हो, आपकी चर्या अति निर्दोष।।526।।

माताजी ने यहाँ पढ़ाये, न्याय दीपिका-गोम्मटसार।
ज्ञान दिया शिष्य-शिष्याओं, कातंत्र व्याकरण-सह विस्तार।।
तिलोयपण्णति ज्योतिलोक को, पढ़ा प्रभू को साक्षी कर।
कौशल पाया, शिविर लगाया, ज्ञान दिया, कृति छपवाकर। 527।।

माताजी से प्राप्त प्रेरणा, हुए सफलतम आयोजन।
गुरूपूर्णिमा, रक्षाबंधन, मुकुट सप्तमी, पर्यूषण।।
निष्ठापन सम्पन्न हो गया, समय उड़ गया पंख पसार।
चाँदनपुर को लक्ष्य बनाकर, आचार्य संघ का हुआ विहार।।528।।

संघ चला कोटा पधराया, फिर चमत्कार जी आया।
जैनधर्म की कर प्रभावना, महावीर चरण में शिर नाया।।
आचार्यश्री शिवसागर जी की, सहसा यहाँ समाधि हुई।
साधू भी मानव होते हैं, नयनों अँसुवन धार बही।।529।।

श्री मुनिराज धर्मसागर ने, आचार्यपट्ट का पद धारा।
एकादश जन हुए सु-दीक्षित, छोड़ चुके जो गृहकारा।।
श्री क्षुल्लिका अभयमती जी, हुईं आर्यिका अभयमती।
मूल में प्रेरक रहीं सभी की, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।।530।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमतीजी, रहीं संघ में प्रेरक-प्राण।
प्रथम बुलाना, ज्ञान कराना, समय कराना दीक्षा दान।।
माँ ने घर-बाहर ना देखा, पकड़ लिया जो आया हाथ।
मोक्षमार्ग पर उसे लगाया, हम सब तुम्हें नमाते माथ।।531।।

माताजी व्युत्पन्नमति हैं, बुद्धि महाविलक्षण हैं।
एक महानारी के उनमें, एकत्रित सब लक्षण हैं।।

उन्हें पता है सब कुछ अस्थिर, कैसे हो रक्षित इतिहास।
अतः आपने साधु संघ के, चित्र खिंचाये किये प्रयास।।532।।

माताजी हैं बड़ी पारखी, मणि-मोती सबका है ज्ञान।
जिसको हाथ लगा देती हैं, हो जाता उसका कल्याण।।
किस-किस का उल्लेख करें हम, यहाँ तो लम्बी सूची है।
सच है, उदार चरित संतों की, होती धरा समूची है।।533।।

चैत्र शुक्ल तेरस के शुभदिन, वीरप्रभू का जन्म हुआ।
हुआ बृहद् मेला आयोजन, उत्सव महा अनन्य हुआ।।
महावीर के श्रीचरणों में, माथ नमाया द्वय कर जोर।
धर्मनिधि आचार्य संघ ने, गमन किया जयपुर की ओर।।534।।

गृहस्थ धर्म भी पूज्य है।

आराध्यन्ते जिनेन्द्रा गुरुषु च विनतिर्धार्मिकैः प्रीतिरूच्चैः,
पात्रेभ्यो दानमापन्निहतजनकृते तच्च कारुण्यबुद्ध्या।
तत्त्वाभ्यासः स्वकीयव्रततरतिममलं दर्शनं यत्र पूज्यं,
तद्गार्हस्थ्यं बुधानामितरदिह पुनर्दुःखदो मोहपाशः।।13।।

जहाँ पर जिनेन्द्रदेव की आराधना की जाती है, गुरुओं का विनय किया जाता है, धर्मात्माओं के साथ अतिशय प्रीति रहती है, पात्रों को दान दिया जाता है एवं आपत्ति से पीड़ित प्राणियों को दयाबुद्धि से करुणा दान दिया जाता है, तत्त्वों का अभ्यास किया जाता है, अपने व्रतों में अर्थात् दान-पूजा आदि क्रियाओं तथा पंच अणुव्रत आदि व्रतों में प्रेम किया जाता है, निर्मल सम्यग्दर्शन धारण किया जाता है, वह गृहस्थावस्था विद्वानों के द्वारा पूज्य है, किन्तु इससे विपरीत गार्हस्थ्य जीवन इस संसार में दुःखदायक मोह का जाल ही है।

श्री पद्मनंदि आचार्य

जयपुर चातुर्मास, सन् १९६९

समाहित विषयवस्तु

1. जयपुर में आचार्य श्री धर्मसागर का संघ सहित आगमन।
2. संघ का जयपुर में चातुर्मास स्थापित।
3. माताजी ने मुनिसंघ को अध्यापन कराया।
4. ज्ञानक्षेत्र में सब नारियों में माताजी का प्रमुख स्थान।
5. यहीं अष्टसहस्री की हिन्दी टीका रची।
6. माताजी ने शिष्य हितार्थ अष्टसहस्री का अनुवाद किया।
7. रुग्णकाल में भी माताजी ने विश्राम/विराम नहीं लिया।
8. शिक्षण शिविर का आयोजन।
9. ज्योतिर्लोक का ज्ञान दिया।
10. जयपुर से निवाई, फिर रियासत टोंक आगमन।

काव्य पद

जयपुर तो जैनों का गढ़ है, कहलाता है जैन नगर।
सज्जित हुए गली-चौराहे, हुई प्रफुल्लित डगर-डगर।।
श्री आचार्य धर्मसागर जी, संघ सहित पधराये हैं।
प्रकृति-पुरुष सबने ही मिलकर, गीत खुशी के गाये हैं।।535।।

श्री आचार्य धर्मसागर जी, हैं निर्मल चारित्र निधान।
आर्ष परम्परा के संपोषक, संघ चतुर्विध आप प्रधान।।
सकल देश के नयन सितारे, सकल समाज हृदय सम्राट्।
त्याग और निस्पृह जीवन के, उच्चादर्श रहे हैं आप।।536।।

इसी संघ शोभायमान हैं, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।
सरस्वती अवतार आप हैं, बालयोगिनी बीस सदी।।
ज्ञान-ध्यान-तपलीन सर्वदा, करतीं सबको ज्ञान प्रदान।
गुरूभक्त-अनुशासित-विनयी, वत्सलादि सर्वगुण खान।।537।।

ऐसे अनुपम संघ को पाने, कौन नहीं ललचायेगा।
पर जिसका होगा पुण्योदय, बस, वह ही पा-पायेगा।।

बिना पुण्य पुरुषार्थ अकेला, हो सकता है सफल नहीं।
चातुर्मास हुआ जयपुर में, संघ गया अजमेर नहीं।।538।।

आषाढ़ शुक्ला चौदस तिथि को, हुआ स्थापित चातुर्मास।
जयपुर ने अति हर्ष मनाया, लौट गया अजमेर निराश।।
हानि-लाभ में समता धारें, लेते हैं विवेक से काम।
सम्यक्दृष्टि महज्जनों की, यही रही बाह्य पहचान।।539।।

माताजी स्वाध्याय कराया, मुनिसंघ मन वत्सलधार।
कल्याणमंदिर-गोम्मटसारजी, दिन में एक बजे से चार।।
मुनिवर श्री दिया-अभिनंदन-संयम-बोधि-महेन्द्र निधि।
निर्मल-संभव-वर्धमान निधि, हुए अध्यापित यथाविधि।।540।।

कुछेक आर्यिका-मोतीचंद भी, इस शिक्षण में लेते भाग।
प्राकृत व्याकरण करें अध्यापित, माताजी आहार के बाद।।
प्रतिदिन प्रातः सात बजे से, भी रहता अध्यापन क्रम।
तत्त्वार्थ राजवार्तिक-अष्ट-सहस्री को पढ़ते थे मुनिगण।।541।।

नहीं विराम लेतीं माताजी, सदा-सदा चलता यह क्रम।
शास्त्री-न्यायतीर्थ विषयों को, पढ़ते शिष्य व साधूगण।।
अष्टसहस्री-राजवार्तिक, जैनेन्द्र प्रक्रिया ग्रंथ अनेक।
शब्दार्णव चन्द्रिका, गद्य चिन्तामणि, अध्यापित होते प्रत्येक।।542।।

बात यहीं पर पूर्ण न होती, अब चलती लेखन की बात।
माताजी ने जैन धर्म को, दी इक महत्वपूर्ण सौगात।।
अष्टसहस्री हिन्दी टीका, माताजी ने रची यहीं।
और किसी ने कष्ट किया हो, मिलता है उल्लेख नहीं।।543।।

नारी नर से दुगुनी भारी, यह तो उक्ति पुरानी है।
लेकिन माता ज्ञानमती की, यह प्रत्यक्ष कहानी है।।
ऐसा अब तक कोई उदाहरण, पढ़ने-सुनने में न आया।
ज्ञानक्षेत्र में भारी नारी, हो जिसने कर दिखलाया।।544।।

उमास्वामि आचार्यश्री से, शिष्य ने पूछा आतमहित।
आचार्यश्री ने उसे बताया, मोक्षमार्ग आशीष सहित।।

वही ग्रंथ तत्त्वार्थसूत्र की, रहे प्रवाहित गंगा आज।
जिसमें नित अवगाहन करके, है लाभान्वित सकल समाज।।545।।

तथा मात के शिष्य एक हैं, मोतीचंद ब्रह्मचारी।
शास्त्री - न्यायतीर्थ दोनों की, करें परीक्षा तैयारी।।
अष्टसहस्री ग्रंथ उभय में, था निर्धारित लगा कठिन।
शिष्य हितार्थ किया माताजी, पूर्व परीक्षा अनुवादन।।546।।

अष्टसहस्री सकल जनों को, लगती कष्ट-सहस्री है।
लेकिन वह तो माताजी को, लगी थी मिश्री जैसी है।।
अतः नहीं श्रीमाताजी ने, रुग्णकाल भी लिया विराम।
दृष्टि विशुद्धी, जिनवर भक्ती, का पीयूष पिया अविराम।।547।।

आचार्यश्री की आज्ञा पाकर, किया शिविर आयोजन है।
जैन ज्योतिर्लोक का परिचय, इसका मुख्य प्रयोजन है।।
पन्द्रह दिन तक दिया सभी को, सूर्य-चंद्र-नक्षत्री ज्ञान।
जैनागम से दिया मातुश्री, सूत्र-चित्र-रेखीय प्रमाण।।548।।

जैन नगर का चतुर्मास यह, रहा अतीव फलदायी है।
निष्ठापन पश्चात् संघ यह, पहुँचा नगर निवाई है।।
धर्म प्रभावना कर निवाई में, महावीर का करके ध्यान।
संघ संग माताजी पहुँचीं, टोंक रियासत राजस्थान।।549।।

टोंक (राज.) में चातुर्मास, सन् १९७०

समाहित विषयवस्तु

1. जयपुर से सांगानेर।
2. पिताजी के स्वर्गवासी होने का समाचार।
3. पितृ वियोग में समता धारण।
4. मोतीचंद्र को टिकैतनगर भेजा-माँ मोहिनी को संबोधन।
5. संघ का निवाई आगमन।
6. संघस्थ-साधु-साध्वियों को अध्यापन।
7. निवाई से टोंक में चातुर्मास स्थापना।
8. माताजी अस्वस्थ।
9. माताजी ने लेखन क्षेत्र में इतिहास की रचना की।
10. टोंक से टोड़ारायसिंह आगमन।
11. माता मोहिनी का आगमन एवं सातवीं प्रतिमा के व्रत धारण।

काव्य पद

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, आचार्यश्री ने करी न देर।
नगर गुलाबी जयपुर से चल, संघ पधराया सांगानेर।।
यहाँ सुशोभित दस जिनमंदिर, दर्शक चित्त लुभाते हैं।
सुंदर-बृहत्-तुंग-आकर्षक-कलापूर्ण मन भाते हैं।।550।।

सकल जिनालय, जिनवर वंदे, मन में अति उत्साह रहा।
किन्तु शरीर कष्ट फुड़िया का, नहिं वचनों से जाय कहा।।
फाँस तनक सी तन में सालें, रही कहावत यह खासी।
तभी तार ग्राम से आया, पिताजी हुए स्वर्गवासी।।551।।

सुना दिवंगत हुए पिताजी, आया तार टिकैतनगर।
सिहर उठा तन मैना देवी, मन में दौड़ी शोकलहर।।
लेकिन तत्क्षण ज्ञानमती ने, वस्तुतत्त्व पर किया विचार।
कोई नहीं किसी का साथी, झूठे रिश्तों का संसार।।552।।

यह जग मेला, जीव अकेला, कोई न संग आता-जाता।
माता-पिता-सुता-गुरु-चेला, सबका है झूठा नाता।।
अजर-अमर यह आत्मतत्व है, ध्रुव-अक्षय-अविनाशी है।
तन तो है पुद्गल परिवर्तन, अध्रुव-क्षयी-विनाशी है।।553।।

हो आत्मस्थ-स्वस्थ माताजी, मोतीचंद दिया आदेश।
टिकैतनगर जा कहो हमारा, मातृ मोहिनी से संदेश।।
गृह कारागृह छोड़ संघ में, आकर करो आत्म कल्याण।
तुमने दिया मोक्षपथ मुझको, मुझको भी है तुमरा ध्यान।।554।।

यहाँ से संघ गया निवाई, की प्रभावना अति खासी।
गोम्मटसार स्वाध्याय कराया, संघस्थ आर्यिका-संन्यासी।।
माताजी हैं शिल्पी जैसी, गढ़-गढ़ देती मूर्ति बना।
आचार्यप्रवर उन्हें दीक्षा देकर, उनको देते पूज्य बना।।555।।

माताजी के शिष्य एक ना, साध्वी-श्रावक-मुनि कई।
संघ गमन करके निवाई से, गया रियासत टोंक नई।।
एक माह करके प्रवास यहाँ, किया अध्यापन-लेखन कार्य।
तदनन्तर गये टोंक पुरानी, संघ सहित धर्म आचार्य।।556।।

सकल समाज ने किया निवेदन, सविनय, मधुर लिए भाषा।
आचार्यश्री! हम धर्म पिपासु, चाह रहे तव चौमासा।।
करुणाधन आचार्यश्री ने, सुना निवेदन भली प्रकार।
चातुर्मास किया स्थापित, यथाविधि आगम अनुसार।।557।।

संघ चतुर्विध के माध्यम से, हुए प्रभावना के बहुकाम।
लेकिन माता ज्ञानमती को, तभी दबोचा तीव्र जुखाम।।
खुले स्थान, शीत के कारण, जकड़ाए सब अंग-प्रत्यंग।
बहुत क्या कहें धर्म मार्ग में, इससे हुआ रंग में भंग।।558।।

पद्मनंदिपंचविंशतिका, कहते हैं आचार्यश्री।
सुख ही सुख अथवा दुख ही दुख, रहते जीवन नहीं कभी।।
नीचे-ऊपर होते रहते, यथा चक्र के आरे हैं।
वैसे ही सुख-दुख के भागी, होते जीव बेचारे हैं।।559।।

अगर करें सुख-दुख की गणना, तदा दुःख तो सिंधु प्रमाण।
किन्तु सुक्ख मिलता जीवन में, अल्प-न्यून बिन्दु के मान।।
उसमें भी दुख बीच में आकर, कर देता है तीव्र प्रहार।
अतः समझ लो लेश नहीं सुख, हर पल दुखमय है संसार।।560।।

मात मोहिनी अति वियोगिनी, किए सकल केश कर्तन।
श्वेत साटिका धारी, आयीं, आचार्यश्री करने दर्शन।।
श्रीफल भेंट किया गुरु चरणों, सप्तम प्रतिमाव्रत धारें।
आचार्यश्री को किया नमोऽस्तु, आप मुझे भवदधि तारें।।561।।

किन्तु श्री पूज्य माताजी, किंचित् नहीं विराम लिया।
अध्ययन-अध्यापन-टीका में, तन-मन शुभ उपयोग किया।।
हाथ लिया जो करके छोड़ा, नहीं अधूरा काम बचा।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, एक नया इतिहास रचा।।562।।

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, टोड़ारायसिंह हुआ विहार।
अष्टसहस्री की टीका पर, शुभ आशीष दिया आचार्य।।
श्रुतपंचमी पावन दिन पर, अष्टसहस्री पूजा की।
आचार्यश्री के जन्म दिवस पर, श्री जिनेन्द्र यात्रा निकली।।563।।

तदा पालकी हुई विराजित, अष्टसहस्री की टीका।
भव्य जुलूस ने मोह लिया मन, साधु-श्रावक सब ही का।।
अनुपमकार्य किया माताजी, अनुपम ही सम्मान मिला।
प्राप्त साधना की गरिमा को, साधक का मन कमल खिला।।564।।

अजमेर चातुर्मास, सन् १९७१

समाहित विषयवस्तु

1. **टोड़ारायसिंह से पुनः टोंक आगमन-पंचकल्याणक प्रतिष्ठा संपन्न।**
2. **टोंक में अनुज कैलाश-रवीन्द्र का दर्शनार्थ आगमन।**
3. **माताजी द्वारा सम्बोधन-श्री रवीन्द्र ने अध्ययन कर नये जीवन का शुभारंभ किया।**
4. **टोंक से अजमेर आगमन।**
5. **मोइनियाँ हाई स्कूल प्रांगण में माताजी द्वारा जैन ज्योतिर्लोक पर अनुपम प्रवचन।**
6. **श्री भागचंद सोनी इत्यादि प्रवचन में आते थे।**
7. **यहीं माता मोहिनीदेवी ने आचार्य धर्मसागर से आर्यिका दीक्षा ली, नाम रत्नमती रखा।**
8. **यहीं कु.माधुरी ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया।**
9. **श्री मोतीचंद श्री रवीन्द्र को घर से वापस लाये।**
10. **श्री रवीन्द्र द्वारा आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत।**
11. **तेरह रत्नों की माता-आर्यिका रत्नमती।**
12. **पूज्य माताजी ज्ञानमती ने सम्पूर्ण परिवार का कल्याण किया।**
13. **माताजी का ब्यावर में प्रवास।**

काव्य पद

टोड़ारायसिंह से विहार कर, संघ टोंक फिर पधराया।
श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक, का अमूल्य अवसर आया।।
पंचकल्याणक एक प्रक्रिया, जिसमें पूज्य बने पाषाण।
अगर मनुज पुरुषार्थ करे तो, वह भी बन सकता भगवान।।565।।

टिकैतनगर से आये इसमें, कैलाश-रवीन्द्र युगल भ्राता।
मानवजीवन के महत्त्व को, उन्हें समझाया तब माता।।
पंच परावर्तन को करने, काल अनंत गमाया है।
आज महापुण्य से तुमने, यह मानव भव पाया है।।566।।

इसे प्राप्त कर तुम्हें चाहिए, इसका सद् उपयोग करो।
काम-भोग में नष्ट करो मत, मोक्षप्राप्ति उद्योग करो।।
माताजी के सदुपदेश का, श्री रवीन्द्र पर रंग चढ़ा।
अतः रोककर गुरूरूप धर, उनका जीवन नया गढ़ा।।567।।

सर्वप्रथम तो माताजी ने, उन्हें ज्ञान का दान दिया।
श्री रवीन्द्र ने चातक जैसे, स्वाति बूंद-सम पान किया।।
शास्त्री के तीनों खण्डों का, एक साथ ही मनन किया।
ज्ञानकूप से जल निकालने, उसका निशदिन खनन किया।।568।।

राजवार्तिक-अष्टसहस्री, आलाप पद्धति, गोम्मटसार।
पढ़े परीक्षा भी उत्तीर्ण की, पढ़ा सर्वान्त समय का सार।।
लगे पढ़ाने शिष्यजनों को, तत्त्वार्थसूत्र , इष्टोपदेश।
इससे हुआ ज्ञान परिमार्जित, स्मृति में आ गया अशेष।।569।।

पंचकल्याणक पूर्ण हुआ ज्यों, आचार्य संघ का गमन हुआ।
पीपल-मालपुरा-लावा हो, अजमेर नगर आगमन हुआ।।
चातुर्मास हुआ स्थापित, सोनीजी नशिया प्रांगण।
आचार्यसंघ के जयकारों से, लगे गूँजने धरा-गगन।।570।।

यहाँ मोइनिया हाईस्कूल के, बृहद्-विशाल-सभा प्रांगण।
जैन ज्योतिर्लोक विषय पर, माताजी के हुए प्रवचन।।
वहाँ पधारे उच्चकोटि के, प्रोफेसर, ज्योतिर्विद्वान।
पत्रकार-श्रेष्ठी-वैज्ञानिक, समझे-जाते देश की शान।।571।।

सूरज-चन्द्र-नक्षत्र की संख्या, गमन ऊँचाई-गली आकार।
अति सूक्ष्म-सटीक-प्रामाणिक, माताजी के सुने विचार।।
इतना तीव्र क्षयोपशम अब तक, नहीं देखने में आया।
जिसको कोई कर न सका था, माँ ने करके दिखलाया।।572।।

अभीक्ष्ण ज्ञानयोगिनी माँ का, रहा पूर्ववत्अध्ययन क्रम।
प्रतिदिन ही आयोजित होते, पूज्याश्री उत्तम प्रवचन।।
सरसेठ श्री भागचंद सोनी, प्रभृति बहुज्जन आते थे।
धर्म-ज्ञान अमृत को पीकर, जीवन सफल बनाते थे।।573।।

माताजी की जन्मदात्री, माता श्री मोहिनी जी।
आचार्यश्री धर्मसागर से, यहाँ आर्यिका दीक्षा ली।।
यहीं कुमारी माधुरी जी ने, आजीवन ब्रह्मचर्य लिया।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, शिष्या इनको बना लिया।।574।।

उपादान तो अपना होता, इसमें कुछ संदेह नहीं।
पर निमित्त के बिना अकेला, कर सकता वह काम नहीं।।
रवीन्द्र-मोहिनी-मनो-माधुरी, उपादान निज काम किया।
किन्तु आर्यिका ज्ञानमती ने, नैमित्तिक अवदान दिया।।575।।

श्री मोहिनी देवी जी ने, जन्मे उत्तम तेरह रत्न।
सबका उत्तम तीव्र क्षयोपशम, मिला ज्ञानधन अल्प प्रयत्न।।
संयम में चतु हुए अग्रणी, बने जगत को एक मिसाल।
ज्ञान-अभय-चंदना-रवि-सह, अमर मोहिनी-छोटेलाल।।576।।

तेरह रत्नों की माता का, रत्नमती गुरु नाम दिया।
सभी उपस्थित जनसमूह ने, सादर जय-जयकार किया।।
जीवन श्रेष्ठ उसी का जिसने, रत्नत्रय व्रत पाला है।
सफल किया उसने मानव भव, जिसने अंत संभाला है।।577।।

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, आचार्य संघ का हुआ गमन।
धर्म प्रभावना करते-करते, हुआ ब्यावर में शुभागमन।।
कुछ ही दिवस प्रवास अनंतर, संघ गया अन्यत्र कहीं।
गुरु आज्ञा से माताजी ने, किया अल्प प्रवास यहीं।।578।।

टिकैतनगर से श्री रवीन्द्र को, मोतीचंद ब्यावर लाये।
उन्हें प्रेरणा दे माताजी, ब्रह्मचर्य आजन्म दिलवाये।।
इस प्रकार माताजी उनको, किया मुक्त गृहकारा से।
आज संघ में अलंकार हैं, घर नहिं गये दुबारा से।।579।।

अष्टसहस्री लिखित प्रति, मिली यहाँ शास्त्र भंडार।
माताजी ने किया यहाँ पर, पाठान्तर लिखने का कार्य।।
दिल्लीवासी श्रीफल लाये, करी विनय बहुशः कर जोर।
वहाँ पधारें, हमें ज्ञान दें, गमन करें दिल्ली की ओर।।580।।

दिल्ली चातुर्मास, सन् १९७२-७३-७४

समाहित विषयवस्तु

1. पहाड़ी धीरज-दिल्ली में प्रथम चातुर्मास सन् 1972 में।
2. मोक्षशास्त्र पर मार्मिक प्रवचन।
3. जम्बूद्वीप निर्माण के लिए दि.जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना।
4. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला की स्थापना।
5. अष्टसहस्री का प्रकाशन।
6. मनोवती-मीनाबाई की आर्यिका दीक्षा।
7. माताजी अस्वस्थ-आचार्य देशभूषण जी महाराज का आशीर्वाद।
8. आचार्यकल्प श्रुतसागर जी का आशीर्वाद।
9. सम्पूर्ण दिल्ली को पावन किया।
10. माताजी का भोजन अत्यंत सादा-नीरस।
11. नजफगढ़ दिल्ली में चातुर्मास।1973
12. अनेक विधान सम्पन्न हुए।
13. त्रिलोकभास्कर एवं न्यायसार ग्रंथों की रचना।
14. त्रिभंगी संग्रह का अनुवाद।
15. गाँधीनगर में प्रवास।
16. सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ।
17. लाल मंदिर में चातुर्मास।1974
18. 2500 वाँ निर्वाण महोत्सव में परामर्श।
19. भगवान महावीर पर पुस्तक लेखन-भगवान महावीर कैसे बने?
20. माताजी के 13 ग्रंथ प्रकाशित।
21. बालविकास प्रथम भाग प्रकाशित।
22. अष्टसहस्री का विमोचन।
23. 14 ग्रंथों का विमोचन।
24. हस्तिनापुर में महावीर जिनालय का पंचकल्याणक।
25. हस्तिनापुर में मुनि-आर्यिका दीक्षाएँ।
26. अनेक मुनिसंघों का मंगल सानिध्य।
27. आचार्य श्री देशभूषण जी ने माताजी को आर्यिकारत्न, न्यायप्रभाकर उपाधियाँ दी।
28. भगवान महावीर की सुंदरमूर्ति को नजर न लगे अतः गाल पर काजल लगाया।

काव्य पद

नसीराबाद-अजमेर-गुड़गवाँ, हो दिल्ली की पूरी आस।
यहाँ पहाड़ी धीरज जाकर, किया स्थापित चातुर्मास।।
पर्व पर्यूषण के आने पर, दिये तत्त्वार्थसूत्र प्रवचन।
सरल, सारगर्भित, अतिमार्मिक, अतिशय हुए प्रभावित जन।581।।

मोक्षशास्त्र है सागर गहरा, लिये गगन जैसा विस्तार।
समन्तभद्र-अकलंक देव से, पा ना पाये इसका पार।।
गागर में सागर लहराता, जिनदर्शन का तत्त्व-निचोड़।
आधार स्तम्भ वीरवाणी का, ग्रंथ स्वयं में है बेजोड़।।582।।

तत्त्वार्थ सूत्र जीवन अमृत है, जिसने इसका पान किया।
मानों उसने जैनागम के, सकल सार को जान लिया।।
सुख-दुख, जीवन-मरण द्वन्द्व में, समता को वह पालेगा।
राग-द्वेष का वर्जन करके, क्षमता को अपना लेगा।।583।।

सम्यग्दर्शन ताना इसका, बाना इसका सम्यग्ज्ञान।
चारित्र जुलाहा बुनने वाला, मोक्ष समझ लो वस्त्र समान।।
जो इसका पारायण करते, पाते फल निर्मल उपवास।
विषय-कषायों से मन हटता, पाप न आते उसके पास।।584।।

माताजी के प्रवचन सुनकर, वाह! वाह! की ध्वनि निकली।
जीवन बीता सुनते-सुनते, किन्तु न ऐसी बात मिली।।
जो पहले खाली रहते थे, अब उन कक्षों जगह नहीं।
अतः खड़े कक्ष के बाहर, श्रोता सुनते और कहीं।।585।।

अष्टसहस्री-त्रिलोकसार द्वय, हुए प्रकाशित चातुर्मास।
जम्बूद्वीपपण्णति अभिव्यक्ति, सरल रीति उपलब्धि खास।।
समयसार तत्त्वार्थ सूत्र पर, प्रवचन जो आया आनंद।
उसे रिकार्ड कर किया सुरक्षित, राजा टाइज कैलाशचंद।।586।।

जम्बूद्वीप रचना निर्माण हित, हुआ स्थापित इक संस्थान।
श्री दि.जैन त्रिलोक शोध का, दिया गया उसको शुभ नाम।।

उसके ही भीतर समाज ने, इक संस्था को शुरू किया।
वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला का, उसको उत्तम नाम दिया।।587।।

माताजी की दो शिष्याएँ, मनोवती-मीनाबाई।
संयम पथ पर आगे बढ़ने, उनकी काललब्धि आई।।
अतः प्रेरणा देकर उनको, माताजी तैयार किया।
आचार्यश्री देशभूषण ने, आर्यिका दीक्षा दान दिया।।588।।

ब्रह्मचारिणी मीनाबाई, हुईं आर्यिका यशोमती।
ब्रह्मचारिणी मनोवती जी, संज्ञा पाई संयममती।।
दोनों ही माताजी द्वारा, धार्मिक शिक्षा पाई है।
उनने ही गुरुभार सम्हाला, मोक्ष की राह दिखाई है।।589।।

माताजी का संघ छोटा-सा, दो मुनिश्री माताजी चार।
छै त्यागीजन साथ में चलकर, करें व्यवस्था संघ विहार।।
आचार्यश्री देशभूषण के, माताजी दर्शन पाये।
मन-मयूर ने किया महोत्सव, रोम-रोम थे हर्षाये।।590।।

माताजी अस्वस्थ हुईं, जब अशुभकर्म उदय आये।
आचार्यश्री देशभूषण जी, स्वयं वहाँ पर पधराये।।
आशीर्वाद दिया औ बोले, इनने बहु पुरुषार्थ किया।
अष्टसहस्री अनुवादन कर, अभूतपूर्व ही कार्य किया।।591।।

घर त्यागने समय आपने, जो झेला संघर्ष महान्।
पुरुषों से भी रहा असंभव, उसका साक्षी सकल जहान।।
स्वास्थ्य लाभ ये करें शीघ्र ही, मेरे हैं आशीष अनेक।
गद्गद मेरा हृदय हो रहा, अति सुयोग्य शिष्या को देख।।592।।

आचार्यकल्प श्री श्रुतसागर जी, माताजी प्रति कहे विचार।
ज्ञानमती तुम अद्भुत पारस, मेरे भावों के अनुसार।।
पारस तो लोहे को केवल, सोना मात्र बनाता है।
पर जो बनता शिष्य तुम्हारा, तुम से भी बढ़ जाता है।।593।।

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, माताजी का हुआ विहार।
महानगर के जिनालयों जा, माता किया स्व-पर उपकार।।

जहाँ-जहाँ पधरातीं माता, हो जाते पावन वे क्षेत्र।
ज्ञानशलाका, जिनवच अंजन, खुल जाते अज्ञानी नेत्र।।594।।

सभी चाहते माताजी का, इसी मोहल्ले रहे प्रवास।
आहार दान का लाभ प्राप्त हो, प्रवचन पूरी हो अभिलाष।।
बालक-युवा-वृद्ध-नर-नारी, चरण पखारें बारम्बार।
करें आरती, गगन गुँजावें, माताजी की जय-जयकार।।595।।

एक मोहल्ला तृप्त न होता, दूजे की लगती बारी।
द्वार-अल्पना, गली सजावट, होने लगती तैयारी।।
जन-जन जोहे वाट इस तरह, जैसे चातक प्यास लगी।
कब माताजी यहाँ पधारें, अमृत बरसे घड़ी-घड़ी।।596।।

माताजी हैं बड़ी पारखी, रखती हैं सब ही का ज्ञान।
किसको कितनी प्यास लगी है, उनको रहता सबका ध्यान।।
उनके मन में लहराता है, करुणा सागर अपरम्पार।
आतमहित प्रामुख्य साथ में, करती रहतीं पर उपकार।।597।।

काजू-किशमिश-मावा-मिश्री, माताजी का सब कुछ त्याग।
लौकी-तोरई-दाल-चपाती, खुले रहे इनके ही भाग।।
रस-रसायन कुछ न लेतीं, लेतीं बस नीरस भोजन।
माताजी की भोजन चर्या, सस्ता-सुंदर आयोजन।।598।।

आहारदान देना माताजी, लेकिन ये है टेढ़ी खीर।
सज्जातित्त्व, शुद्धजल ग्राही, की ही खुलती है तकदीर।।
इसके बिना पूछ न होती, कैसा भी होवे धनवान।
इनसे युक्त सभी नर-नारी, कर सकते हैं आहारदान।।599।।

दिल्ली तो भारत का दिल है, माताजी ने जीत लिया।
उपकृत करने सकल जनों को, सादर वर्ष व्यतीत किया।।
समय बीतते देर न लगती, फिर आ पहुँचा चातुर्मास।
तथा नजफगढ़ दिल्ली में ही, माताजी ने किया प्रवास।600।।

चातुर्मास हुआ स्थापित, हुए कार्यक्रम तदा अनेक।
विधान बहुत से हुये हैं उनमें, तीनलोक विधान है एक।।

हुई प्रभावना अति ही इनसे, तीन लोक का पाया ज्ञान।
माताजी ने यहाँ सिखाया, करना तीन लोक का ध्यान।।601।।

त्रिलोकभास्कर, न्यायसार आपने, महाग्रंथ दो रचे यहाँ।
आस्रव-भाव-त्रिभंगी-संग्रह, का अनुवादन किया यहाँ।।
हो कृपालु शिष्यों के ऊपर, कातंत्र व्याकरण किया अनुवाद।
सदा रहीं ज्ञानार्जन तत्पर, किया न माँ ने कभी प्रमाद।।602।।

चातुर्मास अनंतर माँ ने, गाँधीनगर में किया विहार।
प्रभु पूजन का पाठ पढ़ाकर, माँ ने किया जगत् उपकार।।
श्री प्रकाश हितैषी शास्त्री, सम्पादक सन्मति-संदेश।
लेते भाग तत्त्व चर्चा में, सुनते माता के उपदेश।।603।।

नयी योजना मंगलकारी, हुई क्रियान्वित परमपवित्र।
त्रिलोक शोध संस्थान निकाला, सम्यग्ज्ञान नाम का पत्र।।
माताजी के आदेशों का, जन-जन करता इससे पान।
चतुरनुयोगी ज्ञान से भरा, प्रत्युपयोगी सम्यग्ज्ञान।।604।।

माताजी ने निज चर्या से, सबको यह उपदेश दिया।
दृढ़तापूर्वक नियम संभालो, मैंने हरदम यही किया।।
साधक अगर ठान ले मन में, कोई नहीं कठिन है काम।
नियम सफलतापूर्वक पलता, मिल जाते हैं योग तमाम।।605।।

दिल्ली-दिल में समा गईं माँ, दिल से बाहर जा न सकीं।
सन् चौहत्तर चतुर्मास में, लाल जिनालय रुकी रहीं।।
दिल्ली का दिल बहुत बड़ा है, रही देश की रजधानी।
धर्म-देशभूषण-विद्या की, दिल्ली ने की अगवानी।।606।।

सन् चौहत्तर वर्ष महत्तम, छाया अखिल विश्व में हर्ष।
वीरप्रभू निर्वाण को बीते, दो हजार पाँच सौ वर्ष।।
एतदर्थ उत्सव आयोजन, अखिल विश्व में है होना।
धर्म अहिंसा जयकारों से, गूँज उठा कोना-कोना।।607।।

महा-महोत्सव आयोजन में, चलता सदा विचार-विमर्श।
माताजी की उपस्थिती से, उसमें आ जाता उत्कर्ष।।

विद्यानंद-देशभूषण जी, सादर इन्हें बुलाते थे।
माताजी के परामर्श से, कार्य श्रेष्ठता पाते थे।।608।।

लाल जिनालय में माताजी, प्रवचन करतीं प्रातःकाल।
धर्मामृत की वर्षा होती, सुनकर श्रोता होंय निहाल।।
प्रवचन रहते अति ही सुंदर, प्रामाणिक प्रभाव भरे।
लालायित हो श्रोताओं ने, उनके टेप-रिकार्ड करे।।609।।

रहे वहाँ पर घोर अंधेरा, होता नहीं जहाँ आदित्य।
मुर्दा है वह जाति कि जिसका, होता नहिं उत्तम साहित्य।।
इस अवसर पर माताजी ने, महावीर पर लिखी किताब।
मौलिक-उत्तम-जगहितकारी, महावीर चमके सरताज।।610।।

महावीर कैसे बने यह, था पुस्तक का नाम रखा।
प्राणिमात्र पर करुणा करना, महावीर का काम रहा।।
पच्चीस हजार पुस्तकें छापी, एक हफ्ते में बिकी सभी।
दस हजार और छपवायीं, एक माह बिक गईं सभी।।611।।

मिले राम को तुलसी जैसे, महावीर को तथा कवी।
मिल जाता तो महावीर से, परिचित होता जगत सभी।।
माताजी की इस किताब ने, उसी कमी को पूर्ण किया।
माँ ने अच्छी तरह बताया, जीवन जो महावीर जिया।।612।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमतीजी, किया सतत ज्ञान अभ्यास।
हुये त्रयोदश ग्रंथ प्रकाशित, रहा विशिष्ट यह चातुर्मास।।
बालविकास का प्रथम भाग भी, हुआ प्रकाशित इस ही काल।
माताजी के सु-प्रयास से, हुआ जाति का उन्नत भाल।।613।।

अष्टसहस्री ग्रंथराज की, माताजी ने टीका की।
कष्टसहस्री लौहचना को, बना दिया मक्खन-मिश्री।।
नीरसता को माताजी ने, सरल-सरसता रूप दिया।
हिन्दी में अनुवादन करके, जन-जन महदुपकार किया।।614।।

अष्टसहस्री ग्रंथत्रयोदश, सबका हुआ विमोचन है।
एतदर्थ इक समारोह का, हुआ बृहद् आयोजन है।।

जैन समाज के सकल साधुगण, का सान्निध्य मिला पावन।
साहु शांतिप्रसाद सदृश बहु, गणमान्य पधारे आयोजन।।615।।

आठ दिसम्बर सन् चौहत्तर, हुईं अनके विध दीक्षाएँ।
मनुज विरागी हुए मुनीवर, नारी बनीं आर्यिकाएँ।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, केशलुंच सहयोग दिया।
आचार्यश्री धर्मसागर ने, सब दीक्षा संस्कार किया।।616।।

इस अवसर पर विराजमान थे, देश-धर्म-विद्या बहु संघ।
लालबहादुर, हीरालाल जी, दिये सुष्ठु वक्तव्य प्रसंग।।
आचार्यश्री देशभूषण ने, विद्यानंद मुनिराज श्री।
उपाध्याय किया विभूषित, नव मयूर पिच्छिका दी।।617।।

आचार्य श्री देशभूषण ने, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।
आर्यिका रत्न, न्यायप्रभाकर, महत् पदेन समलंकृत की।।
गुरुवर ने गौरव पद देकर, निज वात्सल्य प्रदान किया।
नूतन पिच्छी, शास्त्र आदि दे, शिष्या को सम्मान दिया।।618।।

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, संघ धर्मनिधि गमन हुआ।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती सह, हस्तिनापुर आगमन हुआ।।
उपाध्याय श्री विद्यानंद भी, हस्तिनापुर पधराये हैं।
क्षेत्र पुरातन, ऐतिहासिक में, जीवन्त तीर्थ बहु आये हैं।।619।।

बाहुबली जी बड़े जिनालय, महावीर जलमंदिर के।
फरवरी में पंचकल्याणक, तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर के।।
तभी क्षेत्र नव जम्बूद्वीप में, उसी पंचकल्याणक संग।
हुई प्रतिष्ठा महावीर जिन, खड्गासन अवगाहन तुंग।।620।।

महावीर जिनवर की मूरत, अतिशय प्यारी-प्यारी है।
कलाकार ने मनोयोग से, बांकी छवी उतारी है।।
नजर नहीं लग जाय किसी की, सब भग जाए अलाबला।
विद्यानंद कर्पूर का काजल, दिया मूर्ति के गाल लगा।।621।।

मूर्तित्रयों के पंचकल्याणक, प्राणप्रतिष्ठा, धार्मिक कार्य।
सकल संघ की मंगल सन्निधि, होकर छाया हर्ष अपार।।
जैसे सरिता रुके न इक थल, अविरल चलना उसका काम।
साधु संघ भी चले यहाँ से, लेकर कुछ दिन अल्प विराम।।622।।

हस्तिनापुर चातुर्मास, सन् १९७५

समाहित विषयवस्तु

1. **तीर्थों का उदय कैसे?**
2. **हस्तिनापुर क्षेत्र का परिचय।**
3. **माता ज्ञानमती ने श्रवणबेलगोल के सपने को साकार किया।**
4. **चातुर्मास की स्थापना।**
5. **माताजी के प्रातः-दोपहर प्रवचन।**
6. **पर्यूषण पर्व में मोक्षशास्त्र एवं दशधर्मों पर प्रवचन।**
7. **इन्द्रध्वज विधान की रचना।**
8. **नियमसार अनुवाद आदि अनेक ग्रंथों की रचना।**
9. **जम्बूद्वीप रचना मॉडल का अनावरण।**
10. **सुमेरु पर्वत का निर्माण प्रारंभ-अक्षयतृतीया को।**
11. **माताजी की उत्तम प्रकृति-कार्य को पूर्ण करके ही दम लेती हैं।**
12. **चातुर्मास निष्ठापित-खतौली प्रस्थान।**

काव्य पद

होती जहाँ पुण्य की वर्षा, बहती शांति सु धारा है।
जहाँ लगा सुध्यान आत्मा, पाती मुक्ति किनारा है।।
अतिशयता अवलोक जहाँ की, मन विस्मित रह जाता है।
हो जाती भू पूज्य वहाँ की, तीर्थ नया बन जाता है।।623।।

ऐसा ही है तीर्थ महत्तम, नाम हस्तिनापुर विख्यात।
इतिहास झरोखे बैठ के देखें, अन्य नाम भी होते ज्ञात।।
हस्तिनागपुर अथवा गजपुर, इत्यादिक मिलते हैं नाम।
अति पवित्र यह तीर्थक्षेत्र है, इससे पावन हो जाते परिणाम।।624।।

हुए चार कल्याण यहाँ पर, शांति-कुन्थु-अरह भगवान।
कामदेव-चक्री-तीर्थंकर, तीन-तीन पदयुक्त महान।।
जन्मे-राज्य किया-दीक्षा ली, उपदेश दिया मंगलकारी।
उनके दर्शन जगज्जनों को, होते भवातापहारी।।625।।

इसके पहले आदिनाथ जिन, प्रथम पारणा हुई यहाँ।
नृप श्रेयांस ने अहार दान दे, पुण्य कमाया महत् यहाँ।।
कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व तक, जाता है इसका इतिहास।
रक्षा बंधन की घटना का, है सम्बन्ध इसी से खास।।626।।

पाँच शतक मुनियों को यहाँ पर, घानी में था पेल दिया।
गुरूदत्त मुनि के ऊपर भी, रुई जला उपसर्ग किया।।
कौरव-पाण्डव-श्रीकृष्ण के, जीवन क्रम के तार जुड़े।
जर-जमीन-जोरू की खातिर, यहाँ के भाई-भाई लड़े।।627।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, इसको अधिक महत्त्व दिया।
ज्ञान-ध्यान-तप-क्षेत्र बनाकर, अतिशय पावन प्रथित किया॥
दक्षिण स्थित श्रवणबेलगुल, बाहुबली के चरण कमल।
ध्यानकाल जो देखा सपना, उसे यहाँ पर किया सफल।।628।।

एतदर्थ प्राचीन क्षेत्र से, एक मील की दूरी पर।
माताजी ने कर्मठता से, स्वर्ग उतार दिया भू-पर।।
प्राक्कार्य सम्पूर्णता मिले, यह विचार आचार्यश्री।
माताजी को इसी क्षेत्र पर, चतुर्मास की आज्ञा दी।।629।।

चातुर्मास हुआ स्थापित, जन-जन का मन कमल खिला।
क्षेत्र पुरातन, भक्तजनों को, माताजी सान्निध्य मिला।।
बहने लगी ज्ञान की गंगा, पाया जन जीवन का सार।
प्रातकाल माँ प्रवचन करतीं, कुंदकुंद का प्रवचन सार।।630।।

जीवन्धर चम्पू, वृत्त रत्नाकर, धवला क्रम दोपहर आता।
शिष्यवर्ग अध्यापित होकर, सम्यग्ज्ञान तुष्टि पाता।।
पर्वराज आया पर्यूषण, हस्तिनागपुर हुआ निहाल।
वर्षों बाद मिले सुनने को, सरल-सरस प्रवचन इस साल।।631।।

माताजी के प्रवचन होते, प्रातकाल श्री प्रवचनसार।
इसमें वर्णित, कुंदकुंद से, महावीर वाणी का सार।।
मध्यकाल में पूज्य मातश्री, मोक्षशास्त्र इक-इक अध्याय।
उद्घाटित करतीं रहस्य सब, हिन्दी में अति सरल बनाय।।632।।

उमास्वामि के तत्त्वामृत को, श्रोताओं ने खूब पिया।
जो माताजी दिया है हमको, अब तक कोई नहीं दिया।।
धन्य-धन्य माताजी तुमको, धन्य-धन्य हुए हम आज।
हम कृतज्ञ हैं, आभारी हैं, करे वन्दामि सकल समाज।।633।।

तत्त्वार्थ सूत्र से दश धर्मों का, अविनाभावी नाता है।
पर्यूषण के दश दिवसों में, उन्हें सुनाया जाता है।।
एक-एक दिन एक धर्म पर, माताजी व्याख्यान दिया।
धर्मांगों को समझा करके, सबको सम्यग्ज्ञान दिया।।634।।

क्रोध-मान-लोभ-माया का, प्रबल प्रदूषण चारों ओर।
झूठ-कुशील-असंयम-गृह का, अंधकार छाया घनघोर।।
पाप-ताप-संताप मेटने, दश रत्नों का पहने हार।
आया पर्वराज पर्यूषण, सकल जगत् करने उपकार।।635।।

पर्व पर्यूषण धार्मिक यात्रा, होता इसमें आत्म विकास।
ऊर्ध्वारोहण के प्रयास से, जीवन पाता धर्म-प्रकाश।।
धर्म परम संजीवन औषध, मिटते हैं असाध्यतम रोग।
मूल प्रकृति में लौट आत्मा, करती है चेतन का भोग।।636।।

दशधर्मी मंगलयात्रा का, क्षमाभाव उत्तम सोपान।
धर्मदेवता, क्षमा प्राण है, क्षमाधर्म की है पहचान।।
मान महाविष, गरल हलाहल, मन को करता कलुष-कठोर।
विनय बिना प्राणी दुख पाता, जाता नीच नरक में घोर।।637।।

मायाचारी-कुटिल-वक्रता, अवगुण महान दुःख की खान।
मन-वच-काय सरलता प्रियवर, यह है आर्जव धर्म महान।।
जहाँ सत्य है वहीं धर्म है, जहाँ असत्य महत्तम पाप।
असत्-कटुक-निन्दक वचनों से, जन पाते अतिशय संताप।।638।।

लोभ लोक में भटकाता है, पाप-कषायों के द्वारा।
भूल आपको चतुर्गति में, फिरता जन मारा-मारा।।
संयम यम को जय करने की, श्रेष्ठकला, उत्कृष्ट विधि।
संयम नर को पूज्य बनाने, वाली है अनमोल निधि।।639।।

भव से तारे पार उतारे, उसी क्रिया का तप है नाम।
तप के द्वारा जल जाते हैं, कर्म सघन सन्ताप तमाम।।
औषध-शास्त्र-अभय-आहारा, कहे जिनेन्द्र चतुर्विध दान।
त्यागो, दान करो, पर मन में, लाओ नहीं लेश अभिमान।।640।।

ग्रंथ त्याग निर्ग्रंथ हुए हैं, शल्य न किंचित् वे ही धन्य।
सुर-सुरेन्द्र नमते चरणों में, मुनिवर पालें आकिंचन्य।।
ब्रह्मचर्य जीवन सुख सागर, परमानंद-शांति भण्डार।
पालन करना अतिशय मुश्किल, जैसे चलना असि की धार।।641।।

माताजी के सरल-प्रभावी, धर्मांगों पर सुन व्याख्यान।
श्रोता बोले अब तक हमने, पाया नहीं धर्म का ज्ञान।।
आज हमें निज बोध हुआ है, माताजी के प्रवचन सुन।
क्रोधादिक तो सब विभाव हैं, क्षमा आदि हैं आतम गुण।।642।।

इस प्रवास में माताजी ने, रचा इन्द्रध्वज नाम विधान।
पूरे देश में उस विधान से, बढ़ा ज्ञानमति जी का नाम।।
तेरहद्वीपों के अकृत्रिम, जिनमंदिर का है अर्चन।
इस विधान के द्वारा हो जाते भक्तों के भाव सफल।।643।।

नियमसार अनुवाद किया माँ, दशलक्षण पर पद्य रचे।
प्रतिज्ञा नाम उपन्यास रचा, रोहिणी नाम नाटक विरचे।।
माँ की प्रतिभा बहुमुखी है, सूर्य गगन ज्यों करे प्रकाश।
विविध विधाओं में रचनाकर, सबका माँ ने किया विकास।644।।

बालविकास छात्र उपयोगी, माताजी के रचे हुए।
चारों भाग माँग जनता की, अतः प्रकाशित यहाँ हुए।।
जम्बूद्वीप रचना का मॉडल, हुआ अनावृत शास्त्र प्रमाण।
तदनुरूप अक्षय तृतीया को, शुरू हुआ सुमेरु निर्माण।।645।।

उत्तम-मध्यम नीच भेद से, मानव होते तीन प्रकार।
विघ्नों से डर शुरू न करते, नीच कार्य को किसी प्रकार।।
शुरू कार्य को बीच त्यागते, विघ्नाहत हो मध्यमजन।
किन्तु कार्य को पूर्ण ही करें, विघ्न नष्ट कर उत्तम जन।।646।।

नहीं विघ्न बाधाओं को माँ, कहीं बुलाने जाती हैं।
फिर भी यदि वे आ जायें तो, कभी नहीं घबराती हैं।।
कार्य पूर्ण करके ही मानीं, विघ्न प्रभंजन दूर हटा।
रवि प्रकाश को रोक न पातीं, कैसी भी हों मेघ घटा।।647।।

कल्पवृक्ष महावीर चरण ही, रहा सकल कार्य का भार।
आशिष उनका, कार्य संभाला, मोतीचंद्र-रवीन्द्र कुमार।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, किया खतौली ओर गमन।।648।।

आचार्यश्री कुन्दकुन्द स्वामी चतुर्विध संघ के नायक थे –

कुछ लोग कह सकते हैं कि कुंदकुंददेव अकेले ही आचार्य थे। यह बात भी निराधार है, पहले तो वे संघ के नायक महान् आचार्य गिरनार पर्वत पर संघ सहित ही पहुँचे थे। दूसरी बात गुर्वावली में श्री गुप्तिगुप्त भद्रबाहु आदि से लेकर १०२ आचार्यों की पट्टावली दी है। उसमें इन्हें पाँचवें पट्ट पर लिया है। यथा— १. श्री गुप्तिगुप्त २. भद्रबाहु ३. माघनन्दी ४. जिनचन्द्र ५. कुन्दकुन्द ६. उमास्वामी आदि। इससे स्पष्ट है कि जिनचन्द्र आचार्य ने इन्हें अपना पट्ट दिया, पश्चात् इन्होंने उमास्वामी को अपने पट्ट का आचार्य बनाया। यही बात नंदिसंघ की पट्टावली के आचार्यों की नामावली में है। यथा-४ जिनचंद्र, ५. कुन्दकुन्दाचार्य ६. उमास्वामी।' इन उदाहरणों से सर्वथा स्पष्ट है कि ये महान् संघ के आचार्य थे। दूसरी बात यह भी है कि इन्होंने स्वयं अपने मूलाचार में 'माभूद में सत्तु एगागी'-मेरा शत्रु भी एकाकी न रहे, ऐसा कहकर पंचम काल में एकाकी रहने का मुनियों के लिए निषेध किया है। इनके आदर्श जीवन, उपदेश व आदेश से आज के आत्म हितैषियों को अपना श्रद्धान व जीवन उज्ज्वल बनाना चाहिए।

-गणिनी ज्ञानमती

खतौली चातुर्मास, सन् १९७६

समाहित विषयवस्तु

1. **माताजी की उत्तम प्रवचन शैली।**
2. **चातुर्मास की स्थापना।**
3. **बालविकास चारों भाग, छहढाला, तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, समाधितंत्र पढ़ाए।**
4. **पर्यूषण पर्व में बड़े बाजार में प्रवचन।**
5. **माताजी ने वैराग्यमयी केशलुंचन किए।**
6. **माताजी ने कई ग्रंथों का पद्यानुवाद किया-ग्रंथ प्रकाशन।**
7. **इन्द्रध्वज विधान पूर्ण हुआ।**

काव्य पद

वर्तमान युग महाविभूति, ज्ञान-ध्यान-तप की भंडार।
प्रवचन शैली अति ही उत्तम, करतीं शुद्ध-स्वच्छ उच्चार।।
कीर्ति कौमुदी फैली चहुँदिशि, शब्द सुने हर बोली में।
माताजी का चतुर्मास हो, अब की बार खतौली में।।649।।

कारण माँ हो चुका पदार्पण, इसके भी था पूर्व यहीं।
शिक्षण शिविर हुआ आयोजित, माँ आशीष से पूर्व यहीं।।
महावीर जयंति गई मनाई, सन्निधान श्री माताजी।
हुई सुपरिचित माताजी से, जनता जैनाजैन सभी।।650।।

बालविकास के चार भाग हैं, हुए अध्यापित यहाँ सभी।
छहढाला-तत्त्वार्थसूत्र भी, साथ पढ़ाये गये तभी।।
द्रव्य संग्रह-समाधितंत्र पढ़, सबका हुआ महत् उपकार।
रखा उत्तमोत्तम संयोजन, मोतीचंदजी रवीन्द्र कुमार।।651।।

जैन समाज खतौली पहुँची, हाथ जोड़कर माँ दरबार।
माताजी के चरणकमल में, अरपे श्रीफल बारम्बार।।
करुणाधन श्रीमाताजी ने, सोचा-समझा पूरी आस।
नगर खतौली में आकर के, किया स्थापित चातुर्मास।।652।।

बड़ा बजार ठाकुर द्वारे के, प्रांगण निर्मित हुआ पंडाल।
दश में से प्रत्येक धर्म पर, प्रवचन होते प्रातःकाल।।
प्रवचन द्वारा माताजी ने, जिनवाणी की अर्चा की।
शीतल-जीवनदायी-मीठे, मेघ वचन की वर्षा की।।653।।

चातुर्मास स्थापन के दिन, केशलुंच सम्पन्न किया।
नगरपालिका टंकी प्रांगण, देखी सब वैराग्य क्रिया।।
जैनेतर जन हुए सुपरिचित, वीर आर्यिका चर्या से।
शुष्कघासवत् उत्पाटित कर, कच फैंके माँ ने कैसे।।654।।

केश बड़े न रखते साधु, उनमें पड़ जाते हैं जीव।
रोज संभालने तेल डालने, की चिंता मन रहे अतीव।।
धर्म अहिंसा ही सर्वोत्तम, उसका पालन करते हैं।
कुछेक माह में साधु-साध्वी, केशलुंचन कर लेते हैं।।655।।

माताजी ने समाधितंत्र-सह, द्रव्यसंग्रह-इष्टोपदेश।
किया पद्य अनुवाद मनोहर, धर्म-समाज हित हुआ विशेष।।
हुआ प्रकाशन इन ग्रंथों का, लिखा ग्रंथ आर्यिका साथ।
अध्ययन-अध्यापन में बीता, माताजी का चातुर्मास।।656।।

माताजी ने शुरू किया था, रचना इन्द्रध्वज विधान।
तीन माह में पूर्ण हो गया, सह पचास पूजा निर्माण।।
जब से हुआ प्रकाशित है वह, भारत के कोने-कोने।
सोत्साह होता आयोजित, लगती धर्मामृत वर्षा होने।।657।।

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, संघ सहित हो गया गमन।।
स्वास्थ्य रहा प्रतिकूल इसलिए, हस्तिनागपुर आईं खास।
तीर्थक्षेत्र प्राचीन जिनालय, माताजी का रहा प्रवास।।658।।

हस्तिनापुर में चातुर्मास, सन् १९७७-७८

समाहित विषयवस्तु

1. चातुर्मास स्थापना-प्राचीन मंदिर हस्तिनापुर।
2. आहार-विचार-व्यवहार-व्यापारशुद्धि पर प्रवचन।
3. मूलाचार की हिन्दी टीका करना।
4. अनेक पुस्तकों-विधानों-पूजाओं की रचना।
5. जम्बूद्वीप रचना के प्रगति चरण।
6. माताजी एवं जैन मंत्रों के प्रभाव से वर्षा का उचित समय पर होना।
7. चातुर्मास में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन।
8. प्रवचन निर्देशिका की रचना।
9. शिविर में 150 शिविरार्थी, उच्च कोटि के विद्वान् पधारे।
10. माताजी को विद्वानों द्वारा सिद्धांतवाचस्पति की उपाधि।
11. चातुर्मास निष्ठापित-दरियागंज दिल्ली प्रस्थान।
12. हस्तिनापुर आगमन-सुदर्शन मेरु की प्रतिष्ठा।
13. उत्तरप्रदेश में प्रथमबार गजरथ।
14. दश झाँकियों का निर्माण।
15. वीरसागर विद्यापीठ की स्थापना।
16. सूर्यकांत (सुरेश) कोटड़िया प्रथमछात्र बने-जो आज रविनंदी मुनिराज हैं।
17. पंचकल्याणक-गजरथ सम्पन्न।
18. माताजी का दिल्ली को विहार।

काव्य पद

हस्तिनागपुर माताजी का, शुरू हुआ ज्यों चातुर्मास।
होने लगी धर्म की वर्षा, स्वच्छ हुआ जीवन आकाश।।
जैसा हम करते हैं भोजन, हो जाता है वैसा मन।
भोजन द्वारा आने लगता, है वैचारिक परिवर्तन।।659।।

परम पूज्य श्री माताजी ने, दिया शुद्धभोजन पर जोर।
जिन-वच-सूरज के प्रकाश में, होने लगी सुनहरी भोर।।
दीपक अंधकार खाता है, अतः उगलता है काजल।
कमल सुरभि फैलाता चहुँदिशि, पीकर सर का मीठा जल।।660।।

मैले वस्त्र स्वच्छ हो जाते, जल-साबुन का पा संयोग।
श्रोता मन निर्मल हो जाते, पाकर साधुसंघ का योग।।
है प्रधानता उपादान की, बात उचित जानी-मानी।
पर निमित्त बिन काम न होता, कहती माता जिनवाणी।।661।।

माताजी ने कहा सभी से, चातुर्मास चरण हैं चार।
आहार शुद्धि-वैचारिक शुद्धि, व्यवहार शुद्धि, शुद्धि व्यापार।।
माताजी ने सबसे पहले, व्यापार शुद्धि पर जोर दिया।
न्यायपूर्ण हो धन का अर्जन, जग हितकारी कथन किया।।662।।

पंडित जी श्री आशाधर की, रचना धर्मामृत-सागार।
कहा उन्होंने सबसे पहले, होवे न्यायोचित व्यापार।।
तदनंतर श्रीमाताजी ने, आहार शुद्धि पर जोर दिया।
जैसा अर्जन, वैसा भोजन, तद्वत् हो व्यवहार क्रिया।।663।।

शरीर प्रथम साधन है धर्म का, उसके बिना न चलता काम।
अतः रुग्णतावश माँ श्री का, हस्तिनागपुर रहा मुकाम।।
ऐतिहासिक प्राचीन जिनालय, में पधराईं माताजी।
चातुर्मास हुआ स्थापित, जन-जन पुण्य घड़ी आई।।664।।

माताजी ज्ञानोपयोग में, सदा-सदा रहती हैं लीन।
नित-नूतन रचना करने में, पूज्य श्री हैं परम प्रवीण।।
ग्रंथ-पुराणों की टीकाएँ, करना मन को भाता है।
संस्कृत से हिन्दी कर देतीं, इक क्षण व्यर्थ न जाता है।।665।।

वट्टकेर स्वामी की रचना, महाग्रंथ है मूलाचार।
संस्कृत से हिन्दी कर उसकी, किया मात श्री महदुपकार।।
विद्वत् गोष्ठी के प्रसंग में, आदि-अंत कवि किया पठन।
उमड़ा श्रद्धाभाव अपरिमित, ज्ञापित श्रद्धा सहित नमन।।666।।

माताजी के विपुल ज्ञान का, अथक परिश्रम का यह फल।
सतत साधना, श्रुताभ्यास से, सम्पन्ना यह कार्य सकल।।
भाषा सरल, ग्राह्य सबही से, अति वैशिष्ट्य रहा अनुवाद।
कह सकते यह जैन जगत को, माताजी का आशीर्वाद।।667।।

धरती के देवता, मुनि दिगम्बर, वर्षायोग रचनाएँ कई।
लिखे विधान, रची पूजाएँ, माताजी ने नई-नई।।
सबल-सफल लेखिनी माँ की, रुकने का लेती नहिं नाम।
गद्य-पद्य-धार्मिक रचनाएँ, रचती रहती हैं अविराम।।668।।

आराधना नाम एक ग्रंथ का, संस्कृत पद्य में रचना की।
चार शतक, चालीस, चार पद, रची कृति यह माताजी।।
पंचमेरु-विधान मातुश्री, इस ही चातुर्मास लिखा।
सम्यग्ज्ञानी विशेषांक में, वर्षायोग विशिष्ट दिखा।।669।।

जम्बूद्वीप सुमेरू पर्वत, ऊँचा उठता जाता था।
बादल लगें डराने, माँ का, जाप शुरू हो जाता था।।
फिर तो पानी नहीं बरसता, पूरा हो जाता सब काम।
निशा काल में सिंचन करते, मेघदूत आ चारों याम।।670।।

अचरज में पड़ जाते सब ही, जो भी करते कार्य यहाँ।
उमड़-घुमड़ कर काले बादल, उड़ जाते न जाने कहाँ।।
माँ मंगलमय-चरण आपके, जैन मंत्र में शक्ति अपार।
फूले नहीं समाते सब ही, हर्षित होते अपरम्पार।।671।।

सन् उन्नीस अट्ठत्तर आया, हुआ स्थापित चातुर्मास।
हस्तिनागपुर बड़ा जिनालय, माताजी का रहा प्रवास।।
धर्म का अमृत लगा बरसने, चहुँदिशि छाई खुशहाली।
धर्म पिपासू, जन जिज्ञासू, पीते थे भर-भर प्याली।।672।।

परम पूज्य माताजी सन्निधि, हुआ प्रशिक्षण शिविर यहाँ।
मोतीचंद कोठारी फल्टण, शिविर के कुलपति रहे यहाँ।।
बाबूलाल जी जमादार ने, ग्रहण किया संचालक भार।
परम पूज्य श्री माताजी ने, प्रवचन निर्देशिका की तैयार।।673।।

लगभग एक शतक पंचाशत, प्रशिक्षणार्थी पधराये।
लालबहादुर-मक्खनलाल से, योग्य प्रशिक्षक भी आये।।
जैन श्वेताम्बर बालाश्रम में, आयोजन दश दिवस रहा।
सहनशीलता गुण सर्वोत्तम, सराहनीय है सभी कहा।।674।।

परम पूज्य श्रीमाताजी खुद, दिया प्रशिक्षण विद्वज्जन।
किस शैली में सुकरणीय है, धर्म सभा उत्तम प्रवचन।।
उपकृत हुए सकल विद्वज्जन्, तदा कृतज्ञता ज्ञापित की।
सिद्धांतवाचस्पति की उपाधि से, हुईं अलंकृत माताजी।।675।।

लेकिन माताजी के मन में, हुआ न किंचित् हर्ष या मान।
दर्शन-ज्ञान-चरित आराधन, से बनते हैं साधु महान।।
आर्ष परम्परा रक्षा करना, शिविर दिया सबको सुविचार।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, माताजी का हुआ विहार।।676।।

दाँत किटाकिट करती सर्दी, माताजी कर रहीं विहार।
पूज्य आर्यिका रत्नमती-सह, पालन करतीं पंचाचार।।
सन् अठहत्तर, माह दिसम्बर, दरियागंज विराजा संघ।
मेरु प्रतिष्ठा, गजरथ उत्सव, हुआ सुनिश्चित सकल प्रसंग।।677।।

पुनः संघ गजपुर पधराया, सन् उन्यासी चौथा मास।
हुई सुदर्शन मेरु प्रतिष्ठा, श्रेयांससिन्धु शुभ सन्निधि खास।।
प्रथमबार उत्तरप्रदेश में, गजरथ उत्सव सम्पन्ना।
सहस-सहस नर-नारी देखा, धन्य किया जीवन अपना।।678।।

इसी प्रतिष्ठाकाल यहाँ दस, बनीं झाँकियाँ सुंदरतम।
अब भी परिसर में स्थित हैं, अवलोकन कर सकते हम।।
इतनी सुंदर-मुखर कि मानों, हम से बोल रही हैं।
पृष्ठ पुराणों के चुन-चुन कर, निश-दिन खोल रही हैं।।679।।

श्री वीरनिधि विद्यापीठ की, हुई स्थापना काल तदा।
सूर्यकांत (सुरेश) कोटड़िया, प्रथम छात्र बन हुए मुदा।।
रविनंदी मुनिराज रूप में, आज साधना रत रहते।
नरेश-प्रवीण-संस्थान कार्यरत, धर्मप्रभावना हैं करते।।680।।

पंचकल्याणक-गजरथ उत्सव, निर्विघ्नरूप सम्पन्न हुआ।
हृदयकमल खिल उठे सभी के, माताजी मन मुदित हुआ।।
दिल्ली की महिला समाज ने, माताजी की करी पुकार।
ज्येष्ठ मास की तीव्र तपन में, मोरीगेट को किया विहार।।681।।

मोरीगेट-दिल्ली चातुर्मास-सन् १९७९

समाहित विषयवस्तु

1. ग्रीष्म तपन में माताजी विहार कर दिल्ली पहुँचीं।
2. चातुर्मास की स्थापना।
3. माताजी आईं-बहार आई।
4. सब्जी मंडी जिनालय में-पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस।
5. पर्यूषण पर्व में इन्द्रध्वज विधान का आयोजन।
6. सितम्बर में शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन।
7. डिप्टीगंज जिनालय में भी इन्द्रध्वज विधान हुआ।
8. मोरीगेट में पंचपरमेष्ठी विधान।
9. चातुर्मास निष्ठापित।
10. दरियागंज बालाश्रम हीरक जयंती में सन्निधि दी।
11. अटल बिहारी वाजपेयी ने माताजी से आशीर्वाद लिया।
12. ग्रीनपार्क कॉलोनी में ध्यान साधना शिविर।
13. ब्र.माधुरी जी ने सामायिक विधि सिखलाई।
14. माताजी ने द्रव्यसंग्रह का अध्ययन कराया।
15. कनॉट प्लेस में इन्द्रध्वज विधान का आयोजन।
16. पहाड़गंज में द्रव्यसंग्रह अध्यापन।
17. ऋषभजयंती, पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन।
18. चाँदनी चौक में महावीरजयंती पर माताजी के प्रवचन।
19. सम्यग्ज्ञान शिविर का आयोजन।
20. हिन्दी रत्नकरंड एवं शांति विधान की रचना।
21. रत्नमती माताजी पीलिया से ग्रस्त।
22. दिल्ली में ही ग्रीष्मकाल।

काव्य पद

तप्त तवा-सी भूमि तप रही, सूरज आग उगलता है।
पवन लपट झुलसाती तन को, पंथी राह न चलता है।।
ऐसे में संघ माताजी का, क्रमशः पहुँचा दिल्ली पास।
मोरी गेट के जैन जिनालय, हुआ स्थापित चातुर्मास।।682।।

साधु-चरण जिस थल पड़ जाते, चहल-पहल बढ़ जाती है।
जैन-जगत की दैनिक चर्या, अप्रमत्त बन जाती है।।
धर्म अंकुरण होने लगता, भव्य कमल बन खिल जाते।
नगर-मुहल्ला-जिनालयों के, सारे दृश्य बदल जाते।।683।।

माताजी के शुभागमन से, लगे जिनालय भरा-भरा।
बाल-वृद्ध-नर-नारी मन में, धार्मिक रंग चढ़ा गहरा।।
प्रातकाल माँ के प्रवचन में, आने लगा वृहत् समुदाय।
नहीं किसी का कोई जगत में, केवल होता धर्म सहाय।।684।।

श्रावण शुक्ला तिथि सप्तमी, को वह आई पुण्य घड़ी।
जैन जिनालय सब्जी मंडी, में पधराईं माताजी।।
पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस पर, लाडू यहाँ चढ़ाया है।
तदा सामयिक प्रवचन करके, दिवस महत्त्व बताया है।।685।।

धन्य भाग्य माना समाज ने, माताजी के चरण पड़े।
हम आभारी, हम कृतज्ञ हैं, हम सबके सौभाग्य बड़े।।
श्री मुनिराज मल्लिसागर जी, धर्मसभा पधराये हैं।
विद्याधर के पूर्व पिता श्री, शोभा सभा बढ़ाये हैं।।686।।

मोरीगेट की महिलाओं ने, पर्यूषण में भाव किया।
इन्द्रध्वज मंडल विधान का, शुभ आयोजन रखा गया।।
पहली बार हुआ आयोजन, दिल्ली को थी बात नई।
अतः कमाने पुण्य अपरिमित, इंद्र-इंद्राणी बने कई।।687।।

शिक्षण और प्रशिक्षण शिविर, हुआ सितम्बर के महिने।
प्राप्त रही सम्पूर्ण सफलता, धर्मलाभ के क्या कहने।।
मोतीचंद कोठारी फल्टण, कुलपति का पद धारे थे।
साहित्याचार्य श्री पन्नालाल जी, सागर से पधराये थे।।688।।

डिप्टीगंज जिनालय दिल्ली, माताजी आगमन हुआ।
इंद्रध्वज मंडल विधान का, शुभ-आयोजन यहाँ हुआ।।
शतकाधिक स्त्री-पुरुषों ने, पूजक बनकर लाभ लिया।
तदुपरान्त श्रीमाताजी ने, मोरीगेट को गमन किया।।689।।

मोरीगेट में रमेशचंद ने, पंचपरमेष्ठी किया विधान।
समय बीतते देर न लगती, आया दिवस वीर निर्वाण।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
बालआश्रम-दरियागंज को, माताजी ने किया गमन।।691।।

बालआश्रम दरियागंज ने, वर्ष पचहत्तर पूर्ण किए।
हीरक जयंति महोत्सव माँ ने, बहुशः आशीर्वाद दिए।।
अटल बिहारी वाजपेयी ने, प्राप्त किया माँ शुभ आशीष।
कर विहार माताजी पहुँचीं, ग्रीनपार्क कॉलोनी बीच।।691।।

ध्यान साधना शिविर यहाँ पर, हुआ महत्तम आयोजन।
माताजी ने ध्यान कराया, ह्रीं बीज पद सुनियोजन।।
बालब्रह्मचारिणी माधुरी, सामायिक विधि सिखलाई।
ध्यान-साधना-सामायिक में, मनोशांति सबने पाई।।692।।

आचार्य प्रवर श्री नेमिचंद्र की, लघु रचना द्रव्यसंग्रह नाम।
माताजी स्वाध्याय कराया, रहा सुखद-सफल परिणाम।।
तदुपरान्त श्रीमाताजी के, प्रवचन होते धर्म सभा।
ग्रीन पार्क के भव्य बाग में, बिखर उठी अद्‌भुत शोभा।।693।।

निर्मल कुमार सेठी सीतापुर, साहूजी श्री शांतिप्रसाद।
तद् सुपुत्र श्री अशोक कुमार ने, पाकर माँ का आशीर्वाद।।
अ.भा.दिगम्बर जैन महासभा, सेठी पद पाया अध्यक्ष।
धार्मिक कार्यों बना अग्रणी, साहू परिवार सकल प्रत्यक्ष।।694।।

ग्रीनपार्क से कनॉट प्लेस में, माताजी संघ लाये जन।
इन्द्रध्वज मंडल विधान का, हुआ महत्तम आयोजन।।
कनॉट प्लेस से पहाड़गंज में, कर विहार संघ पधराया।
द्रव्य संग्रह के अध्यापन का, यहाँ पुनः अवसर आया।।695।।

ऋषभ जयंती मनी यहाँ पर, पंचपरमेष्ठी विधान किया।
प्रवचन लाभ मिला जनता को, सबने धार्मिक ज्ञान लिया।।
पहाड़गंज से चौक चाँदनी, सकल संघ पधराया है।
वीर जयंती महामहोत्सव, माँ सान्निध्य मनाया है।।696।।

महावीर जयंति महापर्व पर, हुए प्रभावक माँ प्रवचन।
माह मई में हुआ प्रयोजित, सम्यग्ज्ञान शिविर शिक्षण।।
बालविकास-ग्रंथ द्रव्यसंग्रह, रत्नकरण्ड श्रावकाचार।
सभी वर्ग ने पढ़े ध्यान से, ग्रहण किए उत्तम संस्कार।।697।।

आयोजन प्रतिदिन होते थे, चलती थी प्रवचन माला।
किन्तु कभी भी माताजी ने, लेखन कार्य नहीं टाला।।
व्यस्त दिनों में भी माताजी, करतीं जिनवाणी का गान।
रचीं आपने हिन्दी रचना, रत्नकरण्ड व शांतिविधान।।698।।

ग्रीष्मकाल की तीव्र तपन में, हुआ पीलिया तीव्र अती।
शिथिलगात हो गईं बहुत ही, पूज्य आर्यिका रत्नमती।।
यूनानी ठंडाई पिलाई, हुआ पीलिया में आराम।
ग्रीष्मकाल में सकल संघ ने, इन्द्रप्रस्थ ही लिया विराम।।699।।

धर्म एक सर्वश्रेष्ठ समुद्र है

चारुगुणसलिलपउरं संजमउत्तुंगउम्मिसंघायं।
णिम्मलतवपायालं समिदि महामच्छ संछण्ण।।
जमणियमदीवपउरं वरगुत्तिगंभीर सीलमज्जादं।
णिव्वाणरयणणिवहं धम्मसमुद्दं णमंसामि।।

अर्थ– सुन्दर गुणों रूप जल की प्रचुरता से संयुक्त, संयम रूप उन्नत ऊर्मि समूहों से सहित, निर्मल तपरूप पातालों से परिपूर्ण, समितियों रूपी महामत्स्यों से व्याप्त, यम-नियम रूप प्रचुर द्वीपों (जलजन्तु विशेषों) से संयुक्त, श्रेष्ठ गुप्तियों एवं गंभीर शीलरूप मर्यादा से सहित और निर्वाणरूप रत्नसमूह से सम्पन्न ऐसे धर्मरूप समुद्र को मैं नमस्कार करता हूँ।

–जम्बूद्वीपपण्णत्ति-आचार्य पद्मनंदि

कूचा बुलाकी बेगम, चाँदनी चौक-दिल्ली चातुर्मास-सन् १९८०

समाहित विषयवस्तु

1. चातुर्मास की स्थापना।
2. इन्द्रध्वज विधान का आयोजन।
3. श्रवणबेलगोल महामस्तकाभिषेक पर अनेक रचनाएँ लिखीं।
4. बड़ी संख्या में प्रकाशित एवं अन्य भाषाओं में अनूदित।
5. पर्यूषण पर्व में कम्मोजी की धर्मशाला में प्रवचन।
6. जैन भारती का विमोचन।
7. इन्द्रध्वज विधान एवं गजरथ।
8. लाल मंदिर को विहार।
9. दिल्ली में माँ सानिध्य में 100 इन्द्रध्वज, कई ऋषिमंडल, पंचपरमेष्ठी, शांतिविधान हुए।
10. कई शिक्षण शिविर आदि।
11. हस्तिनापुर के लिए विहार।
12. माताजी का ज्ञान यज्ञ प्रारंभ।
13. अनेक आयोजन सम्पन्न।
14. ज्ञान ज्योति रथ भ्रमण की रूपरेखा।

काव्य पद

कालचक्र चलता ही रहता, रुकने का लेता नहिं नाम।
एक-एक क्षण कटते-कटते, कट जाती है उम्र तमाम।।
तपतीं जेठ दुपहरी बीतीं, आया क्रमशः प्रावृड् काल।
काले-काले पयोधरों की, दिखने लगीं गगन में माल।।700।।

चातुर्मास शुरू होने में, बस अब थे कुछ ही दिन शेष।
माताजी के श्रीचरणों में, दिल्लीवासी गये अशेष।।
एक-एक श्रीफल था कर में, मन-सर-वारिज खिले-खिले।
शिरसा वंदामि कर बोले, हमको चातुर्मास मिले।।701।।

माताजी मन परम पारखी, जान गईं सब गहराई।
कितनी प्यास लगी चातक को, अच्छी तरह समझ आई।।
स्वीकृति देकर भक्तजनों की, माताजी ने पूरी आस।
आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, हुआ स्थापित चातुर्मास।।702।।

कूचा रहा बुलाकी बेगम, चौक चाँदनी, अतिथि भवन।
मेरु जिनालय, नंदीश्वर की, रचना अतिशय मनभावन।।
बीच सुशोभित अंजनगिरि है, चार बावड़ी चार दिशा।
एक बावड़ी तेरह मंदिर, बावन मंदिर चतुर्दिशा।।703।।

चातुर्मास हुआ स्थापित, जैन जगत उत्साहित मन।
इन्द्रध्वज मंडल विधान का, हुआ सुटीत्या आयोजन।।
माह फरवरी सन् इक्यासी, श्रवणबेलगोला दक्षिण।
महामस्तकाभिषेक बाहुबली, का होना है आयोजन।।704।।

एक हजार वर्ष पूर्व से, गोम्मटेश श्री बाहुबली।
की प्रतिमा तपलीन खड़ी है, विन्ध्यगिरी पर लगे भली।।
लगे हुए सब तैयारी में, कौन-कौन क्या कर पायें।
परम पूज्य श्रीमाताजी ने, की साहित्यिक रचनायें।।705।।

योग चक्रेश्वर बाहुबली जी, उपन्यास नव लिखा गया।।
कामदेव बाहूबलि लघु, बाहूबलि नाटक रचा गया।।
भरत-बाहुबली यह नामांकित, चित्रकथा कॅमिक्स लिखा।
बाहुबली पूजन रचना की, स्तोत्र संस्कृत में विरचा।।706।।

लाखों की संख्या में प्रतियाँ, हुईं प्रकाशित, वितरित कीं।
हो प्रचार-प्रसार अधिकतम, माताजी अभिलाषा थी।।
हुई अनूदित कई भाषा में, माताजी की रचनाएँ।
आडियो कैसिट गये बनाये, लिखी जो माता कविताएँ।।707।।

पर्वराज पर्यूषण आया, हुए आयोजित माँ प्रवचन।
प्रातः कम्मोजी धर्मशाला, दोपहर मंदिर अतिथि भवन।।
प्रवचन कहें कि अमृतवर्षा, सरल-शुद्ध-भाषा में ज्ञान।
ज्ञान सूर्य से छटा हृदय में, बैठा युग-युग का अज्ञान।।708।।

धर्म एक है लक्षण दश हैं, इन सबका सम्मान करो।
क्षमाभाव से ब्रह्मचर्य तक, सबका सम्यग्ज्ञान करो।।
छोड़ो पाप-कषाएँ दृढ़ हो, दशलक्षण पा जाओगे।
क्षमासिन्धु स्नान करोगे, ब्रह्म शिखर चढ़ जाओगे।।709।।

माताजी के प्रवचन रहता, श्रोतागण वात्सल्य घुला।
रोम-रोम पुलकित हो जाता, ऐसा अनुभव-ज्ञान मिला।।
शरच्चंद्र के मुखमण्डल से, जब बहती धर्मामृत धार।
विनयांजलि कर मानें श्रोता, माताजी का परमोपकार।।710।।

चुन-चुन माता कहें उद्धरण, प्रथम आदि चारों अनुयोग।
श्रोताओं का सदा काल ही, स्थिर रहता शुभ उपयोग।।
समय पूर्ण हो जाता यद्यपि, फिर भी रहती मन में चाह।
भूख-प्यास कुछ भी न सताती, मनुआँ रहता बे-परवाह।।711।।

महामस्तकाभिषेक बाहुबली, किया प्रवर्तन इन्दिरा जी।
मानों पुनर्जन्म पा करके, आईं वही गुल्लिका जी।।
माताजी के शुभाशीष से, मंगल कलश ने किया भ्रमण।
लालकिला मैदान में हुआ, माताजी मंगल प्रवचन।।712।।

तेईस अक्टूबर, उन्निस अस्सी, शरदपूर्णिमा, इच्छा नाह।
गया मनाया माताजी का, जन्ममहोत्सव अति उत्साह।।
पिच्यासी विद्वान् पधारे, समयसार-वाचना-शिविर।
पन्नालाल-कैलाशचंद जी, आये थे विद्वान् प्रवर।।713।।

ऋषभदेव संस्कार प्रभावना, जीवनदान उपकार नियम।
माताजी की रचनाओं का, हुआ विमोचन क्रम-क्रम-क्रम।।
महामस्तकाभिषेक काल में, श्रवणबेलगोला प्रांगण।
त्रिलोक जैन शोध संस्थान का, हुआ वहाँ पर अधिवेशन।।714।।

माताजी से रचित महत्तम, रचना जैन भारती नाम।
हुई विमोचित श्रवणगोल में, करी प्रशंसा साधु तमाम।।
चतुरनुयोग समन्वित रचना, सुंदरतम सामग्री सह।
बहु उपयोगी देखी सबने, की सराहना अद्भुत यह।।715।।

प्रेमचंद जी दाने वाले, परमदयालू व्यक्ति महान।
लाल जिनालय चौक चाँदनी, इन्द्रध्वज करवाया विधान।।
परम पूज्य श्रीमाताजी का, मंगलमय सान्निध्य सुवास।
गजरथ निकला इंद्रप्रस्थ में, रचा गया नूतन इतिहास।।716।।

सोलह मार्च इक्यासी आया, लाल जिनालय हुई सभा।
साश्रु विदाई दी माता को, माँ बिखरी आशीष प्रभा।।
लाल जिनालय से विहार कर, मोरीगेट पधराया संघ।
पर्व अठाई यहाँ मनाया, होली का आ रहा प्रसंग।।717।।

हस्तिनागपुर करे प्रतीक्षा, हो माताजी शुभागमन।
दो-क वर्ष में माताजी के, हुए नहीं पावन दर्शन।।
जम्बूद्वीप प्रगति के चरण, दो वर्षों में बढ़े कई।
बनकर के तैयार हो गईं, दो धर्मशाला नई-नई।।718।।

परम पूज्य माताजी सन्निधि, दिल्ली दिखलाया औदार्य।
दो वर्षों में इन्द्रप्रस्थ में, हुए अनेक महत्तम कार्य।।
सत इन्द्रध्वज, कई ऋषिमंडल, पंचपरमेष्ठी, शांतिविधान।
शिक्षण-शिविर हुए लघु-वृहत्, माँ अध्याप्ये ग्रंथ महान।।719।।

दिल्ली के दिल से विहार कर, माँ पधराईं हस्तिनापुर।
गलियों में सूनापन आया, छाई उदासी चेहरों पर।।
हस्तिनागपुर रौनक आई, जम्बूद्वीप में चहल-पहल।
जग के दृश्य बदलते रहते, रहें न स्थिर इक भी पल।।720।।

हस्तिनागपुर आकर माता, स्वाध्याय तप लीन हुईं।
प्रातः दोपहर संघ साथ में, स्वाध्याय तल्लीन हुईं।।
अष्टपाहुड़ सर्वार्थसिद्धि का, स्वाध्याय हित चयन हुआ।
माताजी श्री ज्ञानमती का, ज्ञानयज्ञ प्रारंभ हुआ।।721।।

लेखन कार्य चला द्रुतगति से, पूर्व ज्ञान निधि हुई संभाल।
ज्ञान ज्योतिरथ देश भ्रमण हित, बनी रूपरेखा इस काल।।
शांतिनाथ अभिषेक साथ ही, निलय रत्नत्रय उद्घाटन।
माताजी के सन्निधान में, हुए अन्य बहु आयोजन।।722।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९८१

समाहित विषयवस्तु

1. **सभी को माताजी के सुलभ दर्शन।**
2. **दर्शन के साथ प्रवचन लाभ।**
3. **चातुर्मास की स्थापना।**
4. **इन्द्रध्वज विधान की रचनाओं के प्रति आभार।**
5. **इन्द्रध्वज विधान सम्पन्न।**
6. **जम्बूद्वीप सेमिनार का आयोजन।**
7. **बाबूलाल जैन जमादार का अभिनंदन।**
8. **माताजी के जन्मदिन पर विनयांजलि।**
9. **आर्यिका रत्नमती अभिनंदन ग्रंथ की रचना।**
10. **माताजी का दिल्ली प्रस्थान।**
11. **लालमंदिर में ज्ञानज्योति रथ कार्यालय का उद्घाटन।**
12. **इन्द्रध्वज विधान, महावीर जयंती सम्पन्न।**
13. **इन्दिरा गाँधी के कर कमलों से ज्ञानज्योति रथ का उद्घाटन।**
14. **ज्ञानज्योति रथ का देश भ्रमण-आचार्य देशभूषण, आचार्य विमलसागर ने शुभाशीष दिया।**

काव्य पद

माताजी के शुभागमन से, जम्बूद्वीप में आई बहार।
रात्रिकाल वैराग्य उमड़ता, दिन मनते धार्मिक त्यौहार।।
परम पूज्य श्री माताजी के, दर्शनार्थ आते बहु-जन।
ऐसा कोई दिवस न जाता, जब न आते दर्शकगण।।723।।

जो भी आते माताजी के, सब जन दर्शन पाते हैं।
जीवन्ततीर्थ के दर्शन करके, जीवन धन्य बनाते हैं।।
करुणासागर वात्सल्यनिधि, नहीं किसी को करें निराश।
रोक-टोक के बिना सभी को, खुला हुआ है संत-प्रवास।।724।।

यही नहीं पूज्य माताजी, समय-समय करतीं प्रवचन।
भक्तजनों को अतिहितकारी, देती हैं आशीष वचन।।

दर्शन औ आशीष प्राप्त कर, सबको होता मन सन्तोष।
दिवस आज का धन्य हुआ है, मिला पुण्य का अक्षय कोष।।725।।

परम पूज्य श्रीमाताजी ने, तीरथ नया बनाया है।
अपनी अद्भुत सूझ-बूझ से, भू को स्वर्ग बनाया है।।
काल का पंछी उड़कर पहुँचा, आषाढ़-जुलाई उत्तम मास।
भक्तों के आग्रह से माँ ने, किया यहीं पर चातुर्मास।।726।।

अकृत्रिम जिन चैत्यालय हैं, मध्यलोक में शोभामान।
चार शतक अष्टपंचाशत, उनकी संख्या रहा प्रमाण।।
इन्द्रध्वज मंडल विधान में, इन सबकी होती पूजन।
भाव सहित जो करे करावे, करता अक्षय पुण्यार्जन।।727।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती हैं, इस विधान की रचनाकार।
अन्यान्येक विधान सृजन कर, माता किया महत् उपकार।।
इसके पहले संस्कृत में ही, पाये जाते सकल विधान।
पढ़ने और पढ़ाने वाले, नहिं मिलते खोजे विद्वान्।।728।।

माताजी से रचित विधानों, की सर्वत्र मची है धूम।
सुनते-करते, पढ़ते हिन्दी, जन साधारण जाते हैं झूम।।
किन शब्दों में माताजी प्रति, हम कृतज्ञता व्यक्त करें।
शत-शत वंदामि माताजी, हम सविनय अभिव्यक्त करें।।729।।

हस्तिनागपुर माताजी का, रहा प्रथम यह चातुर्मास।
इसी वर्ष श्री जम्बूद्वीप का, रचा गया स्वर्णिम इतिहास।।
निर्मल सेठी सीतापुर ने, इंद्रध्वज का किया विधान।
परम पूज्य श्रीमाताजी का, रहा परम पावन सन्निधान।।730।।

जम्बूद्वीप सेमिनार का हुआ, माह अक्टूबर आयोजन।
जमादार श्री बाबूलाल का, किया गया बहु अभिनंदन।।
माताजी के जन्म दिवस पर, हुई विनयांजलि महासभा।
सेमिनार विद्वानों द्वारा, प्रकटी बहुशः विनयप्रभा।।731।।

पूज्य आर्यिका रत्नमती का, ग्रंथ अभिनंदन लिखा गया।
जिनके द्वारा गणिनी माता, ज्ञानमती को रचा गया।।

ज्ञानज्योति रथ के निमित्त से, इंद्रप्रस्थ माँ किया गमन।
लाल जिनालय में माँ सानिध्य, हुआ दफ्तर का उद्घाटन।।732।।

माताजी के सन्निधान में, श्री इन्द्रध्वज हुआ विधान।
पर्व अठाई में सम्पन्ना, माँ शुभ आशिष किया प्रदान।।
धर्मनिधि ग्रंथ अभिनंदन, हुआ विमोचित सन्निधि माँ।
श्री महावीर जयंती आई, माँ के प्रवचन हुए यहाँ।।733।।

लौह हृदय नारी इन्दिरा जी, हिन्ददेश की मंत्रि प्रधान।
उनके ही मंत्रित्व काल में, ज्ञानज्योतिरथ हुआ गतिमान।।
उनके सक्षम कर कमलों से, उद्घाटन सम्पन्न हुआ।
भारत के कोने-कोने में, रथ का निर्भय भ्रमण हुआ।।734।।

चार जून सन् ब्यासी शुभ दिन, यह मंगलमय कार्य हुआ।
मंत्रोच्चार-पुष्पांजलिक्षेपण-स्वस्तिक-जय-जयकार हुआ।।
हो निर्विघ्न रथ भ्रमण देश में, इन्दिरा जी आश्वस्त किया।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, उनको शुभ आशीष दिया।।735।।

जमादार श्री बाबूलाल जी, विद्वानों में रहे प्रधान।
उनके अनुभवशील करों में, देशभ्रमण की रही कमान।।
चौक चाँदनी से करोलबाग, तदनंतर रथ राजस्थान।
गये देश के कोने-कोने, स्वागत पाया हर स्थान।।736।।

ज्ञानज्योतिरथ जयपुर पहुँचा, देशभूषण आचार्य श्री।
हुए ज्ञानरथ के सहगामी, शुभाशीष की वर्षा की।।
लोहरिया में धर्मनिधि संघ, रथ के संग-संग भ्रमण किया।
विमलसिन्धु आचार्यश्री भी, रथ मंगल आशीष दिया।।737।।

कूचा बुलाकी बेगम, साइकिल मार्केट-दिल्ली

चातुर्मास-सन् १९८२

समाहित विषयवस्तु

1. दिल्ली में ग्रीष्म की प्रचंडता।
2. चातुर्मास स्थापना।
3. आ.शांतिसागर पुण्यतिथि एवं अनेक आयोजन सम्पन्न।
4. माताजी के प्रवचन।
5. मंटोला पहाड़गंज-दिल्ली में इन्द्रध्वज विधान।
6. माताजी के चार बार प्रवचन।
7. अनेकानेक विधानों का संयोजन।
8. भोगल में मंदिर का शिलान्यास।
9. ज्ञानज्योति सेमिनार का आयोजन-राजीव गाँधी द्वारा उद्घाटन।
10. जापानी विद्वान् ने भाग लिया।
11. शरदपूर्णिमा जन्मजयंती दिवस सम्पन्न।
12. चातुर्मास निष्ठापित।
13. दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए विहार।
14. हस्तिनापुर में अनेक निर्माण कार्य सम्पन्न।
15. माताजी द्वारा श्रुताभ्यास एवं लेखन।
16. तत्त्वार्थसूत्र पर आधारित शिक्षण शिविर।
17. जम्बूद्वीप रचना की विद्वानों द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा।

काव्य पद

धीरे-धीरे समय पुरुष ने, ग्रीष्मकाल संकेत किया।
जून माह के आते-आते, तीव्र-तपन का रूप लिया।।
निश-दिन तपने लगे भयंकर, कोई चैन न पाता था।
कूलर-पंखा आग उगलते, सब जग दुखी दिखाता था।।738।।

तभी देहली जैन जगत के, श्रेष्ठी जब मिलकर आये।
माताजी के चरण कमल में, पुनः पुनः मस्तक नाये।।

श्रीफल अर्पण कर चरणों में, बोले, हे माँ कृपा करें।
अगला चातुर्मास वहीं पर, स्थापन स्वीकार करें।।739।।

परम कृपालू माताजी ने, सब पूर्वापर किया विचार।
नगर देहली में ब्यासी का, चातुर्मास किया स्वीकार।।
हर्ष लहर दौड़ी जनता में, होने लगे मंगलाचार।
अंतर्मोद जताया सबने, कर माता के जय-जयकार।।740।।

पाँच जुलाई सन् था ब्यासी, आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशि को।
चातुर्मास हुआ स्थापित, जन-जन को मंगलमय हो।।
हुए महत्वपूर्ण आयोजन, यथा शांतिनिधि पुण्यतिथि।
आचार्यश्री को सकल जनों ने, भाव भरी श्रद्धांजलि दी।।741।।

परम पूज्य श्रीमाताजी ने, इस अवसर पर शब्द कहे।
यदपि आप श्री भौतिकतन से, इस भूतल पर नहीं रहे।।
तदपि आपसे धर्मक्षेत्र में, स्थापित जो उच्चादर्श।
बने रहेंगे मील के पत्थर, देने को जीवन उत्कर्ष।।742।।

जो शुभ कार्य किए गुरुवर ने, हम सब उन पर चलें सदा।
करें ग्रहीत व्रतों का पालन, लगें नहीं अतिचार कदा।।
देव-शास्त्र-गुरु शीश नमाएँ, हो रत्नत्रय जीवन अंग।
संयम की डोरी से बँधकर, हों प्रशस्त सम्पूर्ण प्रसंग।।743।।

इन्द्रध्वज मंडल विधान का, हुआ मंटोला आयोजन।
इस अवसर पर मंगलकारी, हुए पूज्य माँ के प्रवचन।।
सन्तों के शुभ सन्निधान में, यह भी होता कभी-कभी।
होने लगती धर्म की वर्षा, प्रा-दो-सा-रा[1] चार घड़ी।।744।।

सित.अक्टूबर के माहों में, दो-दो प्रा.दो. हुए विधान।
तीस-चौबीसी, इन्द्रध्वज को, मिला मातश्री का सन्निधान।।
छोटे-छोटे अन्य विधानों, का तो कोई हिसाब नहीं।
हुए बहुत से शाहदरा में, रक्खी कोई किताब नहीं।।745।।

1. प्रातः-दोपहर-सायं-रात्रि।

भोगल में माँ सन्निधान में, मंदिर का शिलान्यास हुआ।
ज्ञानज्योति के सेमिनार का, सुंदर-सफल प्रयास हुआ।।
सांसद श्री राजीव गाँधी ने, उद्घाटन कर शब्द कहे।
अति आवश्यक धर्म हमारा, राजनीति से अलग रहे।।746।।

इस पर प्रवचन में माताजी, अति ही सुंदर बात कही।
राजनीति में धर्म नीति हो, रहे देश में शांति तभी।।
जापानी विद्वान् भी आया, सेमिनार में लेने भाग।
सत्रान्त में माताजी के, प्रवचन का मिलता सौभाग्य।।747।।

एक नवम्बर सन् ब्यासी को, आई शरद पूर्णिमा जब।
जन्म दिवस श्रीमाताजी का, सकल समाज मनाया तब।।
दिन हों वर्ष हजार के माता, ऐसे होवें वर्ष हजार।
श्री माताजी करें साधना, करती रहें स्व-पर उपकार।।748।।

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
परम पूज्य श्रीमाताजी का, इंद्रप्रस्थ से हुआ गमन।।
नगर-ग्राम सब हुए उपकृत, रत्न-ज्ञान के पा उपदेश।
स्वागत को तैयार खड़ी थीं, हस्तिनागपुर गली अशेष।।749।।

परम पूज्य श्रीमाताजी का, ज्यों गजपुर आगमन हुआ।
त्यों ही रौनक लौटी चहुँदिशि, हस्तिनागपुर चमन हुआ।।
हस्तिनागपुर मेला आया, पूनम तिथि कार्तिक के मास।
जीवनतीर्थ के दर्शन करने, जन सैलाब था उमड़ा खास।।750।।

जम्बूद्वीप-सुमेरू पर्वत, षोडश-चैत्यालय दर्शन।
जीवन धन्य किया जनता ने, बना रहा मन आकर्षण।।
तीन मूर्ति मंदिर की रचना, निलय-रत्नत्रय का निर्माण।
देख-देख हर्षित होते जन, मनः-शुद्धि करते कल्याण।।751।।

अभीक्ष्ण ज्ञान योगिनी माता, करती रहतीं श्रुत अभ्यास।
त्रिलोकसार, श्लोकवार्तिक, शुरू किया कार्तिक के मास।।
पढ़तीं स्वयं, पढ़ातीं सबको, निज-पर का करतीं कल्याण।
किया सृजन नूतन कृतियों का, रही लेखिनी भी गतिमान।।752।।

इन्हीं दिनों माता की सन्निधि, हुए अनेकानेक विधान।
निलय रत्नत्रय, भोजनशाला, के सम्पन्न हुए निर्माण।।
जम्बूद्वीप के हिमवनादि का, चलता रहा कार्य द्रुति रूप।
सिद्धांतों को पाषाणों में, दी अभिव्यक्ति ग्रंथ अनुरूप।।753।।

तत्त्वार्थसूत्र-धर्म आधारित, हुआ आयोजित एक शिविर।
कुलपति का पद किया अलंकृत, विद्वत् पन्नालाल प्रवर।।
लगभग पंचाशत विद्वानों ने, पाया तदा ज्ञान का धन।
ऐसी माँ ने ज्योति जगाई, भूल नहीं पाते हैं जन।।754।।

जम्बूद्वीप जिनालय षोडश, विद्वानों ने दर्श किये।
कुलपति पन्नालाल प्रवर ने, मनोभाव यों व्यक्त किये।।
अति ही अद्भुत-अनुपम-उत्तम, अद्वितीय है माँ का काम।
जग महत्व आंकेगा इसका, हम सब करते उन्हें प्रणाम।।755।।

किसी माई के लाल ने अब तक, कर न दिखाया ऐसा काम।
सिद्धांत लिखे हैं बस ग्रंथों में, नहीं प्रकट पोत आयाम।।
मनुजजाति में ज्ञानमती का, कार्य अनन्वय-नम्बर एक।
अचरज में पड़ जाते नर हैं, जम्बूद्वीप रचना को देख।।756।।

समय नहीं है किसी के वश में, वह स्वतंत्र सम्राट महान्।
नहीं जोहता वाट किसी की, सदा-सदा रहता गतिमान।।
रहट घटी ज्यों रहे बदलता, पतझड़ से आता मधुमास।
समय ग्रीष्म का बीत गया जब, पुनः आ गया चातुर्मास।।757।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९८३

समाहित विषयवस्तु

1. **रत्नमती आर्यिका की समाधि सन्निकट।**
2. **चातुर्मास की स्थापना।**
3. **तेरह-बीस आम्नायी पद्धतियों से सिद्धचक्र विधान।**
4. **माताजी ने जम्बूद्वीप की 108 परिक्रमा की।**
5. **साधु समाज को बुलाने के लिए आमंत्रण।**
6. **इन्द्रध्वज विधान, माताजी का जन्म दिवस मनाया गया।**
7. **रत्नमती माताजी का अभिनंदन-अभिनंदन ग्रंथ समर्पित।**
8. **दहेज दो तो ऐसा दो।**
9. **ज्ञानज्योति रथ सनावद में आया।**

काव्य पद

चल अतीत को याद करें हम, दुहरायें पूरब इतिहास।
मैना छोड़ चली गृहपिंजरा, बोलो किसने पूरी आस।।
माता श्री मोहिनीदेवी, किया तदा उपकार महान।
उपकारों को नहीं भूलते, साधु पुरुष उत्तम विद्वान्।।758।।

तुम्हें छुड़ाती हूँ मैं गृह से, तुम भी मुझे छुड़ा लेना।
अंत समय में पड़ी भंवर में, नैया पार लगा देना।।
तब मैना ने वचन दिया था, ज्ञानमती निर्वाह किया।
गृहबंधन को तोड़ निकाला, संयम पथ आरूढ़ किया।।759।।

हुईं आर्यिका मोहिनी देवी, रत्नमती सुनाम पाया।
तेरह रत्नों की माता ने, तेरह व्रत को अपनाया।।
तेरहवर्ष साधना करते, बीते आया काल समाधि।
काय-कषाय किए कृश अपने, त्यागी मन से सकल उपाधि।।760।।

विहार कार्य असमर्थ जानकर, शिथिलगात लख माता का।
ज्ञानमती जी हस्तिनागपुर, किया विचार चौमासा का।।

जैन त्रिलोक शोध संस्था के, आये सभी सदस्य प्रधान।
श्रीफल अर्पित कर चरणों में, की अनुमोदन सह-बहुमान।।761।।

माताजी श्री ज्ञानमती की, दृष्टि समन्वयवादी है।
मैत्री भाव रहे साधर्मी, यही भावना भाती हैं।।
तेरह-बीस विधि दोनों से, हुए सिद्धचक्र विधान यहाँ।
माता सन्निधि, पर्व उठाई, गया मनाया खूब यहाँ।।762।।

तीर्थंकरों के न्हवन जल से, गिरि सुमेरु हुआ पावन।
हस्तिनागपुर जम्बुद्वीप में, बनी प्रतिकृति मनभावन।।
हुईं प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ, बने पुण्य के योग सभी।
एक शतक आठ वंदना, माताजी ने करी तभी।।763।।

तेइस जुलाई, वर्ष तेरासी, हुआ स्थापित चातुर्मास।
वाचन-पाठन-लेखन करना, माताजी का रहा प्रयास।।
ज्ञान-ध्यान-तप-लीन रहे जो, वही साधु कहलाता है।
क्रमशः कर्म निर्जरा करके, स्वर्ग-मोक्ष सुख पाता है।।764।।

जम्बूद्वीप, सुमेरू पर्वत, नहीं प्रतिकृति मात्र रही।
भारत के कोने-कोने से, आते दर्शक पूज्य मही।।
रंगाराव-मनुचंदा एस.के, शिक्षा शास्त्री वी.पी. धवन।
हुए प्रहर्षित छात्र तीन सौ, करके तीर्थक्षेत्र दर्शन।।765।।

जम्बूद्वीप-सुमेरू पर्वत, उभय पूर्णता पाई है।
जिन प्रतिमाओं प्राणप्रतिष्ठा, काललब्धि अब आई है।।
अतः एक प्रतिनिधि मंडल को, भेजा साधु-संघ के पास।
किया निवेदन सन्निधान दें, पूर्ण करें भविजन की आश।।766।।

आचार्यश्री धर्मसागर जी, उपाध्याय श्री अजित निधि।
दयानिधि-अभिनंदन सागर, किया निवेदन यथाविधि।।
राजस्थानी दस नगरों में, जहाँ विराजे थे मुनिराज।
प्रतिनिधि मंडल किया निवेदन, सन्निधान देने इस काज।।767।।

आचार्य श्री विमलसागर जी, औरंगाबाद विराजे थे।
समन्तभद्र जी, विद्यानंद जी, श्री कुंभोज में राजे थे।।

प्रतिनिधि मंडल किया न्विेदन, पंचकल्याणक होना है।
पूज्यश्री के सन्निधान से, उत्सव शोभा होना है।।768।।

साधु समाज ने माताजी की, बारम्बार प्रशंसा की।
आशीर्वाद दिया दोनों कर, सकल कार्य अनुशंसा की।।
ज्ञानमती जी पुरुषार्थी हैं, दृढ़ संकल्पी, उपकारी।
कार्य अप्रतिम किये उन्होंने, धर्म-समाज है आभारी।।769।।

प्रतिनिधि मंडल गया साधु संघ, ज्ञानज्योति रथकरे भ्रमण।
इन्द्रध्वज मंडल विधान के, हुए गजपुर में आयोजन।।
शरदपूर्णिमा का दिन आया, माताजी का जन्मदिवस।
कहा सभी ने सन्निधान माँ, मिले निरंतर सहस बरस।।770।।

चातुर्मास तेरासी सन् का, रहा महा गौरवशाली।
रत्नमती माता की जीवनी, है अति ही महिमाशाली।।
पुत्री-भगिनी-गृहिणी-माता, सभी रूप आदर्श महान।
सब कुछ होकर सब कुछ त्यागा, दीक्षा धारी हित कल्याण।।771।।

ऐसी महत्तमा नारी का, किया गया अभिनंदन है।
त्याग-तपस्या की मूरत को, कवि का सादर वंदन है।।
ज्ञानमती जी कहा सभी से, दो दहेज तो ऐसा दो।
जिससे जीवन बने धार्मिक, मरण पंडितों जैसा हो।।772।।

सन् चौदह महमूदाबाद में, सुखपालदास लाला के घर।
जन्मी कन्या मोहिनी देवी, छोटेलाल बने थे वर।।
पद्मनंदिपंचविंशतिका, ग्रंथ दहेज के रूप दिया।
पढ़ पुत्री आजन्म शील धर, पर्व मास ब्रह्मचर्य लिया।।773।।

उनकी पुत्री ज्ञानमती मैं, हूँ उत्तम दहेज का फल।
वही मोहिनी रत्नमती ये, त्याग-साधना युक्त सकल।।
अतः सभी जन शिक्षा लेवें, दो दहेज तो ऐसा दो।
जिससे जीवन बने धार्मिक, मरण पंडितों जैसा हो।।774।।

पूज्य आर्यिका रत्नमती का, बहु अभिनंदन किया गया।
और साथ ही ग्रंथ अभिनंदन, उन्हें भेंट में दिया गया।।

निस्पृहभाववती माताजी, अतिशय हुईं भाव विह्वल।
प्रत्युत्तर में दिया सभी को, माताजी आशीष विमल।।775।।

यह गौरव की बात कि इनकी, धार्मिक हैं सब सन्तानें।
कुछ संलग्ना मोक्षमार्ग में, कुछ हैं गृहस्थ धर्म मानें।।
देव-शास्त्र-गुरु की उपासना, स्वाध्यायरुचि लिए हुए।
जो हैं, जहाँ हैं, अपने पथ पर, पूर्ण रूप से लगे हुए।।776।।

ज्ञानज्योतिरथ देश भ्रमण कर, नगर सनावद में आया।
बहु दिग्गज विद्वान् पधारे, मोती अमृत बरसाया।।
अनेकानेक संस्थाओं के, हुए सफलतम अधिवेशन।
अल्प विराम के साथ यहीं पर, माताजी को करें नमन।।777।।

जिनेन्द्र प्रतिमा के दर्शन का महत्व

जिनेन्द्रदेव की प्रतिमा के दर्शन की भावना करते ही दो उपवास का फल मिल जाता है। चलने की अभिलाषा करते ही तीन उपवास का फल, चलने का आरंभ करते ही चार उपवास का फल, चलते-चलते पाँच उपवास का फल, कुछ दूर चले आने पर बारह उपवास का फल, बीच मार्ग में पहुँच जाने पर पन्द्रह उपवास का फल, सुमेरु की चोटी का दर्शन करते ही एक मास के उपवास का फल, मंदिर में प्रवेश करने पर छह मास के उपवास का फल, मंदिर के द्वार में प्रवेश करने पर एक वर्ष के उपवास का फल, तीन प्रदक्षिणा देने पर सौ वर्ष के उपवास का फल, जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा के दर्शन करने से हजार वर्ष के उपवास का फल मिलता है। पुनः जिनप्रतिमा के सन्मुख खड़े होकर भावपूर्वक स्तुति करने से अनंत उपवास का फल प्राप्त होता है। यथार्थ में जिनेन्द्र भगवान की भक्ति से बढ़कर और कोई उत्तम पुण्य नहीं है।

— पद्मपुराण, पर्व ३२, पृ. ९९

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९८४

समाहित विषयवस्तु

1. **माताजी उत्तम प्रकृति की नारी।**
2. **जम्बूद्वीप प्राण प्रतिष्ठा पूर्व सभी अपूर्ण कार्य पूर्ण हों।**
3. **जम्बूद्वीप में चातुर्मास स्थापना।**
4. **जम्बूद्वीप किसी को शूल, माताजी बरसातीं फूल।**
5. **चातुर्मास काल में नियमसार की स्याद्वादचन्द्रिका संस्कृत टीका पूर्ण की।**
6. **सरस्वती वंदना महोत्सव का आयोजन।**
7. **टीका का अर्थ-भाव प्रकट करना।**
8. **नई-नई कृतियों की रचना।**
9. **पंचकल्याणक प्रतिष्ठा।**
10. **ज्ञानज्योति रथ का समापन।**
11. **माताजी को गणिनी पद से अलंकृत किया गया।**
12. **माताजी ने असंभव कार्य को संभव कर दिखाया।**

काव्य पद

उत्तम-मध्यम-जघन रूप से, मानव होते तीन प्रकार।
विघ्नाक्रांत जघन न होते, कोई कार्य करने तैयार।।
मध्यम कार्य शुरू कर देते, आते विघ्न छोड़ते भाग।
पर विघ्नों से डरें न उत्तम, कार्य पूर्ण करते बड़भाग।।778।।

माताजी की प्रकृति है उत्तम, जम्बूद्वीप बनाया है।
गिरि सुमेरु-हिमवन-चैत्यालय, सब प्रत्यक्ष दिखाया है।।
थे सिद्धांत कैद पुस्तक में, उन्हें खुला वातास दिया।
महा अलौकिक, अतिशय अद्भुत, माताजी ने कार्य किया।।779।।

है अपूर्ण कुछ कार्य अभी भी, उसे पूर्णता देना है।
प्राण प्रतिष्ठा पहले-पहले, सब ही कुछ कर लेना है।।
अतः त्रिलोक शोध संस्था-सह, समितियों के सदस्य आए।
हाथ जोड़, वंदामि करके, बोले वचन सुमन भाए।।780।।

पूज्या श्री आशीष चाहिए, रहे आपका यहीं प्रवास।
सन् चौरासी जम्बूद्वीप ही, हो माताजी चातुर्मास।।
मात्र आपके सन्निधान से, कार्य सहज हो जाएंगे।
कल्पवृक्ष की छाँव तले हम, सभी सफलता पायेंगे।।7841।।

पदाधिकारियों, सकल सदस्यों, के आग्रह पर किया विचार।
सुकरणीय प्रवास यहीं पर, संघ सदस्यों के अनुसार।।
अतः जुलाई बारह के दिन, महावीर जिन चरणों पास।
संघ सहित श्री माताजी ने, किया स्थापित चातुर्मास।।782।।

जम्बूद्वीप की अद्भुत रचना, अनुपम-भव्य-निराली है।
विद्वेषीजन की छाती में, आग लगाने वाली है।।
विघ्नानल भड़का देते थे, यदा-कदा ईर्ष्यालू जन।
शांत स्वभावी तब माताजी, क्षमानीर से करें शमन।।783।।

चातुर्मासकाल माताजी, विशिष्ट संयमाचरण किया।
तत्त्वार्थसूत्र-सह दश धर्मों का, सकल जनों को ज्ञान दिया।।
प्रतिक्रमण-आवश्यक सब ही, यथासमय पाते आयाम।
अप्रमत्त चलते ही रहते, यथाकाल सा.-नि.-धा.[1] काम।।784।।

कुंदकुंद आचार्यश्री की, नियमसार रचना का नाम।
स्याद्वादचंद्रिका टीका, संस्कृत दिया मात अंजाम।।
सन् अठहत्तर हुई न पूरी, सन् चौरासी पूर्ण करी।
जम्बूद्वीप के चतुर्मास में, यह पाई उपलब्धि बड़ी।।785।।

केवल साढ़े पाँच माह में, कार्य महत्तम पूर्ण हुआ।
अप्रत्यासित प्राप्त सफलता, पर माँ अतिशय हर्ष हुआ।।
सरस्वती वंदना रूप महोत्सव, यहाँ मनाया गया मुदा।
ग्रंथ पालकी विराजमान कर, जुलूस निकाला गया तदा।।786।।

टीका केवल अर्थ नहीं है, ग्रंथ पूर्णता देना है।
जैसे जुगनू के प्रकाश में, सूरज को भर देना है।।

1. सामाजिक-निर्माण संबंधी-धार्मिक।

माताजी ने नियमसार का, हार्द प्रकट कर दिखलाया।
जिज्ञासू, अल्पज्ञजनों, को भी सब भाव समझ आया।।787।।

जिसने पढ़ी, सराही सबने, आर्ष परम्परा को माना।
आचार्यों-गुरु-विद्वानों ने, माँ प्रतिभा को पहचाना।।
समयोचित उद्धरणों द्वारा, विषयवस्तु सारल्य दिया।
माताजी ने यह समाज का, अतिशय धर्मोपकार किया।।788।।

यह नर काया, मिट्टी माया, क्षण-क्षण होती क्षीण चली।
पिंजरे ऊपर चमड़ी लिपटी, चम-चम चमके लगे भली।।
किन्तु एक दिन आए ऐसा, मिट्टी में मिल जाना है।
गर असंयमित रही जिंदगी, शेष रहे पछताना है।।789।।

बचपन-यौवन आते-जाते, जरा न आकर जाती है।
जब जाती है तब वह तन को, स्वयं साथ ले जाती है।।
अतः चाहिए विज्ञजनों को, तन का सत् उपयोग करें।
धर्मक्षेत्र में बोकर इस को, मोक्षगमन उद्योग करें।।790।।

श्री मोहिनीदेवी जी ने, अतिविवेक से काम लिया।
भव-तन-भोग विरक्ति साध कर, संयम पथ स्वीकार किया।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती से, पंचमहाव्रत धारण कर।
किया आत्मकल्याण आपने, माता रत्नमती बनकर।।791।।

तेरहवर्षों करी साधना, निरतिचार चर्या पाली।
अन्त समय तक अप्रमत्त रह, की पद-व्रत की रखवाली।।
सूरज डूबे इसके पहले, विधि सल्लेखन अपनाई।
मोह शत्रु को किया पराजित, दशा वीतरागता पाई।।792।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, निर्यापक का कार्य किया।
भाव विशुद्धि रहे क्षपक की, इस पर पूरा ध्यान दिया।।
माह जनवरी, दिनाँक पंचदश, सन् पिच्चासी आया है।
नमस्कार मंत्र को सुनते, रत्न स्वर्ग पद पाया है।।793।।

दिवस आज के धर्मक्षेत्र में, एक नया इतिहास रचा।
माता ने पद लिया क्षपक का, निर्यापक पद रही सुता।।

स्मृतियाँ आ जातीं मन में, माताजी की बारम्बार।
पर सँभाल लेती थीं खुद को, योग-वियोग जान अनिवार।।794।।

जिसका साथ रहा हो वर्षों, उसे भुलाना नहीं सरल।
फिर माँ जिससे खून का रिश्ता, स्मृतियाँ आतीं अविरल।।
सन्तों के भी मन के ऊपर, योग-वियोग का पड़े प्रभाव।
वे भी तो समाज में रहते, संवेदन का नहीं अभाव।।।795।।

ऐसे अवसर जब भी आए, तत्त्वज्ञान की शरण गहें।
ज्ञान-विराग बढ़ाने वाले, पौराणिक आख्यान पढ़ें।।
अश्रु बहाकर मूर्ख कर्म की, साँकल और बढ़ाते हैं।
किन्तु विवेकी साम्यभाव रख, आत्मशक्ति को पाते हैं।।796।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, निज विवेक उपयोग किया।
परचिन्ता से ध्यान हटाकर, निजात्म चिन्तना ध्यान दिया।।
जम्बूद्वीप - हस्तिनागपुर - आदिनाथ पूजाएँ रचीं।
धर्मध्यान में ध्यान लगाने, नई-नई कृतियाँ विरचीं।।797।।

अट्ठाईस अप्रैल से लेकर, दो-क मई पिच्यासी तक।
हुए निर्विघ्न पंचकल्याणक, किए सभी ने कार्य अथक।।
आचार्य श्री धर्मसागर का, संघ सहित सान्निध्य मिला।
एन.डी.तिवारी, सी.ए. यू.पी., जम्बूद्वीपी कमल खिला।।798।।

ज्ञानज्योति रथ कार्य प्रवर्तन, हुआ समापन पहले दिन।
पी.वी.नरसिंहराव ने किया, अखंड ज्योति का स्थापन।।
हुई प्रभावना जैन धर्म की, शब्द वर्णनातीत रही।
माताजी सादर वन्दामि, सबने एक ही बात कही।।799।।

व्रती नारियों में सर्वोत्तम, पूज्य आर्यिका माताजी।
उनमें भी उत्तम गणिनी हैं, जिनवाणी महिमा आती।।
एक मई सन् पिच्चासी को, केवलज्ञान कल्याणक दिन।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, भूषित गणिनी अलंकरण।।800।।

नूतन पिच्छी तथा कमण्डलु, गणिनी जी को दिये गये।
शास्त्र-समर्पणपूर्वक माँ के, जय-जयकारे किये गये।।

सकल आर्यिका की वंदामि, श्रावक-श्राविका नमन किये।
गणिनी माता ज्ञानमती ने, सब को शुभ आशीष दिए।।801।।

अचलयंत्र पर प्रतिमाओं का, स्थापन सम्पन्न हुआ।
हुआ समापन रथयात्रा से, कोई न लेश विपन्न हुआ।।
चंद्र-रवि के श्रम स्वेद से, बीज वृक्ष बन फलित हुआ।
जो भी रोड़े बनकर आये, चूर्ण हुए मद गलित हुआ।।802।।

अगर ठान ले कोई मन में, नहीं असंभव कोई काम।
नारी होकर माताजी ने, सिद्ध कर दिया कथन ललाम।।
जब तक जम्बूद्वीप धरा पर, है सुमेरु नभ को थामे।
तब तक गणिनी ज्ञानमती का, नर-सुर मिलकर यश गावें।।803।।

गुरु के बिना संसार समुद्र नहीं तर सकते

न विना यानपात्रेण तरितुं शक्यतेऽर्णवः।
नर्ते गुरूपदेशाच्च सुतरोऽयं भवार्णवः।।
बन्धवो गुरवश्चेति द्वये संप्रीतये नृणाम्।
बन्धवोऽत्रैव संप्रीत्यै गुरवोऽमुत्र चात्र च।।

जिस प्रकार जहाज के बिना समुद्र नहीं तिरा जा सकता है उसी प्रकार गुरु के उपदेश के बिना यह संसाररूपी समुद्र नहीं तिरा जा सकता है। इस संसार में भाई और पुत्र दोनों ही मनुष्यों की प्रीति के लिए होते हैं, किन्तु भाई तो इस लोक में ही प्रीति उत्पन्न करते हैं और गुरु इस लोक तथा परलोक दोनों ही लोकों में विशेषरूप से प्रीति के लिए होते हैं। अर्थात् भाई से इस लोक में ही सुख मिलता है तथा गुरु से इस भव और परभव में भी सर्वत्र सुख, कल्याण और मोक्ष मार्ग की प्राप्ति होती है। अतः सदैव गुरु के चरणों की सेवा करते रहना चाहिए।

–भगवज्जिनसेनाचार्य

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९८५

समाहित विषयवस्तु

1. **एकादश वर्ष के श्रम का फल है जम्बूद्वीप।**
2. **रंग में भंग-माताजी अस्वस्थ।**
3. **अस्वस्थता में भेदविज्ञानी चिन्तन।**
4. **देह कमजोर, पर आत्मा सबल।**
5. **अनेकानेक आयोजन-त्यागी गृह से ही आशीष।**
6. **थोड़ा स्वास्थ्य लाभ-लेखन प्रारंभ।**
7. **कमल मंदिर के निर्माण का शिलान्यास।**
8. **सर्वतोभद्र विधान की रचना।**
9. **जम्बूद्वीप विधान की रचना।**
10. **श्रुतपंचमी पर्व पर विधानों की पालकी निकाली।**
11. **सम्यग्ज्ञान शिविर का आयोजन-नरेन्द्रप्रकाश जी कुलपति रहे।**
12. **षोडश दिवसीय शांति विधान का आयोजन।**
13. **माताजी के स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना।**

काव्य पद

पंचकल्याणक महामहोत्सव, सुष्ठुतया सम्पन्न हुआ।
कार्य समाप्ति पर अतिथिजनों का, सुकृतपथ को गमन हुआ।।
वर्ष एकादश का अनथक श्रम, आज सामने आया है।
लखकर सुंदरता का सागर, हृदय कमल मुस्काया है।।804।।

जम्बूद्वीप स्वर्ग परिसर में, कुछ-कुछ कार्य रहे अवशेष।
आर्ष प्रणीत महाग्रंथों का, स्वाध्याय चल रहा विशेष।।
दे प्राथम्य उसे माताजी, हस्तिनागपुर किया प्रवास।
एक जुलाई, सन् पिच्चासी, हुआ स्थापित चातुर्मास।।805।।

शुभ कार्यों में विघ्न बहुत से, बिना बुलाये आ जाते।
किन्तु मनस्वी उन्हें देखकर, किंचित् नहीं हैं घबराते।।

उनसे डटकर युद्ध ठानते, विजय लक्ष्मी पाते हैं।
ऐसा ही प्रसंग पाठकों, तुमको एक सुनाते हैं।।806।।

गणिनी ज्ञानमती माता के, हैं व्यक्तित्व के पक्ष अनेक।
उत्तम साध्वी, श्रेष्ठ लेखिका, कवियों में कवयित्री एक।।
रचे आपने बहुविधान हैं, पूजाएँ उत्तम-उत्तम।
साहित्यसाधिका बीस शती की, सर्वश्रेष्ठ कह सकते हम।।807।।

सुखों-दुखों का आना-जाना, निश्चित रहता नियति क्रम।
दुख पहाड़ कब टूट पड़ेगा, कुछ्छ नहीं कह सकते हम।।
बीत रहा था धार्मिक जीवन, स्वाध्याय-लेखन-सुविचार।
किन्तु अचानक माताजी को, प्रतिदिन आने लगा बुखार।।808।।

व्याधि यहाँ तक बढ़ी कि छोड़ी, भक्तों ने जीवन आशा।
शांतिपाठ प्रारंभ कर दिये, जो समाधि की परिभाषा।।
किन्तु रहा पुण्योदय सबका, निदान पीलिया पर आया।
हुआ कारगर औषधि देना, माता स्वास्थ्य लाभ पाया।।809।।

तन तो अतिशय क्षीण हो गया, किन्तु आत्मा महा प्रबल।
भेदज्ञान जिनके घट जागा, मनोमेरु नहिं होता चल।।
माताजी जपती ही रहतीं, अहमिक्को खलु शुद्धोऽहं।
दंसण-णाणमयी मे आत्मा, अरस-अरूपी-बुद्धोऽहं।।810।।

मुझको मृत्यु नहीं आती है, मैं तो अमर आत्मा हूँ।
रोग-शोक से दूर सर्वदा, शुद्ध द्रव्य परमात्मा हूँ।।
बालक - वृद्ध - युवा - नर - स्त्री, यह है मेरा रूप नहीं।
ये सब पुद्गल की पर्यायें, मम स्वभाव अनुरूप नहीं।।811।।

हुए विविध धार्मिक आयोजन, या सामयिक कार्य किया।
त्यागी-गृह में ही प्रवास कर, माँ ने शुभ आशीष दिया।।
माताजी के तन में ज्यों ही, दौड़ी सूरज स्वास्थ्य किरण।
स्वाध्याय संलग्न हो गईं, करने लगीं ग्रंथ लेखन।।812।।

शिलान्यास श्री कमल जिनालय, शुभ मुहूर्त में किया गया।
महावीर जी के मंदिर को, भव्य रूप यों दिया गया।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, रचा सर्वतोभद्र विधान।
एक शतक एक पूजाएँ, दो हजार है अर्घ्य प्रमाण।।813।।

परम पूज्य श्रीमाताजी ने, विरचा जम्बूद्वीप विधान।
किन्तु पूर्णता पा न सका वह, पीड़ा कर्म असाता आन।।
स्वास्थ्य लाभ कर पूर्ण किया वह, पर्व पंचमी श्रुत अवतार।
ग्रंथ पालकी किए विराजित, पूर्ण नगर में हुआ विहार।।814।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी, विद्वज्जन् हित कल्पलता।
ज्ञानशिविर आयोजित करतीं, बनें विद्वान् ज्ञान सविता।।
नरेन्द्रप्रकाश जी फिरोजाबाद को, कुलपतित्व क सौंपा भार।
मोक्षशास्त्र सहदशधर्मों का, ग्रहण किया शिविरार्थी सार।।815।।

माताजी से प्राप्त प्रेरणा, विविधायोजन होते हैं।
आस-पास के नगरादिक भी, अति लाभान्वित होते हैं।।
माघ-फाल्गुन शुक्लपक्ष में, षोडश दिवसी शांति विधान।
हुए यहाँ पर, नगर सरधना, शिविर लगाए देने ज्ञान।।816।।

माताजी के परम भक्त हैं, मोतीचंद जी ब्रह्मचारी।
आत्मोत्थान चाहते बनकर, क्षुल्लकव्रत के आचारी।।
परम पूज्य श्री माताजी ने, स्वीकृति सह आशीष दिया।
विमलनिधि आचार्यश्री से, यथाकाल व्रत ग्रहण किया।।817।।

हे भगवन्! श्री माताजी को, सदा स्वास्थ्य का लाभ रहे।
आधि-व्याधि कोई न सताए, रत्नत्रय निराबाध रहे।।
नूतन निर्मित आयोजन से, जम्बूद्वीप करे उत्थान।
माताजी के शुभाशीष से, हम सबका होवे कल्याण।।818।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९८६-८७

समाहित विषयवस्तु

1. **पीलिया से माताजी का शरीर निर्बल हुआ।**
2. **चातुर्मास की स्थापना।**
3. **दो इन्द्रध्वज विधानों का आयोजन, माताजी को स्वास्थ्य लाभ हो।**
4. **रोगमुक्ति-स्तोत्रों का फल।**
5. **माताजी ने इन्द्रध्वज विधान सुनकर आरोग्यता प्राप्त की।**
6. **शरदपूर्णिमा को 53वां जन्मदिवस मना।**
7. **जम्बूद्वीप में आचार्य श्री विमलसागर जी का पदार्पण।**
8. **माताजी को तीर्थोद्धारक चूड़ामणि एवं विधान वाचस्पति की उपाधियाँ।**
9. **ब्र.मोतीचंद को क्षुल्लक दीक्षा।**
10. **युग प्रतिक्रमण की परम्परा प्रारंभ।**

काव्य पद

शरीर धर्म का पहला साधन, बिना न उसके काम चले।
शिथिलगात हो गईं मातश्री, हुई पीलिया मुक्ति भले।।
दो-क कदम न चल पाती थीं, शिष्या थाम चलाती थीं।
जिनको शिवमग पकड़ चलाया,इनको आज चलाती थीं।।819।।

अतः जुलाई सन् छ्यासी में, माताजी ने यथाविधि।
चातुर्मास किया स्थापित, जम्बूद्वीप, शुभलग्न-तिथि।।
माताजी की पावन सन्निधि, दो इन्द्रध्वज हुए विधान।
स्वास्थ्य लाभ हो माताजी को, महदुद्देश्य रखा यजमान।।820।।

चातुर्मास काल माताजी, किया अपूर्व ही कार्य महान्।
रहा अपूर्ण जो, पूर्ण किया वह, श्री इन्द्रध्वज महाविधान।।
रचना से माताजी तन भी, पूर्ण स्वस्थता पाया है।
इसमें है आश्चर्य कौन सा, यह तो होता आया है।।821।।

मानतुंग आचार्यश्री का, भक्तामर है काव्य अमर।
टूट गए अड़तालिस ताले, पद अड़तालिस रचने पर।।
वादिराज मुनिराजश्री का, कुष्ठ गलित था तन सारा।
कंचन जैसा दमक उठा था, एकीभाव रचना द्वारा।।822।।

तिथि सत्रह, अक्टूबर छियासी, को विधान यह पूर्ण हुआ।
माताजी के प्रमुदित मन में, उक्त भाव अवतीर्ण हुआ।।
शरदपूर्णिमा रही इसी दिन, भक्त जनों की पूरी चाह।
जन्म दिवस माँ का त्रेपनवाँ, सभी मनाया भर उत्साह।।823।।

भारत के कोने-कोने से, भक्त हजारों आये हैं।
विनयाँजलि अर्पण करने में, माता के गुण गाये हैं।।
दीर्घायू-नीरोग हों माता, सधे साधना रत्नत्रय।
सकल लोक को प्राप्त हो सके, आशीष शुभंकर अमृतमन।।824।।

चातुर्मासिक काल अनंतर, हुए यहाँ दो उत्तम कार्य।
पंचकल्याणक-क्षुल्लक दीक्षा, सम्पन्ने सन्निधि आचार्य।।
हस्तिनागपुर जम्बूद्वीप में, पधराये आचार्यश्री।
संघ सहित, श्री विमलसिन्धु जी, मोती क्षुल्लक दीक्षा दी।।825।।

माताजी ने शुभाशीष में, कहा कि मैं लायी मोती।
किन्तु आज ये सागर बनकर, दीक्षा वृद्धिकरी होती।।
पंचकल्याणक-दीक्षानंतर, गमन किया आचार्य विमल।
किन्तु रहे मोतीसागर जी, माताजी के चरण कमल।।826।।

युग प्रतिक्रमण की परम्परा, शुरू हो माँ की इच्छा थी।
विमलसिंधु आचार्य श्री ने, मनोकामना पूरी की।।
विमल-ज्ञान निजसंघ चतुर्विध, बैठ युग प्रतिक्रमण किया।
किया जाए प्रति पाँच वर्ष में, आचार्यश्री आदेश दिया।।827।।

इस महान् मंगल अवसर पर, माताजी गुणगान किया।
तीर्थोद्धारक चूड़ामणि यह, आचार्यश्री ने नाम दिया।।
माताजी की रचनाएँ हैं, बहु विधान पूजादि अनेक।
विमल सिंधु आचार्यश्री तब, हुए हर्षित कृतियों को देख।।828।।

आशीष सहित आचार्यश्री ने, दी उपाधि वाचस्पति विधान।
माताजी ने किया नमोऽस्तु, गुरुवर करें सदा कल्याण।।
ध्यान केन्द्र शिलान्यास इस समय, आचार्य सन्निधि किया गया।
ह्रीं ध्यान है प्रिय माताजी, ध्यान उसी पर दिया गया।।829।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९८७

समाहित विषयवस्तु

1. **इन्द्रध्वज विधान एवं चातुर्मास की स्थापना।**
2. **छहढाला का अध्यापन।**
3. **माताजी ने अनेक रचनाएँ लिखीं।**
4. **माताजी की आत्मकथा-मेरी स्मृतियाँ, एक उत्तमग्रंथ।**
5. **क्षुल्लक श्री मोतीसागर को पीठाधीश बनाया।**
6. **अनेक विधानों के आयोजन।**
7. **भगवान ऋषभदेव का जन्मजयंती महोत्सव मनाया गया।**
8. **माताजी ने जैनधर्म की प्राचीनता सिद्ध की।**
9. **दर्शनार्थी अंडा-माँस त्यागव्रत लेकर जाते।**
10. **अक्षय तृतीया पर विशेष उत्सव का आयोजन।**
11. **आचार्यकल्प श्रुतसागर जी को श्रद्धांजलि।**
12. **मुनि दर्शनसागर जी को धर्मकेसरी की उपाधि।**
13. **अनेक लोग माताजी की प्रेरणा से संयमी बने।**

काव्य पद

दश जुलाई उन्नीस सतासी, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी।
चातुर्मास किया स्थापित, जम्बूद्वीप श्री माताजी।।
इसके पूर्व त्रिमूर्ति जिनालय, हुए इन्द्रध्वज युगल विधान।
कमल देहली, हीरामणि जी, महमूदाबाद रहीं यजमान।।830।।

पंडित प्रवर श्री दौलतराम का, छहढाला सुग्रन्थ महान।
हुआ अध्यापित सुष्ठुरीति से, मिला सभी को तत्त्वज्ञान।।
छहढाला को हम हिन्दी का, समयसार कह सकते हैं।
शुरू करे तो, पूर्ण किए बिन, हम कैसे रह सकते है।।831।।

वर्ष सतासी चतुर्मास में, किए माताजी कार्य अनेक।
कल्याण कल्पतरु स्तोत्र संस्कृत, माताजी की रचना एक।।
की सुन्दर स्तुति माताजी, भावपूर्ण जिनवर चौबीस।
उसका अन्वय अर्थ किया माँ, हिन्दी भाषा मास्टर पीस।।832।।

पूज्यपाद आचार्यश्री रचित, संस्कृत पंचामृत अभिषेक।
हिन्दी पद्य अनुवाद किया माँ, भक्तजनों की सुविधा देख।।
सकलीकरण-हवन आदि विधि, पद्य अनुवाद किया माँ श्री।
मण्डल विधान की संज्ञा देकर, उसे शक्ल पुस्तक की दी।।833।।

नेमिनाथ वैराग्य नाम से, माँ श्री इक उपन्यास लिखा।
मेरी स्मृतियाँ के नाम से, लिखती जातीं आत्मकथा।।
माताजी के चिन्तन आया, साधूजीवन के छह काल।
तीन काल तो पूर्ण हो चुके, अगले त्रय की करें सँभाल।।834।।

आत्मकथा श्री माताजी की, है अति उत्तम संत चरित्र।
स्वाध्याय से मिलते हमको, सम्यक्दर्शन-चरण पवित्र।।
तीर्थ यात्रा साधु समागम, स्तुति-नीति-शास्त्र का ज्ञान।
पा जाते हैं एक जगह सब, जो पढ़ते यह आत्मख्यान।।835।।

आतमहित के कार्य ही करना, माता का बस कार्य रहा।
पीठाधीश बना, क्षुल्लक जी, उन पर सारा भार रखा।।
त्रिलोक शोध संस्थान ओर से, दशलक्षण भेजे विद्वान्।
गुजरात प्रांत में की प्रभावना, प्रवचन-पूजन-विविध विधान।।836।।

शरद पूर्णिमा के आने पर, गया मनाया जन्म सु-दिन।
आज न केवल तन पाया माँ, ब्रह्मचर्य भी आजीवन।।
सन् बावन बाराबंकी में, माताश्री आज के दिन।
सप्तम प्रतिमा धारण की थी, श्री आचार्य देशभूषण।।837।।

जम्बूद्वीप मंडल विधान का, श्रीमाताजी किया प्रणयन।
जम्बूद्वीप रचना सम्मुख ही, हुआ विधान का आयोजन।।
एक सहस्र अर्घ्य जयमाला, हुए समर्पित थे श्रीफल।
न भूतो, न भविष्यति ऐसा, यह आयोजन रहा सफल।।838।।

चातुर्मासिक सकल काल में, स्वाध्याय क्रम चलता था।
तत्पश्चात् रहा क्रम जारी, लाभ यात्रिगण मिलता था।।
कल्पद्रुम मंडल विधान माँ, सन् छ्यासी में रचना की।
छोटी सा ने किया प्रकाशित, रचवाया भी उनने ही।।839।।

छोटी सा सह पाँच श्रेष्ठिगण, चक्रवर्ति का पद पाया।
बना माँडना अतिशय सुंदर, पुनः दृष्टि में नहिं आया।।
दान चतुर्विध अष्टदिवस तक, दिया गया विधि के अनुसार।
अति आनंद विभोर भक्तगण, पुनः पुनः करते जयकार।।840।।

चैत्र वदी नौ, प्रथम तीर्थंकर, ऋषभनाथ का जन्म दिवस।
गया मनाया जम्बूद्वीप में, समझाने सच जनमानस।।
महावीर जी संस्थापक हैं, जैनधर्म यह भ्रान्त कथन।
तेईस तीर्थंकर उनसे पहले, किया धर्म का उद्घाटन।।841।।

माताजी से पूर्व किसी ने, किया न इस हित ठोस प्रयास।
अतः आज तक छपा जा रहा, जैन धर्म गलत इतिहास।।
प्रथम बार श्रीमाताजी ने, बीड़ा सुदृढ़ उठाया है।
बुलवाकर कुलपति सम्मेलन, त्रुटि को ठीक कराया है।।842।।

जम्बूद्वीप धर्मस्थल-सह, सौन्दर्य का धाम ललाम।
जैनाजैन सभी आते हैं, करते दर्शन तीर्थ प्रणाम।।
माँश्री हो उपदेश प्रभावित, करते अंडा-आमिष त्याग।
ॐ नमः मंत्र ले जाते, सुःख शांति पाते बड़भाग।।843।।

ऋषभदेव की प्रथम पारणा, गजपुर में सम्पन्न हुई।
इस निमित्त से अक्षय तृतिया, पर्वरूप में पूज्य हुई।।
जैन समाज श्वेताम्बर इसको, वर्षीतपा मानते हैं।
महावृहत् भरता है मेला, भक्त हजारों आते हैं।।844।।

माताजी की रही भाावना, अपनाएँ इसे दिगम्बर भी ।
किन्तु भावना हुई न पूरी, अति प्रयास करने पर भी।।
तदपि पूज्य माताजी इसको, सह उत्साह मनाती हैं।
करें प्रभावना रथयात्रा से, इक्षूरस बँटवाती हैं।।845।।

आचार्यकल्प श्रुतसागरजी का, हुआ लूणकं समाधिमरण।
माताजी ने किया यहाँ पर, श्रद्धांजलि का आयोजन।।
समयसार की टीकारूप में, जय-अमृतकृत आशीर्वाद।
माताजी ने किया है उनका, हिन्दी में सुंदर अनुवाद।।846।।

हस्तिनागपुर में पधराये, दर्शननिधि आचार्यश्री।
शिविर कानजी लग ना पाया, धर्म प्रभावना की महती।।
धर्म हेतु उनकी निर्भयता, की प्रेरणा माता ने।
धर्म केसरी की उपाधि से, किया अलंकृत जनता ने।।847।।

विद्यापीठ वीर निधि संस्कृत, विद्यार्थी कमलेश कुमार।
माताजी के चरण कमल में, आजन्म लिया ब्रह्मव्रत धार।।
ब्रह्मचारी सुरेश कोटड़िया, बंडावासी श्री सुभाष।
मुनिदीक्षा ली, सुन माताजी, प्रमुदित, पूरी मन की आस।।848।।

योगिराज श्री फूलचंद जी, नगर छतरपुरवासी हैं।
प्राणायाम-सह योगशास्त्र में, निपुण सतत अभ्यासी हैं।।
माताजी के शुभाशीष से, शिविरायोजन आते हैं।
प्राणायाम सिखाकर सबको, स्वास्थ्य लाभ दे जाते हैं।।849।।

पुण्य की महिमा

श्रेयः श्रेय-निबन्धनोऽसुखहरः श्रेयं श्रयन्त्युत्तमाः।
श्रेयेनात्र च लभ्यतेऽखिल सुखं श्रेयाय शुद्धा क्रियाः।।
श्रेयाच्छ्रेयकरोऽपरो न च महान् श्रेयस्य मूलं सुदृक्।
श्रेये यत्नमनारतं बुधजनाः कुर्वन्तु दृक् चिद्व्रतैः।।

श्रेय– पुण्य, श्रेय– कल्याण को प्राप्त कराने वाला और दुःखों को हरने वाला है इसलिए सज्जन पुरुष पुण्य का आश्रय लेते हैं। पुण्य से ही सम्पूर्ण सुखों की प्राप्ति की है अतः पुण्य अर्जन के लिए शुद्ध क्रियाएं करना चाहिए। पुण्य से अधिक कल्याणकारी और कोई महान् नहीं है। पुण्य की जड़ सम्यग्दर्शन है। इसलिए बुद्धिमानों को रत्नत्रय धर्म के द्वारा पुण्य के अर्जन में अनवरत प्रयत्न करना चाहिए।

यहाँ पर इस लोक में आचार्यदेव ने 'श्रेय' शब्द में षट्कारक घटित किये। इस श्रेय का अर्थ पुण्य भी होता है और कल्याण भी होता है। अतः श्रेय अर्थात् पुण्य श्रेय अर्थात् कल्याण की, सुख की प्राप्ति होती है, ऐसा समझना।

–श्री सकलकीर्ति आचार्य-सिद्धांतसार दीपक

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९८८

समाहित विषयवस्तु

1. **चातुर्मास की स्थापना।**
2. **अनेक कार्यक्रमों का आयोजन।**
3. **कल्पद्रुम महा विधान सम्पन्न।**
4. **विधानों का आयोजन जम्बूद्वीप में ही क्यों?**
5. **सर्वतोभद्र विधान का आयोजन।**
6. **कुंदकुंद मणिमाला की रचना।**
7. **आचार्य कुन्थुसागर संघ का प्रवास।**
8. **त्रैलोक्यविधान का आयोजन।**
9. **जम्बूद्वीप आदि विधान भी आयोजित।**

काव्य पद

समय का पंछी उड़ता जाता, रुकता कभी न एकहि ठौर।
ग्रीषम ऋतु के जाते-जाते, आ जाता वर्षा का दौर।।
साधु-साध्वी पंथ न चलते, धर्म पालते रह इक थान।
जीवों की रक्षा करना ही, परम धर्म कहते भगवान।।850।।

पूरा अंचल उमड़ के आया, माताजी के चरण शरण।
चातुर्मास अठासी सन् का, हो गजपुर ही स्थापन।।
करुणा कलित हृदय माता का, सब पूर्वापर किया विचार।
बात हृदय की हृदय समझता, कहा हृदय ने है स्वीकार।।851।।

विधान वाचस्पति-गणिनी-माँश्री, ज्ञानमती जी पा सन्निधान।
चातुर्मास हुए आयोजित, लघु-बृहत् अनगिनत विधान।।
पर्वराज आया पर्यूषण, माताजी उपकार किया।
मोक्षशास्त्र-दशधर्मांगों पर, पूज्या श्री उपदेश दिया।।852।।

माह अक्टूबर अट्ठयासी में, हुआ कल्पद्रुम महाविधान।
चक्रवर्ति पहाड़े बांटा, चार प्रकार किमिच्छिक दान।।

श्रवणबेलगुल के भट्टारक, चारुकीर्ति जी देखा तब।
हुए प्रभावित, कर्नाटक में, करवाया जाकर के सब।।853।।

क्षेत्र पुरातन हस्तिनागपुर, बड़ा जिनालय अधिक समीप।
उसे छोड़ क्यों आते श्रावक, विधान कराने जम्बूद्वीप।।
उत्तर में स्पष्ट बता दूँ, सन्निधान रहता है माँ।
विधि-विधान, जीवन्त तीर्थ का, मिल जाता आशीष यहाँ।।854।।

पर्व अठाई के आने पर, हुआ सर्वतोभद्र विधान।
शत-अठ जयमालाएँ लिखकर, माँ श्री किया जिनेन्द्र गुणगान।।
तेरह-बीस समन्वय लखकर, सुमति सिन्धु हर्षित बोले।
ज्ञानमती का कार्य श्रेष्ठ है, नहिं विद्वेष पंथ को ले।।855।।

कुंदकुंद के ज्ञान सिंधु से, माताजी नवनीत समान।
निःचय व्यवहार समन्वयकारी, लीं गाथा शत-आठ प्रमाण।।
कुंदकुंद मणिमाला नामक, हुआ प्रकाशित ग्रंथ ललाम।
हिन्दी-अर्थ भावार्थ किया माँ, हित जिज्ञासू सुंदर काम।।856।।

आचार्यश्री कुन्थुसागर संघ, गजपुर रहा चालीसक दिन।
माताजी ने साधुजनों को, किया अध्यापित हर्षित मन।।
प्रकाशचंद टिकैतनगर ने, यहाँ आ किया त्रैलोक्य विधान।
माताजी के प्रवचनामृत से, पाया सबने उत्तम ज्ञान।।857।।

ताराचंद नरपत्या ने भी, जम्बूद्वीप यह किया विधान।
जम्बूद्वीप महोत्सव नब्बे, की बैठक इस दिन इस थान।।
तभी घोषणा की माताजी, सुन लें सभी एक चित हो।
कुमारी माधुरी दीक्षा लेंगी, तेरह अगस्त नवासी को।।858।।

परम पूज्य श्री माताजी का, सुष्ठु बीता चातुर्मास।
मुनिसंघ के दर्शन सह ही, सबने पाया ज्ञानप्रकाश।।
माताजी के प्रवचन हमको, देते हैं उत्तम शिक्षा।
देखें, चलें सजे मण्डप में, ले रहीं माधुरी जी दीक्षा।।859।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९८९

समाहित विषयवस्तु

1. चातुर्मास की स्थापना।
2. कु. माधुरी द्वारा दीक्षा हेतु निवेदन।
3. आर्यिका दीक्षा पूर्व की क्रियाएँ प्रारंभ।
4. माताजी द्वारा दीक्षा के संस्कार।
5. आर्यिका चंदनामती नाम की जय-जयकार।
6. दीक्षा मोक्ष की ओर कदम।
7. आर्यिका चंदनामती का परिचय।
8. आज ही ब्र.श्यामाबाई क्षुल्लिका हुईं।
9. शरद पूर्णिमा-माताजी का जन्म दिवस।
10. त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन।
11. चातुर्मास समापन एवं विहार।
12. विहार काल में संत समागम।
13. मुनि कनकनंदी आदि संघ को बड़ौत में अष्टसहस्री पढ़ाई।
14. हस्तिनापुर वापसी।
15. श्रुताभ्यास पुनः प्रारंभ।
16. माताजी द्वारा तप आराधना।
17. सन् 1989 में अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए।

काव्य पद

पुण्यपुंज बिन संत न मिलते, संत बिना कल्याण नहीं।
संत रहे धरती के सूरज, वे रुकते इक ठौर नहीं।।
वर्षावास निकट जब आया, जनता दौड़ी माँ के पास।
हे पूज्याश्री जम्बूद्वीप ही, करें नवासी चातुर्मास।।860।।

भक्तों के वश में हैं भगवन, यद्यपि कथन पुराना है।
पर चरितार्थ हो रहा अब तक, आया नया जमाना है।।
जल बरसा पर्जन्य पूरते, जिस प्रकार चातक की आस।
बस वैसे ही माताजी ने, किया गजपुर में चातुर्मास।।861।।

आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशि तिथि को, हुआ स्थापित चातुर्मास।
माताजी के जयकारों से, गूँज उठे धरती-आकाश।।
उस ही काल माधुरी जी ने, भाव विशुद्धि बढ़ा करके।
जिनदीक्षा हित किया निवेदन, श्रीफल चरण चढ़ाकर के।।862।।

हे पूज्याश्री! यह जग मुझको, बिल्कुल नहीं सुहाता है।
भव-तन-भोग-विरक्त हुआ मन, गीत विरागी गाता है।।
इस तन का उपयोग यही है, भवसागर को पार करें।
अतः आर्यिका दीक्षा देकर, माँ मेरा उद्धार करें।।863।।

औरस भगिनी श्री माधुरी, माताजी उपकार किया।
बाल ब्रह्मचारिणी जी को, दीक्षा देना स्वीकार किया।।
हर्ष लहर की दौड़ी सब में, किया सभी ने अनुमोदन।
होने लगे संस्कार पूर्व के, सम्मान बिनौरी आयोजन।।864।।

तेरह अगस्त नवासी के दिन, जम्बूद्वीप सजा चहुँ ओर।
उमड़ा जन सैलाब अपरिमित, जिसका कोई ओर न छोर।।
कारण आज महोत्सव दीक्षा, का आयोजन होना है।
मोहमल्ल को नारी हाथों, आज पराजित होना है।।865।।

बने बृहत् पाण्डाल बीच में, शोभित मंच निराला है।
स्वास्तिक बने चौक पाटे पर, बैठी सुंदर बाला है।।
ये हैं माधुरी ब्रह्मचर्य व्रत, बाल्यकाल से धारे हैं।
इनके माता ज्ञानमती ने, सारे बाल उखारे हैं।।866।।

पाप - कषाएँ - विषयवासना, ममता - मोह सभी हारे।
अब न लौटकर के आयेंगे, कहकर भागे बेचारे।।
इधर किए गणिनी माता ने, मधुर आर्यिका के संस्कार।
उधर दर्शकों के नयनों से, बह निकली असुवन की धार।।867।।

किन्तु माधुरी के चेहरे पर, लगे झलकने स्वच्छ विचार।
भीतर का आनंद प्रकट हो, मुखछवि छाया हर्ष अपार।।
अष्टाविंशति मूलगुणों का, माताजी संस्कार किया।
पिच्छी-शास्त्र-कमण्डलु देकर, दो साड़ी परिधान दिया।।868।।

नाम चन्दनामती आर्यिका, ज्यों माँश्री उद्घोष किया।
त्यों ही दश सहस्र जनता ने, दुहरा कर जय घोष किया।।
माताजी ने इस अवसर पर, दिया बहुत मार्मिक प्रवचन।
श्री माधुरी दीक्षा लेकर, पाया साध्वी नया जनम।।869।।

मोक्ष परमपद को पाने का, दीक्षा लेना श्रेष्ठ कदम।
मनुष जनम की सब से उत्तम, सार्थकता कह सकते हम।।
एक जन्म की नहीं कमाई, कई जन्म साधना फल।
देव नमन करते चरणों में, जहाँ धर्म बसता प्रतिपल।।870।।

चंदनामती आर्यिका जी ने, जगमाता का रूप लिया।
समुपस्थित समुदाय सकल ने, शत-शत सविनय नमन किया।।
पूर्व प्राप्त संस्कार मातुश्री, दीक्षा से दृढ़ता को पा।
ज्ञान-ध्यान-तप-हुईं अग्रणी, अत्युत्तम साहित्य रचा।।871।।

पूजन-भजन-आरती माता, रचे किया चेतन का भोग।
विधान कराये मधुर कंठ से, प्रवचन दिये चतुः अनुयोग।।
इन्द्रध्वज विधान सम्पन्ना, दशलक्षण जब आया पर्व।
लाभ उठाया तन-मन धन से, नगराये[1] अभ्यागत सर्व।।872।।

दशलक्षण पर्वाधिराज में, प्रातः-दोपहर-रात्रि समय।
रहा बरसता धर्म का अमृत, वातावरण रहा सुखमय।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, शुभ छप्पनवाँ जन्म दिवस।
सोत्साह अति गया मनाया, शरदपूर्णिमा चन्द्र दिवस।।873।।

दिवस आज ही ब्रह्मचारिणी, श्यामाबाई टिकैतनगर।
हुईं क्षुल्लिका पद पर दीक्षित, श्रद्धामती नाम को धर।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, दीक्षा दे उपकार किया।
श्यामाबाई दीक्षा लेकर, यह मानवतन सफल किया।।874।।

हुई आयोजित अक्टूबर में, तीन दिवस संगोष्ठी है।
विधि-प्रतिष्ठा-ज्ञान कराने, रही महत् उपयोगी है।।
किया सम्बोधित माताजी ने, अत्युपयोगी ज्ञान दिया।
कार्य सफल होगा निश्चित ही, यदि आचार उतार लिया।।875।।

1. विभिन्न नगरों से आए।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशि आयी, हुआ समापन वर्षायोग।
विहार काल में पाया उत्तम, संत-समागम का संयोग।।
मिले मवाना में नवकारी, आचार्यश्री कल्याण निधि।
उपाध्याय ज्ञाननिधि दर्शन, किये बिनौली यथानिधि।।।876।।

बड़ौत नगर में कुंथनिधि के, दर्शन का शुभयोग रहा।
करें ज्ञान का दान संघ को, कनकनंदि मुनिराज कहा।।
तब मातुश्री अष्टसहस्री, ग्रंथ पढ़ाया पूरे संघ।
बड़ौत नगर में विधान काल में, मातृ आगमन रहा प्रसंग।।877।।

मोदीनगर, नगर मेरठ फिर, माताजी का हुआ विहार।
चर्चा-चर्या दोनों द्वारा, सकल समाज दिए संस्कार।।
नगर-गाँव में माताजी के, हुए नित्य मंगल प्रवचन।
कर विहार गजपुर पधराईं, बाईस फरवरी नब्बे सन्।।878।।

चलते चरण रुके हथनापुर, हुए व्यवस्थित कार्य सकल।
सामूहिक स्वाध्याय के कारण, मिला ज्ञान का अमृत फल।।
जगकल्याणी माताजी का, लेखन पुनरारम्भ हुआ।
महामहोत्सव जम्बूद्वीप का, क्रमशः कार्यारंभ हुआ।।879।।

महाव्रतों को जो भी पालें, महापुरुष वे हो जाते।
अथवा महाव्रतों का पालन, महापुरुष ही कर पाते।।
हाथी योग्य भार को केवल, हाथी ही ढो सकता है।
केसरिणी का दुग्ध सुरक्षित, स्वर्णपात्र रह सकता है।।880।।

परम पूज्य माँ ज्ञानमती ने, महाव्रतों को धारण कर।
नारी-जन को मोक्षमार्ग का, खोल दिया द्वार हितकर।।
निरतिचार दृढ़ता लाने को, अन्यानेक तपों को आप।
धारण-पालन करती रहतीं, बिना ख्याति-लाभ चुपचाप।।881।।

माताजी का तन कोमल है, रुग्ण-जीर्णता वाला है।
किन्तु आत्मा पूज्याश्री का, अतिशायी बल वाला है।।
जीर्ण-रुग्ण तन तप में बाधक, हो सकता है कभी नहीं।
गर साधक के आतमबल में, होती कोई कमी नहीं।।882।।

किए कौन से व्रत माताजी, है उनका विस्तृत आकाश।
किन्तु यहाँ पर सब का वर्णन, करने का है नहिं अवकाश।।
अतः कथा संक्षेप ही पढ़ें, किए अन्न-रस आदिक त्याग।
धन्य-धन्य माताजी तुमने, व्रत पाले स्व-शक्ति बड़भाग।।883।।

कई वर्षों तक माताजी ने, एक अन्न ही ग्रहण किया।
केवल चावल के ही द्वारा, चर्या व्रत निर्वहन किया।।
वर्षों बाद अन्न दो लेकर, रहा सकल अन्नों का त्याग।
अब भी उसी नियम का पालन, माँ करतें अतिशय अनुराग।।884।।

गुरुवर वीर समाधि अनन्तर, जिनेन्द्रदेव की साक्षि रही।
रस परित्याग किये माताजी, गुड़-शर्करा-तेल-दही।।
तीस बरस तक पूज्याश्री के, रहा नमक रस का परित्याग।
वर्तमान में दो अनाज-रस, शेष सभी का माँ के त्याग।।885।।

सन् उन्नीस नवासी भीतर, कई कार्य सम्पन्न हुए।
नयाध्यक्ष मेयर सम्मेलन, शिविर प्रशिक्षण आदि हुए।।
श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक, अद्भुत छटा बिखेरी है।
माताजी ने युद्धभूमि पर, धार्मिक तस्वीर उकेरी है।।886।।

स्मृति ग्रंथ आचार्य वीरनिधि, अष्टसहस्री समय का सार।
हुए विमोचित पंचकल्याणक, माँ मन आया हर्ष अपार।।
आचार्यश्री शांतिसागर की, परम्परा के पट्टाचार्य।
हुए प्रतिष्ठित पंचमपद पर, निधि श्रेयांस कल्प आचार्य।।887।।

यह उन्नीस-नवासी का सन्, रहा अधिक महिमाशाली।
पंचकल्याण-आर्यिकादीक्षा, हुए कार्य गौरवशाली।।
आप बताएँ इसके पीछे, किसका है मंगल आशीष।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, श्रद्धासहित नमाते शीश।।888।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९९०

समाहित विषयवस्तु

1. **समाज द्वारा निवेदन-चातुर्मास स्थापना।**
2. **कार्यक्रमों की झड़ी प्रारंभ।**
3. **आचार्य शांतिसागर जयंति, वीर शासन जयंति, भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण कल्याणक मनाये गये।**
4. **पर्यूषण पर्व में कार्यक्रम।**
5. **आचार्य शांतिसागर पुण्यतिथि।**
6. **शरद पूर्णिमा-माताजी का जन्मदिवस।**
7. **वीरनिर्वाण महोत्सव।**
8. **आचार्य श्रेयांससागर जन्मजयंति।**
9. **रत्नमती माताजी की पुण्यतिथि।**
10. **पावनश्री एवं पवित्रश्री माताजी को अध्यापन।**
11. **उपाध्याय ज्ञानसागर जी से धार्मिक चर्चाएँ।**
12. **चातुर्मास समापन-माताजी का सरधना गमन।**
13. **जहाँ संत, वहाँ बसंत।**

काव्य पद

धीरे-धीरे कदम बढ़ाता, समय जुलाई तक आया।
बादल नभ में लगे दौड़ने, भक्तजनों के मन भाया।।
चातुर्मास मिलेगा माँ का, धर्मामृत का करने पान।
दर्शन-ज्ञान-चरित गंगा में, करेंगे सब मिलकर स्नान।।889।।

जिसने पान किया पायस का, मन भरता अन्यत्र नहीं।
पिक वाणी के श्रोता होते, वायस से सन्तुष्ट नहीं।।
अतः सभी ने एक साथ मिल, माँ के चरण किया नत शीश।
सन् नब्बे के चतुर्मास का, हमें चाहिए शुभ आशीष।।890।।

अंजलि बाँधे खड़े जनों की, माताजी ने पूरी आश।
छह जुलाई को जम्बूद्वीप में, किया स्थापित चातुर्मास।।

दृढ़ प्रतिज्ञ सबने मिल करके, शुभ अवसर का लाभ लिया।
पूजन-प्रवचन-व्रत-विधान में, बढ़-चढ़ करके भाग लिया।।891।।

चातुर्मास स्थापित होते, कार्यक्रमों की लगी झड़ी।
वीरनिधि की जन्मजयंति, से आरम्भित हुई कड़ी।।
श्रावण कृष्णा एकम् तिथि को, शासन वीर जयंति मनी।
दिवस आज ही, वीर प्रभू की, खिरी थी मंगल दिव्य ध्वनि।।892।।

श्रावण शुक्ला तिथि सप्तमी, पारसनाथ गये निर्वाण।
माता सन्निधि गया मनाया, सह-उत्साह मोक्ष कल्याण।।
ज्ञान-ध्यान-तपलीन मातुश्री, के होते मंगल प्रवचन।
दिन-प्रसंग एवं महत्त्व को, आत्मसात् कर लेते जन।।893।।

पर्वराज पर्यूषण आया, लेकर दस रत्नों का हार।
माताजी ने प्रवचन द्वारा, किया महज्जनता उपकार।।
पूजन-विधान-आरती-प्रवचन, गायन-नर्तन-प्रश्न-भजन।
चलते रहे दशों दिन अविरल, कर द्वादश संयम पालन।।894।।

श्री आचार्य शांतिसागर जी, थे इस युग के महायति।
भादों शुक्ला दोज तिथि को, गयी मनाई पुण्यतिथि।।
शरद पूर्णिमा के आने पर, गया मनाया जन्म दिवस।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, बस सादा ही, कारणवश।।895।।

पूज्य आर्यिका श्रीचंदना, की मंगल आशीष कमान।
नगर सरधना गया रचाया, श्री कल्पद्रुम महाविधान।।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या तिथि, पर्व दिवाली आया है।
मोदक अर्पण, दीप जलाकर, सादर गया मनाया है।।896।।

पंचम पट्टाचार्य श्रेयनिधि, जन्म जयंति बहत्तरवीं।
गई मनाई माता सन्निधि, सब विनयांजलि अर्पित की।।
कृष्णा माघ तिथी नवमी को, रत्नमती माताजी की।
श्रद्धाञ्जलि सह गई मनाई, सादर छठवीं पुण्यतिथि।।897।।

पावनश्री जी पवित्रश्री जी, दो माताएँ रहीं यहाँ।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती से, बहु ज्ञानार्जन किया यहाँ।।

उपाध्याय श्री ज्ञाननिधि जी, लघु विद्यानिधि पधराये।
धार्मिक चर्चा की माताजी, यथा-यथा अवसर आये।।898।।

जैसे बालक बूढ़ा होकर, आगे को बढ़ जाता है।
वैसे कालपुरुष नब्बे भी, शीघ्र पूर्णता पाता है।।
चलते-चलते समय आ गया, माह जुलाई वर्षावास।
नगर सरधना लालायित था, मिले मातुश्री चार्तुमास।।899।।

आये बहुजन श्रीफल लेकर, किया निवेदन बारम्बार।
हे पूज्याश्री! हे माताजी! हम पर कृपा करें इस बार।।
हम चातक हैं, मेघ आप हैं, हमको बूँद-बूँद की प्यास।
अतः हमें दें हे माताजी, सन् इक्यानवे चार्तुमास।।900।।

पूर्वापर सब चिन्तन करके, माँ पहुँचीं निर्णय के पार।
जहाँ प्यास हो, वहीं बरसना, अतः निवेदन है स्वीकार।।
सन् इक्यानवै, माह जुलाई, तिथि तेरह को किया गमन।
क्रम-क्रम चलते, बीस जुलाई, हुआ सरधना शुभागमन।।901।।

जंगल में मंगल हो जाता, पुण्यवान जहाँ रहते जन।
उनके बिन फीके लगते हैं, स्वर्गों के भी नंदनवन।।
गजपुर, अब रजपुर लगता है, माताजी का हुआ गमन।
नगर सरधना का हर कोना, माँ पद-रज से हुआ चमन।।902।।

सरधना चातुर्मास-सन् १९९१

समाहित विषयवस्तु

1. माताजी की अगवानी में सरधना की सजावट।
2. संघ सहित चातुर्मास की स्थापना।
3. सबने सब कुछ पाया।
4. अनेक उत्सव का आयोजन।
5. श्रोताओं और पूजकों की आशातीतवृद्धि।
6. महिला मंडल की स्थापना।
7. आर्यिका चंदनामती का दीक्षादिवस आदि।
8. पंद्रह अगस्त पर माताजी के प्रवचन।
9. शिक्षण शिविर का आयोजन।
10. माताजी की कृतियों का विमोचन।
11. ब्र.रवीन्द्र कुमार युवापरिषद के अध्यक्ष।
12. चातुर्मास की निष्ठापना-विहार।
13. सलावा-मवाना-हस्तिनापुर।
14. वार्षिक रथयात्रा।
15. माताजी की दैनिक चर्या।
16. उ.प्र. मुख्यमंत्री कल्याणसिंह ने माताजी से आशीर्वाद लिया।
17. कल्याणसिंह द्वारा माताजी के कार्यों की प्रशंसा।
18. सरल संघ का सबको शुभाशीष।

काव्य पद

नगर सरधना खुशियाँ छाईं, यथा रंक को निधि मिली।
तोरण-वंदनवार-अल्पना, हुई अलंकृत गली-गली।।
पद प्रक्षालन करन आरती, की जनता में होड़ लगी।
माताजी के जयकारों से, हो गई नगरी जगी-जगी।।903।।

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, पच्चीस जुलाई आयी है।
आबाल-वृद्ध सबही के मन को, हार्दिकता से भाई है।।

चातुर्मास हुआ स्थापित, ज्ञानमती जी संघ सहित।
साथ चंदनामती आर्यिका, क्षुल्लक मोतीनिधि सहित।।904।।

माताजी के शुभागमन से, हर चेहरा मुस्काया है।
जैन समाज जागृति आई, नगर ने सब कुछ पाया है।।
बालक गण संस्कार मिले हैं, युवकों पाया पूजा दान।
वृद्धों ने माता से पाया, वात्सल्य भावना का वरदान।।905।।

माताजी के सन्निधान में, हुए महोत्सव नये-नये।
गुरूपूर्णिमा - वीरजयंती - पार्श्वनाथ निर्वाण गये।।
प्रतिदिन पूजन-प्रवचन होते, संख्या बढ़ती जाती है।
पहले पूजक मिलें न खोजे, अब जगह न मिलने पाती है।।906।।

महिला मंडल हुआ स्थापित, सात दिवस तक सात विधान।
दीक्षादिवस चंदनामाता, दिवस स्वतंत्रता पर्व महान्।।
पंद्रह अगस्त, रक्षाबंधन पर, इनके प्रवचन स्मरणीय।
एक राष्ट्र की याद दिलाता, धर्मात्मा रक्षा करणीय।।907।।

विश्वशांति संभव है केवल, धर्म अहिंसा के द्वारा।
जैनेतर वक्ताओं ने भी, इसी सत्य को स्वीकारा।।
सर्वतोभद्र मंडल विधान का, हुआ महत्तम आयोजन।
अशोककुमार जी साहू आये, लेने को आशीष वचन।।908।।

शिक्षण-शिविर हुआ आयोजित, ज्ञानार्जन सबने पाया।
माताजी ने प्रवचन द्वारा, रहस्य धर्म का समझाया।।
धर्म वही जो प्राणिमात्र को, दुख से सुख में पहुँचाये।
करो वही व्यवहार अन्य से, जो कि आपको भी भाये।।909।।

शरद पूर्णिमा के आने पर, माताजी का जन्म दिवस।
गया मनाया भक्ति-भाव से, विनयांजलि माँ गाया यश।।
बीस सदी की बालसती माँ, साध्वी शृंखला उच्च शिखर।
किए महत्तम कार्य बहुत से, जिन्हें नहीं कर पाये नर।।910।।

पुण्य लेखिनी माताजी की, नहिं रुकने का लेती नाम।
मुख्यमंत्री से हुई विमोचित, मुनिचर्या है कृति का नाम।।

बालब्रह्मचारी रवीन्द्र जी, हुए युवा परिषद अध्यक्ष।
मनोज कुमार महामंत्री पद, चयनित हुए सकल प्रत्यक्ष।।911।।

नगर सरधना का हर कोना, हुआ धर्म से ओतप्रोत।
लश्कर गंज-गाँधी कालोनी, सब में बहे धर्म के स्त्रोत।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
संघ सहित श्रीमाताजी का, हस्तिनागपुर हुआ गमन।।912।।

नगर सरधना के वासी सब, अश्रुविमोचित किए घने।
रहेंगे कैसे बिन माता के, दिल मसोस लगे कहने।।
हे माताजी! पुनः पधारें, दर्शन दें वात्सल्य मिले।
किन्तु विरागी साधु संघ के, कदम सलावा ओर चले।।913।।

नगर सलावा के जन-जन ने, किया संघ का अभिनंदन।
पद प्रक्षालन, करन आरती, पुनः-पुनः सविनय वंदन।।
माताजी ने सभी जनों को, प्रवचन सह वात्सल्य दिया।
तीन दिवस में तीन साल-सा, धर्म का अमृत पिला दिया।।914।।

नगर सलावा को सरसा कर, संघ महलका पधराया।
धर्म अहिंसा पाठ पढ़ा कर, नगर मवाना में आया।।
माताजी का पुण्ययोग का, हुआ सभी को हर्ष अपार।
हार्दिक स्वागत किया संघ का, करी आरती बारम्बार।।915।।

अल्प प्रवास मवाना में कर, हस्तिनागपुर आया संघ।
विविध वाद्य संगीत स्वरों से, हुआ सौर मिल सकल प्रसंग।।
कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी को, वार्षिक रथयात्रा उत्सव।
माताजी के सन्निधान में, सोत्साह मनाया सब।।916।।

जन सैलाब उमड़कर आया, दर्शन करने जम्बूद्वीप।
जैनाजैन सभी ने जाकर, गिरि सुमेरु को लखा समीप।।
ओ हो! अद्भुत रचना है यह, अभी दृष्टि में आई है।
परम पूज्य माँ ज्ञानमती ने, देख शास्त्र बनवाई है।।917।।

माताजी की चर्यानियमित, समय यंत्र से सधी हुई।
जिनवाणी माँ के मन मंदिर, पूर्ण रूप से बसी हुई।।

श्रीधरसेनाचार्य ने दिया, पुष्पदन्त-भूतबलि को ज्ञान।
षट्खंडागम की टीका है, श्री धवलाजी ग्रंथ महान।।918।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, करती हैं उसका स्वाध्याय।
प्रातःकाल समय है निश्चित, दत्तचित हो, बिन अंतराय।।
स्वाध्याय अतिरिक्त आपका, नियमित लेखन चलता है।
फलस्वरूप अत्यल्पकाल ही, कृति के रूप निकलता है।।919।।

धन्य लेखनी माताजी की, सरस्वती भंडार भरा।
सार्ध दो शतक ग्रंथ हों जिसके, ऐसी नारि नहीं अपरा।।
निजशिष्यों का पाठन करतीं, आगन्तुक आशिष प्रवचन।
व्यस्त सदा रहतीं माताजी, व्यर्थ न जाता कोई क्षण।।920।।

माघ बदी नवमी सन् बानवै, पूज्य आर्यिका रत्नमती।
पुण्यतिथि जब आई सातवीं, श्रद्धांजलि सब अर्पित की।।
तेरह रत्नप्रसूता माँ ने, तेरह वर्ष साधना की।
नाम मोहिनी, हो निर्मोही, धर्मशूरता शिक्षा दी।।921।।

आचार्यश्री शांतिसागर जी, चारित्र चक्रवर्ती महाराज।
उनके पट्टाधीश पाँचवे, श्री श्रेयांससागराचार्य।।
नगर बांसवाड़ा में उनका, हुआ यकायक समाधिमरण।
जम्बूद्वीप में माताजी ने, श्रद्धांजलि में कहे वचन।।922।।

आचार्यश्री श्रेयांससिन्धु जी, निर्भय परम तपस्वी थे।
ज्ञान-ध्यान तपलीन साधु में, मुनि श्री महामनस्वी थे।।
सबने मिलकर श्रद्धांजलि में, णमोकार पढ़ रक्खा मौन।
होनहार बलवान बहुत है, उसे रोक सकता है कौन।।923।।

कल्याणसिंह यू.पी. मुखमंत्री, हस्तिनागपुर में आये।
मातृचरण रज चंदन लेकर, खुशी हुए अति हर्षाये।।
माताजी आशीष में कहा, चलें अहिंसा के मग में।
देश-प्रदेश कल्याण सभी का, मैत्री भाव रहे जग में।924।।

कल्पवृक्ष सम सब फलदायी, महावीर स्वामी जिनराज।
जम्बूद्वीप कमल मंदिर में, विराजमान शोभित सरताज।।

सत्तरहवां प्रतिष्ठापना दिवस, माता सन्निधि खूब मना।
वीर प्रभू मंगल प्रसाद से, हुआ क्षेत्र विकसित इतना।।925।।

धीरे-धीरे सन् इक्यानवे, बूढ़ा होकर हुआ अतीत।
योग-वियोग समय जो आया, नियम प्राकृतिक, हुआ व्यतीत।।
साम्यभाव धारण करते हैं, महापुरुष दोनों ही काल।
माताजी के शुभाशीष से, जम्बूद्वीप रहा खुशहाल।।926।।

यथासमय भक्तों ने आकर, जम्बूद्वीप में किए विधान।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, प्राप्त रहा मंगल सन्निधान।।
चन्दनामती माताजी द्वारा, सबको प्रवचन लाभ मिला।
क्षुल्लक श्री मोतीसागर ने, दिया ज्ञान पीयूष पिला।।927।।

पुण्य और धर्म के स्वामी कौन-कौन हैं

पूयादिसु वयसहियं पुण्णं हि जिणेहि सासणे भणियं।
मोहक्खोह विहीणो परिणामो अप्पणो धम्मो।।81।।

पूजा आदि क्रियाओं में पुण्य होता है। श्रावक सम्यग्दर्शन और अणुव्रतों से सहित जिनपूजा, दान आदि क्रियाओं को करके सातिशय पुण्य संचित कर लेता है ऐसा उपासकाध्ययन नाम के अंग में जिनेन्द्रदेव द्वारा वर्णित है। टीकाकार कहते हैं – सर्वज्ञ वीतराग देव की पूजा आदि निदानबंध से रहित है तो वह तीर्थंकर नाम कर्म के बंध का भी कारण हो सकती है। अतः गृहस्थ का पूजादि से संचित पुण्य स्वर्ग के सुखों का कारण है पुनः परम्परा से मोक्ष का भी कारण है तथा मोह और क्षोभ से रहित शुद्ध, बुद्धैक आत्मा का चिच्चमत्कार लक्षण, चिदानंद रूप परिणाम धर्म कहलाता है वह साक्षात् मोक्ष का कारण है। यहाँ पर पुत्र, स्त्री, धन आदि में 'यह मेरा है' ऐसे भाव को मोह कहा है और परीषह उपसर्ग के आ जाने पर चित्त का चंचल हो जाना क्षोभ कहलाता है। निर्विकल्प समाधि में स्थित महामुनि का शुद्धोपयोग रूप स्थिर परिणाम ही धर्म है। टीकाकार कहते हैं यह धर्मरूप परिणाम ''गृहस्थानां न भवति पंचसूनासहितत्वात्'' गृहस्थों के संभव नहीं है क्योंकि वे पंचसूना-आरंभ आदि से सहित हैं। अतः आज के गृहस्थ को जिनपूजा आदि कार्यों में ही अपनी बुद्धि लगानी चाहिए।

(श्री कुन्दकुन्द देव)

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९९२

समाहित विषयवस्तु

1. समय परिवर्तनशील है।
2. वर्षा का आगमन।
3. समाज द्वारा चातुर्मास का निवेदन।
4. माताजी द्वारा स्वीकृति एवं चातुर्मास स्थापना।
5. गुरुपूर्णिमा का आयोजन।
6. वीरशासन जयंति सम्पन्न।
7. भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण महोत्सव मनाया गया।
8. आचार्य शांतिसागर पुण्यतिथि।
9. पर्यूषण में कल्पद्रुम महामंडल विधान।
10. चारित्र निर्माण संगोष्ठी का आयोजन।
11. माताजी की 59वीं जन्मजयंती–अभिनंदन ग्रंथ समर्पित।
12. माताजी युग-युग जिएँ।
13. माताजी के अलौकिक कार्य।
14. जयपुर में कल्पद्रुम विधान, तीन हजार लोग, पैंतालीस बसों से हस्तिनापुर आये।
15. माताजी को आर्यिका शिरोमणि उपाधि से अलंकृत किया।
16. चातुर्मास निष्ठापित।
17. आर्यिका रत्नमती पुण्यतिथि।
18. तेरहद्वीप जिनालय का शिलान्यास।
19. अयोध्या के लिए विहार।
20. अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक।
21. माताजी का अहिच्छत्र में आगमन।
22. अहिच्छत्र नाम की सार्थकता।
23. तीस चौबीसी मंदिर निर्माण की योजना।
24. तीस चौबीसी का परिचय।
25. तीस चौबीसी का अनुपम ध्यान।
26. इससे पूर्व बिलारी में सिद्धचक्र विधान।
27. सीतापुर में महावीर जयंती एवं माताजी की आर्यिका दीक्षा जयंती।

28. संघ का टिकैतनगर में आगमन।
29. अयोध्या आगमन, त्रिकाल चौबीसी मंदिर का शिलान्यास।
30. अयोध्या तीर्थदर्शन, विकास का संकल्प।
31. माताजी के संघ की शोभा।

काव्य पद

कालपुरुष क्षण एक न रुकता, वह नित बढ़ता जाता है।
जो भी उसके सम्मुख आता, निबल ग्रास बन जाता है।।
जो भविष्य था, उदर समाता, वर्तमान बन आता है।
वर्तमान बस एक समय का, फिर अतीत हो जाता है।।928।।

शरद-शिशिर-हेमन्त बीत कर, बसंत-ग्रीष्म-वर्षा आई।
पीड़ित-तृषित जगत् सुख देने, चली सुशीतल पुरवाई।।
उमड़-घुमड़ करते मेघों से, सब आछन्न हुआ आकाश।
भव्यजनों को मिली सूचना, आने वाला चातुर्मास।।929।।

आस-पास का पूरा अंचल, दौड़ लगाई माँ के पास।
कभी अकेले, फिर सामूहिक, कभी बसों भर की अरदास।।
श्रीफल किए समर्पित चरणों, किया निवेदन माँ से खास।
हे माताजी! ज्ञानमती जी!, हमें चाहिए चातुर्मास।।930।।

माँ का मन मक्खन-सा मृदु है, मानसरोवर-सा निर्मल।
वात्सल्य-करुणा की धारा, प्रवहमान रहती अविरल।।
कभी निराश नहीं लौटा है, माथा टेका जिसने द्वार।
दक्षिण कर आशीष दिया माँ, चातुर्मास रहा स्वीकार।।931।।

तेरह जुलाई, सन् बानवे, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी।
गणिनी ज्ञानमती माताजी, वर्षावास स्थापना की।।
हस्तिनागपुर जम्बूद्वीप में, माताजी का रहा प्रवास।
भक्त भ्रमर बनकर समूह में, मँडराये चरणांबुज पास।।932।।

आषाढ़ सुदी पूर्णिमासी को, गुरू पूर्णिमा आई है।
ब्रह्मा-विष्णु-महेश रूप में, गुरु की महिमा गाई है।।

गुरु उपकार अनंत किया है, मोहतिमिर का नाश किया।
ज्ञान का अंजन लगा-लगाकर, लोचन जगत् उघाड़ दिया।।933।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी, श्री गुरुवर को याद किया।
आचार्य श्रीवीरसागर को, बारम्बार प्रणाम किया।।
श्री गुरुवर ने चरण-शरण दे, किया जो मेरा है उपकार।
उऋण नहीं हो पाऊँगी मैं, चाहे ले लूँ जनम हजार।।934।।

श्रावण कृष्णा एकम् के दिन, महावीर की दिव्यध्वनी।
प्रथमबार बिखरी विपुलाचल, श्रोतागण से गई सुनी।।
ज्ञानमती माताजी सन्निधि, वीर (शासन) जयंति मनाई है।
सकल संघ ने सम्मिलित होकर, प्रभुगुण गाथा गाई है।।935।।

श्रावण शुक्ला तिथि सप्तमी, पार्श्वप्रभू पाया निर्वाण।
माताजी के सन्निधान में, सकल संघ गाया गुणगान।।
पार्श्वनाथ का चरित सभी को, उत्तम शिक्षा देता है।
बैरभाव को जो तजता है, वही मोक्ष फल लेता है।।936।।

बीस सदी के प्रथमाचार्य हैं, परम पूज्य श्री शांतिनिधि।
भादों शुक्ला दोज तिथि को, मनी सातवीं पुण्यतिथि।।
प्रातःकाल हुई गुरु पूजा, गुणानुवाद मध्यान्ह सभा।
आज उन्हीं के शिष्यों द्वारा, फैल रही है धर्म प्रभा।।937।।

पर्वराज पर्यूषण आया, सन्निधान माँ प्राप्त रहा।
कल्पद्रुम मंडल विधान का, आयोजन भी सफल रहा।।
पूजन प्रवचन पुण्य कमाया, मनोमुरादी पाया दान।
माताजी के शुभाशीष से, प्राप्त रहा सबको कल्याण।।938।।

चरित्र मनुज की सम्पत्ती है, बिन चरित्र जीवन निष्प्राण।
चरित्र समाज की रीढ़ बन्धुओं, बिन चारित्र नहीं कल्याण।।
जम्बूद्वीप हुई आयोजित, संगोष्ठी चरित्र निर्माण।
माताजी सन्निधि, आये देश के, एक शतक ऊपर विद्वान्।।939।।

जन्मदिवस उनसठवां माँ का, शरद पूर्णिमा आई है।
धूमधाम से गई मनाई, माँ की जन्म जयंती है।।

ग्रंथ समर्पण पूर्वक माँ का, किया गया अभिनंदन है।
सौ-सौ वर्ष जिएँ माताजी, कवि का सादर वंदन है।।940।।

परम पूज्य श्रीमाताजी ने, कार्य अलौकिक किए अनेक।
दंत तले अंगुली दब जाती, गिरि सुमेरु की रचना देख।।
जब तक सूरज-चाँद-सितारे, गिरि परिक्रमा किया करें।
तब तक माता ज्ञानमती जी, हम सबका कल्याण करें।।941।।

माताजी की कीर्ति कौमुदी, जयपुर फैला विमल वितान।
हुआ आयोजित रचित पूज्य माँ, श्री कल्पद्रुम महाविधान।।
तेरह सौ स्त्री-पुरुषों ने, प्रतिदिन पूजन लाभ लिया।
दस सहस्र नर-नारी आकर, नियमित दर्शन-श्रवण किया।।942।।

पूर्ण विधान निर्विघ्न हुआ जब, हस्तिनागपुर आये जन।
पैंतालिस बस, तीन सहस जन, आकर माँ को किया नमन।।
की विशालसभा आयोजित, माँ-विधान किया गुणगान।
आर्यिका शिरोमणि की उपाधि से, माताजी का किया सम्मान।।943।।

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी।
वीर निर्वाण मनाया उत्सव, संघ सहित श्री माताजी।।
रत्नमती श्रीमाताजी की, गई मनाई पुण्य तिथि।
तेरहद्वीप जिनालय का यहाँ, शिलान्यास हुआ यथाविधि।।944।।

कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी तिथि, ध्यान काल माताजी आज।
दर्शन किए अयोध्या राजित, प्रतिमा तुंग ऋषभ जिनराज।।
महामस्तकाभिषेक कराऊँ, भाव जगे माँ अन्तर्मन।
जम्बूद्वीप से माह फरवरी, नगर अयोध्या किया गमन।।945।।

शाश्वत नगरी श्री अयोध्या, सब तीर्थंकर जन्म स्थान।
रायगंज मंदिर में शोभित, फुट इक्तीस ऋषभ भगवान।।
पहले दर्श किए नहिं प्रभु के, किन्तु ध्यान में दर्श हुआ।
उनके महा अभिषेक के लिए, माताजी संघ गमन किया।।946।।

बहसूमा फिर मीरापुर, संघ बिजनौर किया पावन।
नहटौर-धामपुर-काँठ-स्योहरा, मुरादाबाद मनोभावन।।

नगर-गाँव विश्राम किया संघ, धर्म प्रभावना-प्रवचन कर।
जीवन धन्य किया सब ही ने, माताजी-संघ दर्शन कर।।947।।

बारह मार्च सन् तिरान्वै, अहिच्छत्र आगमन हुआ।
पार्श्वनाथ जिन तपोभूमि यह, केवलज्ञान भी यहीं हुआ।।
कमठ किया उपसर्ग यहीं पर, पद्मावती-धरणेन्द्र निवार।
ऐसे क्षेत्र परम पावन पर, माताजी का हुआ विहार।।948।।

पारस प्रभु ने करी तपस्या, जिस स्थल उपसर्ग हुआ।
अहिरूप धर छत्र के द्वारा, प्रभु उपसर्ग सु-दूर हुआ।।
उस स्थल का हुआ प्रथित जग, अहिच्छत्र यह सार्थक नाम।
संकटहारी, सब सुखकारी, अहिच्छत्र को करें प्रणाम।।949।।

तीन दिवस प्रवास काल में, तीस चौबीसी आई ध्यान।
बीस,सातशत प्रतिमाजी की, दिव्य योजना करी प्रदान।।
ग्यारह शिखरों वाला मंदिर, बन करके तैयार हुआ।
अद्वितीय-अनन्वय सब कुछ, लखकर दर्शक धन्य हुआ।।950।।

जम्बूद्वीप-भरत-ऐरावत, षट् चौबीसी बनी त्रिकाल।
खंड धातकी, पूरब-पश्चिम, द्वादश चौबीसी नत भाल।।
पुष्करार्द्ध भी द्वादश संख्या, कुल चौबीसी हो गई तीस।
तीस गुणित चौबीस मूर्तियाँ, मिलकर हुईं सात सौ बीस।।951।।

एक कमल के तीन भाग दल, तीन चौबीसी एक कमल।
पद्मासन-जिनदेव बहत्तर, रंग श्वेत, सँगमरमरी धवल।।
एक पंक्ति में पाँच कमल हैं, दोनों पंक्ति शोभते दश।
तीस चौबीसी दश कमलों पर, सात सौ बीस प्रतिमाजी बस।।952।।

परम पूज्य माँ ज्ञानमती ने, दिया तीर्थ अनुपम वरदान।
चार चाँद लग गए क्षेत्र में, बना जिनालय भव्य महान्।।
पार्श्वनाथ खड्गासन प्रतिमा, कृष्ण-संगमरमर, फण सात।
सात शतक इक्कीस जिनों प्रति, कर जुड़ते, झुक जाते माथ।।953।।

अहिच्छत्र से पूर्व बिलारी, संघ रुका मार्च दिन सात।
सिद्धचक्र मण्डल विधान था, गया रचाया माँ के साथ।।

निर्मल कुमार सेठी के द्वारा, गया कराया यहाँ विधान।
क्षेत्र अयोध्या के विकास को, माँ ने खींचा उनका ध्यान।।954।।

बरेली-शाहजहाँपुर होकर, सीतापुर आगमन हुआ।
श्री महावीर जयंति महोत्सव, सीतापुर सम्पन्न हुआ।।
दीक्षा जयंति आर्यिका माँ की, यहीं मनाई गई मुदा।
अयोध्या जी त्रिकाल चौबीसी, का विचार साकार हुआ।।955।।

सीतापुर-सिधौली-बिसवां, संघ पहुँचा महमूदाबाद।
पूज्य आर्यिका रत्नमती ने, किया जन्म से था आबाद।।
अभूतपूर्व स्वागत के द्वारा, हुआ संघ का अभिनंदन।
अक्षय तृतिया पर्व मनाया, किया प्रणाम नाभिनंदन।।956।।

महमूदाबाद में कर प्रभावना, संघ फतेहपुर किया प्रवास।
धर्मामृत की वर्षा करके, माँ पूरी जन-जन की आश।।
संघ फतेहपुर से विहार कर, टिकैतनगर में पधराया।
वन्दामि माताजी सादर, गली-गली ने दुहराया।।957।।

कल्याणसिंह यू.पी. मुखमंत्री, स्वागतार्थ थे पधराये।
वंदन, अभिनंदन माताजी, बहुशः गीत गये गाये।।
टिकैतनगर में माताजी का, महिना एक प्रवास रहा।
भाग्य सराहा नगर निवासी, हर्ष शब्द नहिं जात कहा।।958।।

ज्ञान-चंदना-मोती-रवि से, सबने बहुविधि लाभ लिया।
चर्या देखी, हुए प्रभावित, मोक्ष मार्ग पर गमन किया।।
आहारदान दे भाग्य सराहा, वैयावृत्ति मिला उपहार।
पंख लगाकर समय उड़ गया, हुआ अयोध्या ओर विहार।।959।।

कर प्रभावना नगर-गाँव में, हुआ अयोध्या शुभागमन।
सोलह जून, तेरानू सन् को, आदि चरण में किया नमन।।
अन्येद्यु माताजी सम्मुख, महा अलौकिक कार्य हुआ।
त्रिकाल चौबीसी जिनमंदिर का, शिलान्यास सम्पन्न हुआ।।960।।

यद्यपि शाश्वत तीर्थ अयोध्या, सकल चौबीसी जन्म स्थान।
किन्तु हाय! दुर्भाग्य क्षेत्र का, नहीं किसी को उसका ध्यान।।

देख दशा दयनीय क्षेत्र की, माता हृदय विदीर्ण हुआ।
अश्रू अर्घ्य समर्पणपूर्वक, क्षेत्र विकास संकल्प लिया।।961।।

चातुर्मास टिकैतनगर में, सन् तेरानवै होना था।
किन्तु क्षेत्र दयनीय दशालक्ष, माँ को आया रोना था।।
अतः तीर्थ उद्धार के लिए, किया पूज्यश्री सफल प्रयास।
किया सुनिश्चित नगर अयोध्या, तेरानवै का चातुर्मास।।962।।

कवि ने सन् चौवन में देखी, क्षेत्र अयोध्या दीन दशा।
मंदिर-छत्री जीर्ण-शीर्ण सब, रहे शून्यता दिशा-दिशा।।
श्री आचार्य देशभूषण ने, गुरुकुल वहाँ खुलाया है।
कवि ने छैक माह, रहकर के, खुद भी पढ़ा, पढ़ाया है।।963।।

ऐसे पावन तीर्थक्षेत्र का, उद्धारण संकल्प लिया।
परम पूज्य श्री माताजी ने, यह अत्युत्तम काम किया।।
असमर्थों को सम्बल देना, रहा पुण्य का अक्षय धाम।
एतदर्थ श्रीमाताजी के, चरणों बारम्बार प्रणाम।।964।।

माताजी के संघ सुशोभित, पूज्य चन्दना माताजी।
क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी, श्रद्धामती क्षुल्लिका जी।।
ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र कुमार जी, बीना-आस्था बालसती।
मार्ग गमन करता संघ सोहै, जैनी सेना कर्महती।।965।।

तीर्थक्षेत्र अयोध्या चातुर्मास-सन् १९९३

समाहित विषयवस्तु

1. क्षेत्र विकास के संकल्पपूर्वक चातुर्मास की स्थापना।
2. 1965 से किसी का चातुर्मास नहीं।
3. रायगंज जिनालय में चातुर्मास।
4. तीर्थक्षेत्र उद्धारिका माताजी।
5. पर्यूषण पर्व में त्रिकाल प्रवचन।
6. ऋषभदेव विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन।
7. अयोध्या का विश्व में प्रचार-प्रसार।
8. जैन साहित्य में राम-निबंध प्रतियोगिता।
9. चित्र प्रतियोगिता-संयोजक डॉ. अनुपम जैन।
10. शरद पूर्णिमा-विनयांजलि सभा।
11. चारित्र चंद्रिका उपाधि से अलंकृत।
12. महाराज इण्टर कॉलेज में माताजी के प्रवचन।
13. चातुर्मास निष्ठापित।
14. पंचकल्याणक-महामस्तकाभिषेक महोत्सव।
15. मुलायमसिंह मुख्यमंत्री ने आशीर्वाद लिया।
16. साहू अशोक कुमार, मोतीलाल वोरा, संगीतकार रवीन्द्र जैन।
17. बी.बी.सी. लंदन ने माताजी को विश्व की तीसरी शक्ति के रूप में स्वीकार किया।
18. टोंकों सहित सम्पूर्ण क्षेत्र का जीर्णोद्धार।
19. ज्ञानमती निलय धर्मशाला का निर्माण।
20. ऋषभ जयंति, रथयात्रा के साथ उत्सव का समापन।
21. लखनऊ को विहार।
22. लखनऊ में शिक्षण शिविर, श्रावक सम्मेलन, संगोष्ठी, महावीर जयंति का आयोजन।
23. बाराबंकी से विहार।

काव्य पद

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, किया स्थापित चातुर्मास।
कायाकल्प क्षेत्र का होगा, सबके मन आया विश्वास।।
गणिनी प्रमुख, आर्यिका शिरोमणि, श्री माताजी ज्ञानमती।
किसी कार्य को हाथ में लेतीं, पूरा होता शीघ्र अती।।966।।

श्री दिगम्बर जैन जिनालय, मुहल्ला रायगंज वाला।
ऋषभदेव खड्गासन प्रतिमा, इक्तिस फुट अतिशय आला।।
उसके सम्मुख बैठ आर्यिका, सकल संघ संकल्प लिया।
शाश्वत नगरी, तीर्थ अयोध्या, पावन वर्षायोग किया।।967।।

ईसा सन् उन्निस सौ पैंसठ, हुई विराजित प्रतिमा खास।
तब से अब तक हुआ न कोई, इस स्थल पर चातुर्मास।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, सब संतों में रहीं प्रथम।
तीर्थंकर कल्याण भूमि की, उन्हें उद्धारिका कहते हम।।968।।

पहले यहाँ न झाँके कोई, फिर प्रवास की कौन कथा।
सर्वप्रथम श्रीमाताजी ने, सुनी क्षेत्र की पूर्ण व्यथा।।
कर प्रवास सब देखा-समझा, उसका सही निदान किया।
जन समूह आ रुके निरन्तर, पूजा और विधान किया।।969।।

संघ आर्यिका इसी जिनालय, दस माहों प्रवास रहा।
श्री त्रिकाल चौबीसी मंदिर, का चलता निर्माण रहा।।
इस प्रकार श्रीमाताजी ने, खोले क्षेत्र प्रगति के द्वार।
नर से आगे बढ़ नारी ने, किया तीर्थक्षेत्र उद्धार।।970।।

इससे पहले नहीं किसी भी, साधु-साध्वी किया प्रयास।
नहीं द्रवित हो दशा देखकर, किया यहाँ पर चातुर्मास।।
धन्य-धन्य श्री ज्ञानमती जी, तुम में माता का दिल है।
अतः उपेक्षित तीर्थक्षेत्र को, दिया आपने संबल है।।971।।

पर्वराज पर्यूषण आया, नियमित पूजन-हुए विधान।
प्रातः दोपहर-रात्रिकाल में, मिला सभी को प्रवचन-ज्ञान।।

रत्नत्रय ने जगज्जनों को, दशलक्षण रत्नों के हार।
पहनाये आह्लादित होकर, हुआ भव्यजन का उद्धार।।972।।

अखिल विश्व का ध्यान क्षेत्र की, ओर किया आकर्षित है।
ऋषभदेव विद्वत्संगोष्ठी, हुई बृहत् आयोजित है।।
शतकाधिक विद्वान् पधारे, माताजी सान्निध्य मिला।
अखिल जगत् के कोने-कोने, ऋषभ सुमन सन्देश खिला।।973।।

नगर अयोध्या को जन जाने, राम-लक्ष्मण जन्म स्थान।
संगोष्ठी से पाया सबने, जन्मे यहाँ ऋषभ भगवान।।
जैन संस्कृति केन्द्र अयोध्या, मात से भारत पाया नाम।
ऋषभदेव करकमल रहे हैं, लिपि-संख्या उद्भव स्थान।।974।।

संगोष्ठी के सकल सत्र में, माताजी आशीष मिले।
जैन पुराणों बंद अयोध्या, के नित नूतन पृष्ठ खुले।।
सरस्वती अवतार आर्यिका, श्रीमाताजी ज्ञानमती।
ऋषभ-अयोध्या से संदर्भित, माताजी रचना विरचीं।।975।।

हुईं विमोचित अतिथिजनों से, ऋषभदेव संगोष्ठी काल।
सम-सामयिक रचनाकर्त्री, गणिनी माता को नमूँ त्रिकाल।।
जैन साहित्य में राम विषय पर, निबंध प्रतियोगिता रखी गई।
जैनाजैन बालकों द्वारा, लेखमालिका लिखी गई।।976।।

ज्ञानमती चित्र प्रतियोगिता, में आये बहुतेरे चित्र।
हुए पुरस्कृत चित्रकार सब, भाव प्रदर्शित परम पवित्र।।
संगोष्ठी के संयोजक थे, श्री डॉक्टर अनुपम जैन।
तीर्थ अयोध्या-ऋषभदेव से, हुए सुपरिचित जैन-अजैन।।977।।

तीस अक्टूबर शरदपूर्णिमा, जन्म जयंती आई है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, विनयांजलि चढ़ाई है।।
भारत के कोने-कोने से, आये श्रेष्ठी-विद्वत्जन।
माताजी के मुख मयंक से, श्रवण किए आशीष वचन।।978।।

छोटी छावनी नगर अयोध्या, नृत्यगोपाल दास महंत।
विनयांजलि अर्पित की माँ को, बतलाया माँ उत्तम संत।।

सहस-सहस नर-नारी आये, विनयांजलि में लगी कतार।
बोले परमपूज्य माताजी, रहवें जीवित वर्ष हजार।।979।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, निरतिचार चारित्र धनी।
साधु-साध्वी मध्य आपकी, अतिशय उत्तम छवि बनी।।
अतः आज समुपस्थित जन ने, परम पूज्य माताजी को।
चारित्र चंद्रिका की उपाधि से, किया विभूषित हर्षित हो।।980।।

महाराजा इण्टर विद्यालय, नगर अयोध्या संचालित।
माताजी के मंगल प्रवचन, सादर हुए समायोजित।।
माताजी के मुख मयंक से, ऋषभ-अयोध्या पाया ज्ञान।
छात्राध्यापक सबने मिलकर, माँ को दिया अमित सम्मान।।981।।

चातुर्मास किया निष्ठापित, कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी।
विधि-विधान सह सकल भक्तियाँ, पढ़ीं श्री पूज्या माताजी।।
पावन तिथि अमावस्या को, निर्वाण लाडू चढ़ाया है।
महावीर निर्वाण महोत्सव, परमोत्साह मनाया है।।982।।

माताजी के मनःकोष में, हैं अनेक योजनाएँ।
प्रतिभा भी उपलब्ध आप श्री, जिससे मूर्तरूप पायें।।
ठान लिया श्री माताजी ने, मिले अयोध्या श्रेष्ठ स्थान।
एतदर्थ किया आयोजित, महा अभिषेक ऋषभ भगवान।।983।।

श्री त्रिकाल चौबीसी मंदिर, बन करके तैयार हुआ।
द्विसप्तति जिनप्रतिमाओं की, प्राणप्रतिष्ठा भाव हुआ।।
माताजी के शुभाशीष से, होंगे सारे कार्य सफल।
उनके पावन चरण कमल में, करें सिद्धियाँ वास सकल।।984।।

हुए प्रचारित सकल कार्यक्रम, देश-विदेश दशों दिश में।
महामस्तकाभिषेक ऋषभजिन, पंचकल्याण महोत्सव में।।
तेरह से तेईस फरवरी, हुए महोत्सव आयोजित।
पधराये व्रतिजन-विद्वत्गण, नेता-श्रेष्ठी समयोचित।।985।।

मुलायमसिंह यू.पी.मुखमंत्री, महा-महोत्सव पधराये।
जैनों बीच रहा मैं फलतः, मुझ में जैन संस्कार आये।।

की अनेक घोषणाएँ भी, हुआ सभी का क्रियान्वयन।
लौट गये लखनऊ को यादव, माँ श्री चरणों किया नमन।।986।।

तीर्थ कमेटी के अध्यक्ष, श्री अशोक कुमार साहू आये।
उनके जनक श्री शांतिप्रसाद ने, यह जिनमंदिर बनवाये।।
भाग्य सराहा कहा आपने, क्षेत्र का दर्शन पाया है।
श्रीमाताजी चरण कृपा से, यह शुभ अवसर आया है।।987।।

राज्यपाल यू.पी. स्टेट के, मोतीलाल वोरा आये।
माताजी के चरणकमल में, सविनय निज मस्तक नाये।।
बोले अब तक नगर अयोध्या, था प्रसिद्ध राम के नाम।
किन्तु आज से माताजी ने, जोड़ा ऋषभदेव का नाम।।988।।

चौबीस फरवरी सन् चौरानवे, स्वर्ण अक्षरों लिखा गया।
महामस्तकाभिषेक ऋषभ जिन, भक्तों द्वारा किया गया।।
श्रावक-श्राविका जैनजनों से, भरी खचाखच गली-गली।
प्रथम बार देखी लोगों ने, माँ कारण शाश्वत नगरी।।989।।

ऋषभदेव पर पुष्पवृष्टि की, नृपति अयोध्या बैठ विमान।
संगीतज्ञ श्री रवीन्द्र जैन ने, किया सकल काव्यमय गान।।
गगन गिरा से हुआ प्रसारित, आँखों देखा हाल सकल।
और वहीं से पाया सबने, माँ आशिष का अमृत फल।।990।।

समारोह जो हुआ यहाँ पर, हुआ न होगा और कभी।
युगों-युगों तक याद रखेंगे, इसको जैनाजैन सभी।।
बी.बी.सी. लंदन यों बोला, अब तक रहीं शक्तियाँ दो।
शक्ति तीसरी जैन रूप में, आई सामने प्रकटित हो।।991।।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या जी की, युगीन शून्यता दूर हुई।
तीर्थोद्धार-विकास कामना, माताजी भरपूर हुई।।
महामस्तकाभिषेक आदिजिन, होवे पाँच वर्ष प्रत्येक।
दत्त प्रेरणा माताजी की, हुए प्रशंसित जन प्रत्येक।।992।।

सोलह जून से छह अप्रैल तक, माताजी का रहा प्रवास।
स्वर्ण अक्षरों लिखा रहेगा, तीर्थ अयोध्या यह इतिहास।।

टोंक सहित सम्पूर्ण क्षेत्र का, हुआ प्रतीक्षित जीर्णोद्धार।
श्रीमाताजी ज्ञानमती का, स्मरणीय अमित उपकार।।993।।

क्षेत्र निकट ही बहुत जरूरी, सुंदर एक धर्मशाला।
ज्ञानमती जी निलय बन गया, वहाँ सर्व सुविधा वाला।।
हुए अपेक्षित कार्य बहुत से, बढ़ा क्षेत्र का जीवनकाल।
माताजी के चरण कमल में, हम सब वंदन करें त्रिकाल।।994।।

हुआ समापन कार्यक्रमों का, ऋषभ जयंति यात्रारथ।
संघ आर्यिका ने अपनाया, डालीगंज लखनऊ का पथ।।
शिक्षण शिविर श्रावक सम्मेलन, कर संगोष्ठी आयोजन।
चारबाग महावीर जयंती, बाराबंकी किया गमन।।995।।

दिगम्बर मुनि भगवान हैं

भिक्खं वक्कं हिययं सोधिय जो चरदि णिच्च सो साहू।
एसो सुट्ठिद साहू भणिओ जिणसासणो भयवं।।

जो साधु नित्य ही आहार, वचन और मन का शोधन करके चारित्र का पालन करते हैं, वे सर्वगुण सम्पन्न हैं। जिनशासन में उन्हें भगवान कहा है।

भावार्थ—जो दिगम्बर मुनि आगम के अनुसार 46 दोष और 32 अन्तराय टाल कर निर्दोष आहार ग्रहण करते हैं, भाषा-समिति के अनुसार हित-मित और प्रिय पथ्य वचन बोलते हैं तथा दुर्ध्यान को, क्रोधादि कषायों को दूर करके मन को सदा धर्मध्यान में लगाते हैं, वे ही साधु भिक्षा, वाक्य और मन की शुद्धि करने वाले हैं। वे मोक्षमार्ग में स्थित हैं, सर्वगुणों से समन्वित हैं। अतः ऐसे वे निर्ग्रंथ साधु ही इस संसार में चलते-फिरते भगवान माने गये हैं। ऐसा जिनागम का कथन है।

(श्री कुंदकुंददेव कृत मूलाचार)

टिकैतनगर चातुर्मास-सन् १९९४

समाहित विषयवस्तु

1. बाराबंकी में सिद्धचक्र विधान का आयोजन।
2. सिद्धचक्र का अर्थ।
3. चातुर्मास की स्थापना एवं विविध आयोजन।
4. चंदनामती माताजी का दीक्षा दिवस।
5. पर्यूषण पर्व का आगमन, अनेक आयोजन।
6. षष्ठिपूर्ति महोत्सव-कीर्तिस्तम्भ का निर्माण।
7. चातुर्मास निष्ठापन और विदाई।
8. माताजी द्वारा संबोधन।
9. दरियाबाद में कल्पद्रुम मंडल विधान।
10. अयोध्या में शुभागमन।
11. आचार्य विमलसागर को श्रद्धांजलि।
12. पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि का आयोजन।
13. राजकीय उद्यान का नाम-ऋषभदेव उद्यान।
14. विश्वविद्यालय में ऋषभदेव पीठ की घोषणा।
15. अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद द्वारा डी.लिट्. की उपाधि।
16. ऋषभदेव नेत्र अस्पताल प्रारंभ।
17. माताजी का प्रवचन-जैन धर्म प्राचीन धर्म है।
15. राम के साथ ऋषभदेव से भी अयोध्या की पहचान हुई।
19. हस्तिनापुर की ओर विहार।

काव्य पद

बाराबंकी वह पावनथल, जहाँ कुमारी मैना ने।
शरदपूर्णिमा आयु अठारह, सन् उन्निस सौ बावन में।।
आचार्यश्री देशभूषण से, ब्रह्मचर्य व्रत धारा था।
सप्तम प्रतिमा पालन करके, गृह से किया किनारा था।।996।।

संयम पथ है मोक्ष नसैनी, ब्रह्मचर्य पहला सोपान।
यहीं किया आरोहण मैना, जगत्काय सब अस्थिर जान।।

माँ-बेटी समझौता करके, गयी यहीं पर मोक्ष डगर।
तुम जाओ घर से निकालने, मेरी रखना ध्यान मगर।।997।।

जो मंजिल मतवाले होते, उनको बस चलने का काम।
उन्हें लक्ष्य दिखता है केवल, लेते नहिं रुकने का नाम।।
आधी-व्याधी रोक न पातीं, बाधाएँ देतीं पैगाम।
मंजिल उनके चरण चूमती, करती शत-शत बार प्रणाम।।998।।

मोक्ष नसैनी चढ़ मैना ने, पद आर्यिका पाया है।
वही आर्यिका ज्ञानमती संघ, बाराबंकी आया है।।
विधान-शिविर-प्रवचन के द्वारा, कर प्रभावना डगर-डगर।
संघ आर्यिका ने विहार कर, लक्ष्य बनाया टिकैतनगर।।999।।

टिकैतनगर मैना का घर है, सन् चौंतिस में जन्म लिया।
छोटेलाल-मोहिनीदेवी, का घर-बार पवित्र किया।।
श्री मैना ने ज्ञानमती बन, जग परिवार बनाया है।
इसीलिए माँ दर्शन करने, अवध उमड़कर आया है।।1000।।

चातुर्मास हुआ स्थापित, हुआ विरागमय आयोजन।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, किया स्व-हस्त केशलुंचन।।
तृणवत् केश उखाड़ आपने, पूर्व संकल्प किया उपवास।
धर्म अहिंसा पालन करना, केशलुंच का लक्ष्य है खास।।1001।।

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, चातुर्मास का स्थापन।
किया केशलुंच माताजी, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।।
चत्वारिंशत वर्ष व्यतीते, अब फिर अवसर आया है।
टिकैतनगर ने पूज्याश्री का, सन्निधान शुभ पाया है।।1002।।

स्वावलम्ब का पाठ पढ़ाना, जीव सुरक्षा रखना ध्यान।
पंचेन्द्रिय-मन हाथ-पैर का, जो जन कर लेते मुण्डन।।
रहे देह संस्कार उपेक्षा, भव-तन-भोग विरक्ति प्रधान।
तदनन्तर एकादश क्रम पर, करता साधु केशलुंचन।।1003।।

पर्व अठाई के आने पर, अतिशय धार्मिक जोश जगा।
सिद्धचक्र मण्डल विधान में, सबका शुभ उपयोग लगा।।

एक साथ चार लोगों के, संयोजित विधान थे चार।
माताजी संघ सन्निधान में, सबको मिला धर्म उपहार।।1004।।

चक्र अर्थ होता समूह है, सिद्ध अर्थ है केवल रूह।
सिद्धचक्र का अर्थ इस तरह, हुआ बन्धुओं सिद्धसमूह।।
तीन लोक के अग्रभाग पर, है अनंत सिद्धों का वास।
अष्टकर्म नष्ट करने से, प्रकटित हुए अष्टगुण खास।।1005।।

सिद्ध शब्द मंगलस्वरूप है, पूर्णकार्य सिद्ध का अर्थ।
जो इसका उच्चारण करते, सकलकार्य होते अव्यर्थ।।
रोग-शोक दूर होकर के, मिली सम्पदा चाही है।
मैनासुंदरि-श्रीपाल का, सकल चरित्र गवाही है।।1006।।

चातुर्मास शुरू होते ही, हुए विविध आयोजन हैं।
श्रद्धा-ज्ञान-विनय-पुण्यफल, सबका रहा प्रयोजन है।।
वीर निधि की जन्मजयंती, शासन वीर जिनेश्वर की।
पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस-सह, तीर्थराज पर संगोष्ठी।।1007।।

जिनकी चरण धूलि को पाकर, हुई मृत्तिका भी चंदन।
उन्हीं चंदनामती आर्यिका, को अर्पित शत-शत वंदन।।
बीते पाँच वर्ष दीक्षा को, समारोह सम्पन्न हुआ।
नगरमणि संयम प्रकाश से, नगर हमारा धन्य हुआ।।1008।।

इन्द्रध्वज विधान सम्पन्ना, सबने पाई पुण्यनिधि।
संघ आर्यिका सन्निधान में, हुई पूर्णता यथाविधि।।
चार शतक, अष्टपंचाशत, अकृत्रिम जिन चैत्यालय।
उनकी पूजाओं से गूँजा, द्वादश दिन तक देवालय।।1009।।

आचार्यश्री शांतिसागर की, गई मनाई पुण्यतिथि।
तीन दिवस संगोष्ठी द्वारा, गुण विनयांजलि अर्पित की।।
दशलक्षण की धर्मध्वजा ले, पर्व पर्यूषण आया है।
संघ आर्यिका सन्निधान में, दस दिन गया मनाया है।।1010।।

मैत्री पर्व क्षमावाणी का, बाईस सितम्बर आया है।
द्वेषभाव को त्याग सभी ने, प्रेमभाव अपनाया है।।

पूज्य आर्यिका श्री चंदना, लुंचन केश किया है आज।
संयम-ज्ञान-विराग नदी में, हुई स्नापित सकल समाज।।1011।।

साठ वर्ष बीते जीवन के, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।
षष्ठिपूर्ति उत्सव के माध्यम, प्रगटा जन-जन मोद अती।।
सर्वतोभद्र मण्डल विधान का, हुआ सभक्ति आयोजन।
विनयांजलि की अर्पित सबने, नेता-श्रेष्ठी-विद्वत्जन।।1012।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, अधिक अनन्वय कार्य किए।
कीर्ति कौमुदी फैली चहुँदिश, छोड़ी उत्तम छाप हिए।।
चिरकृतज्ञ-आभारी सबने, श्रद्धा को अंजाम दिया।
षष्ठिपूर्ति पावन अवसर पर, कीर्तिस्तम्भ निर्माण किया।।1013।।

इतिहास पृष्ठ पर अमर रहेगा, टिकैतनगर का चातुर्मास।
कीर्तिस्तम्भ करेगा माँ का, युगों-युगों तक नाम प्रकाश।।
धन्य-धन्य माँ ज्ञानमती जी, जिन्हें नाम की चाह नहीं।
सूरजवत् चलते ही रहना, यश-अपयश परवाह नहीं।।1014।।

योग के साथ वियोग लगा है, नियम नहीं सकता है टल।
आने वाला जायेगा ही, यही प्रकृति का नियम अटल।।
लेकिन जिसने वस्तु तत्त्व की, समझ न पायी सच्चाई।
वे हर्षित होते सुयोग में, रोते जब बिछुड़न आई।।1015।।

जग में स्थिर वस्तु न कोई, क्षण-क्षण होता रहे क्षरण।
मूरख मान रहा है वृद्धि, पल-पल होता रहे मरण।।
काया जैसे काँच की शीशी, यौवन जैसे मेघमहल।
यह संसार चलाचल मेला, कुछ ही दिन की चहल-पहल।।1016।।

पता नहीं चल पाया कैसे, चतुर्मास दिन चले गये।
कहा सभी ने हम तो सचमुच, कालबली से छले गये।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, संघ विदाई आये क्षण।
टिकैतनगर का हर जनमानस, धैर्य छोड़ कर उठा रुदन।।1017।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, दिया सभी को सम्बोधन।
जैसे-जैसे समझाती माँ, बढ़ता त्यों-त्यों और रुदन।।

कर्म मोहनी ने आकर के, फैलाया सब ऊपर जाल।
आँसू रुकने नाम न लेते, स्थिति बनी विकट-विकराल।।1018।।

रोना भी गम को खोने का, कहा गया है सहज उपाय।
कोई रोता मनमसोस कर, कोइ रोता हिचकोला खाय।।
राम अयोध्या छोड़ चले ज्यों, चले कृष्णश्री वृन्दावन।
दृश्य उपस्थित हुआ आज वह, आँसू बन बरसा सावन।।1019।।

किन्तु आर्यिका संघ रुका ना, छोड़ गया पद चिन्ह ललाम।
रहे देखते नगर निवासी, यथा अयोध्याजन श्रीराम।।
माह नवम्बर सन् चौरानवै, दिन का भी नौ अंक रहा।
टिकैतनगर से कर विहार संघ, दरियाबाद मुकाम रहा।।1020।।

कल्पद्रुम मंडल विधान को, गया रचाया दरियाबाद।
माताजी कृत पूजाएँ पढ़, समवसरण की आई याद।।
फिर विहार कर संघ प्रवेशा, श्री त्रिलोकपुर अतिशयक्षेत्र।
नेमिनाथ भगवान का हुआ, वहाँ महामस्तक अभिषेक।।1021।।

एक बार फिर माताजी ने, सुधि ली क्षेत्र अयोध्या की।
माह दिसम्बर संघ प्रविष्टा, रायगंज के मंदिर जी।।
तीन चौबीसी शिखर साथ में, समवसरण मंदिर निर्माण।
पंचकल्याणक माह फरवरी, होंगे माताजी सन्निधान।।1022।।

तीर्थ अयोध्या रायगंज में, बही ज्ञान अविरल धारा।
माताजी श्रीज्ञान-चंदना, क्षुल्लक मोती निधि द्वारा।।
आचार्यश्री विमलसागर का, शिखर समाधिमरण हुआ।
प्राप्त सूचना सकल संघ को, मन में अतिशय क्षोभ हुआ।।1023।।

तीस दिसम्बर माता सन्निधि, हुआ सभा का आयोजन।
श्री गुरुवर वात्सल्य निधि को, की सबने श्रद्धा अर्पण।।
श्रीगुरुवर के चिरवियोग से, जो भी रिक्तता है आई।
युगों-युगों तक किसी तरह भी, हो न सकेगी भरपाई।।1024।।

सन् पिंचानवै, माह फरवरी, पंद्रह-बीस तिथी आई।
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होकर, हुईं विराजित प्रतिमाजी।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती संघ, सकल काल सान्निध्य मिला।
ध्वजा-कलश आरोहण द्वारा, तीर्थक्षेत्र का रूप खिला।।1025।।

राजकीय उद्यान अब हुआ, भगवन ऋषभदेव उद्यान।
बीस-एक फुट ऊँची प्रतिमा, हुई अनावृत माँ सन्निधान।।
महावीर प्रसाद जैन दिल्ली ने, द्रव्य लगाया, पुण्य लिया।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, सबको शुभ आशीष दिया।।1026।।

उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री जी, मुलायमसिंह जी यादव ने।
ऋषभदेव पीठ घोषित की, लोहिया विश्व विद्यालय में।।
पाँच फरवरी, माँ की सन्निधि, शिलान्यास सम्पन्न हुआ।
माताजी से प्राप्त प्रेरणा, यह अत्युत्तम काम हुआ।।1027।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, सम्यग्ज्ञान वटवृक्ष समान।
फैजाबाद विश्वविद्यालय, दिया उन्हें डी.-लिट्. सम्मान।।
अखिल देश में जैन संत को, प्रथमबार यह दिया गया।
माताजी को सम्मानित कर, सम्मान ने निज सम्मान किया।।1028।।

माताजी के शुभाशीष से, ऋषभदेव अस्पताल खुला।
जैनाजैन सभी को इससे, लाभ मिल रहा है अधुना।।
स्फटिक शिला नामक आश्रम में, माँ प्रवचन में बतलाया।
जैन धर्म प्राचीन धर्म है, वेद-पुराणों में गाया।।1029।।

सन् पिंचानवे, मार्च अठाइस, संघ आर्यिका हुआ विहार।
कार्य अनेक किए माताजी, किया क्षेत्र का पूर्णोद्धार।।
वानर बहुत तीर्थक्षेत्र तो, अब तक रहा राम के नाम।
जैनतीर्थ यह जाना सबने, जन्में यहाँ ऋषभ भगवान।।1030।।

अयोध्या-श्रावस्ती-बहराइच, जरवलरोड-गनेशपुरा।
फिर त्रिलोकपुर कर प्रभावना, संघ पधराया फतेहपुरा।।
धर्म-ज्ञान की वर्षा करके, संघ बढ़ा गजपुर की ओर।
बीस माह की प्यासी जनता, जोहे बाट, मेघ ज्यों मोर।।1031।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९९५

समाहित विषयवस्तु

1. बीस माह पश्चात् माताजी का शुभागमन।
2. चातुर्मास की स्थापना।
3. माताजी द्वारा केशलुंचन।
4. केशलुंचन का उद्देश्य।
5. पर्यूषण पर्व का आगमन।
6. धर्म की परिभाषा।
7. माताजी के प्रवचन-दशधर्म।
8. माताजी के प्रवचन-तत्त्वार्थसूत्र।
9. तत्त्वार्थसूत्र की विषयवस्तु।
10. अनेक सामयिक पर्वों का आयोजन।
11. मांगीतुंगी पधारने का निमंत्रण।
12. जम्बूद्वीप महोत्सव-1995।
13. ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी।
14. अ.भा.दिगम्बर जैन युवा परिषद का अधिवेशन।
15. माताजी की जन्मजयंति।
16. समयसार उत्तरार्द्ध की टीका का विमोचन।
17. णमोकार बैंक का उद्घाटन।
18. डॉ.अनुपम जैन गणिनी आर्यिका ज्ञानमती पुरस्कार से अलंकृत।
19. चातुर्मास निष्ठापन एवं विहार।
20. मवाना में इंद्रध्वज विधान, चंदनामती के प्रवचन।
21. पुनः हस्तिनापुर-कार्तिक मेले में बहार।
22. मांगीतुंगी यात्रा की घोषणा।
23. मांगीतुंगी का परिचय।
24. संघ सहित विहार।
25. संघ विहार की शोभा।
26. मार्ग में नगर-ग्राम-एवं संत समागम।
27. मांगीतुंगी पंचकल्याणक समिति में ब्र.रवीन्द्र कुमार जी अध्यक्ष एवं पन्नालाल पापड़ीवाल महामंत्री पद प्राप्त।

28. इंदौर गोम्मटगिरि में आयोजन।
29. सनावद में णमोकार धाम का निर्माण।
30. पावागिरि ऊन में स्वर्णभद्र आदि 4 मुनियों के चरणों की स्थापना।
31. संघ मांगीतुंगी पहुँचा।
32. विहार काल में माताजी के उपदेश।
33. माताजी के प्रभाव से मांगीतुंगी में जल समस्या हल हुई।
34. मांगीतुंगी में श्रावण सा सुहाना मौसम।
35. भक्तों का आगमन।
36. पंचकल्याणक सम्पन्न।
37. मंत्रों का अद्‌भुत प्रभाव।
38. मुनिसुव्रतनाथ अभिषेक के साथ पंचकल्याणक समाप्त।
39. अगला चातुर्मास मांगीतुंगी में हो।

काव्य पद

बीस माह तक कर प्रभावना, संघ हस्तिनापुर आया।
माताजी की पद-रज पाकर, जन-जन अतिशय हर्षाया।।
जम्बूद्वीप बिना माताजी, लगता सबको वीराना।
रोम-रोम खिल उठा भूमि का, लख माँ का वापस आना।।1032।।

हुआ व्यवस्थित संघ पूर्णतः, स्वाध्याय का क्रम जारी।
दैनिक चर्या-अध्ययन-पाठन, भजन-आरती सुखकारी।।
धीरे-धीरे कदम बढ़ाता, माह जुलाई आया है।
माताजी के चतुर्मास को, मन सबका ललचाया है।।1033।।

त्रिलोक शोध संस्थान सदस्यों, पदाधिकारियों ने मिलकर।
किया निवेदन दिल्ली-मेरठ, उत्तरअंचल ने आकर।।
धर्मपिपासू चातक हैं हम, दो-क वर्ष से बाँधे आस।
प्यास बुझाएँ धर्मामृत से, दें पिंचानवै चातुर्मास।।1034।।

करुणा कलित हृदय माताजी, कुछ क्षण सोच-विचार किया।
देख स्वपर कल्याण आपश्री, चतुर्मास स्वीकार किया।।
एकादश जुलाई पिंचानवै, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी।
चातुर्मास किया स्थापित, भक्तिपाठ-सह माताजी।।1035।।

चातुर्मास दिवस स्थापन, हुआ विरागमय आयोजन।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, किया स्वहस्त केशलुंचन।।
तृणवत् केश उखाड़ आपने, पूर्व संकल्प किया उपवास।
धर्म अहिंसा पालन करना, केशलुंच का मकसद खास।।1036।।

स्वावलम्ब का पाठ पढ़ाता, जीव सुरक्षा रहता ध्यान।
रहे देह संस्कार उपेक्षा, तन-भव-भोग विरक्ति प्रधान।।
पंचेन्द्रिय-मन हाथ-पैर का, जब हो जाता है मुंडन।
तदनंतर एकादश क्रम पर, करता साधु केशलुंचन।।1037।।

पर्वराज पर्यूषण आया, दशलक्षण का लेकर हार।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, दिया सकल प्रवचन उपहार।।
उत्तम सुखे धरति सः धर्मः, यह व्युत्पत्ति धर्म रही।
जो दुख से सुख में पहुँचा दे, परिभाषा यह धर्म कही।।1038।।

परम पूज्य श्रीमाताजी की, भाव व्यंजना सहज-सरल।
दशधर्मों का सार बताया, माताजी प्रतिदिन अविरल।।
पाप-कषायों को तजकर हम, पा सकते हैं आत्म स्वभाव।
इनके कारण ही यह चेतन, करता रहता राग-विभाव।।1039।।

उत्तम क्षमा-मार्दव-आर्जव, सत्य-शौच-संयम-तप-त्याग।
आकिंचन-ब्रह्मचर्य-धरम दश, पालन करते जो बड़भाग।।
वे निश्चित ही कर्म क्षपण कर, जा विराजते मोक्ष सदन।
दृढ़ प्रतिज्ञ हो करें सभी हम, इनका भलीभाँति पालन।।1040।।

क्षमा आत्मा का स्वभाव है, जीवन में उपयोग करें।
क्रोध-बैर को त्याग निराकुल, होने का उद्योग करें।।
क्रोध आग है इसमें जलकर, बड़े-बड़े भी खाक हुए।
इसके कारण मुनि द्वीपायन, अतिशय ही दुख भाक् हुए।।1041।।

मान महाविष कभी न करना, यहाँ न कोई नित्य-अटल।
हर पदार्थ नश्वर-क्षणभंगुर, सपने नभ के मेघमहल।।
जिसने मान किया पछताया, हो घमण्ड का नीचा सर।
अतः मान्यवर! मार्दव पालो, करके त्याग मान सत्वर।।1042।।

धर्म आर्जव कहता हमसे, कपट नहीं करना भाई।
जिसने कपट किया जीवन में, उसने ही दुर्गति पाई।।
मन हो सरल, वचन हों मीठे, कार्य प्रशंसित जग द्वारा।
माया अर्गल बन्द किये है, हमको कर्म कठिन कारा।।1043।।

सत्य धर्म का प्राण कहा है, सत्य देवता धर्मसदन।
बिना सत्य के निष्फल है सब, कितना कर लो ईश भजन।।
सत्य अहिंसा में बसता है, दया सभी धर्मों का सार।
धर्म एक है परम अहिंसा, शेष अन्य उसका विस्तार।।1044।।

लोभ मृत्यु का आमंत्रण है, लोभ जीव का शत्रु महान।
सर्व दुःख भंडार लोभ है, है संतोष सुखों की खान।।
अंतर-बाहर हो पवित्रता, होता वहीं शौच का वास।
जिसका मन होता पवित्र है, है ईश्वर का वहीं निवास।।1045।।

संयम माने आत्मनियंत्रण, तन-मन को वश में करना।
संयम बिना असंभव ही है, भव सुदीर्घ सागर तरना।।
भव सागर से पार उतरने, संयम है उत्तम नौका।
दुर्गति त्याग सुगति पाने का, मानव भव सुंदर मौका।1046।।

धर्म कल्पतरु क्षमा मूल है, मार्दव है स्कंध सबल।
आर्जव शाखा, सत्य पत्र हैं, उत्तम शौच धर्म है जल।।
उत्तम संयम-तपस्त्याग के, खिले हुए हैं पुष्प विकल।
आकिंचन-ब्रह्मचर्य मंजरी, स्वर्ग मोक्ष हैं उत्तम फल।।1047।।

कार्य सिद्ध होते उद्यम से, नहीं मनोरथ आते काम।
कर्मक्षपण-साधना करण, इसी क्रिया का तप है नाम।।
तक के बारह भेद बताये, अंतर-बाहर द्विविध प्रकार।
तप से केवलज्ञान प्राप्त हो, ज्ञान नष्ट करता संसार।।1048।।

तप कर वस्तु विकार छोड़ती, अतः त्याग है तप का फल।
बिना त्याग के सुख नहिं मिलता, तन-मन रहता सदा विकल।।
जिसने दिया उसी ने पाया, ऋतु बसंत प्रत्यक्ष प्रमाण।
पात्र त्रयों को रत्नत्रय का, देना उचित चतुर्विध दान।।1049।।

पूर्ण परिग्रह त्याग करें जो, सकलव्रती वे बड़भागी।
इंद्रिय वन में, मनमृग भटके, वश कर लेते गृहत्यागी।।
धर्म अकिंचन पाल तीर्थंकर, मोक्ष लक्ष्मी पाते हैं।
इससे कामविरागी मुनिवर, वंदनीय हो जाते हैं।।1050।।

मंदिर नहीं पूर्णता पाता, बिना शिखर-कलशारोहण।
धर्म कल्पतरु, फले मोक्षसुख, करके ब्रह्मचर्य पालन।।
बाहर विषयवासना त्यागो, भीतर डूबो आत्मगही।
निश्चित ही तुम पा जाओगे, स्वल्पकाल भवदधि का तीर।।1051।।

तत्त्वार्थसूत्र जिनवाणी-अमृत, जिसने इसका पान किया।
सफल किया अपना मानव भव, द्वादशांग को जान लिया।।
उमास्वामि आचार्यश्री ने, सप्ततत्त्व का वर्णन कर।
रत्नत्रयात्मक मोक्षमार्ग कह, प्राप्य कहा मोक्ष सुखकर।।1052।।

सूत्ररूप ग्रंथ की शैली, तत्त्वार्थसूत्र भी नाम अपर।
टीका-भाष्य लिखे बहुतों ने, किया न अक्षर इधर-उधर।।
अति प्रामाणिक ग्रंथराज यह, व्यापक ज्यों आकाश-अनंत।
गहरा जैसे महा महोदधि, पाया नहीं किसी ने अंत।।1053।।

जितनी गहरी पैठ लगाओ, उतना मिले रत्नभंडार।
सूक्ष्म है इतना, अणु है जितना, कूट भरा जिनवाणी सार।।
तीन-सत्तावन मणियों वाला, ग्रंथराज यह सुंदर हार।
जो इसको धारण करता है, शोभित होता सभी प्रकार।।1054।।

जो इसका पारायण करता, पा जाता उपवासी फल।
यदपि भव्य यह पीता रहता, जिनवाणी पीयूष सकल।।
प्रयोजनभूत सात तत्त्वों का, किया गया इसमें आख्यान।
इसके अध्ययन से मिल जाता, चतुरनुयोगी सम्यग्ज्ञान।।1055।।

पहले के अध्याय चार में, जीवतत्त्व का रहा कथन।
अजीव पाँचवें, आस्रव षट्-सत्, अष्टम बंध तत्त्व वर्णन।।
नवमें में है संवर-निर्जर, दसवें में है मोक्ष महल।
नौ तक वर्णित मोक्ष मार्ग है, दसमें वर्णित उसका फल।।1056।।

रहा काल का चक्र घूमता, आते रहे रात औ दिन।
मनी पुण्यतिथि शांतिसिंधु की, पर्व मना रक्षाबंधन।।
निर्वाणलाडू श्रेयांसनाथ जी, प्रज्ञाश्रमणी दीक्षा दिन।
मोतीसागर की जन्मजयंती, आये हर्ष-विरागी क्षण।।1057।।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र से, प्राप्त निवेदन बारम्बार।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, कार्य सम्हालें क्षेत्र पधार।।
वर्षों से हैं बंद पेटियाँ, आ खुलवायें आप श्री।
पंचकल्याणक-दिव्य शक्ति से, बनें प्रतिष्ठित प्रतिमाजी।।1058।।

सुना निवेदन माताजी ने, बारम्बार विचार किया।
सोचा मंजिल दूर बहुत है, अभी न मन स्वीकार किया।।
किन्तु भावना बीजरूप में, खोज रही उत्तम वातास।
काललब्धि के आ जाने पर, अंकुर छू लेते आकाश।।1059।।

जम्बूद्वीप महोत्सव बेला, पाँच वर्ष में आती है।
सर्वप्रथम झंडारोहण की, विधि पूरी की जाती है।।
नवनिर्मित श्री ॐ जिनालय, वासुपूज्य-शांतिजिन धाम।
वेदी प्रतिष्ठा सकल जिनालय, हुए विराजित श्री भगवान।।1060।।

ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी, हुई आयोजित इस ही काल।
अभिव्यक्ति देने को आये, शतकाधिक विद्वान् महान।।
अखिल भारतीय युवा परिषद का, सम्पन्न हुआ अधिवेशन आज।
एक हजार आठ कलशों से, गिरि अभिषेक शांति जिनराज।।1061।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, जन्मजयंती मनी अभी।
समयसार उत्तरार्द्ध की टीका, हुई विमोचित समय तभी।।
सब मंत्रों में मंत्र महत्तम, णमोकार है मंत्र अमित।
णमोकार बैंक उद्घाटन, किया चौधरीसिंह अजित।।1062।।

जैसा नाम तथा गुणधारी, श्री डॉक्टर अनुपम जैन।
जैन गणित के विश्लेषण में, रही आपकी अनुपम देन।।
भद्रपुरुष हैं, सदा समर्पित, महा आराधक, सरस्वती।
हुये अलंकृत पुरस्कार से, गणिनी आर्यिका ज्ञानमती।।1063।।

काल शिशु ने दौड़ लगाकर, की स्पर्श समय सीमा।
किया निष्ठापन चतुर्मास का, पूज्य आर्यिका गणिनी माँ।।
महावीर के चरण कमल में, सभक्ति चढ़ा लाडू निर्वाण।
हुआ मवाना में आयोजित, श्री इंद्रध्वज महाविधान।।1064।।

पूज्य चंदनामती आर्यिका, अतिशायी प्रतिभा भंडार।
शुभाशीष-प्रवचन के द्वारा, माता किया महत् उपकार।।
आया संघ पुनः गजपुर में, कार्तिक मेला आई बहार।
जैनाजैन सकल नर-नारी, पधराये पच्चीस हजार।।1065।।

मंजिल दूर उन्हें लगती है, जिस मन दृढ़ संकल्प नहीं।
पर्वत शिखर इरादे चढ़ते, बढ़ जाते हैं कदम वहीं।।
पच्चीस नवम्बर सन् पिंचानवै, को आई वह महाघड़ी।
मांगीतुंगी शुभयात्रा की, करी घोषणा माताजी।।1066।।

जैन दिगम्बर अति ही पावन, मांगीतुंगी क्षेत्र महान।
राम-हनू-सुग्रीव-नील-महा, अगणित मुनि पाया निर्वाण।।
श्री कृष्ण-बलराम बंधु द्वय, अंतकाल यहाँ पर आये।
आशंका लखकर अकाल की, भद्रबाहु-संघ पधराये।।1067।।

पर्वत एक, शिखर दो उसके, मांगी-तुंगी क्रमशः नाम।
करें वंदना भक्तिभाव से, मुनि-तीर्थंकर मूर्ति प्रणाम।।
दृढ़ संकल्प अगर हो मन में, हो जाता है कार्य सरल।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, बढ़ता गया संघ अविरल।।1068।।

पूज्य आर्यिका श्री चंदना, क्षुल्लक श्री मोतीसागर।
श्रद्धामती क्षुल्लिका संघ में, ब्रह्मचारी रविगुण आगर।।
ब्रह्मचारी श्रीचंद, कुमारी बीना-आस्था-अलका जी।
इन्दु-चंद्रिका-चलें संघ में, कुमारी श्री सारिका जी।।1069।।

गणिनी माता ज्ञानमती जी, करें गमन आगे-आगे।
श्वेत साटिका, पिछी-कमण्डलु, देख सकल श्रद्धा जागे।।
माताजी वंदामि तुमको, स्वर गूँजने लगता था।
ग्राम-नगर के आस-पास जब, संघ गुजरने लगता था।।1070।।

सकल संघ मिल धीरे-धीरे, पंक्तिबद्ध यों करे गमन।
भागीरथ के पीछे करती, जैसे गंगा अनुसरण।।
सुंदर दृश्य देख यों लगता, हंस उड़ रहे नील गगन।
लालायित रहती थीं आँखें, पुनःपुनः करने दर्शन।।1071।।

कँकरीली-पथरीली धरती, परमपूज्य माँ करें विहार।
काँटें अपना भाग्य सराहें, लता-वृक्ष मानें आभार।।
जहाँ चरण धरतीं माताजी, हो जाता था तीर्थ वहीं।
कहते लोग स्वर्ग से आये, भू ऐसे गुणवन्त नहीं।।1072।।

नगर मवाना-मेरठ-मोदी-गाजियाबाद हो प्रीतविहार।
संघ प्रविष्टा बाल-आश्रम, किया गया मंगल सत्कार।।
गजपुर से मांगीतुंगी तक, बने संघपति जो श्रीमान्।
महावीर जी स्वीट बंगाली, उनका किया गया सम्मान।।1073।।

गणिनी आर्यिका ज्ञानमती जी, विद्यानंद आचार्यश्री।
अन्यप्रभावक साधुवृंद से, हुआ सु-मंगल मिलन तभी।।
आचार्यप्रवर श्री विद्यानंद ने, मंगलकलश दिया माँ श्री।
पूर्ण सफल हो मांगी-तुंगी, मंगल यात्रा माता की।।1074।।

दिल्ली से मंगलविहार कर, पहुँचा संघ तिजारा जी।
चंद्रप्रभ के प्रथमबार ही, दर्श किए तब माताजी।।
अतिशय क्षेत्र तिजारा के जो, दर्शन करने आते हैं।
भूत-प्रेत-पैशाचिक बाधा, कष्ट सभी भग जाते हैं।।1075।।

माताजी के शुभागमन से, हुई क्षेत्र पर चहल-पहल।
आने लगे भक्त-यात्रीगण, बढ़ने लगी भीड़ प्रतिपल।।
पंचकल्याणक मांगी-तुंगी, हुई समिति का गठन यहाँ।
कर्मयोगी श्री रवीन्द्रकुमार को, चुना गया अध्यक्ष यहाँ।।1076।।

पापड़ीवाल श्री पन्नालाल को, महामंत्री पद सौंपा भार।
प्रीतिभोज यात्रा-कल्याणक, पूनमचंद किया स्वीकार।।
रचना श्री सम्मेदशिखर की, मंगल सन्निधि माताजी।
हुई भूमिपूजन विधिपूर्वक, हुआ यंत्र स्थापन भी।।1077।।

अतिशय क्षेत्र तिजारा जी से, महावीर जी पहुँचा संघ।
पायी यहीं क्षुल्लिका दीक्षा, स्मृत आये सकल प्रसंग।।
मंगल स्वागत हुआ संघ का, शांतिनाथ जी का अभिषेक।
मन्दारकल्पतरुवर स्थापना, गोम्मटगिरि कार्यक्रम एक।।1078।।

महावीर जी से विहार कर, संघ चमत्कारजी आया।
गिरि कैलाश की संरचना का, शिलान्यास यहाँ करवाया।।
संघ गया केशोरावपाटन, मुनिसुव्रत जिन दर्श किया।
दादावाड़ी कोटा में फिर, तीनलोक शिलान्यास हुआ।।1079।।

अतिशय क्षेत्र चाँदखेड़ी में, आदिनाथ प्रभु दर्श किया।
क्षेत्रझालरापाटन जाकर, शांतिनाथ अभिषेक हुआ।।
छब्बीस फरवरी सन् छियानवे, संघ पहुँचा सुसनेर नगर।
एक कुंवारी कन्या आई, हुई विरक्त प्रवचन सुनकर।।1080।।

आकर हुई संघ में शामिल, ज्ञान-ध्यान-तप-अपनाया।
रोके रुकी न घर में पल को, मात-पिता बहु समझाया।।
उपसर्ग भूमि भगवान वीर की, संघ पहुँचा उज्जैन शहर।
शिलान्यास कर तीर्थरूप का, गया संघ इंदौर नगर।।1081।।

माताजी के शुभागमन से, सब में छाया हर्ष अपार।
एक हजार आठ कलशों से, संघ हुआ मंगल सत्कार।।
माताजी से प्राप्त प्रेरणा, महिला संगठन जन्म लिया।
गोम्मटगिरि दशाब्दि महोत्सव, माँ सन्निधि सम्पन्न हुआ।।1082।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, संघ सहित प्रस्थान किया।
सिद्धक्षेत्र सिद्धवर कूट , इक्कीस मार्च आगमन हुआ।।
रेवा-कावेरी नदियों का, संगम स्थल क्षेत्र महान।
दो चक्री, दस कामदेव मुनि, अगणित गये यहाँ निर्वाण।1083।।

महावीर दिल्ली करकमलों, रचना तेरहद्वीप महान।
शिलान्यास सम्पन्न हुआ था, पूज्य आर्यिका संघ सन्निधान।।
पूज्य आर्यिका संघ यहाँ से, नगर सनावद किया प्रवास।
क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी, पहले करते यहाँ निवास।।1084।।

गणिनी ज्ञानमती माता से, प्राप्त प्रेरणा श्री प्रकाश।
भूमिदान कर तीर्थ बनाया, माँ सन्निधि हुआ शिलान्यास।।
णमोकार धाम नामांकित, रूपाबाई-अमोलक चंद।
हुईं सम्मानित रजत प्रशस्ति, सबमें छाया हर्ष अमंद।।1085।।

पावागिरी-ऊन संघ पहुँचा, नगर सनावद किया विहार।
सिद्धक्षेत्र यह, मोक्ष पधारे, यहाँ से स्वर्णभद्र मुनि चार।।
माताजी ने करी प्रेरणा, हों स्थापित मुनि चरण।
करी तपस्या, कर्म नष्ट कर , किया यहाँ से मोक्ष गमन।।1086।।

महाराष्ट्र-दिल्ली-हरियाणा, यू.पी.-एम.पी.-राजस्थान।
षट् खण्डों में कर विहार फिर, संघ पहुँचा गंतव्य सुथान।।
सांभर दूर, सिमिरिया नियरी, सुनते आये मिथक कथन।
आज सत्य हो गया संघ का, हुआ मांगी-तुंगी शुभागमन।।1087।।

सर्दी-गर्मी गिनी न मावस, एक रहा चलना ही काम।
जिनको है मंजिल ही प्यारी, करते नहीं बीच विश्राम।।
पाँच माह में पदयात्रा कर, चले कि.मी. सोलह सौ बीस।
हर्ष-विषाद न आया मन में, जब आए क्षण सुख या टीस।।1088।।

जब उत्थान मार्ग में आया, संघ सविनय स्वीकार किया।
जब क्षण आये दुःख-पीर के, समता रस का पान किया।।
परिषह्जय करते क्रम-क्रम से, पहुँच गये मंजिल के तीर।
भूल गए सब मार्ग में आये, सुमन गंध काँटों की पीर।।1089।।

गजपुर से गिरि मांगीतुंगी, सोलह बीस किलोमीटर।
समतल-बीहड़-पर्वत आये, नदियाँ-कस्बे-ग्राम-नगर।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने, सबको सद् उपदेश दिया।
दयाधर्म का मूल बताया, संयम पथ से जोड़ दिया।।1090।।

श्रावकजन षट्कर्म बताए, प्रमुख बताए पूजा-दान।
माताजी ने रत्नत्रय का, दिया सभी को सम्यग्ज्ञान।।
जैसे मेघ बरसते जाते, बढ़ते जाते हैं आगे।
वैसे संघ आर्यिकाजी से, भाग्य सभी के हैं जागे।।1091।।

जंगल-बीहड़-वन प्रदेश में, माताजी का संघ चला।
माँसाहारी जन सम्बोधे, त्याग कराया किया भला।।
सप्तव्यसन से मुक्ति दिलाकर, माँ सन्मार्ग दिखाया है।
जैसा पात्र नियम दें वैसा, यथायोग्य समझाया है।।1092।।

सच है सुमन जहाँ से निकले, निज सुगंध फैलाता है।
निम्बवृक्ष चंदन संगति से, खुद चंदन हो जाता है।।
माताजी का संघ जहाँ से, गुजरा आया वहीं सुकाल।
जीवनमैल धुला जीवों का, हुआ समुज्ज्वल, उन्नत भाल।।1093।।

मांगीतुंगी क्षेत्र वहाँ पर, फैला था विघ्नों का जाल।
जल जीवन की वहाँ समस्या, धारण रूप किए विकराल।।
माताजी आगमन पूर्व ही, बोरिंग से निकली जल धार।
मानों धरती चाह रही थी, माताजी के चरण पखार।।1094।।

जहाँ चरण पड़ते संतों के, आ जाता है वहाँ बसंत।
माताजी के शुभागमन से, हुआ यहाँ ताप का अंत।।
भारत का कोना-कोना जब, झेल रहा था ग्रीष्म तपन।
मांगी-तुंगी के मौसम में, अनुभव होता सावन तब।।1095।।

माताजी के शुभागमन से, सकलकार्य में गति आई।
त्रेपन वर्ष रुके मौसम में, चलने लग गई पुरवाई।।
जंगल बदल गया मंगल में, मांगी-तुंगी बदली काय।
भारत के पूरे अंचल से, आने लगे भक्त समुदाय।।1096।।

रत्नत्रय के मूर्तिमान त्रय, साधु संघ यहाँ पधराये।
रयणनिधि जी, ज्ञानमती जी, श्रेयांसमती के संघ आये।।
ब्रह्मचारी बाबा सूरजमल, प्रतिष्ठाचार्य सहयोगी गण।
सौधर्मादिक सब पात्रों का, हुआ समय पर शुभागमन।।1097।।

संघत्रय की मंगल सन्निधि, हुआ पताका आरोहण।
पता बताने लगी पताका, पंचकल्याण क्रिया शोभन।।
उन्निस से तेईस मई तक, सम्पन्न हुआ पंचकल्याण (क)।
उत्सव मध्य पधारे विद्वत्, राजनयिक प्रदेश प्रधान।।1098।।

अतिशय चमत्कार सम्पन्ना, माताजी व्यक्तित्व महान।
मंत्र जपन में अद्भुत शक्ति, होती है कहते विद्वान्।।
मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र के, चतुर्दिशा ओलावृष्टि।
लेकिन माँ के मंत्र जपन से, यहाँ रही शांत सृष्टि।।1099।।

मई तेईस ज्येष्ठ शुक्ला षट्, श्रीमुनिसुव्रत भगवान।
एक हजार आठ कलशों से, किया गया अभिषेक महान।।
हुआ समापन पंचकल्याणक, महाराष्ट्र बतलाई प्यास।
हे माताजी! हमें चाहिए, सन् छियानवे चातुर्मास।।1100।।

जैन समाज इंदौर सकल का, पहले ही प्रस्ताव रहा।
पौर्वापर्य विचार मातश्री, मांगीतुंगी ओर कहा।।
मिष्ठान्न बांट, घृत दीप जलाये, मेघदेवता हर्षाये।
मूसलधार हुई वर्षा से, प्रकृति गीत मंगल गाये।।1101।।

दिगम्बर मुनि और आर्यिकाएं ही करपात्र में आहार लेते हैं

णिच्चेल पाणिपत्तं उवइट्ठं परमजिणवरिंदेहिं।
एक्को वि मोक्ख मग्गो सेसा य अमग्गया सव्वे।।10।।

अर्थ–तीर्थंकर परमदेव ने नग्न मुद्रा के धारी निर्ग्रंथ मुनि को ही पाणिपात्र में आहार लेने का उपदेश दिया है। यह एक निर्ग्रंथ मुद्रा ही मोक्षमार्ग है, इसके सिवाय सब अमार्ग हैं-मोक्ष के मार्ग नहीं है।

लिंगं इच्छीणं हवदि भुंजइ पिडं सुएयकालम्मि।
अज्जिय वि एक्कवत्था वत्थावरणेण भुंजेई।।22।।

अर्थ–एक लिंग स्त्रियों का होता है, इस लिंग–आर्यिका वेष को धारण करने वाली स्त्री दिन में एक ही बार करपात्र से आहार ग्रहण करती है। वह आर्यिका एक वस्त्र–साड़ी धारण करती है और वस्त्रावरण सहित ही आहार ग्रहण करती है।

–भगवान कुंदकुंद देव, सूत्र पाहुड़

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी चातुर्मास-सन् १९९६

समाहित विषयवस्तु

1. **चातुर्मास स्थापना के साथ कार्यक्रमों की झड़ी लगी।**
2. **पर्यूषण पर्व का आगमन।**
3. **क्षेत्र के निर्माण कार्य में तीव्रता आई।**
4. **कमल जिनालय का निर्माण एवं सहस्रकूट प्रतिमाओं की स्थापना, धर्मशालाओं का निर्माण।**
5. **कल्पद्रुम मंडल विधान।**
6. **माताजी की जन्मजयंती।**
7. **माताजी के चातुर्मास से क्षेत्र का कायाकल्प।**
8. **यहीं प्रयाग तीर्थ की रूपरेखा बनी।**
9. **मांगीतुंगी पहाड़ पर 108 फुट ऊँची भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा स्थापना का विचार माताजी के मन में आया।**
10. **कार्य शीघ्र ही पूर्ण होगा।**
11. **चातुर्मास निष्ठापन और विहार।**
12. **दिल्ली प्रीतविहार में कमल मंदिर की प्रतिष्ठा एवं पंचकल्याणक।**

काव्य पद

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी पर, आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी।
चातुर्मास हुआ स्थापित, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।।
चातुर्मास शुरू होते ही, जल वर्षा की झड़ी लगी।
और इधर माताजी सन्निधि, धार्मिक कार्य हुए सविधि।।1102।।

गति आई निर्माण कार्य में, लगा यात्रियों का तांता।
धर्मामृत का पान करातीं, गणिनी ज्ञानमती माता।।
पर्वराज पर्यूषण आया, दशलक्षण का लेकर हार।
माताजी ने प्रवचन द्वारा, सबका किया परम उपकार।।1103।।

जन्मजयंती माताजी की, गई मनाई यथासमय।
कल्पद्रुम मंडल विधान भी, हुआ प्रयोजित इसी समय।।

नवनिर्मित श्रीकमल जिनालय, सहस्रकूट पर प्रतिमाएँ।
हुईं विराजित पंखुडियों पर, अतिशय ही मन को भाएँ।।।1104।।

माताजी के चतुर्मास से, हुआ क्षेत्र का कायाकल्प।
विद्युत-सड़क-सेतु बनने से, यात्री संख्या बढ़ी अनल्प।।
बनीं धर्मशालाएँ नूतन, क्षेत्र ख्याति हुआ विस्तार।
सच तो यह है माताजी से, हुआ क्षेत्र का अति उपकार।।1105।।

मांगीतुंगी क्षेत्र बैठकर, प्रयागतीर्थ पाया प्रारूप।
भूमि-वृक्ष-प्रतिमा आदिक ने, यहीं पे पाया पूर्ण स्वरूप।।
इलाहाबाद से मुख्य सड़क पर, शोभित है यह तीर्थ महान।
ऋषभदेव तपस्थली नाम से, दर्शन अवश्य करें श्रीमान्।।1106।।

मांगीतुंगी चतुर्मास की, एक अनन्य उपलब्धि रही।
माताजी के ध्यान में आयी, शिष्यों से तत्काल कही।।
मांगीतुंगी पर्वत ऊपर, आदिनाथ जिन शासन हो।
अष्टोत्तरशत फुट ऊँची इक, प्रतिमाजी स्थापन हो।।1107।।

माताजी की शिष्य मंडली, पूर्ण समर्पित श्रीगुरू।
इधर शब्द निकले गुरुमुख से, उधर हो गया काम शुरू।।
कुछेक दिनों में हम देखेंगे, आदिनाथ जिन बिम्ब महान।
मानों गिरि पर खड़े हुए हैं, ध्यानमग्न ऋषभ भगवान।।1108।।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को, हुआ समापन वर्षावास।
संघ आर्यिका ने विहार कर, पावागढ़ में किया प्रवास।।
पावागढ़ जी सिद्धक्षेत्र है, लव-कुश पाई सिद्धशिला।
किया कठिन तप, अगणित मुनिवर, सबको ही सिद्धत्व मिला।1109।।

पावागढ़ से संघ आर्यिका, अहमदाबाद नगर आया।
आचार्य शांतिनिधि छाणी जी की, जन्मभूमि में पधराया।।
फिर केशरिया-सलुम्बर होकर, हुआ उदयपुर शुभागमन।
आचार्यश्री अभिनंदन निधि के, सकल संघ से हुआ मिलन।1110।।

आयड़-पारसनाथ अणिन्दा, चित्तौड़-भीलवाड़ा आया।
मालपुरा-लावा-होकर संघ, माधोराजपुर पधराया।।

सन् छप्पन में श्री क्षुल्लिका, वीरमती ने दीक्षा ली।
वीर निधि ने, ज्ञानमती को, रूप आर्यिका दीक्षा दी।।1111।।

पदमपुरा-खानिया-जयपुर, रेवाड़ी पधराया संघ।
धारूहेड़ा से गुड़गावां, दिल्ली प्रवेश का रहा प्रसंग।।
भावपूर्ण हार्दिक अभिनंदन, सकल संघ का किया गया।
संघपति द्वय महा-प्रेम को, धन्यवाद अति दिया गया।।1112।।

प्रीतविहार कमलमंदिर की, हुई प्रतिष्ठा पंचकल्याण।
रहा सान्निध्य पूज्य माताजी, मिला सहयोग समाज-निर्माण।।
दिगम्बर जैन पंचायत दिल्ली, पदाधिकारी सब आये हैं।
शालीमार विशालसभा में, श्रीफल चरण चढ़ाये हैं।।1113।।

लाल जिनालय चौक चाँदनी, लगाये बहुत दिनों से आस।
हे माताजी! कृपा कीजिये, हमें दीजिये चातुर्मास।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती मन, भक्तजनों प्रति प्रीति अपार।
सन् सत्तानवे चतुर्मास का, अतः दिया दिल्ली उपहार।।1114।।

मंगलाचरण

यस्य देशं समाश्रित्य साधवः कुर्वते तपः।
षष्ठमंशं नृपस्तस्य लभते परिपालनात्।।

जिस देश का आश्रय पाकर साधु जन तपश्चरण करते हैं उन सबकी रक्षा के कारण वहां का राजा उस तप के छठवें भाग पुण्य को प्राप्त कर लेता है।

काले दानविधिं पात्रे, क्षेत्रे चायुःस्थितिक्षयम्।
सम्यग्बोधिफलां विद्यां नाभव्यो लब्धुमर्हति।।

योग्य काल में पात्र को दान देना, क्षेत्र (निर्वाण क्षेत्र आदि) में आयु की स्थिति समाप्त होना तथा रत्नत्रय की प्राप्तिरूपी फल से युक्त विद्या प्राप्त होना इन तीन कार्यों को अभव्य जीव कभी नहीं पाता है।

–श्री रविषेणाचार्य

लाल मंदिर, चाँदनी चौक-दिल्ली
चातुर्मास-सन् १९९७

समाहित विषयवस्तु

1. लालमंदिर नाम की सार्थकता।
2. चातुर्मास की स्थापना-सर्वहिताय सीमा बंधन।
3. चातुर्मास की व्यवस्था एवं उद्देश्य।
4. चातुर्मास से लाभ।
5. श्रावण-भादों सदाबहार माह।
6. चातुर्मास की चार उपलब्धियाँ।
7. जीवन में अमूल्य परिवर्तन आना-चातुर्मास का फल।
8. भादों का माह-व्रतों का रत्नाकर।
9. सामयिक सभी पर्व मनाए गए।
10. पर्यूषण पर्व के लिए पृथक् पाण्डाल।
11. पर्यूषण और तत्त्वार्थसूत्र की विषयवस्तु।
12. एक मंच, दो सूर्य
13. सम्मेदशिखर को सहायता राशि की प्राप्ति।
14. 24 कल्पद्रुम विधान, चौबीस माँडने।
15. मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के विचार।
16. माताजी को गणिनीप्रमुख उपाधि से अलंकृत किया।
17. मुख्यमंत्री दिल्ली ने कत्लखाने बंद कराये।
18. चातुर्मास निष्ठापन-विनयांजलि सभा और विदाई।
19. माताजी द्वारा शुभाशीष।
20. आर्यिका चंदनामती जी को प्रज्ञाश्रमणी अलंकरण।
21. क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी को धर्मदिवाकर की उपाधि।
22. दो वर्ष में माताजी का हस्तिनापुर आगमन।
23. विविध कार्यक्रमों का आयोजन।
24. धवला की सिद्धान्तचिंतामणि टीका पूर्ण, पालकी में शोभायात्रा।
25. ॐ जिनालय में पंचपरमेष्ठी प्रतिमा विराजमान।
26. समवसरण रथ प्रवर्तन का विचार।

27. समवसरण रथ का उद्घाटन दिल्ली में।
28. माताजी का सम्पूर्ण कार्यक्रमों में सानिध्य रहा।
29. रथ का भारत भ्रमण-अवर्णनीय शोभा।
30. रथ को अटलबिहारी वाजपेयी ने देशभ्रमण के लिए विदा किया।
31. माताजी का शुभाशीष प्रवचन।
32. रथ का देशभ्रमण-माताजी का गजपुर आगमन।

काव्य पद

दिल्ली रही देश का दिल है, दिल्ली का दिल लाल किला।
उसके ही सम्मुख गुलाब-सा, जैन जिनालय सुमन खिला।।
मुगलबादशाह शाहजहाँ के, शासन काल हुआ निर्माण।
लाल किले के बना सामने, अतः लाल मंदिर है नाम।।1115।।

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, हुआ स्थापित चातुर्मास।
सबको लाभ मिले इस कारण, पूरी सीमा रखा प्रवास।।
चातुर्मास शुरू होते ही, धर्म की वर्षा शुरू हुई।
सर्वप्रथम श्रीमाताजी ने, चतुर्मास की व्याख्या की।।1116।।

वर्षाऋतू शुरू होते ही, जीवराशि हो प्रादुर्भाव।
कीचड़-हरियाली के कारण, प्रासुक मारग रहे अभाव।।
उफनाने लगती हैं नदियाँ, तदा मार्ग हो जाते रुद्ध।
आवागमन प्रभावित होता, धर्म नहीं पल सकता शुद्ध।।1117।।

अतः अहिंसक श्रमण-साधुगण, रुकें एक थल करें प्रवास।
त्रस-थावर की करुणा पालें, यही कहाता चातुर्मास।।
आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से, कार्तिक कृष्ण अमावस काल।
अभय दान देते जीवों को, सम्यक्रूप अहिंसा पाल।।1118।।

चातुर्मास के दीर्घकाल में, श्रावक पाता साधु सुयोग।
ग्रंथ पठन-पाठन-लेखन में, करते श्रमण समय उपयोग।।
ज्ञान-ध्यान-तप धारण करके, करते आतम का कल्याण।
नगर निवासी संघ चतुर्विध, का रखते हैं पल-पल ध्यान।।1119।।

कृषि कार्य के लिए महत्तम, रहता है वर्षा का काल।
चार माह यदि चूक गये तो, पूर्ण वर्ष बीते दुष्काल।।
इसी तरह ऋषि कार्य के लिए, भी अत्युत्तम चारों माह।
अतः सभी जन चौमासे की, करें प्रतीक्षा अति उत्साह।।1120।।

भारतीय संस्कृति के भीतर, श्रावण-भादों सदाबहार।
प्रायः इन माहों में प्रतिदिन, आते रहते हैं त्यौहार।।
मन रहता उल्लास हमेशा, मौसम अधिक न गर्मी-शीत।
रहती है व्यापार मंदता, धर्म कार्य बढ़ जाती प्रीत।।1121।।

इन्हीं माह श्रावकजन करते, पूजा-व्रत-उपवास-विधान।
पूज्य श्रमणगण प्रवचन पाकर, करते हैं अपना कल्याण।।
चतुर्मास उपलब्धि चार हों, शुद्ध हमारा हो आचार।
विचार शुद्ध, व्यवहार शुद्ध हो, तथा शुद्ध होवे व्यापार।।1122।।

रूपान्तरण आये जीवन में, आये परिवर्तन आमूल।
पाप-कषायें समता पायें, निकलें मिथ्या-माया शूल।।
लोग हमारा शुभाचरण लख, समझें आया चातुर्मास।
श्रमण संघ आशीष मिल रहा, यह प्रभाव है उसका खास।।1123।।

माह भाद्रपद सब माहों के, बीच सुशोभित नृपति समान।
सभी व्रतों का रत्नाकर यह, दशलक्षण धर्मों की खान।।
सोलहकारण, चंदनषष्ठी, पुष्पांजली-क्षमावाणी।
रोट तीज, आकाशपंचमी, शील सप्तमी कल्याणी।।1124।।

व्रत रत्नत्रय, अनंत चतुर्दशी, निर्दोष सप्तमी-लब्धि विधान।
प्रायः प्रतिदिन व्रत आ कहता, उठो भव्य! कर लो कल्याण।।
माताजी के प्रवचन सुनकर, हर मन दौड़ी हर्ष हिलोर।
लाल जिनालय, चौक चाँदनी, रहे एक-सी संध्या-भोर।।1125।।

माताजी के सन्निधान में, गये मनाए सब त्योहार।
जन्मजयंति, पुण्यस्मृतियाँ, धार्मिक उत्सव, सभी प्रकार।।
दशरत्नों का थाल सजा जब, पर्वपर्यूषण आया है।
लालकिले के सम्मुख सुन्दर, गया पाण्डाल बनाया है।।1126।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती के, हुए यहाँ अमृत प्रवचन।
तत्त्वार्थसूत्र सह दशधर्मों पर, कहे माताजी धर्मवचन।।
तत्त्वार्थसूत्र में सात तत्त्व का, है वर्णन सूत्रों द्वारा।
उमास्वामि ने, दशाध्याय में, किया सूक्ष्म-सुंदर-प्यारा।।1127।।

गागर में सागर लहराया, बिन्दु समाया सिन्धु समान।
उसका पार नहीं पा पाये, महामुनी अतिशय विद्वान्।।
सकल जैन आगम का इसको, बीजरूप कह सकते हैं।
कितनी करें प्रशंसा इसकी, शब्द नहीं रह सकते हैं।।1128।।

प्रथम चार में जीव तत्त्व का, पंचम वर्णन किया अजीव।
छै-सात में आस्रव वर्णन, अष्ट बन्ध को तजो सदीव।।
संवर-निर्जर नवमाध्याये, मोक्ष तत्व फल दशम बखान।
व्रत उपवास आदि फल पाते, जो इसको पढ़ते गुणवान।।1129।।

माताजी के मुख मयंक से, झरते जब पीयूष वचन।
नेता-श्रोता-भव्य-भक्त का, महत्तृप्ति पाता था मन।।
ज्ञान-साधना-तपस्त्याग की, मूर्तिमन्त माता मुख से।
निकले वचन प्रभावित करते, आत्मसात होने सुख से।।1130।।

उसी सभा में प्रवचन होते, उपाध्याय श्री गुप्तिनिधि।
आकर्षित करते थे सबको, वस्तु व्यवस्थित यथाविधि।।
एक मंच पर युगल सूर्य जब , बिखराते थे ज्ञान प्रकाश।
श्रोताओं के हृदय ज्ञान का, हो जाता पर्याप्त विकास।।1131।।

लाल परेड ग्राउण्ड में बना, प्रवचन करने को पाण्डाल।
श्री अशोक जी साहू आते, माताजी को नमाते भाल।।
माताजी ने प्रवचन द्वारा, सम्मेदशिखर हित करी पुकार।
की पुरजोर अपील सभा में, प्राप्त हुई धनराशि अपार।।1132।।

चतुर्मास में रिंगरोड पर, हुआ कल्पद्रुम महाविधान।
एक साथ चौबीस जिनों के, हुए मंडल चौबिस निर्माण।।
मंडल एक, शत अष्ट भक्तगण, तीन हजार केशरी जन।
जिसने देखा, खूब सराहा, अभूतपूर्व था आयोजन।।1133।।

राष्ट्रपति, दिल्ली मुखमंत्री, दिग्गी राजा मध्यप्रदेश।
पहुँचे, बोले सुंदरतम है, ऐसा पाया अन्य न देश।।
इस गरिमामय आयोजन में, गणिनी प्रमुख उपाधि से आज।
किया अलंकृत माताजी को, सकल दिगम्बर जैन समाज।।1134।।

साहबसिंह दिल्ली मुख्यमंत्री, पुण्य कमाया कीर्तिसुयश।
बूचड़खाने बंद करने की, करी घोषणा एक दिवस।।
एक कोटि जाप्य मंत्रों के, दशम अंश से यज्ञ महान्।
सुखी रहें सब जीव जगत के, सकल लोक होवे कल्याण।।1135।।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को, हुआ निष्ठापित चातुर्मास।
चार नवम्बर तक दिल्ली में, माताजी का रहा प्रवास।।
पाँच नवम्बर को दिल्ली से, हस्तिनागपुर गमन हुआ।
इसके पूर्व हुई आयोजित, सुंदर विनयांजलि सभा।।1136।।

सकल जनों को माताजी ने, मंगल शुभ आशीष दिया।
रहें अग्रणी धर्मकार्य में, शीश नमा स्वीकार किया।।
गुरुमन होता गरिमा मंडित, शिष्यों प्रति वात्सल्य अपार।
चिन्तन सदा चला करता है, कैसे हो उनका उपकार।।1137।।

चंदनामती आर्यिका माता, उनकी एक सुशिष्या हैं।
विदुषी परम लेखिका उत्तम, श्रेष्ठ कवित्व धारिका हैं।।
वृहत् सभा में प्रज्ञाश्रमणी, किया अलंकृत ज्ञानमती।
धर्म दिवाकर की उपाधि से, हुए अलंकृत क्षुल्लक जी।।1138।।

दिल्ली नगर छोड़कर माता, श्री हस्तिनापुर आयीं।
दोक बरस पश्चात् आपश्री, जम्बूद्वीप में पधराईं।।
इस धार्मिक यात्रा के बीच में, अनेक अतिशयी कार्य हुए।
जो विकल्प आया माता मन, या माता के मुख निकले।।1139।।

माताजी के शुभागमन से, पुनः क्षेत्र रौनक आई।
एक बार फिर से मरुथल में, भागीरथी उमड़ आयी।।
यथासमय सब हुए महोत्सव, रथयात्रा-कल्याणक दिन।
पूज्य आर्यिका रत्नमती की, पुण्य तिथी का आयोजन।।1140।।

धवलग्रंथ की संस्कृत टीका, स्याद्वाद-चिन्तामणि नाम।
द्वितीय भाग का पूर्ण हुआ जब, टीका के लेखन का काम।।
प्रति पालकी विराजमान कर, शोभा यात्रा रूप दिया।
रचना-रचयित्री दोनों को, जनता बहु सम्मान दिया।।1141।।

ॐ जिनालय जम्बूद्वीप में, पंचपरमेष्ठी प्रतिमा जी।
हुईं स्थापित ओम आकृति, सकल प्रतिष्ठा यथाविधि।।
ऋषभदेव के सिद्धांतों का, अखिल देश करने प्रचार।
समवसरण रथ भ्रमण कराने, का पूज्याश्री किया विचार।।1142।।

सन् अट्ठानवै चार मार्च को, हस्तिनागपुर किया विहार।
माताजी पधराईं दिल्ली, लाल जिनालय केन्द्र मंझार।।
चैत्र कृष्ण नवमी तिथि आई, श्रीविहार रथ समवसरण।
धनंजय कुमार सांसद कर कमलों, हुआ विहार रथ उद्घाटन।।1143।।

लालकिला मैदान देहली, एतदर्थ थी सभा हुई।
साहूजी श्री रमेशचंद्र ने, समारोह अध्यक्षता की।।
गणिनी आर्यिका ज्ञानमती जी, चंदनामती आर्यिका जी।
श्रद्धामती क्षुल्लिका क्षुल्लक, मोतीसागर सन्निधि दी।।1144।।

शोभायात्रा की शोभा का, वर्णन करने शब्द नहीं।
इतना लम्बा जुलूस कि जिसका, दिखता था कोई अंत नहीं।।
दूर-दूर तक दृष्टि डालते, बस केशरिया दिखता था।
इंद्र-इंद्राणी, ध्वजा-पताका, रंग केशरिया दिखता था।।1145।।

बत्तीस बग्घियाँ, कई बैंड बाजे, हाथी-घोड़े शहनाई।
सजी झाँकियाँ सुंदर-सुंदर, शोभा कई गुनी आई।।
चाँदनी चौक से खारी बावली, पहाड़ी धीरज पहुँचे खास।
पुष्पवृष्टि-सह, जल की वृष्टि, वहीं पूज्याश्री किया प्रवास।।1146।।

भ्रमण किया पूरी दिल्ली में, महावीर जयंति आई है।
देशभ्रमण को वाजपेयी ने, रथ की करी विदाई है।।
शुभ आशीष दिया माताजी, साधुजनों के तप का फल।
षष्ठ अंश राजा पाता है, साधू पातें पुण्य सकल।।1147।।

समवसरण रथ ऋषभदेव प्रभु, सब जन मंगलकारी हो।
धर्माचारी राजगणों को, बल-शांति-सुखकारी हो।।
उत्तर में पी.एम. ने कहा, षष्ठ अंश बहुत है कम।
साधु तपस्या पुण्य अंश का, अधिक भाग चाहते हम।।1148।।

विश्वबंधुता पाठ पढ़ाने, भ्रमण करे रथ पूरे देश।
राजकीय सम्मान मिलेगा, कहीं न होगा विघ्न-क्लेश।।
तीन मई को समवसरण रथ, हरियाणा को किया गमन।
गणिनी आर्यिका ज्ञानमती का, हुआ गजपुर में शुभागमन।।1149।।

धर्म की रक्षा से ही अपनी रक्षा है

धर्मो रक्षति रक्षितो ननु हतो हन्ति ध्रुवं देहिनाम्।
हन्तव्यो न ततः स एव शरणं संसारिणां सर्वथा।।
धर्मः प्रापयतीह तत्पदमपि ध्यायान्ति यद्योगिनः।
धर्मात्सत्सुहृदस्ति नैव च सुखी नो पण्डितो धार्मिकात्।।

जो प्राणी धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। परन्तु जो प्राणी धर्म को नष्ट कर देता है, छोड़ देता है, धर्म उसको भी नष्ट कर देता है, संसार में डुबो देता है। यह ध्रुव सिद्धांत है। अतः भव्यजीवों को धर्म का हनन—त्याग कभी भी नहीं करना चाहिए। क्योंकि सर्वथा—सब प्रकार से वह धर्म ही प्राणियों के लिए शरण है—सहायक है—रक्षक है। जिस पद का योगीश्वर सदा ध्यान करते रहते हैं, यह धर्म उस मोक्ष पद को भी देने वाला है इसलिए धर्म से बढ़कर कोई सच्चा मित्र नहीं है तथा धर्मात्मा मनुष्य से बढ़कर और कोई अधिक सुखी नहीं है और न धर्मात्मा से बढ़कर अन्य कोई पंडित ही है।

— श्री पद्मनंदिआचार्य

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् १९९८

समाहित विषयवस्तु

1. चातुर्मास की स्थापना।
2. रक्षाबंधन पर्व सोत्साह मनाया गया।
3. माताजी के प्रवचन।
4. जैन धर्म के संस्थापक भगवान महावीर हैं'' इस भूल के निराकरण का सफल प्रयास-कुलपति सम्मेलन आहूत।
5. एतदर्थ माताजी ने साहित्य भी रचा-कहाँ है भूल?
6. बात शासन तक पहुँची, पाठ्य पुस्तकों में भूल का निराकरण।
7. शरद पूर्णिमा-माताजी की जन्मजयंती।
8. चातुर्मास का निष्ठापन-मेरठ को गमन।
9. कमलानगर में पंचकल्याणक।
10. हापुड़ में प्रवचन।
11. गजपुर में ऋषभदेव संस्कार शिविर का आयोजन।
12. चौधरी विश्वविद्यालय मेरठ में माताजी के प्रवचन।
13. केलिफोर्निया से शोधार्थी का आगमन।
14. भोजनशाला का शिलान्यास।
15. अक्षय तृतीया-प्रथम बार इक्षुरस आहार का दृश्य दिखाया।
16. सम्यग्ज्ञान की रजत जयंती मनी।
17. माताजी का ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव हेतु दिल्ली प्रस्थान।
18. प्रीत विहार में लघु पंचकल्याणक।
19. चातुर्मास हेतु निवेदन।

काव्य पद

नाभिराय-मरुदेवी नंदन, आदिजिनेश्वर कर वंदन।
गणिनी प्रमुख, आर्यिका शिरोमणि, ज्ञानमती जी करूँ नमन।।
माताजी ने ऋषभदेव-सह, जैन धर्म का किया प्रकाश।
उनका जम्बूद्वीप स्थली, हुआ स्थापित चातुर्मास।।1150।।

हस्तिनागपुर से ही होता, रक्षाबंधन पर्व शुरू।
सात शतक मुनियों की रक्षा, की थी वामन विष्णु गुरू।।
जम्बूद्वीप में गया मनाया, सोत्साह यह पर्व महान।
की सभक्ति मुनिवर की पूजन, सह-श्रेयांस लाडू निर्वाण।।1151।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, प्रवचन में ये शब्द कहे।
करें धर्म-धर्मी की रक्षा, जब तक तन में प्राण रहे।।
तत्त्वार्थसूत्र-दशधर्मांगों पर, पर्वराज हुए प्रवचन।
माताजी श्री ज्ञानमती से, हुए उपकृत सब ही जन।।1152।।

कालचक्र हो भेद रूप है, उत्सर्पिणि-अवसर्पिणि काल।
बीस-चार तीर्थंकर होते, बीस-चार दोनों ही काल।।
आदिनाथ पहले तीर्थंकर, अवसर्पिणि काल रहा वर्तमान।
जैन धर्म के वे संस्थापक, बतलाते हैं सकल पुराण।।1153।।

अगर और गहराई जायें, हुईं चौबीसी अनंतानंत।
आगे भी होंगी ऐसी ही, भविष्यकाल का कोई न अंत।।
जैनधर्म जन धर्म है ऐसा, कोई नहीं समझाता है।
वस्तु तत्त्व ज्ञान में झलका, सर्वज्ञ तथा बतलाता है।।1154।।

पर साधारण जनता इसको, अब तक जान न पाती है।
महावीर को जैनधर्म का, संस्थापक बतलाती है।।
वर्तमान में स्कूलों में, यही पढ़ाया जाता है।
जैनधर्म प्राचीन बहुत, इसको झुठलाया जाता है।।1155।।

भूल आज की नहीं बंधु यह, समय बहुत सा बीत गया।
लेकिन इस गलती के ऊपर, नहीं किसी का ध्यान गया।।
सोती रही समाज नींद में, परवाह न की बुधवानों ने।
बालक पढ़ते रहे झूठ, कुछ सोचा नहीं जवानों ने।।1156।।

साधू-साध्वी मौन न तोड़ा, गले में घण्टी बाँधे कौन।
नेता रहे पराङ्मुख इससे, चलता रहा सभी कुछ मौन।।
गणिनी माता ज्ञानमती ने, हमें जगाया पहली बार।
शासनकाल आवाज लगाई, कर लो जल्दी भूल-सुधार।।1157।।

एतदर्थ पूज्याश्री माता, सम्मेलन आहूत किया।
अखिल देश के कुलपतियों को, एक छत्र एकत्र किया।।
ऋषभदेव भगवान नाम था, सम्मेलन का रखा गया।
हर संभव प्रयास माँ द्वारा, भूल मिटाने किया गया।।1158।।

चार अक्टूबर सन् अट्ठानवै, सम्मेलन प्रारंभ हुआ।
कुलपति-प्रोफेसर-विद्वानों, महाकुम्भ प्रारंभ हुआ।।
प्रथमबार ही किया गया यह, इतना उत्तम ठोस प्रयास।
शुभाशीष लेने सब आये, माताजी के चरणों पास।।1158।।

माताजी साहित्य रचा बहु, उत्तम ग्रंथ, जैन इतिहास।
किया समर्पित कुलपतियों को, कहाँ है भूल जताने खास।।
विदुषी माँ ने कई उद्धरण, संग्रहीत कर वेद-पुराण।
जैन धर्म के संस्थापक हैं, पुराण पुरुष ऋषभ भगवान।।1159।।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव हैं, तीर्थंकर अंतिम महावीर।
संस्थापक तो ऋषभदेव हैं, व्याख्याता हैं श्री महावीर।।
मान्य किया यह कुलपतियों ने, पहुँचाई शासन तक बात।
भूल सुधारी पाठ्य पुस्तकों, यह सम्मेलन की सौगात।।1160।।

कुलपति सम्मेलन मंचन से, सत्य बात सम्मुख आई।
माताजी की सूझबूझ से, पुरानी भूल सुधर पाई।।
पूज्याश्री के श्रीचरणों में, करके बारम्बार प्रणाम।
सभी पधारे अपने गृह को, हम भी लेते अल्प विराम।।1161।।

शरदपूर्णिमा की तिथि आई, पूरनचंद गगन आया।
माताजी का जन्म महोत्सव, सबके मन प्रमोद लाया।।
विनयांजलि में माताजी प्रति, सबने किये प्रकट उद्गार।
सौ-सौ वर्ष जियें माताजी, करती रहें स्व-पर उपकार।।1162।।

चातुर्मास हुआ निष्ठापित, हुआ पिच्छिका परिवर्तन।
संघ सहित श्रीमाताजी ने, मेरठ को कर दिया गमन।।
चौबिस-बीस कमलों के ऊपर, हुईं विराजित प्रतिमाएँ।
कमलानगर पंचकल्याणक, शोभा हम किस विध गाएँ।।1163।।

हापुड़ के पापड़ हैं प्रसिद्ध, मेरठ से हापुड़ गमन किया।
इस जीव ने न जाने कितने, पापड़ बेले, मन शमन किया।।
पद प्रक्षालनपूर्वक पुष्पवृष्टि, आरती उतारी संघ सकल।
भीषण सर्दी के बावजूद, भक्तों की भीड़ रही अविरल।।1164।।

माता के मुख से वचन खिरे, पंच पाप को छोड़ें हम।
हम बँध कर्म के बंधन से, तप-त्याग से उनको तोड़ेहम।।
हापुड़ से लौटा संघ सकल, फिर जम्बूद्वीप में पधराया।
ऋषभदेव संस्कार शिविर के, आयोजन का अवसर आया।।1165।।

परम पूज्य माताजी ने जब, मेरठ नगर प्रवास किया।
तब चौधरी विश्वविद्यालय में, माताजी शुभ आशीष दिया।।
पूज्याश्री की सन्निधि में, इक संगोष्ठी सम्पन्न हुई।
माताजी के उद्‌बोधन से, संगोष्ठी शोभावृद्धि हुई।।1166।।

यात्रीगण की सुविधा लखकर, भोजनशाला भवन विशाल।
शिलान्यास किया माँ सन्निधि, श्रेष्ठी नेमिकुमार शुभकाल।।
जम्बूद्वीप के दर्शन करने, यात्री आते देश-विदेश।
छात्रा आई सेरीफोर मिस, केलिफोर्निया यहाँ विशेष।।1167।।

द्वादश दिवस रही माँ चरणों, खोज लिखा यहाँ शोध विषय।
शोधपत्र में किया आपने, माँ उल्लेख सह महा विनय।।
जम्बूद्वीप में गया मनाया, अक्षय तृतिया का त्यौहार।
प्रथमबार गया दृश्य दिखाया, आदिनाथ का इक्षु आहार।।1168।।

सम्यग्ज्ञान पत्रिका मासिक, पूर्ण हुए पच्चीस सु वर्ष।
रजत जयंती अंक विमोचित, हुआ देहली नगर सहर्ष।।
आचार्यश्री धर्मसागर जी, कर कमलों सम्पन्न हुआ।
लख सज्जा, सामग्री उत्तम, सबका हृदय प्रसन्न हुआ।।1169।।

माताजी श्री ज्ञानमती का, इंद्रप्रस्थ को हुआ विहार।
ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, को करने का किया विचार।।
ऋषभदेव हैं जैनधर्म के, आदि तीर्थंकर, पुरुष पुराण।
लेकिन नहीं जानती जनता, नहीं जानते हैं विद्वान्।।1170।।

माताजी दिल्ली पधराईं, बनी महोत्सव समिति विशाल।
किया स्वयं के संघ सानिध्य में, ऋषभदेव मेला भी विशाल।।
प्रीतविहार कमल मंदिर में, हुए लघु-पंचकल्याणक।
सरस्वती पूजन-आराधन, विमोचन यागमंडल विधान।।1171।।

दिल्ली के कोने-कोने से, आये प्रतिनिधि खासम खास।
सविनय किए समर्पित श्रीफल, किया निवेदन चातुर्मास।।
राजा बाजार कनाट प्लेस में, चातुर्मास किया स्वीकार।
माताजी के सन्निधान में, हुआ सर्वत्र धर्म प्रचार।।1172।।

देव का लक्षण

सो देवो जो अत्थं धम्मं कामं सुदेइ णाणं च।
सो देइ जस्स अत्थि दु अत्थो धम्मो य पव्वज्जा।।

'जो देवे सो देव' इस व्युत्पत्ति के अनुसार जो अर्थ—निधि, रत्न आदि धन को देता है, धर्म—चारित्र लक्षण धर्म को, दया लक्षण धर्म को, वस्तु स्वरूप लक्षण धर्म को, आत्मा की उपलब्धि लक्षण धर्म को और उत्तम क्षमादि दशभेद लक्षण धर्म को देता है। काम—अर्ध-मंडलीक, मंडलीक, महामंडलीक, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्ती और धरणेन्द्र के भोगरूप काम को देता है तथा केवल ज्योति—स्वरूप ज्ञान को देता है वह देव है। क्योंकि जिसके पास जो है वह वही देता है और जिनेन्द्रदेव के पास अर्थ है, धर्म है एवं प्रव्रज्या है इसीलिए वह अर्थ, धर्म और प्रव्रज्या—सर्व सौख्यमय दीक्षा को देते हैं।

— भगवान कुंदकुंददेव, बोधपाहुड़ गाथा २४

राजाबाजार कनॉट प्लेस-नई दिल्ली

चातुर्मास-सन् १९९९

समाहित विषयवस्तु

1. चातुर्मास की स्थापना।
2. सामयिक सभी पर्व मनाए गए।
3. कारगिल के शहीदों को श्रद्धांजलि।
4. ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव कार्यालय का उद्घाटन।
5. पर्यूषण पर पं.बालमुकुंद शास्त्री के प्रवचन।
6. माताजी द्वारा ऋषभदेव के 10 भवों का वर्णन।
7. अशोक विहार में इंद्रध्वज विधान।
8. शरदपूर्णिमा-माताजी का जन्मदिवस।
9. ऋषभदेव चरितम् ग्रंथ जिनचरणों में समर्पित।
10. श्री धनंजय जी वित्तमंत्री को जैनरत्न की उपाधि।
11. पं. शिवचरण लाल जी-मैनपुरी विद्वत् महासंघ के अध्यक्ष बने।
12. डॉ. अनुपम जैन ने महामंत्री पद सुशोभित किया।
13. चातुर्मास निष्ठापन।
14. अहिंसा एवं शांति प्रयास सम्मेलन में माताजी ने आचार्य महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य महाश्रमण को साहित्य भेंट किये।
15. सतघरा जिनालय में पंचकल्याणक।
16. माताजी के प्रवचन।
17. माँस निर्यात बंद करो, अभियान में माताजी ने भाग लिया।
18. बीसवीं सदी की विदाई एवं 21वीं की अगवानी पर माताजी ने धार्मिक कार्यक्रम कराये।
19. ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव सम्पन्न।
20. महोत्सव में माताजी की रचनाओं का विमोचन।
21. माताजी के प्रवचन।
22. ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव की स्मृति में कीर्तिस्तम्भ का निर्माण।
23. माताजी का हस्तिनापुर आगमन-सहस्रकूट चैत्यालय का शिलान्यास।
24. अनेक भक्ति उत्सवों का आयोजन।

25. श्रुतपंचमी पर्व पर माता जिनवाणी को ऐरावत हाथी पर विराजमान कर शोभायात्रा निकाली।
26. प्रत्येक दिन त्योहार-दिल्ली को विहार।

काव्य पद

गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि, माताजी श्री ज्ञानमती।
चातुर्मास स्वीकृति देकर, किया मात उपकार अती।।
आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, पूर्ण हुई जन-जन की आस।
जब माताजी ज्ञानमती ने, किया स्थापित चातुर्मास।।1173।।

दिल्ली के कोने-कोने में, दौड़ी धार्मिक हर्ष हिलोर।
लगे फुदकने पक्षी जैसे, लगे कुहुकने जैसे मोर।।
विनत हृदय सब दिल्लीवासी, माँ के चरणों किया नमन।
बैर-विरोध छोड़ कर सबने, नये शांतिपथ किया गमन।।1174।।

जो-जो पर्व सामने आये, किया गया सबका सत्कार।
गुरूपूर्णिमा-रक्षाबंधन, गये मनाये श्रद्धाधार।।
शासन वीर जयंती आई, पार्श्वनाथ दिवस निर्वाण।
हुए शहीद करगिल में जो, सबको दिया गया सम्मान।।1175।।

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, कार्यालय केन्द्रीय खुला।
जैन मंदिर राजा बाजार में, उद्घाटन सम्पन्न हुआ।।
पर्वराज पर्यूषण आया, मनाया भर उत्साह अती।
हुए प्रभावक प्रवचन प्रतिदिन, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।।1176।।

पं.बालमुकुन्द जी शास्त्री, नगर मुरैना आये हैं।
तत्त्वार्थसूत्र की सुंदर व्याख्या, करके खूब सुनाये हैं।।
दशावतार श्री ऋषभदेव के, उनका वर्णन प्रतिदिन एक।
माताजी ने किए भाव से, शिक्षा दी सबको इक-एक।।1177।।

अशोक विहार फेस-एक में, हुआ इंद्रध्वज महाविधान।
माताजी ने प्रवचन देकर, फिर करवाया आतम ध्यान।।
शरदपूर्णिमा के आने पर, माताजी का जन्म दिवस।
गया मनाया हार्दिकता से, गाया सबने माँ का यश।।1178।।

ऋषभदेव चरितम् संस्कृत में, हस्तलिखित माँ ग्रंथ नया।
अपने जन्म दिवस पर माता, जिनचरणों में दिया चढ़ा।।
श्री धनंजय केन्द्रीयमंत्री, धर्मकार्य में रुचि को देख।
किया अलंकृत जैनरत्न से, माताजी आशीष विशेष।।1179।।

ऋषभदेव तीर्थंकर विद्वत्, महासंघ के अधिवेशन।
शिवचरण लाल जी मैनपुरी का, अध्यक्ष रूपमें हुआ चयन।।
शिवचरण लाल जी मैनपुरी हैं, जिनवाणी उद्भट विद्वान्।
धर्म सभा में शिव वचनों से, आ जाते हैं सचमुच प्राण।।1180।।

सीधे-सादे, सरल हृदय हैं, दिखते दुर्बल हैं मजबूत।
स्वाध्याय में निरत निरंतर, जिनवाणी के श्रेष्ठ सपूत।।
जिनदर्शन-पूजन-प्रवचन हैं, जिनके जीवन की मुख्य धुरी।
सम्माननीय व्यक्तिव के धनी, श्री शिवचरण लाल जी मैनपुरी।।1181।।

ऐसे शिव अध्यक्ष को पाकर, गौरवान्वित संघ हुआ।
प्रगति शिखर की ओर बढ़ेगा, मंगल प्राप्त प्रसंग हुआ।।
आरूढ़ महामंत्री पद, श्री डॉक्टर अनुपम जैन।
उनकी उपमा स्वयं आप हैं, कर्मठ-कुशल-सकलसुख चैन।।1182।।

कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी को, हुआ समापन चातुर्मास।
माताजी सम्मेलन पहुँचीं, अहिंसा एवं शांति प्रयास।।
जैनधर्म के सिद्धांतों में, सिद्धांत अहिंसा प्रथम स्थान।
विश्वशांति इससे हो सकती, धर्म अहिंसा सुख की खान।।1183।।

महाप्रज्ञ आचार्यश्री औ, युवाचार्य श्री महाश्रमण।
सन्निधान में था आयोजित, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन।।
ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, पर संतों ने चर्चा की।
महाप्रज्ञजी भेंट में दिया, निज साहित्य श्री माताजी।।1184।।

सतघरा दि. जैन जिनालय, हुए जिनबिम्ब पंचकल्याण।
परमपूज्य श्रीमाताजी का, संघ सहित मंगल सन्निधान।।
एक जनवरी 2000 को, प्रवचन-सह आशीष दिया।
शासक-प्रजा-देश-सुखमय हो, भ्रातृभाव संदेश दिया।।1185।।

आतंकवाद हो नष्ट सदा को, वातावरण बने निर्भय।
फैले प्रेम परस्पर जग में, धर्म अहिंसा की हो जय।।

एक जनवरी दो हजार सन्, शनिवार दिन के मध्यान्ह।
माँस निर्यात बंद देश से, करने किया महा अभियान।।1186।।

सूत्रधार अभियान के रहे, जैन संत तरुणसागर।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती भी, पहुँचीं संघ लिए गागर।।
भारत संस्कृति आद्य प्रणेता, ऋषभदेव भगवान रहे।
दयाधर्म का मूल आपने, दिव्यध्वनि में वचन कहे।।1187।।

बूचड़खाने, फार्म पोल्ट्री, हिंसा के कारखाने हैं।
बंद करो ये, देश नाश के, निंदनीय कारनामे हैं।।
सर्दी इतनी दांत किटाकिट, करते रहे न लेते चैन।
उमड़े जनसैलाब ने कहा, धर्म अहिंसा भारत देश।।1188।।

सदी बीसवीं हुई विदाई, इक्किस का आगमन हुआ।
माताजी से प्राप्त प्रेरणा, भक्ति का कार्यक्रम हुआ।।
भक्तामर-चंद्रप्रभ पूजन, पार्श्वनाथ नवग्रह विधान।
आयोजित कर करी प्रार्थना, सुख शांति हो देश महान्।।1189।।

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, जोर-शोर-चहुँओर मना।
माताजी के शुभाशीष से, सर्वांग पूर्ण प्रारूप बना।।
करें प्रथमतःध्वज आरोहण, चयनित लालकिला मैदान।
गिरि कैलाश की रचना ऊपर, हों बहत्तर मूर्ति विराजमान।।1190।।

प्रतिमाओं के पंचकल्याणक, हों आयोजित उसी समय।
सहस अठोत्तर निर्वाण लाडू, करें समर्पित उसी समय।।
ऋषभदेव नाम से मेला, उसी काल हो आयोजित।
केन्द्र सरकार विश्वास प्राप्त कर, हो प्रचार सम्पूर्ण जगत्।।1191।।

माताजी ने जैसा सोचा, उससे बढ़कर कार्य हुआ।
पर्वत-प्रतिमा-पैंटिंग झाँकी, उत्तमोत्तम निर्माण हुआ।।
वाजपेयी पी.एम.आयेंगे, उत्साहित था जनगणमन।
लाल किले मैदान में होगा, अभूतपूर्व यह आयोजन।।1192।।

चार फरवरी दो हजार सन्, उषा लालिमा बिखराई।
ऋषभदेव भगवान विराजित, श्रीपालकी भी आई।।
ध्वज आरोहण किया प्रेमचंद, माताजी सन्निधि पाई।
गणिनी ज्ञानमती माताजी, ससंघ मंच पर पधराईं।।1193।।

गिरि विराजी सब प्रतिमाजी, वाजपेयी-धनंजय पड़े चरण।
मोतीसागर क्षुल्लक जी ने, शुरू किया मंगलाचरण।।
औपचारिकताएँ पूर्ण हुईं सब, दीप प्रज्वलन-उद्घाटन।
ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र ने, दिया महोत्सव परिचायन।।1194।।

कहा आर्यिका श्री चंदना, उत्सव का उद्देश्य महान्।
भूल गए हम ऋषभदेव को, जो कि हमारी है पहचान।।
जन-जन को परिचित करवाना, याद दिलाना स्वर्ण अतीत।
भारतीय संस्कृति स्थापक, हो गये कोटिक वर्ष व्यतीत।।1195।।

फैल रही है भ्रांति जनों में, उसको हमें मिटाना है।
जैन धर्म के संस्थापक हैं, ऋषभदेव समझाना है।।
पाठ्यपुस्तकें महावीर को, संस्थापक बतलाती हैं।
गलत जानकारी देती हैं, सच्चाई झुठलाती हैं।।1196।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, रहें सदा स्वाध्याय निरत।
उनकी रचना हुई विमोचित, सर्वोपयोगी ज्ञानामृत।।
षट्खंडागम ग्रंथराज पर, संस्कृत टीका लिखी गई।
सिद्धांतचिन्तामणि वाजपेयी से, माँ कृति विमोचित यहाँ हुई।1197।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, शुभाशीष के शब्द कहे।
ऋषभदेव की भक्ती द्वारा, सदा देश में शांति रहे।।
पर्यावरण विशुद्ध बनेगा, वातावरण रहेगा शुद्ध।
आतंकवाद से मुक्ति मिलेगी, होंगे नहीं परस्पर युद्ध।।1198।।

अटल बिहारी वाजपेयी जी, भारत राष्ट्र प्रधानमंत्री।
भाग्यवान हूँ, मिला खूब है, शुभाशीष श्रीमाताजी।।
अटल-धनंजय द्वय मंत्रीगण, निर्वाण लाडू चढ़ाया है।
हिमगिरि शोभा निरख-निरखकर, निज सौभाग्य मनाया है।1199।।

आगे कदम बढ़ाया उत्सव, पूरण हुए पंचकल्याण।
शिविर-सम्मेलन-अधिवेशन का, चलता रहा दौर अविरल।।
ऋषभदेव जीवन आधारित, पृष्ठभूमि ले शाकाहार।
चत्वारिंशत्, बनीं झाँकियाँ, देश विदेश हुआ प्रचार।।1200।।

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, रहा प्रशंसित देश-विदेश।
मात चंदना-मोतीसागर, रवीन्द्र कुमार श्रम किया अशेष।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, सबको शुभ आशीष मिला।
कार्यकर्ता-कर्मचारी-भक्तगण, सबका हृदय कमल खिला।।1201।।

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, यादगार हो स्थाई।
कीर्तिस्तंभ निर्माण कराया, जैन जिनालय नई दिल्ली।।
राजा-बाजार-कनाट-प्लेस में, शोभित है यह कीर्तिस्तंभ।
माताजी के सन्निधान में, गया बनाया यह स्तंभ।।1202।।

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, बिना विघ्न सम्पन्न हुआ।
संघ सहित श्रीमाताजी का, हस्तिनापुर आगमन हुआ।।
जम्बूद्वीप का तृतिय महोत्सव, तथा प्रतिष्ठा पंचकल्याण।
सहस्रकूट का शिलान्यास ये, हुए आपश्री के सन्निधान।।1203।।

तीनमूर्ति मंदिर के ऊपर, शिखर बना कलशारोहण।
पंचचत्वारिंशत् दीक्षादिन, किया गया शुभ आयोजन।।
ऋषभदेव जिन कीर्ति स्तंभ का, जम्बूद्वीप में हुआ निर्माण।
सात फुट तुंग प्रतिमाजी का, अभिषेक हुआ ऋषभ भगवान।।1204।।

इंद्रध्वज मंडल विधान का, हुआ महत्तम आयोजन।
ज्येष्ठ सुदी पंचमी आई, किया सरस्वती का पूजन।।
ऐरावत पर विराजमान हो, निकलीं माता जिनवाणी।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, की प्रवचन से अगवानी।।1205।।

इतिहासज्ञों-पुराविदों-सह, विद्वानों का सम्मेलन।
माताजी के सन्निधान में, हुआ सुष्ठुतम आयोजन।।
जैन तीर्थंकर परम्परा का, ज्ञान कराया सही-सही।
पाठ्य पुस्तकों मुद्रित भ्रामक, सामग्री स्वीकार नहीं।।1206।।

एक दिवस भी नहीं बीतता, जिसमें हो कुछ काम नहीं।
कर्मशील माँ के जीवन में, आलस या विश्राम नहीं।।
जैन समाज दिल्ली ने लगाई, माताजी प्रति भक्तिपुकार।
हस्तिनागपुर छोड़ के माता, दिल्ली को कर दिया विहार।।1207।।

कमल मंदिर, प्रीतविहार-दिल्ली
चातुर्मास-सन् २०००

समाहित विषयवस्तु

1. हस्तिनापुर से दिल्ली को विहार।
2. मेरठ में भगवान ऋषभदेव पर अनेक संगोष्ठियाँ।
3. जुलाई में चातुर्मास स्थापना।
4. आर्यिका श्री चंदनामती माताजी विरचित दशावतार नाटिका का विमोचन।
5. ज्ञानमती माताजी का संस्कृत साहित्य में योगदान कृति का विमोचन।
6. अनिल परिवार का धार्मिक सहयोग।
7. भगवान महावीर का 2600वां जन्मोत्सव-सन्निधि हेतु स्वीकृति।
8. 48वां चातुर्मास, अतः भक्तामर विधान के 48 मण्डल बने।
9. माताजी का 67वां जन्मदिवस।
10. क्षुल्लक जी का षष्ठीपूर्ति महोत्सव।
11. चातुर्मास निष्ठापन-प्रयाग गमन।
12. प्रयागतीर्थ का निर्माण-पंचकल्याणक
13. विश्वशांति महावीर विधान की रचना।
14. कुंभ के मेले में ऋषभदेव मंडप, धर्मसभा, निर्वाण महोत्सव।
15. महावीर जयंती-अहिंसा रैली का आयोजन।
16. कौशाम्बी नगरी का उद्धार-दिल्ली को विहार।

काव्य पद

बीस जून सन् दो हजार को, माताजी का हुआ विहार।
मेरठ होकर लक्ष्य बनाया, दिल्ली स्थित प्रीत विहार।।
जैसे कोई दीपमालिका, आगे बढ़ती जाती है।
वैसे-वैसे उसके पीछे, अँधियारी छा जाती है।।1208।।

माताजी ने गजपुर छोड़ा, मेरठ में पधराया संघ।
हस्तिनागपुर मातम छाया, मेरठ आया हर्ष प्रसंग।।
पुण्यवान जहाँ कदम बढ़ाते, होने लगते मंगलाचार।
बिना पुण्य के मिले न कुछ भी, दुखमय रहता है संसार।।1209।।

माताजी के कार्य सुचिंतित, अति उपयोगी होते हैं।
ज्ञानवृद्धि-सह धर्म प्रभावी, जग हितकारी होते हैं।।
ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, लक्ष्य बनाया उत्तम हो।
एक हजार आठ संगोष्ठी, यत्र-तत्र आयोजित हों।।1210।।

अतः नगर मेरठ कॉलोनी, तथा गाजियाबाद शहर।
कई संगोष्ठी हुईं आयोजित, पूज्याश्री आशिष पाकर।।
पंद्रह जुलाई सन् दो हजार को, हुआ स्थापित चातुर्मास।
धर्मामृत से बुझी चतुर्दिक्, महानगर दिल्ली की प्यास।।1211।।

पूज्य आर्यिका श्री चंदना, उच्चकोटि रचतीं साहित्य।
कवि की पहुँच वहाँ तक होती, जहाँ न जा पाता आदित्य।।
माताजी ने अति ही सुंदर, लिखी नाटिका दश अवतार।
ऋषभदेव पर, हुई विमोचित, जनता पाया नव उपहार।।1212।।

माताजी श्री ज्ञानमती का, संस्कृत भाषा अति अधिकार।
मौलिक-टीका आदि विधानों, रचा आप साहित्य अपार।।
आपश्री के योगदान की, दर्शक एक पुस्तिका का।
हुआ विमोचन इस अवसर पर, करतलध्वनिसह बीच सभा।।1213।।

कहते हैं भक्तों के वश में, रहते आये हैं भगवान।
क्या आश्चर्य यदि साधु संघ को, प्राप्त करें श्रावक पुण्यवान।।
अनिलकुमार ने माताजी से, आग्रह बारम्बार किया।
प्रीतविहार-कालोनी दिल्ली, चतुर्मास स्वीकार किया।।1214।।

जैसे पौधा सिंचित होकर, पा जाता है वृक्ष स्वरूप।
वैसे एक लघु चैत्यालय, पाया कमल जिनालय रूप।।
अनिल-अनीता, अनु-अनामिका,अतिशय पाया धार्मिक योग।
आहारदान-वैयावृत्ति में, किया समय का सद् उपयोग।।1215।।

उम्मेदमल पाण्ड्या नेता जी, जैन समाज के आए हैं।
महावीर का छब्बीस सौवाँ, जन्मोत्सव खूब मनाए हैं।।
परम पूज्य श्रीमाताजी का, सन्निधि मिले, नमाया शीश।
दक्षिण कर से माताजी ने, उन्हें दिया स्वीकृति आशीष।।1216।।

मानसरोवर-कैलाश यात्रा, हुआ सुष्ठुतम आयोजन।
द्विसप्तति रत्नप्रतिमाएँ, कैलाश विराजीं ऋषभजिन।।
प्रीतविहार में माताजी का, यह अड़तालिसी चातुर्मास।
सम्पन्ने अड़तालिस भक्तामर, बने माड़ने इतने खास।।1217।।

माताजी के जन्म दिवस का, हुआ सरसठवां आयोजन।
हुए पुरस्कृत संस्थान से, उत्तम विदुषी-विद्वत्जन।।
क्षुल्लक श्री मोतीसागर का, षष्ठी महोत्सव खूब मना।
जगत् कूप से मुझे निकाला, माताजी उपकार घना।।1218।।

प्रीतविहार के चतुर्मास में, नए तीर्थ का जन्म हुआ।
ऋषभदेव तप-केवलभूमि के, तीर्थोदय संकल्प लिया।।
चातुर्मास हुआ निष्ठापित, माताजी ने किया विहार।
प्रयागराज में संघ पधराया, किया मार्ग में धर्म प्रचार।।1219।।

हाड़ कंपाने वाली सर्दी, यदा-कदा हो पात तुषार।
कठिन शीत परिषह को सहतीं, माताजी ने किया विहार।।
त्रेपन दिन की यात्रा करके, इलाहाबाद पधराया संघ।
हिन्दुतीर्थ स्थान प्रयाग में, जैनतीर्थोदय किया प्रसंग।।1220।।

माताजी के शुभागमन से, बनने लगा तीर्थ स्थान।
एक पंचाशत फुट ऊँचाई, गिरि कैलाश हुआ निर्माण।।
चौदह फुट पद्मासन प्रतिमा, लाल वर्ण निर्मित पाषाण।
हुई विराजित बीच शिखर में, प्रथम तीर्थंकर ऋषभ भगवान।।1221।।

दीक्षाकल्याण तपोवन मंदिर, गिरि के दायीं ओर बना।
वट का वृक्ष धातु से निर्मित, पांचफुटी खड़ी प्रतिमा।।
ज्ञान कल्याणक के प्रतीक में, हुई समवसरण प्रतिकृति निर्माण।
उसमें आदिनाथ जिनवर की, चतुर्मुखी प्रतिमा विराजमान।।1222।।

माह फरवरी, दो सहस एक सन्, हुए आयोजित पंचकल्याण।
एक हजार आठ कलशों से, हुआ महामस्तक स्नान।।
हुआ समापन ऋषभदेव का, महामहोत्सव परिनिर्वाण।
घोषित किया वीर जिनवर का, छब्बीस सौंवाँ जन्मकल्याणक।।1223।।

माताजी का चिन्तन-लेखन, रुकने कभी न पाता है।
विहारकाल में भी लेखन का, समय निकल ही आता है।।
दिल्ली से प्रयागराज-मग, रचा आप महावीर विधान।
विश्वशांति हित किया समर्पित, चरण कमल वीर भगवान।।1224।।

प्रयागराज में कुंभ का मेला, भरता है प्रति द्वादश वर्ष।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, आमंत्रण पाया उत्कर्ष।।
ऋषभदेव संगम मंडप रच, आदिनाथ अभिषेक किया।
सहस अठोत्तर लाडू अर्पे, निर्वाणोत्सव सम्पन्न किया।।1225।।

प्रयागराज कुंभ मेले में, जुड़ी संसदी धर्मसभा।
माताद्वय ने ऋषभदेव की, बिखराई सिद्धांत प्रभा।।
विश्वशांति के लिए जरूरी, ऋषभदेव उच्च सिद्धांत।
स्वीकारा सब, जयकारों से, गूंजा अम्बर, सभा के अंत।।1226।।

माताजी की मंगल सन्निधि, सम्पन्ना उत्सव महावीर।
जन्म जयंति छब्बीसौवीं, इलाहाबाद गंगा के तीर।।
विश्वशांति महावीर विधान का, हुआ सुमंगल आयोजन।
अहिंसा रैली, वीर प्रभू का, सहस अठोत्तर कलश न्हवन।।1227।।

सार्थक चिंतन माताजी का, प्यासों को जलदान किया।
पद्मप्रभु कौशाम्बी नगरी, माताजी उद्धार किया।।
गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-कल्याणक, से धरती यह अति पावन।
हुई विराजित पद्मप्रभु की, सतफुट प्रतिमा मनभावन।।1228।।

ऋषभतीर्थ श्री प्रयागराज को, जीवंत स्वरूप प्रदान किया।
संघसहित श्रीमाताजी ने, दिल्ली ओर विहार किया।।
अशोक विहार से आए सज्जन, की वन्दामि बारम्बार।
चातुर्मासिक सन्निधि माता, हमें चाहिए है इस बार।।1229।।

अनुनय-विनय-समर्पण-श्रीफल, से माता सब जान लिया।
महापारखी मातृ हृदय ने, भक्तिभाव पहचान लिया।।
अशोक विहार फेस-वन दिल्ली, जन-जन छाया हर्ष अपार।
जब माताजी ज्ञानमती ने, चातुर्मास किया स्वीकार।।1230।।

श्री अशोक विहार, फेस-१, दिल्ली चातुर्मास-सन् २००१

समाहित विषयवस्तु

1. चातुर्मास की स्थापना।
2. 2600वां भगवान महावीर जन्ममहोत्सव।
3. फिरोजशाह कोटला मैदान में 26 मण्डल बनाकर विश्वशांति महावीर विधान का अभूतपूर्व आयोजन।
4. उक्त विधान की कृतियाँ विमोचित।
5. पं. शिवचरण लाल जैन मैनपुरी को गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार प्राप्त हुआ।
6. माताजी को अनेक अलंकरण प्राप्त।
7. कनॉट प्लेस में भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव।
8. आतंकवाद विरोधी रैली को आर्यिका चंदनामती जी द्वारा सम्बोधन।
9. महावीर के दीक्षा कल्याणक पर ज्ञानमती माताजी द्वारा सम्बोधन।
10. कुण्डलपुर (नालंदा) के विकास का संकल्प।
11. कुण्डलपुर में कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास।
12. जैन समाज फिरोजाबाद द्वारा माताजी को युगनायिका की उपाधि।

काव्य पद

चार जुलाई, दो हजार इक, हुआ स्थापित चातुर्मास।
आबालवृद्ध नर-नारी मन में, उमड़ा अमित-मोद-उल्लास।।
जैसे चातक मेघ बूंद पा, पाता है मन में संतोष।
वैसे ही दिल्ली के दिल में, हुआ अवतरित अनुपम तोष।।1231।।

छब्बीस-सौवां जन्म महोत्सव, मना देश में पूरे वर्ष।
परम पूज्य माताजी सन्निधि, दिल्ली में भी मना सहर्ष।।
मंगलाचरण स्वरूप में हुआ, विश्वशांति महावीर विधान।
महावीर मण्डप के भीतर, फिरोज कोटला के मैदान।।1232।।

मंडप बृहत्-विशाल एक था, छब्बिस मंडल उसकी थान।
सौ-सौ पूजक खड़े एक पर, छब्बिस-सौ मंत्रों का गान।।

प्रतिमंडल पर गये चढ़ाये, कृत मंत्रित छब्बिस सौ रत्न।
धनकुबेर वितरित करते थे, वांछक ग्रहते महा प्रयत्न।।1233।।

हुआ प्रशंसित महाकुंभ यह, भक्तिरसामृत से भरपूर।
दौड़े आये पीने वाले, कर्म शत्रु करने को चूर।।
नूतन कृति श्रीमाताजी की, विश्वशांति महावीर विधान।
करी विमोचितु इन्दु-धनंजय, सभाध्यक्ष व अतिथि प्रधान।।1234।।

जैन साहित्य क्षेत्र में किया, आप अपरिमित योग प्रदान।
हुए अलंकृत लाल शिवचरण, गणिनी ज्ञानमती सम्मान।।
परम पूज्य श्रीमाताजी हैं, विद्वानों हित कल्पलता।
विकसित होते हैं विद्वत्जन, यथा कंज लख के सविता।।1235।।

सीधे-सादे सरल हृदय हैं, दिखते दुर्बल हैं, मजबूत।
स्वाध्याय में निरत निरंतर, जिनवाणी के श्रेष्ठ सपूत।।
जिनदर्शन-पूजन-प्रवचन हैं, जिन जीवन की मुख्य धुरी।
माननीय व्यक्तित्व धनी हैं, शिवचरण लाल जी मैनपुरी।।1235।।

आर्षमार्ग औ स्याद्वाद के, उद्घोषक उद्भट विद्वान।
धर्मसभा में शिव वचनों से, आ जाते हैं सचमुच प्राण।।
हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी पर, रखते हैं समुचित अधिकार।
स्वर लहरी से निज कथनों को, दे देते सुंदर उपहार।।1236।।

परम पूज्य श्री माताजी की, प्रतिभा महा विलक्षण है।
अभीक्ष्ण ज्ञानयोगिनी माता, रुकती नहीं एक क्षण हैं।।
फलस्वरूप भर लिया आपने, ज्ञानामृत का उदधि महान्।
दिया गया इसलिए आपको, यथासमय बहुविधि सम्मान।।1237।।

आचार्यों-गुरुओं-समाज ने, विश्वविद्यालय समय-समय।
किया अलंकृत दे उपाधियाँ, माना खुद को गौरवमय।।
महाराष्ट्र राष्ट्र की गौरव, अवधप्रांत धर्ममूर्ति कहा।
दिल्ली के प्रतिनिधि मंडल ने, माँ को विश्वविभूति कहा।।1238।।

महत्त्वपूर्ण इस आयोजन में, कमलचंद जी भक्त प्रथम।
राजा श्री सिद्धार्थ रूप में, रची आपने प्रभु पूजन।।

त्रिलोक शोध संस्थान ने उन्हें, श्रेष्ठ उपाधी करी प्रदान।
दानवीर सह समाजरत्न हैं, महावीर के भक्त महान्।।1239।।

प्रकाश-पर्व दीपावलि आया, पावापुरि रचना निर्माण।
कनाट प्लेस राजा बाजार में, गया बनाया क्षेत्र महान्।।
महावीर की छब्बिस-सौवीं, जन्मजयंती वर्ष सुकाल।
गये चढ़ाए उतने लाडू, मन-वच-काय नमा के भाल।।1240।।

आज विश्व जल रहा आग में, आतंकवाद-हिंसा के जोर।
विरोध जताने निकली रैली, गया ध्यान सबका इस ओर।।
विजय चौक से गेट इण्डिया, सम्मिलित हुए हजारों जन।
शांति अहिंसा द्वारा होगी, किया चंदना सम्बोधन।।1241।।

जप-तप महाकुम्भ नामांकित, मना वीर दीक्षा कल्याण।
दो सौ साधु-साध्वी हुए उपस्थित, ताल कटोरा के मैदान।।
सम्प्रदाय का भेद न रहा, सफल रहा अति आयोजन।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, दिया सभी को सम्बोधन।।1242।।

छह जनवरी, दो हजार दो, दिल्ली के दिल बैठी बात।
नालंदा के कुण्डलपुर को, विकसित करके दें सौगात।।
यही वास्तविक पुण्य भूमि है, महावीर जन्म कल्याण।
अतः जरूरी करें शीघ्र ही, कुण्डलपुर का अभ्युत्थान।।1243।।

दृढ़ संकल्प लिया माताजी, कुण्डलपुर का करें विकास।
कर विहार माताजी पहुँचीं, महावीर के चरणों पास।।
कमलचंद दिल्ली के हाथों, कीर्ति स्तंभ शिलान्यास हुआ।
जन्मभूमि को विकसित करने, शुभारंभ इस भांति हुआ।।1244।।

परम पूज्य श्री माताजी का, दिवस आर्यिका दीक्षा का।
सैतालिसवां गया मनाया, दिन विराग की शिक्षा का।।
युगनायिका की उपाधि से, सकल समाज फिरोजाबाद।
करके अलंकृत माताजी को, माना सबने निज सौभाग्य।।1245।।

प्रयाग-इलाहाबाद चातुर्मास-सन् २००२

समाहित विषयवस्तु

1. दिल्ली से कुण्डलपुर होकर प्रयाग-इलाहाबाद।
2. ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग-नया तीर्थ निर्माण।
3. प्रयाग में कैलाशपर्वत, तपस्थली, कीर्तिस्तम्भ आदि का निर्माण।
4. चातुर्मास की स्थापना।
5. हस्तिनापुर में पंचकल्याणक।
6. हस्तिनापुर में पंचकल्याणक-सन्निधि क्षुल्लक मोतीसागर जी।
7. अनेक आयोजन सम्पन्न हुए।
8. विद्वानों को सम्मान एवं पुरस्कार।
9. महाश्रमण महावीर का विमोचन।
10. शरद पूर्णिमा-जन्मदिवस एवं त्याग दिवस।
11. न्यायाधीश सम्मेलन का आयोजन।
12. चातुर्मास निष्ठापन एवं विहार।
13. बनारस में आगमन-10 दिन प्रवास।
14. माताजी के प्रवचन।
15. आरा में वाग्देवी की उपाधि से अलंकृत हुईं।
16. पटना से कुण्डलपुर।
17. नवीन मुख्य मंदिर का शिलान्यास।
18. 11 फुट उत्तुंग खड्गासन महावीर की प्रतिमा-पंचकल्याणक।
19. 1008 कलशों से अभिषेक।
20. राजगृही का विहार-मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा की स्थापना।
21. पावापुरी में वीरप्रभु की प्रतिमा की स्थापना।
22. गुणावां में गौतमगणधर की प्रतिमा पधराई।
23. सम्मेदशिखर यात्रा।
24. तीर्थ संरक्षण के लिए सम्मेलन, माताजी ने शुभाशीष दिया।
25. आदिनाथ जयंती पर आदिनाथ जिनालय का शिलान्यास।
26. कुण्डलपुर नालंदा में महावीर जयंति पर कार्यक्रम एवं महावीर ज्योति रथ का प्रर्वतन।
27. हस्तिनापुर में क्षुल्लक मोतीसागर जी के सन्निधान में पंचकल्याणक।

28. पावापुरी में भारत के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी माताजी के दर्शनार्थ आये।
29. राजगृही में मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर का शिलान्यास।
30. कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल का निर्माण।
31. अगला चातुर्मास कुण्डलपुर में।

काव्य पद

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, प्रयागराज को किया गमन।
दिल्ली से कुण्डलपुर होकर, हुआ प्रयाग में शुभागमन।।
बीस फरवरी चरण बढ़ाए, बारह जून को रुके यहाँ।
मंजिल पाना लक्ष्य है जिनका, उन्हें बीच विश्राम कहाँ।।1246।।

परमपूज्य श्री माताजी ने, पुरातीर्थ उद्धार किये।
आवश्यक थे जहाँ, वहाँ पर, नव तीरथ निर्माण किये।।
आदिनाथ की तपस्थली यह, तीर्थ प्रयाग पुराना है।
दृढ़ संकल्प किया माताजी, सकल जगत् बतलाना है।।1247।।

इक पंचाशत फुट ऊँचा, गिरि कैलाश रचाया है।
झरना-फव्वारों के द्वारा, प्राकृतिक रूप सजाया है।।
बहत्तर जिनमंदिर उस पर, हुए स्थापित यथा विधि।
परम पूज्य श्री माताजी की, प्राप्त रही उत्तम सन्निधि।।1248।।

कीर्तिस्तम्भ भी गया बनाया, इक्तिस फुट ऊँचाई लिए।
हुईं विराजित अठ प्रतिमाजी, लख प्रमोद अतिशय्य हिये।।
विविध प्रान्त से जन आ करके, माताजी से की अरदास।
हे माताजी! प्रयागराज में, करें स्थापित चातुर्मास।।1249।।

करुणाधन, वत्सल रत्नाकर, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।
चातुर्मास किया स्थापित, ऋषभदेव जिन तपस्थली।।
सूरज दूर कहीं रहता है, प्रमुदित करता पंकज उर।
हुए प्रयोजित पंचकल्याणक, माता स्वीकृति से गजपुर।।1250।।

सहस्रकूट जिन चैत्यालय जी, छोटीशाह ने बनवाया।
पंचकल्याणक करने का भी, पुण्य उन्होंने ही पाया।।

क्षुल्लक श्री मोतीसागर का, सन्निधान की है यह याद।
गणिनी ज्ञानमती माता का, प्राप्त रहा शुभ आशीर्वाद।।1251।।

श्रावण शुक्ला मुकुट सप्तमी, निर्वाण दिवस श्री पारसनाथ।
निर्वाण लाडू किये समर्पित, प्रभु पदकंज नमाकर माथ।।
महावीर जी प्रवचन हॉल का, शिलान्यास सम्पन्न हुआ।
प्रकाश इलाहाबाद के द्वारा, पुण्य कार्य सम्पूर्ण हुआ।।1252।।

अक्टूबर में तीन दिवस का, हुआ कार्यक्रम आयोजन।
महामस्तक अभिषेक पूर्वक, ऋषभ स्थापन समवसरण।।
कुण्डलपुर राष्ट्रीय सम्मेलन, रखा गया था इन्हीं दिनों।
शास्त्री-विद्वत् संघ अधिवेशन, सम्पन्ना था इन्हीं दिनों।।1253।।

अधिवेशन के अंत समय में, किया गया विद्वत्सम्मान।
अनुपम जी को दिया गया तब, पुरस्कार ऋषभ भगवान।।
शेखरचंद-धनराज जैन को, जम्बूद्वीप सम्मान मिला।
रत्नमती पुरस्कार प्राप्ति का, नंदलाल सौभाग्य मिला।।1254।।

परम पूज्य माँ ज्ञानमती जी, करें ज्ञानियों का सम्मान।
उनके मन में रहे सदा ही, विद्वानों प्रति अतिशय मान।।
ज्ञानीजन की श्रम साधना, ज्ञानी जन ही सकते जान।
ज्ञानीजन ही ज्ञानीजन को, देते हैं आदर-सम्मान।।1255।।

बन्ध्या नहीं जान सकती है, होती क्या प्रसूति की पीर।
अज्ञानी जन मान न सकते, ज्ञान प्राप्ति है टेढ़ी खीर।।
एतदर्थ श्रीमाताजी के, चरणों बारम्बार प्रणाम।
सरस्वती अवतार आप हैं, पूर्ण आपका सार्थक नाम।।1256।।

सुमेरु चंद्र दिवाकर द्वारा, रचा ग्रंथ उन जीवनकाल।
महाश्रमण महावीर प्रकाशित, हुआ विमोचित यात्रिसुकाल।।
जिनशासन-रत्न उपाधि से, हुए अलंकृत पंडित जी।
धन्य है विद्वत्प्रेम आपका, धन्य, धन्य हो माताजी।।1257।।

शरद पूर्णिमा का पावन दिन, माताजी का जन्म-दिवस।
किया और भी पावन माँ ने, बना लिया जब त्याग दिवस।।

ऋषभदेव समवसरण विहार रथ, देशभ्रमण कर लौटा आज।
समवसरण को नव मंदिर में, किया विराजित सकल समाज।।1258।।

उनहत्तरवाँ जन्म दिवस, माँ शरदपूर्णिमा दिन पावन।
इक्यावनवाँ त्याग दिवस भी, यही पूर्णिमा मनभावन।।
गये मनाए सोत्साह द्वय, प्रयागराज में पहली बार।
परम पूज्य श्री माताजी के, चरणों अर्पित नमन हजार।।1259।।

ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ पर, हुआ सम्मेलन न्यायाधीश।
सब अधिकारीगण आकर के, माँ के चरण नमाया शीश।।
परम पूज्य श्री माताजी ने, सबको शुभ आशीष दिया।
न्याय करे जनता, निज के संग, माता सद् उपदेश दिया।।1260।।

चार नवम्बर दो हजार दो, कर चतुर्मास का निष्ठापन।
परम पूज्य श्री माताजी ने, कुण्डलपुर को किया गमन।।
प्रयागराज से चलकर माता, नगर बनारस किया प्रवेश।
सुपार्श्व-पार्श्व की जन्मभूमि यह, कण-कण पावन सकल प्रदेश।।1261।।

घाटभदैनी-भेलूपुर के, जिनालयों के कर दर्शन।
नमन किया माँ देव-शास्त्र-गुरु, आत्यंतिक आह्लादित मन।।
दश दिवसीय प्रवास काल में, हुए महत्तम आयोजन।
तदा किए श्रीमाताजी ने, जग हितकर मंगल प्रवचन।।1262।।

यह संसार महासागर है, चारों गतियाँ गर्त समान।
इनमें भ्रमण कर रहा चेतन, अनादिकाल से वश अज्ञान।।
मोहमहामदिरा को पीकर, पर को अपना मान रहा।
कालकूटसम विषय-कषाएँ, उनको अमृत जान रहा।।1263।।

इस अनित्य-क्षणभंगुर जग में, पालनीय भगवंत चरित्र।
हमें चाहिए उन पर चलकर, हम बन जायें स्वयं पवित्र।।
श्री तीर्थंकर पार्श्वनाथ का, है चरित्र अतिशयी अनन्य।
पढ़ें सुनें जीवन में लायें, कर लें अपना जीवन धन्य।।1264।।

कर विहार माताजी पहुँचीं, शुभ स्थान नगर आरा।
माताजी के जयकारों से, गूँजा धरा-गगन सारा।।

जैन समाज आरा ने माना, साक्षात् शारदा माताजी।
अतः वाग्देवी उपाधि से, किया अलंकृत माताजी।।1265।।

आरा नगरी से विहार कर, पटना में माँ किया प्रवेश।
बिहार प्रांत की रजधानी है, सेठ सुदर्शन का यह देश।।
गुलजार बाग निर्वाण स्थली, किए सुदर्शन माताजी।
शीलशिरोमणि रतन जगत में, हुईं स्मृतियाँ सब ताजी।।1266।।

उन्तीस दिसम्बर, दो हजार दो, कुण्डलपुर संघ किया प्रवेश।
महावीर की जन्मभूमि यह, अतिशय पावन वीर प्रदेश।।
बीस फरवरी दो हजार दो, दिल्ली से था किया विहार।
तेरह सौ कि.मी. चलकर आईं, नगर-ग्राम कर धर्म प्रचार।।1267।।

पचास वर्ष पश्चात् यहाँ पर, गुँजे वीर के जयकारे।
प्राचीन जिनालय हुई आरती, शत-अठ दीपक उजियारे।।
महावीर मुख्य मंदिर का, हुआ आज ही शिलान्यास।
माताजी के सन्निधान में, किया बनारस के ऋषभदास।।1268।।

ग्यारह फुट, खड्गासन प्रतिमा, महावीर की आई यहाँ।
पंचविंशति तुँग मंदिर ऊपर, वह पधराई गई यहाँ।।
श्वेत वर्ण-बेदागी-सुंदर, मन को हरने वाली है।
बार-बार लख दर्शक कहते, प्रतिमा की बलिहारी है।।1269।।

सात फरवरी से बारह तक, हुए आयोजित पंचकल्याण।
मिला सभी दिन माताजी का, मंगलमय पावन सन्निधान।।
शत, द्विसप्तति जिनप्रतिमा जी, हुईं प्रतिष्ठित, सुविराजित।
कीर्तिस्तम्भ प्राचीन जिनालय, अठ प्रतिमाजी हुईं राजित।।1270।।

सहस अठोत्तर कलशों द्वारा, हुआ महामस्तक अभिषेक।
रोम-रोम पुलके नर-नारी, दृश्य अलौकिक-मनहर देख।।
महावीर की श्वेत देह पर, पंचामृत छवि बिखराता।
बदली घिरती, फिर क्षण भर में, पूरा चाँद निकल आता।।1271।।

शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर को, माताजी संघ किया विहार।
रही भावना करें वंदना, करें कठिन कर्मों को क्षार।।

राजगृही में पहुँचीं माँ श्री, कुछ ही दिन का रहा पड़ाव।
मुनिसुव्रत-खड्गासन प्रतिमा, ग्यारह फुट के आये भाव।।।1272।।

तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत के, हुए पंचकल्याण यहाँ।
पंचशैल से मुक्ति पधारे, असंख्यात मुनिवृंद यहाँ।।
महावीर का समवसरण भी, आया यहाँ अनेकों बार।
ऐसे पावन तीर्थक्षेत्र को, नमन हमारा बारम्बार।।1273।।

राजगृही से कर विहार माँ, पावापुरी क्षेत्र आईं।
ग्यारह फुट खड्गासन प्रतिमा, वीरप्रभू की पधराई।।
पावापुर जी सिद्धक्षेत्र है, महावीर पाया निर्वाण।
उनके पावन चरण कमल में, कवि का बारम्बार प्रणाम।।1274।।

पावापुर से श्रीमाताजी, क्षेत्र गुणावाँ में आईं।
पंचफुटी पद्मासन प्रतिमा, गौतमगणधर पधराईं।।
इंद्रभूति गौतमगणधर ने, इसी क्षेत्र पाया निर्वाण।
ऐसे पावन सिद्धक्षेत्र को, कवि का बारम्बार प्रणाम।।1275।।

क्षेत्र गुणावां से विहार कर, संघ नवादा आया है।
सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर को, माँ ने लक्ष्य बनाया है।।
जैनधर्म की हो प्रभावना, इसकी भी माँ रही फिकर।
नगर-ग्राम में तूर्य बजातीं, माँ पहुँचीं सम्मेदशिखर।।1276।।

तीर्थ संरक्षण कैसे होवें, कैसे होवे तीर्थ विकास।
उक्त विषय पर हुआ सम्मेलन, सन्निधान माताजी खास।।
रहा सफल सम्मेलन अतिशय, माताजी आशीष दिया।
जैन समाज मधुबन ने मिलकर, आयोजन प्रायोज्य किया।।1277।।

आदिनाथ भगवान जयंती, शत-अठ कलशों से अभिषेक।
रथयात्रा श्रीजी की निकली, हुए अचंभित सब ही देख।।
बाहुबली मंदिर प्रांगण में, ऋषभ जिनालय हित तत्काल।
शिलान्यास सम्पन्न किया श्री, पन्नालाल पापड़ीवाल।।1278।।

महावीर जी जन्मभूमि है, नालंदा श्री कुण्डलपुर।
श्री महावीर जयंति महोत्सव, गया मनाया हर्षित उर।।

झंडारोहण-प्रभात फेरी, धर्मसभा-रथयात्रा कार्य।
पंचामृत अभिषेक वीर का, सम्पन्ना जैसा अनिवार्य।।।1279।।

वीर ज्योति रथ हुआ प्रवर्तित, वीर जयंती दिवस महान्।
नालंदा का कुण्डलपुर ही, महावीर का जन्म स्थान।।
प्रचार करेगा नगर-ग्राम में, बतलायेगा सच्ची बात।
माताजी के सद्प्रयास से, मिली धर्म की यह सौगात।।1280।।

हस्तिनागपुर जम्बूद्वीप में, हुए आयोजित पंचकल्याण।
शुभ आशीष रहा माताजी, क्षुल्लकश्री का था सन्निधान।।
विद्यमान बीस तीर्थंकर, ऋषभदेव जिनमंदिर हेतु।
हुए पंचकल्याणक गजपुर, प्रद्युम्न जैन उत्साह समेत।।1281।।

अखिल विश्व के गणतंत्रों में, भारत का सर्वोपरि नाम।
प्रथम नागरिक राष्ट्रपति हैं, डॉक्टर ए.पी.जे.ए.कलाम।।
दर्शन करने आये माँ के, श्री पावापुर क्षेत्र अनन्य।
माताजी का शुभाशीष पा, किया स्वयं का जीवन धन्य।।1282।।

राजगृही-सुव्रतजिन मंदिर, शिलान्यास सम्पन्न हुआ।
रही प्रेरणा माताजी की, उनका ही सान्निध्य रहा।।
नंद्यावर्त महल कुण्डलपुर, प्रांगण में होते निर्माण।
आत्म साधना करतीं माता, रहीं वहीं पर विराजमान।।1283।।

धीरे-धीरे समय आ गया, वर्षाऋतु-सह चातुर्मास।
जन्मभूमि समिति अधिकारी, पहुँचे माँ के चरणों पास।।
वर्षावास करें स्थापित, हे माताजी! आप यहीं।
हम चातक हैं, आप मेघ हैं, हमें छोड़ ना जाएँ कहीं।।1284।।

परम पूज्यश्री माताजी ने, सब पूर्वापर किया विचार।
क्षेत्रोन्नति को ध्यान में रखकर, चातुर्मास किया स्वीकार।।
जन्मभूमि कुण्डलपुर समिति, स्वीकृति पाकर हर्षी उर।
तीर्थ पुराना श्री कुण्डलपुर, चमकेगा सूरज बनकर।।1285।।

कुण्डलपुर (नालंदा) चातुर्मास-सन् २००३

समाहित विषयवस्तु

1. कुण्डलपुर क्षेत्र की दीन दशा।
2. कुण्डलपुर विकास के लिए चातुर्मास स्थापित।
3. अनेक निर्माण कार्यों के साथ नवग्रह शांति जिनालय का निर्माण एवं पंचकल्याणक।
4. राजगृही में वीर शासन जयंती।
5. पर्यूषण पर्व पर माताजी के अमूल्य प्रवचन।
6. कल्पद्रुम महामंडल विधान का आयोजन।
7. शरदपूर्णिमा महोत्सव।
8. तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास के लिए समिति का निर्माण।
9. पावापुरी में वीर निर्वाण महोत्सव माताजी की सन्निधि में ।
10. श्री पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव मनाने हेतु संकल्प दीप का प्रज्वलन।
11. पावापुरी में नवीन मंदिर में महावीर प्रतिमा प्रतिष्ठापित एवं पंचकल्याणक।
12. राजगृही में पंचकल्याणक।
13. कुण्डलपुर में पुनः पंचकल्याणक।
14. महावीर जयंती पर ग्रामवासियों को माँसाहार त्याग की प्रेरणा।
15. कुण्डलपुर में लघु पंचकल्याणक।

काव्य पद

महावीर की जन्मभूमि है, नालंदा श्री कुण्डलपुर।
वर्ष सैकड़ों बीते पर ना, गया किसी का ध्यान इधर।।
रुके न यात्री, साधु यहाँ पर, रहे न कोई व्यवस्था है।
धीरे-धीरे हुई क्षेत्र की, अति ही दीन अवस्था है।।1286।।

हुआ न अब तक किसी साधु का, ग्रीष्मकाल या चातुर्मास।
बोलो, होवे किस प्रकार फिर, किसी क्षेत्र का उचित विकास।।
जन्मभूमियाँ भगवन्तों की, अब प्रकाश में लाना है।
दृढ़ संकल्प किया माताजी, कुण्डलपुर चमकाना है।।1287।।

पुरा जिनालय गिरते जायें, बनते जायें नये-नये।
इसका कुछ औचित्य नहीं है, महज्जनों ने शब्द कहे।।
नये जिनालय मत बनवाओ, करो पुरानों का उद्धार।
अधिक पुण्यफल पा जाओगे, कहते जिनवच बारम्बार।।1288।।

शुभ विचार कर माताजी ने, किया कुण्डलपुर चातुर्मास।
जन्मभूमि यह महावीर की, करना इसका उचित विकास।।
माताजी का चतुर्मास यह, है ऐतिहासिक सभी प्रकार।
तीर्थक्षेत्र के खुलेंगे इससे, नवविकास के मंगलद्वार।।1289।।

नंद्यावर्त महल परिसर में, नये जिनालय बने अनेक।
नवग्रह शांति जिनालय भी है, उनमें से शुभ मंदिर एक।।
पंचकल्याणक, बिम्बप्रतिष्ठा, हुए विराजित श्रीजिनराज।
किया नमन श्रीमाताजी को, एतदर्थ सब जैन समाज।।1290।।

महावीर देशना स्थली, राजगृही है क्षेत्र महान।
शासन वीर जयंति महोत्सव, गया मनाया माँ सन्निधान।।
तीन दिवस के आयोजन में, हुआ महामस्तक अभिषेक।
धन्य हुआ विपुलाचल पर्वत, हर्षे सब नाटक को देख।।1291।।

पर्वराज पर्यूषण आया, कुण्डलपुर में हर्ष अपार।
श्रवण किए जन मंगल प्रवचन, साधु-सुमुख से पहली बार।।
माताजी ने दशधर्मों पर, जो प्रवचन मनहार दिए।
जन साधारण ने सुन उनको, अपने मन में धार लिए।।1292।।

तत्त्वार्थसूत्र श्री मोक्षशास्त्र पर, माता के प्रवचन अनमोल।
सुन लगता ज्यों दिया किसी ने, कर्णांजलि में अमृत घोल।।
अब तक समझ न पाये थे जन, मोक्षशास्त्र किस खग का नाम।
सुने शब्द श्रीमुख माताजी, किया सभी ने नम्र प्रणाम।।1293।।

महाराष्ट्र प्रांत से आया, मंडल गणिनी ज्ञानमती।
कल्पद्रुम विधान सम्पन्ना, भक्तिभाव उत्साह अती।।
श्री कुण्डलपुर प्रथम महोत्सव, गया मनाया हर्ष महान्।
माताजी की रही प्रेरणा, उनका ही पावन सन्निधान।।1294।।

अनेकानेक संस्थाओं के, अधिवेशन भी हुए मुदा।
माताजी से रचित अनेकों, हुए विमोचित ग्रंथ तदा।।
बहु विद्वत्जन हुए पुरस्कृत, किए धर्महित उत्तम कार्य।
उत्तम कार्यकर्ताओं को, पुरस्कार होते अनिवार्य।।1295।।

शरद पूर्णिमा आई है, माँ का सत्तरवाँ जन्म दिवस।
गया मनाया सोत्साह, सम्पूर्ण देश में फैला यश।।
माता हैं प्रभु भक्ती में रत, भक्त करें पूजन इनकी।
जब तक नभ में रवि-शशि-तारे, शाश्वत हो जीवन झाँकी।।1296।।

ऋषभदेव निर्वाण वर्ष में, किया अहिंसा धर्म प्रचार।
हुए पुरस्कृत पुरस्कार से, श्री वी.धनंजय कुमार।।
वर्तमान सोलह तीर्थंकर, जन्मभूमियाँ होय विकास।
बनी समिति की हुई घोषणा, माताजी सन्निधि खास।।1297।।

महावीर निर्वाणभूमि है, सिद्धक्षेत्र श्री पावापुर।
निर्वाण महोत्सव गया मनाया, माता सन्निधि हर्षित उर।।
कैलाशचंद लखनऊ चढ़ाया, प्रथमसिद्ध लाडू निर्वाण।
प्रथमबार माँ किए महोत्सव, हुईं प्रफुल्लित हर्ष महान।।1298।।

पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि, चले मनाने को।
संकल्प दीप का हुआ प्रज्ज्वलन, मन चैतन्य जगाने को।।
कुण्डलपुर सह भेलूपुर में, सम्पन्न हुआ यह यज्ञ महान।
दो हजार पाँच सन् आया, गया मनाया सकल जहान।।1299।।

पावापुर निर्वाण क्षेत्र है, महावीर जिन स्वामी का।
हुआ स्थापित नव जिनमंदिर, बिम्ब वीर अभिरामी का।।
माताजी की रही प्रेरणा, सन्निधान भी रहा ससंघ।
ग्यारह फुट खड्गासन प्रतिमा, पंचकल्याणक रहा प्रसंग।।1300।।

राजगृही जी तीर्थक्षेत्र है, मुनिसुव्रत का जन्म स्थान।
महावीर की दिव्य देशना, खिरी प्रथम इस ही स्थान।।
माताजी के सन्निधान में, सम्पन्न हुए पंचकल्याण।
मुनिसुव्रत प्रतिमा बारह फुट, खड्गासन नव मंदिर जान।।1301।।

शत-इक फुट उत्तुंग जिनालय, महावीर जिन शोभित है।
ऋषभदेव-ग्रहशांति जिनालय, सबके मन को मोहित हैं।।
माताजी के सन्निधान में, हुए कार्यक्रम मनमोहन।
कुण्डलपुर परिसर सम्पन्ने, वेदिप्रतिष्ठा-कलशारोहण।।1302।।

श्री कुण्डलपुर नालंदा ही, जन्मभूमि है श्री महावीर।
प्रस्तावित है द्वार सड़क पर, मारग दीपनगर के तीर।।
शिलान्यास सम्पन्न किया था, तरुण विधायक श्रवण कुमार।
पावन सन्निधि माताजी की, किया सहयोग रवीन्द्र कुमार।।1303।।

श्री महावीर जयंती आई, सह उत्साह मनाई है।
नंद्यावर्त महल परिसर में, नई चेतना आई है।।
ग्रामवासियों से मिलकर के, शाकाहार प्रचार किया।
अण्डा-मछली-माँस आदि को, कई जीवन भर त्याग किया।।1304।।

नंद्यावर्त महल परिसर में, माताजी के संघ सन्निधान।
चंद्र-शांति-पारस बिम्बों के, हुए लघू पंचकल्याण।।
जन्मभूमि श्री कुण्डलपुर की, समिति पधारी माँ के पास।
किया निवेदन, श्रीफल अर्पण, करें यहीं पर चातुर्मास।।1305।।

कुण्डलपुर (नालंदा) चातुर्मास-सन् २००४

समाहित विषयवस्तु

1. कुण्डलपुर का विकास और माताजी का प्रयास।
2. चातुर्मास की स्थापना।
3. त्रिकाल-चौबीसी विराजमान।
4. विश्वशांति महावीर विधान का आयोजन।
5. क्षुल्लिका श्रद्धामति का स्वर्गारोहण।
6. कुण्डलपुर द्वितीय महोत्सव का आयोजन।
7. शरदपूर्णिमा पर मेरी स्मृतियाँ एवं कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन।
8. महावीर निर्वाण महोत्सव-पावापुरी में।
9. कुण्डलपुर में कलशारोहण एवं मानस्तंभ प्रतिष्ठा।
10. चातुर्मास निष्ठापन एवं बनारस को गमन।
11. राजगृही-गुणावां में अनेक कार्यक्रम।
12. वाराणसी में तृतीय सहस्राब्दि समारोह का उद्घाटन।
13. भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी महावीर जैन शब्दकोश का विमोचन।
14. सिंहपुरी (सारनाथ) में पंचकल्याणक।
15. टिकैतनगर में पंचकल्याणक आदि।
16. दीप प्रज्ज्वलन कर मुख्यमंत्री द्वारा पार्श्वनाथ वर्ष का शुभारंभ।
17. अयोध्या में ऋषभ जयंति महोत्सव।
18. टिकैतनगर में कलशारोहण एवं माताजी का नागरिक अभिनंदन।
19. माताजी को भारतभूषण का अलंकरण।
20. त्रिलोकपुर में महावीर जयंति।
21. महमूदाबाद में 50वाँ आर्यिकादीक्षा समारोह।
22. अहिच्छत्र में भगवान पार्श्वनाथ का महामस्तकाभिषेक।
23. मुरादाबाद में कीर्तिस्तंभ का शिलान्यास।
24. हस्तिनापुर के लिए विहार-माताजी बीमार।।
25. माताजी का स्वास्थ्य लाभ, भगवान शांतिनाथ का अभिषेक।
26. श्रुतपंचमी पर्व मनाया गया।

काव्य पद

नंद्यावर्त महल कुण्डलपुर, महावीर का जन्मस्थान।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, निज पुरुषार्थ किया उत्थान।।
महावीर की गौरव-गरिमा, के अनुकूल बनाया क्षेत्र।
रोम-रोम लख हर्षित होता, हर्षित हो जाते हैं नेत्र।।1306।।

कुण्डलपुर का भव्य रूप जो, हमें दिखाई देता है।
कोना-कोना यात्रिजनों का, मन बरबस हर लेता है।।
रही प्रेरणा माताजी की, रवीन्द्र कुमार का रहा प्रयास।
अल्पकाल में हुआ क्षेत्र का, कई वर्षों सा श्रेष्ठ विकास।।1307।।

माताजी का चिंतन अद्भुत, महाविलक्षण शैली कार्य।
शुरू कार्य को नही छोड़तीं, पूरा ही करतीं अनिवार्य।।
जब तक पूरा एक न होता, हाथ न लेतीं दूजा काम।
पूरी शक्ति लगा देती हैं, रहा सफलता का यह राज।।1308।।

हस्तिनागपुर, क्षेत्र अयोध्या, प्रयागराज प्रत्यक्ष प्रमाण।
क्रमशःक्रमशः कदम बढ़ातीं, करतीं ठोस महत्तम काम।।
विकासशील क्षेत्र कुण्डलपुर, होता इसका और विकास।
कर स्वीकार निवेदन समिति, किया यहीं पर चातुर्मास।।1309।।

एक जुलाई, दो हजार चतु, माताजी ने चातुर्मास।
किया स्थापित संघ साथ में, प्रथम लक्ष्य रख आत्मविकास।।
मात्र प्रेरणा देती हैं माँ, या फिर देतीं आशीर्वाद।
पदाधिकारिगण पा जाते हैं, शुभाशीष से ऊर्जा खाद।।1310।।

हुईं प्रतिष्ठित दो हजार त्रय, चौबीसी अतीत-वर्तमान।
दो जुलाई को हुईं विराजित, प्रथम-द्वितिय मंजिल में जान।।
पर्यूषण कुण्डलपुर आया, महाराष्ट्र मंडल ज्ञानमती।
विश्वशांति महावीर विधान को, भक्तिभाव से किया अती।।1311।।

पूज्य क्षुल्लिका श्रद्धामति जी, शिष्या माता ज्ञानमती।
महामंत्र को जपते-जपते, गयीं पर्यूषण स्वर्गगति।।

द्वितीय महोत्सव श्री कुण्डलपुर, गया मनाया हर्ष उमंग।
झंडारोहण, दीपप्रज्ज्वलन, पुरस्कार संगोष्ठी संग।।1312।।

अट्ठाईस अक्टूबर शरद पूर्णिमा, माताजी का जन्मदिवस।
विनयांजलि अर्पण सह सबने, माताजी का गाया यश।।
आत्मकथा मेरी स्मृतियाँ, कुण्डलपुर अभिनंदन ग्रंथ।
हुए विमोचित कहा सभी ने, हैं दोनों ही उत्तम ग्रंथ।।1313।।

आई अमावस कार्तिक कृष्णा, श्री महावीर दिवस निर्वाण।
द्वितिय वर्ष भी गया मनाया, पावापुर माँ के सन्निधान।।
नवनिर्मित महावीर जिनालय, किया गया कलशारोहण।
मानस्तंभ में हुईं विराजित, आठ मूर्तियाँ द्विविधासन।।1314।।

कुण्डलपुर से वापस आकर, किया समापन चातुर्मास।
बाईस माह के अल्पकाल में, हुआ क्षेत्र पर्याप्त विकास।।
महावीर की जन्मभूमि से, पार्श्व-सुपारस जन्मस्थान।
माह नवम्बर में माताजी, किया बनारस को प्रस्थान।।1315।।

माताजी के सन्निधान में, सम्पन्ने बहु आयोजन।
राजगृही सुव्रत-नव मंदिर, किया गया कलशारोहण।।
मानस्तंभ की वेदी शुद्धि, लाल वर्ण प्रतिमा महावीर।
हुई उद्घाटित पंच फुट ऊँची, श्री विद्यालय में राजगीर।।1316।।

क्षेत्र गुणावां गौतम गणधर, निर्वाणस्थली कहलाती है।
उनकी श्वेत-पंचफुट-प्रतिमा, खड़ी गई पधराई है।।
तेईस दिसम्बर दो हजार चतु, नगर बनारस हुआ प्रवेश।
भेलूपुर जिनमंदिर ठहरीं, पार्श्वनाथ जन्में जिस देश।।1317।।

गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि, माताजी श्री ज्ञानमती।
पारसनाथ जन्मस्थली, उत्सव तृतिय सहस्राब्दी।।
मातृप्रेरणा-सह सन्निधि में, हुआ महोत्सव उद्घाटन।
छह जनवरी, पाँच दो सहस, प्रातः कर झंडा वंदन।।1318।।

सकल जैन समाज काशी ने, की प्रभावना शक्ति लगा।
रजत पालकी किये विराजित, श्रीजी का जुलूस निकला।।

बैण्ड-बग्घियाँ, हाथी-घोड़े, इंद्र-इंद्राणी अनेकानेक।
मैदागिन से भेलूपुर में, श्रीजी हुआ जन्म अभिषेक।।1319।।

मध्यकाल में संघ सन्निधि, हुई आयोजित धर्मसभा।
हिन्दी-इंग्लिश शब्दकोश की, इसमें बिखरी शुभ्रप्रभा।।
प्रज्ञाश्रमणी मात चंदना, ने इसका निर्माण किया।
पन्द्रह हजार जैन शब्दों को, माताजी विस्तार दिया।।1320।।

तीर्थंकर श्रेयांसनाथ की, जन्मभूमि है सिंहपुरी।
पंचकल्याणक हुए सन्निधि, परमपूज्य श्री माताजी।।
सारनाथ से चल प्रयाग हो, टिकैतनगर में किया प्रवेश।
माताजी की जन्मभूमि यह, बाल्यकाल बीता इस देश।।1321।।

टिकैतनगर में नया जिनालय, गया बनाया है इस वर्ष।
सहस्रकूट-नूतन चौबीसी, पंचकल्याणक हुए सहर्ष।।
परमपूज्य श्री माताजी का, मंगलमय सान्निध्य रहा।
सामाजिक उत्साह अनोखा, शब्दों में नहिं जाए कहा।।1322।।

बालक-वृद्ध सभी ने मिलकर, सब प्रतिमाएँ रातों-रात।
जिनमंदिर में करीं विराजित, अल्पकाल हाथों ही हाथ।।
मूलनायक महावीर जिनेश्वर, का माना यह अतिशय काम।
चमत्कारी महावीर जिनालय, रखा गया तब सार्थक नाम।।1323।।

पूर्ण हुए निर्विघ्न रीति से, पंचकल्याणक कार्य सकल।
माताजी की मंगल सन्निधि, होते सब ही कार्य सफल।।
पार्श्वनाथ प्रतिमा के सम्मुख, शुभ दीप प्रज्ज्वलित किया।
यू.पी. मुखमंत्री यादव ने, पार्श्ववर्ष आरम्भ किया।।1324।।

कर विहार माताजी पहुँचीं, शाश्वत तीर्थ अयोध्या जी।
संत-महंत-नगरवासीजन, किया सु-स्वागत माताजी।।
ऋषभ जयंती की बेला में, हुआ महामस्तकाभिषेक।
रोम-रोम जन हर्ष मनाया, ऋषभ जिनेन्द्र प्रतिमा को देख।।325।।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या से चल, संघ टिकैतनगर आया।
नूतन-भव्य जिनालय ऊपर, केशरिया ध्वज लहराया।।

कलशारोहण हुआ साथ ही, माताजी पावन सन्निधान।
परम पूज्य श्री माताजी का, किया गया नागरिक सम्मान।।1326।।

शैशव में श्री मैनाबाई, निज परिवार रहीं भूषण।
बाल्यकाल में शिक्षा पाकर, बनीं नगर की आभूषण।।
व्रत धारण कर साध्वी पद से, हुआ सुशोभित धर्म-समाज।
सबने मिल दी माताजी को, भारतभूषण उपाधि आज।।1327।।

कार्यक्रम सम्पन्न अनंतर, माताजी का हुआ गमन।
अतिशय क्षेत्र श्रीत्रिलोकपुर, हुआ संघ का शुभागमन।।
श्री महावीर जयंति महोत्सव, गया मनाया सह-उल्लास।
वर्ष पंचाशत आर्यिका दीक्षा, मना नगर महमूदाबाद।।1328।।

तृतीय शताब्दी वर्ष महोत्सव, पार्श्वनाथ भगवान श्री।
के अंतर्गत अहिच्छत्र में, उत्सव की शोभा बिखरी।।
भव्य जिनालय तीस चौबीसी, पारस प्रतिमा अद्‌भुत एक।
नायक मूल तिखाल जिनेश्वर, हुआ महामस्तकाभिषेक।।1329।।

अहिच्छत्र में पार्श्वनाथ को, माताजी ने किया प्रणाम।
कर विहार संघ पधराया, नगर मुरादाबाद मुकाम।।
माताजी से प्राप्त प्रेरणा, कीर्तिस्तम्भ का शिलान्यास।
किया गया कॉलिज परिसर में, द्वारा सुरेशचंद्र जी खास।।1330।।

साधू एक न थल रुकते हैं, जैसे बहता सरिता जल।
नहीं किसी के रोके रुकता, कहता जाता है कल-कल।।
कर विहार माताजी पहुँचीं, शांतिनाथ के चरण कमल।
हर्ष मनाते लगा फूलकर, परिसर जम्बूद्वीप सकल।।1331।।

मई माह का तपता सूरज, भू पर बरसाता था आग।
पंथी-पंछी राह न चलते, कोई न करता घर का त्याग।।
ऐसे में विहार कर माता, बढ़ती जाती थीं सत्वर।
अतः स्वास्थ्य प्रतिकूल हो गया, माँ को लगा सताने ज्वर।।1332।।

लगातार दश-बीस दिनों में, ज्वर ने धरा रूप विकराल।
फलस्वरूप श्लथगात हो गया, रहा स्वस्थ पर आत्म मराल।।

अतः पूर्ण की सकल क्रियाएँ, सतत जागरूक रहकर।
हुई देश में चिन्ता सबको, माँ की रुग्ण दशा सुनकर।।1333।।

किए जाप्य-विधान भक्तों ने, माता स्वास्थ्य सु-लाभ करें।
जब तक गंगा-यमुना बहती, तब तक जग कल्याण करें।।
मुनी-आर्यिका के संघों से, शुभ सूचना आई है।
माताजी के स्वास्थ्य लाभ की, हमने भावना भाई है।।1334।।

आयु कर्म यदि शेष जीव का, साथ पुण्य देता सहयोग।
तब तो वह पा जाता निश्चित, जीवन-स्वास्थ्य लाभ का योग।।
फलतः स्वस्थ हुईं माताजी, जैसे दीपक पाकर नेह।
आत्मबली ही जय पाते हैं, सहयोगी बन जाती देह।।1335।।

मंगलकारी शुभ दिन आया, पाँच जून, सन् पाँच रहा।
जब मुस्काकर माताजी ने, सबको शुभ आशीष कहा।।
भक्तों का मुर्झाया चेहरा, सुनकर खिलता कमल हुआ।
गिरि सुमेरु पर शांतिनाथ जिन, पंचामृत अभिषेक हुआ।।1336।।

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी शुभ दिन, श्रुतपंचमी पर्व महान।
गया मनाया धूमधाम से, किए सरस्वती माँ गुणगान।।
पंचामृत अभिषेक हुआ माँ, हुई महापूजा सम्पन्न।
हे वाग्‌देवी! मुझ सेवक पर, कृपा करें, नित रहें प्रसन्न।।1337।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास

सन् २००५-२००६

समाहित विषयवस्तु

1. चातुर्मास की स्थापना।
2. जम्बूद्वीप-शोधार्थियों के विचार अति सुंदर।
3. सामयिक सभी पर्वों का आयोजन।
4. ''ज्ञानमती जी का साहित्यिक अवदान'' पर विद्वत्संगोष्ठी।
5. क्षुल्लक मोतीसागर जी का आलेख सर्व प्रशंसित रहा।
6. विद्वानों के प्रश्न, माताजी के उत्तर।
7. माताजी द्वारा ध्यान साधना का प्रशिक्षण।
8. शांतिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक।
9. माताजी का बहत्तरवां जन्मदिवस।
10. तेरहद्वीप रचना निर्माण का शिलान्यास।
11. काकंदी तीर्थक्षेत्र की विकास योजना।
12. माताजी का दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव अभूतपूर्व रहा।
13. माताजी का विद्वानों के प्रति अपार वात्सल्य।
14. डॉ.शेखरचंद ''गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार'' से विभूषित
15. चातुर्मास निष्ठापन एवं विहार।
16. क्षेत्र गिरनार सुरक्षा की प्रेरणा।
17. षट्खंडागम की 14वीं पुस्तक की टीका पूर्ण।
18. श्रवणबेलगोल अभिषेक में अपने प्रतिनिधि भेजे।
19. अयोध्या में ऋषभदेव जन्मोत्सव।
20. प्रयाग में भगवान ऋषभदेव दीक्षाकल्याणक का आयोजन।
21. कुण्डलपुर में महावीर जयंती का आयोजन।
22. दीक्षा स्वर्ण जयंती में 12 भट्टारक पधारे।
23. माताजी को ''ऐतिहासिक आर्यिका'' की उपाधि।
24. आचार्य बाहुबलीसागर द्वारा नूतन पिच्छी तथा ''ज्ञानचंद्रिका'' की उपाधि प्रदान।
25. अक्षय तृतीया, श्रुतपंचमी आदि पर्वों का आयोजन।

काव्य पद

मानव जीवन एक रहँट है, सुख-दुख आते-जाते हैं।
जीवों की यदि आयु शेष हो, स्वास्थ्य लाभ पा जाते हैं।।
श्रीमाताजी रोग-मुक्त हो, हुईं समर्पित साध्वाचार।
वर्षाऋतु का हुआ आगमन, शुरू हो गये मेघ-मल्हार।।1338।।

चातुर्मास समय नियराया, दिल्ली दौड़ी आई है।
अवध-विहार सभी ने आकर, माँ को टेर लगाई है।।
चतुर्मास हो हस्तिनागपुर, हमको शुभ आशीष मिले।
माँ स्वीकृति पा, सकल जनों के, मानस-मुख अरविन्द खिले।।1339।।

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।
चातुर्मास किया स्थापित, त्रयतीर्थंकर जन्मथली।।
साथ आर्यिका अभयमती जी, तथा क्षुल्लिका शांतिमती।
प्रज्ञाश्रमणी मात चंदना, मोतीसागर क्षुल्लक जी।।1340।।

लोहा चुम्बक को पा करके, आकर्षित हो जाता है।
वैसे ही सन्तों के चरणों, भक्त भी खिंचता आता है।।
जम्बूद्वीप स्वर्ग धरती पर, फिर सन्तों का चातुर्मास।
उमड़ पड़े जत्थे के जत्थे, लेकर माँ दर्शन की प्यास।।1341।।

कुछ शोधार्थीजन विदेश से, आये माँ की करके याद।
नमन किया पावन चरणों में, पाया मंगल आशीर्वाद।।
जम्बूद्वीप की प्रतिकृति देखी, जिनायतनों के दर्शन कर।
बोले-धन्य-धन्य हो माता, सब रचनाएँ अति सुंदर।।1342।।

उनने देखा समझा आकर, जैन साधु आचार कठिन।
एक बार, दिन, नीरस भोजन, उसी समय जल करें ग्रहण।।
ज्ञान-ध्यान-तपलीन सर्वदा, विषयाशा से कोसों दूर।
हुए प्रभावित, साधू चर्या, मुश्किल चढ़ना पेड़ खजूर।।1343।।

परम पूज्य माताजी सन्निधि, हुए धार्मिक आयोजन।
पर्व अठाई, गुरू पूर्णिमा, श्री वीरसागर पूजन।।
महावीर जिन कमल जिनालय, किया गया पावन अभिषेक।
शासन वीर जयंति महोत्सव, रोम-रोम हर्षे सब देख।।।1344।।

मुकुट सप्तमी, रक्षाबंधन, शांतिसिंधु की पुण्यतिथि।
पर्व पर्यूषण, रत्नमालिका, गये मनाये यथाविधि।।
जम्बूद्वीपी महामहोत्सव, पाँच वर्ष में आया है।
गिरि सुमेरु अभिषेक जिनेश्वर, करके सभी मनाया है।।1345।।

गणिनी ज्ञानमती जी द्वारा, रचा गया साहित्य महान।
संस्कृत-हिन्दी ग्रंथों द्वारा, दिया गया अनुपम अवदान।।
सफल रही विद्वत्संगोष्ठी, आये शतकाधिक विद्वान्।
सरस्वती अवतार हैं माता, कहकर किए सभी गुणगान।।1346।।

कल्पद्रुम मंडल विधान है, अनुपम रचना पूज्याश्री।
शोधपूर्ण आलेख लिखा था, मोतीसागर क्षुल्लक जी।।
सर्वमनीषी विद्वानों से, हुआ प्रशंसित करतल ध्वनि।
माताजी के जयकारों से, गूँज उठे अम्बर-अवनि।।1347।।

ज्ञान-पिपासू विद्वज्जन ने, माताजी से प्रश्न किए।
विदुषी परम पूज्य माताजी, सबको उत्तर तुरंत दिए।।
आगमसम्मत समाधान सुन, सबका हुआ प्रफुल्लित मन।
हाथ जोड़ माँ के चरणों में, विद्वत्-विदुषी किया नमन।।1348।।

लौकिक-धार्मिक सब कार्यों में, ध्यान महत्तम कारण है।
धर्मध्यान संसार जीव के, करता कर्मनिवारण है।।
परमपूज्य श्रीमाताजी ने, धर्मध्यान विधि सिखलाई।
तीन लोक में भ्रमण जीव का, होता अतिशय दुखदाई।।1349।।

शांति प्रदाता शांतिनाथ जिन, हुआ महामस्तक अभिषेक।
गिरि सुमेरु जिन कलशा ढारे, प्रकटा पुलक हर्ष अतिरेक।।
वर्ष बहत्तर जन्म जयंती, गई मनाई हर्ष-उमंग।
किए समर्पित पुष्प विनय के, पूजा-भक्ति-आरती संग।।1350।।

आस्था चैनल हुए प्रसारित, युगल कार्यक्रम युगल दिवस।
पुण्य कमाया दर्शन करके, माताजी का गाया यश।।
तेरहद्वीप जिनालय भीतर, तेरहद्वीप रचना निर्माण।
शिलान्यास सम्पन्न हुआ था, शरद पूर्णिमा दिवस महान।।1351।।

परमपूज्य श्री माताजी ने, छेड़ रखा उत्तम अभियान।
जन्मभूमियों का विकास हो, चौबिस तीर्थंकर भगवान।।
पुष्पदंत जिन जन्मभूमि है, काकंदी नामक स्थान।
मंदिर बनकर शीघ्र ही यहाँ, होंगे प्रभुवर पंचकल्याण।।1352।।

दीक्षा लेना कई जन्म के, रहा प्रबल पुरुषारथ फल।
संयम पोत करें जो यात्रा, वे ही पाते मोक्ष महल।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, हुए पूर्ण पंचाशत वर्ष।
संयम स्वर्ण जयंति मनाई, सबने भरके मन में हर्ष।।1353।।

मोक्ष परमपद को पाने का, दीक्षा लेना श्रेष्ठ कदम।
वीतराग पथ पथिक जनों की, दीक्षा जयंति मनाते हम।।
पद आर्यिका वर्ष पंचाशत, पूर्ण हुए माँ ज्ञानमती।
दीक्षा स्वर्ण जयंति महोत्सव, गया मनाया हर्ष अती।।1354।।

दीक्षाधारण अवधि संयमी, ज्यों ज्यों बढ़ती जाती है।
दीक्षित की गौरव-गरिमा भी, त्यों-त्यों बढ़ती जाती है।।
भोग विलासी, भौतिकवादी, इस युग का विस्मय यह खास।
गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि, ज्ञानमती के वर्ष पचास।।1355।।

संयम स्वर्ण जयंति महोत्सव, गया मनाया गजपुर में।
कई हजार जनता पधराई, हर्ष-प्रमोद लिए उर में।।
पैंतालिस शीर्षस्थ संस्थाओं, दीं प्रशस्ति सम्मान भरी।
कई ने कई उपाधी देकर, निज गौरव में वृद्धि करी।।1356।।

संयम स्वर्ण जयंति महोत्सव, गया मनाया पूरे वर्ष।
नगरों-गाँवों हुईं सभाएँ, माँ गुण गाकर माना हर्ष।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, जीवित रहें हजारों साल।
प्रभु प्रार्थना की भक्तों ने, चरण कमल किया नत भाल।।1357।।

भाग्यवान हम मानें खुद को, उनके पावन दर्श मिले।
शांत-सौम्य-समता-रविभा-से, भव्यों के हृद कमल खिले।।
हर मुख से ध्वनि निकल रही है, माताजी वंदामि तुम्हें।
भव-तम-भंजन-पदरज चंदन, शुभाशीष-सह मिले हमें।।1358।।

दीक्षा स्वर्ण जयंति महोत्सव, ऐतिहासिक प्रसंग रहा।
श्रद्धाविनय समर्पण करने, उमड़ा जन-सैलाब महा।।
कहा सभी ने हे माताजी!, कुल को आप पवित्र किया।
माँ कृतार्थता पायी तुमसे, भू को पुण्योपहार दिया।।1359।।

पूरे वर्णन की समर्थता, नहीं लेखनी पा सकती।
गौरव गरिमा की समग्रता, नहीं ग्रंथ में आ सकती।।
लेकिन इतना हर मुख कहता, रहा असाधारण सब कुछ।
हुआ न होगा ऐसा जिसमें, सबने पाया हो सब कुछ।।1360।।

विद्वानों प्रति माताजी मन, वात्सल्य का सागर है।
पुरस्कार उनको देकर के, करतीं उसे उजागर हैं।।
उत्तम कार्य प्रशंसा करतीं, अति उत्साह बढ़ाती हैं।
अपने मंगल शुभाशीष से, उन्नति शिखर चढ़ाती हैं।।1361।।

अहमदाबाद निवास करते हैं, श्री डॉक्टर शेखरचंद।
जैनधर्म करते प्रचार हैं, अखिलविश्व, उत्साह अमंद।।
रहता अतिशय योग आपका, जो गतिविधि करता संस्थान।
दो हजार पाँच का पाया, उनने ज्ञानमती सम्मान।।1362।।

विद्वज्जन होते हैं दीपक, जिनवाणी की ज्योति जला।
नगर-ग्राम करते प्रकाश हैं, जगज्जनों का करें भला।।
ऐसे पाँच शारदा-सुत को, माँ देतीं प्रतिवर्ष इनाम।
माणिक-लता-पवन-सुलोचना, उदयभान पाँच के नाम।।1363।।

समय बीतते देर न लगती, आई अमावस कार्तिक मास।
सकल संघ ने क्रिया करके, किया निष्ठापित चातुर्मास।।
महावीर के श्रीचरणों में, अर्पित किया मोदक निर्वाण।
की अर्चना मात शारदा, गौतम गणधर केवलज्ञान।।1364।।

सब क्षेत्रों में क्षेत्र मनोरम, श्री निर्वाण क्षेत्र गिरनार।
किन्तु ग्रहण है लगा चंद्र को, छिना जैनियों का अधिकार।।
माताजी की रही प्रेरणा, चेतो, जागो क्षेत्र गहो।
क्षेत्र सुरक्षा प्रथम जरूरी, प्राण सुरक्षा भले न हो।।1365।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, मात शारदा की अवतार।
अभीक्ष्ण ज्ञान साधिका साध्वी, माता सरस्वती भंडार।।
षट्खंडागम भाग चतुर्दश, टीका रचकर दी सौगात।
कार्य महत्तम-अतिशय उत्तम, बड़े हर्ष-गौरव की बात।।1366।।

माताजी के मन लहराता, सकल सब्र औदार्य अपार।
छोटे-बड़े सभी क्षेत्रों की, होवे उन्नति सभी प्रकार।।
श्रवणबेलगुल बाहुबली का, सम्पन्ना अभिषेक महान।
माताजी ने भेजे प्रतिनिधि, दीदी-ब्रह्मचारी-विद्वान्।।1367।।

ऋषभदेव का जन्म महोत्सव, हुआ अयोध्या आयोजन।
जिन अभिषेक-विधान-आरती, प्रश्नमंच-शास्त्र प्रवचन।।
ऋषभदेव दीक्षा कल्याणक, प्रयागराज सम्पन्न हुआ।
जैनाजैन सकल जनता ने, पूर्ण धर्म का लाभ लिया।।1368।।

कुण्डलपुर बिहार-नालंदा, जन्मभूमि महावीर प्रभो।
जन्मजयंती गई मनाई, चैत्र शुक्ल तेरस तिथि को।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, वर्ष पंचाशत पूर्ण हुए।
संयम स्वर्ण जयंति मनाने, जन मन भावातीर्ण हुए।।1369।।

दक्षिण भारत में चौदह मठ, रहते उनमें भट्टारक।
द्वादश उत्सव में पधराये, माँ गुणगान किया अनथक।।
ऐतिहासिक आर्यिका उपाधि, माताजी को करी प्रदान।
जम्बूद्वीप-जिनालय देखे, बोले माँ के कार्य महान।।1370।।

संयम स्वर्ण महोत्सव आये, बाहुबलीसागर गुणखान।
शुभाशीष-सह नूतन पिच्छी, माताजी को करी प्रदान।।
विदुषी परम, वाग्देवी हैं, श्रीमाताजी ज्ञानमती।
ज्ञानचंद्रिका की उपाधि से, हुईं अलंकृत पूज्याश्री।।1371।।

अक्षय तृतिया पर्व महत्तम, ऋषभदेव जिन प्रथमाहार।
गया मनाया हस्तिनागपुर, माता सन्निधि हर्ष अपार।।
शांतिनाथ कल्याणक दिवसे, किया गया जिनवर अभिषेक।
निर्वाणलाडू हुआ समर्पित, गिरि कैलाश प्रतिकृति देख।।1372।।

माँ जिनवाणी भक्ति दिवस है, श्रुतपंचमी पर्व महान।
गया मनाया हार्दिकता से, पूजा-आरति-किए विधान।।
इंद्रध्वज मंडल विधान भी, सोत्साह सम्पन्न हुआ।
आदिनाथ लघु पंचकल्याणक, माता सन्निधि पूर्ण हुआ।।1373।।

श्रुतज्ञान महान वृक्ष सदृश है

अनादिकाल की अविद्या के संस्कार से प्रत्येक मनुष्य का मन मर्कट के समान अतीव चंचल है। उसको रमाने के लिए श्री गुणभद्र सूरि इस श्रुत ज्ञान को महान वृक्ष की उपमा देते हुए कहते हैं—

'अनेकांतात्मार्थप्रसवफलभारातिविनते।
वचःपर्णाकीर्णे विपुलनयशाखाशतयुते।।
समुत्तुंगे सम्यक्प्रततमतिमूले प्रतिदिनं।
श्रुतस्कंधे धीमान् रमयतु मनोमर्कटममुम्।।१७०।।

जो श्रुतस्कंध रूप वृक्ष अनेक धर्मात्मक पदार्थरूप फूल एवं फलों के भार से अतिशय झुका है, वचनों रूप पत्ते से व्याप्त है, विस्तृत नयों रूप सैकड़ों शाखाओं से युक्त है, उन्नत है तथा समीचीन एवं विस्तृत मतिज्ञान रूप जड़ से स्थिर है उस श्रुतस्कंध वृक्ष के ऊपर बुद्धिमान साधु अपने मनरूपी बंदर को प्रतिदिन रमण करावें।

इस श्रुतस्कंध वृक्ष में चारों ही अनुयोग समाविष्ट है क्योंकि एक अनुयोग से होने वाला ज्ञान अपूर्ण ही है।

-आत्मानुशासन

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् २००६

समाहित विषयवस्तु

1. **चातुर्मास की स्थापना।**
2. **धर्मसभा का आयोजन-माताजी के शुभाशीर्वचन।**
3. **चातुर्मास क्या है?**
4. **सामयिक पर्वों का आयोजन।**
5. **पर्यूषण पर्व का आगमन-अनेक आयोजन।**
6. **शरदपूर्णिमा पर जन्ममहोत्सव।**
7. **विद्वानों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।**
8. **माधोराजपुरा में ज्ञानमती दीक्षातीर्थ का निर्माण।**
9. **चंद्रप्रभ-पार्श्वनाथ का जन्मदिवस मनाया गया।**
10. **अहिच्छत्र में सहस्राब्दि समारोह हेतु संकल्पदीप प्रज्ज्वलन।**
11. **यह महोत्सव 2007 में मनाया जायेगा।**
12. **ज्ञान-ध्यान शिविर का आयोजन।**

काव्य पद

नहीं समय पर वश किसी का, रोके किसी के रुकता ना।
पंख लगाकर उड़ जाता है, कोई पकड़ है पाता ना।।
दो हजार पाँच सन् बीता, छटवें की आ गई जुलाई।
चातुर्मास काल ने आकर, निज उपस्थिति दर्ज कराई।।1374।।

दिल्ली-महाराष्ट्र-ग्वालियर, मेरठ से पधराये जन।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती के, श्रीचरणों में किया नमन।।
हे पूज्याश्री! हम चातक हैं, आप मेघ जलधारी हैं।
वृष्टि-वास यहीं पर होवे, सविनय अर्ज हमारी है।।1375।।

श्रीफल अर्पित किए भक्तजन, प्रणति-निवेदन बारम्बार।
करुणाकलित हृदय पूज्याश्री, लख औचित्य किया स्वीकार।।
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में, हुआ स्थापित चातुर्मास।
माताजी के जयकारों से, गूँजे धरती औ आकाश।।1376।।

वर्षायोग हुआ स्थापित, हुआ सभा का आयोजन।
माताजी के पद-प्रक्षालन, तथा पिच्छिका परिर्वतन।।
हुई आरती भक्ति-भाव से, फिर पूज्याश्री उद्बोधन।
क्या है वर्षायोग, क्या करें, क्या आचरण, क्या भोजन।।1377।।

जीवन तो है एक यात्रा, यात्रा होती कई प्रकार।
प्रमुख भेद उसके दो होते, आत्मरमण औ बाह्याचार।।
आत्म साधना इच्छुक साधक, बाहर से रुक जाते हैं।
और भीतरी यात्रा करने, आतम में रच जाते हैं।।1378।।

एक स्थल पर ठहरें साधक, करते पाप कर्म का नाश।
स्वाध्याय-साधना द्वारा, नाम इसी का चातुर्मास।।
वर्षाऋतु आने के कारण, आते यात्रा कई व्यवधान।
उफनाने लगतीं सरिताएँ, सूक्ष्मजीव उत्पत्ति महान।।1379।।

धर्म अहिंसा का आराधन, हो ना पाता ठीक तरह।
अतः जीव रक्षा को लेकर, रुकते साधक एक जगह।।
जीव दया से भर जाता है, उनका करुणा कलित हृदय।
रोक यात्रा जगजीवों को, कर देते हैं वे निर्भय।।1380।।

यथा बाँध से बँधती सरिता, आगे बढ़ ना पाती है।
लेकिन ऊर्ध्वमुखी हो जाती, यात्रा रुक ना पाती है।।
बस वैसे ही यद्यपि साधक, रुक जाता है बाहर से।
किन्तु उतर जाता है गहरे, भरता रहता भीतर से।।1381।।

ऋषि औ कृषि दोनों कार्यों को, वर्षा ऋतु सर्वोत्तम है।
यदि चूके तो उपज-धर्म की, होती हानि महत्तम है।।
अतः कृषक वर्षा से पहले, कर लेता तैयारी सब।
साधु साधना हितकर स्थल, वर्षावास बनाता तब।।1382।।

श्रावक को भी उचित यही है, करे मानसिक तैयारी।
अवसर लाये साधु समागम, महकाए जीवन क्यारी।।
तज प्रमाद, आचरण सँभाले, जिनवाणी मन धरे विमल।
प्राप्त करे परिणाम भद्रता, वर्षावास रहा यह फल।।1383।।

इधर प्रकृति ने झड़ी लगाई, वर्षा में जल बरसाकर।
होने लगे इधर आयोजन, धर्म पूर्ण अतिशय सुंदर।।
शासन वीर जयंति मनाई, उत्सव पार्श्वनाथ निर्वाण।
रक्षाबंधन पर्व भी मना, माताजी के संघ सन्निधान।।1384।।

पर्व एक पहलू अनेक हैं, धर्म-समाज से जुड़ा विशेष।
धर्म और धर्मायतनों की, रक्षा का देता संदेश।।
भाई द्वारा बहन की रक्षा, वीरों द्वारा निर्बल जन।
राष्ट्र-धर्म को अर्पण कर दें, अपना तन-मन-धन-जीवन।।1385।।

कदम समय के बढ़ते-बढ़ते, दशलक्षण के आये दिन।
जम्बूद्वीप मंडल विधान का, हुआ सुष्ठुतम आयोजन।।
गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल, महाराष्ट्र से आया था।
राजकुमार औ शकुन्तला ने, इंद्र-शची पद पाया था।।1386।।

प्रातकाल से मध्यरात्रि तक, होते रहते आयोजन।
ध्यान-अभिषेक-अर्चना जिनवर, तत्त्वार्थसूत्र उत्तम प्रवचन।
सायंकाल आरती होती, दश धर्मों पर प्रवचन भी।
प्रश्नमंच से ज्ञानार्जन का, पाते थे उपहार सभी।।1387।।

माह अक्टूबर सब में उत्तम, सर्व सुखाकर चंद्रस्वरूप।
इसी माह पूनम को जन्मीं, ज्ञानमती जी मैनारूप।।
जन्ममहोत्सव का आयोजन, तीन दिनों का रखा गया।
अंतिम दिन आस्था चैनल पर, पूर्ण प्रसारण किया गया।।1388।।

प्रज्ञाश्रमणी पूज्य आर्यिका, श्री चंदना माताजी।
विद्वानों के प्रति रखती हैं, वत्सलता का भाव अती।।
इनसे प्राप्त प्रेरणा द्वारा, श्री त्रिलोक शोध संस्थान।
एक लक्ष के पुरस्कार से, करेगा सम्मानित विद्वान्।।1389।।

पुरस्कार प्रति पाँच वर्ष में, एक विद्वान् ही पायेगा।
जैन साहित्य संस्कृति क्षेत्र में, जो ख्याति विशेष को पायेगा।।
गणिनी आर्यिका ज्ञानमती जी, पुरस्कार है इसका नाम।
होगा निश्चित भाग्यवान वह, जो पायेगा यह सम्मान।।1390।।

सन् पिंचानवै में था पाया, डॉक्टर श्री अनुपम इंदौर।
शिवचरणलाल जी मैनपुरी का, दो हजार में आया दौर।।
दो हजार पाँच में मिला, शेखरचंद जी अहमदाबाद।
हुआ वार्षिक, छह में पाया, श्री प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश।।1391।।

अन्य-अन्य पुरस्कारों द्वारा, विद्वज्जन पाया सम्मान।
कुण्डलपुर से हुआ अलंकृत, भागचंद भागेन्दु नाम।।
जम्बूद्वीप से डी.ए. पाटिल, नंद्यावर्त से सुशील-मैनपुरी।
रत्नमती शैलेष कापड़िया, छोटेलाल से दिलीपजयपुरी।।1392।।

विविध धार्मिक कार्यकलापों, सह-सम्पन्ना चातुर्मास।
कार्तिक कृष्ण अमावस्या तिथि, हुआ समापन सह विधि खास।
निर्वाणोत्सव महावीर का, गया मनाया यथाविधि।
निर्वाणलाडू किये समर्पित, सबने मिल माता सन्निधि।।1393।।

सन् छप्पन में माताजी ने, ग्रही आर्यिका दीक्षा थी।
माधोराजपुरा नगरी में, वीरसागर आचार्य श्री।।
चंदनामती जी प्राप्त प्रेरणा, भाक्तिक जनता उक्त नगर।
दीक्षातीर्थ श्री ज्ञानमती का, हुई बनाने को तत्पर।।1394।।

भूमि प्राप्त कर हेतु वेदिका, शिलान्यास भी किया गया।
क्षुल्लक श्री मोतीसागर ने, आयोजन सान्निध्य दिया।।
विराजमान होगा वेदी पर, पन्द्रह फुट बिम्ब पारसनाथ।
चौबीसी स्थापित होंगे, पंचकल्याणक उत्सव साथ।।1395।।

पौषकृष्ण एकादशि आयी, पार्श्वनाथ का जन्म दिवस।
जन्म लिया था पूज्यश्री ने, पूरब तीन हजार बरस।।
नगर बनारस अश्वसेन पितु, वामादेवी जी थीं मात।
हस्तिनागपुर मना महोत्सव, हर्ष और उल्लास के साथ।।1396।।

तीर्थंकर श्री चंद्रप्रभ का, जन्म हुआ था इस ही दिन।
जन्म और दीक्षा कल्याणक, हुए उभय के आयोजन।।
चंद्रप्रभ-श्रीपारसजिन को, ऐरावत पर बैठाया।
धूमधाम से यात्रा निकली, सोत्साह प्रभु यश गाया।।1397।।

सहस अठोत्तर कलशों द्वारा, गिरि सुमेरु अभिषेक हुआ।
पार्श्वनाथ मंडल विधान का, आयोजन मध्यान्ह किया।।
सर्वार्थसिद्धी दिव्य महल है, धातुविनिर्मित पारसनाथ।
हुआ उद्घाटित नवखंडों का, विजय-नितिन मंत्रों के साथ।।1398।।

सब तीर्थों में अनुपम सुंदर, तीर्थक्षेत्र अहिच्छत्र सुनाम।
रुहेल खण्ड पंचाल देश में, स्थित जैन संस्कृति धाम।।
उत्तरप्रदेश के जिला बरेली, में स्थित आँवला तहसील।
स्टेशन से रामनगर किला, रहता बस एकादश मील।।1399।।

रामनगर ही अहिच्छत्र है, पार्श्वनाथ जिन तप स्थान।
यहीं किया उपसर्ग कमठ ने, प्रभु को उपजा केवलज्ञान।।
नाग-युगल धरणेन्द्र-पद्मावति, यहीं प्रभू पर ताना छत्र।
इसीलिए यह थल कहलाता, तीर्थस्थान श्रीअहिच्छत्र।।1400।।

उस ही थल पर बना जिनालय, अतिशय शोभा देता है।
पार्श्वनाथ का बिम्ब मनोहर, सबका मन हर लेता है।।
देवों रचित वेदिका सुंदर, उसमें बना एक आला।
उस पर सात फणीं प्रभु प्रतिमा, पन्ना रत्न, वर्ण काला।।1401।।

मन में कोइ मनौती लेकर, जो प्रभु चरणों आता है।
अल्पकाल में ही वह निश्चित, शत प्रतिशत फल पाता है।।
प्रतिमा जी प्राचीन-अतिशयी, वर्ष व्यतीते तीन हजार।
महामहोत्सव सहस्राब्दि हित, हुए संकल्पित दीप प्रजार।।1402।।

पौषकृष्ण एकादशि शुभ दिन, दो हजार छह अंतिम माह।
पारसनाथ जयंती शुभ दिन, करी प्रतिज्ञा सह-उत्साह।।
बंगाली स्वीट्स नई दिल्ली के, महावीर प्रसाद जी संघपति।
संकल्पदीप का किया प्रज्ज्वलन, मन में धारे हर्ष अति।।1403।।

क्षुल्लक श्री समर्पणसागर, ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार।
क्षेत्र विकास संकल्पित होकर, प्रकट किए अपने उद्गार।।
श्री क्षुल्लक मोतीसागर जी, पीठाधीश हस्तिनापुर।
सन्निधान दिया मंगलमय, अमित प्रमोद धार कर उर।।1404।।

दो हजार सात सन् भीतर, मस्तकाभिषेक श्री पारसनाथ।
विश्वस्तर होगा आयोजित, गणिनी क्षुल्लक सन्निधि साथ।।
ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र कुमारजी, कर्मयोगी, व्यक्तित्व धनी।
राष्ट्रीय अध्यक्ष रहेंगे, महामहोत्सव आगामी।।1405।।

परम पूज्य माँ ज्ञानमती जी, ज्ञान-ध्यान अर्पित साध्वी।
एतदर्थ आयोजित करतीं, शिविर प्रशिक्षण इत्यादि।।
पच्चीस दिसम्बर दो हजार छह, रखा शिविर सत बिी एक।
ज्ञान-ध्यान उत्तम उपलब्धि, शिविरार्थी पाई प्रत्येक।।1406।।

पंचाशत बालक थे आये, प्रौढ़ वर्ग भी आया था।
माताजी ने तीन लोक का, सबको ध्यान सिखाया था।।
ॐ ह्रीं अर्हं असि-आ-उ-सा, का भी करते ध्यान तभी।
प्रतिदिन प्रातः सात बजे पर, जुड़ते थे शिविरार्थी सभी।।1407।।

अतिशय विदुषी प्रज्ञाश्रमणी, पूज्य चंदना माताजी।
द्रव्य संग्रह अध्यापित करतीं, काल दोपहर मोद मती।।
नेमिचंद्र आचार्यश्री की, ग्रंथराज यह लघु कृति।
षड्द्रव्यों का भरे खजाना, वितरित करती ज्ञान निधि।।1408।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती की, कृतियाँ सुंदर बालविकास।
क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी, संध्या करते ज्ञान-प्रकाश।।
भजन-आरती, प्रतिदिन सायं, करते शिविरार्थी मिलकर।
सिद्धि विधान से किया समापन, नरेशचंद्र विद्वान् प्रवर।।1409।।

सद् प्रयास जो भी हम करते, उपलब्धी देकर जाता।
ज्ञान-ध्यान अनुशासित जीवन, शिविरार्थी निश्चित पाता।।
दो हजार छह पूर्ण हुआ सन्, अब हम लेते अल्प विराम।
गणिनी आर्यिका ज्ञानमती के, पद पंकज में सहस प्रणाम।।1410।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर चातुर्मास-सन् २००७

समाहित विषयवस्तु

1. कालचक्र गतिमान सदा।
2. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगिनी माता ज्ञानमती।
3. सर्वोत्तम वर्ष-2007।
4. षट्खंडागम की रचना और माताजी की टीका।
5. एक अद्भुत श्रमसाध्य कार्य।
6. जम्बूद्वीप और तेरहद्वीप रचनाएँ अनुपम हैं।
7. पंचकल्याणक एवं माताजी के प्रवचन।
8. पंचकल्याणक क्या है?
9. डॉ.श्री श्रेयांसकुमार का स्वर्ण जयंती पुरस्कार से सम्मान।
10. नये भवनों का निर्माण एवं उद्घाटन।
11. अनेक कृतियों का विमोचन।
12. इक्यावन कृतियों का स्वर्णजयंती महोत्सव में प्रकाशन।
13. शिक्षण प्रशिक्षण शिविर का आयोजन।
14. चातुर्मास की स्थापना एवं धर्मसभा।
15. 2007 का चातुर्मास अद्भुत रहा।
16. शरदपूर्णिमा जन्म एवं वैराग्य का दिन।
17. अनेक विद्वानों को सम्मान प्राप्त हुआ।
18. माताजी द्वारा अहिच्छत्र का विकास।
19. माताजी का अहिच्छत्र पदार्पण।
20. तिखालवाले बाबा का सहस्राब्दि समारोह।
21. माताजी की प्रभु से प्रार्थना।
22. हस्तिनापुर की वापसी।
23. नवग्रह शांति जिनालय हेतु पंचकल्याणक।
24. शरदपूर्णिमा (शुक्ल पक्ष) सरस्वती आराधना के लिए उत्तम दिन।
25. माँ शारदा की पूजन-आरती का आयोजन।

काव्य पद

कालचक्र गतिमान सर्वदा, रुकता कभी न एकहि ठौर।
अभी-अभी जो वर्तमान है, पल भर में हो जाता और।।
जिसको हम भविष्य कहते हैं, वर्तमान बन जाता है।
दो हजार छह हुई विदाई, झपट सात आ जाता है।।1411।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती के, जीवन का हर पृष्ठ महान्।
सरस्वती अवतार हैं माता, कहें एक स्वर से विद्वान्।।
ज्ञान अभीक्षण लीन रहें माँ, कभी न लेतीं अल्प विराम।
इसीलिए तो कर पाई हैं, ढाई शतक कृति रचना काम।।1412।।

कोई वर्ष रहा न ऐसा, हुआ न जिसमें काम विशेष।
तीर्थोधारण, ग्रंथ पूर्णता, चलते रहते कार्य अशेष।।
लेकिन सब वर्षों में उत्तम, दो हजार सन् सात रहा।
हुए कार्य दो पूर्ण महत्तम, जिन स्वर्णिम इतिहास रचा।।1413।।

जैनधर्म इतिहास गवाही, श्रीधरसेन हुए आचार्य।
उनसे प्राप्त ज्ञान को मुनिद्वय, ताड़पत्र पर दिया उतार।।
पुष्पदंत-भूतबलि स्वामी, ने यह उत्तम कार्य किया।
प्राप्त केवली श्रुतज्ञान को, मेधाबल से बचा लिया।।1414।।

षट्खंडागम नाम ग्रंथ का, पाँच खंड में है विस्तार।
सूत्र लिखे अड़सठ-इकतालिस, व्यक्त किए संक्षिप्त विचार।।
वर्ष व्यतीते हैं बाईस-सौ, शुक्ला ज्येष्ठ पंचमी दिन।
रचना पूर्व करी मुनिवर ने, करी अर्चना आ सुर-गण।।1415।।

चला पर्व श्रुतपंचमी तभी, जिनवाणी लिपिबद्ध हुई।
क्षरण-विस्मरण दूर हुए सब, जिनवच गंगा अमर हुई।।
सोल्लास हम पर्व मनाते, जिनवाणी की करें संभाल।
नूतन वेष्टन में वेष्टित कर, पूजें, सहस नमाते भाल।।1416।।

पढ़ें-पढ़ावें, सुनें-सुनावें, टीकाएँ लिख दें विस्तार।
पठित को जीवन अंग बनावें, करें शक्तिशः ज्ञान प्रसार।।

है सार्थक्य मनाना तब ही, जैसे गणिनी ज्ञानमती।
किया अकथ पुरुषार्थ आपश्री, मन में श्रद्धा धार अती।।1417।।

षट्खंडागम के सूत्रों पर, माताजी ने टीका की।
सिद्धांतचिंतामणि सरल संस्कृत, पूज्याश्री अभिव्यक्ति दी।।
विस्मय अद्भुत पृष्ठ लिखे हैं, तीन हजार एक सौ पाँच।
माँ सचमुच अवतार सरस्वती, पढ़ लो नहीं साँच को आँच।।1418।।

लिखा है जितना माताजी ने, पठन की हममें शक्ति नहीं।
धन्य अन्य ऐसी नारी का, मिलता नहिं उल्लेख कहीं।।
वर्तमान इक्कीस सदी में, पैदा हुआ न कोई नर।
षट्खंडागम के सूत्रों पर, दे पाया अभिव्यक्ति प्रखर।।1419।।

ग्यारह वर्ष दो माह, छह दिवस, चार हजार तीन सौ दिन।
की कठोर साधना श्रुत की, दत्तचित्त घण्टों प्रतिदिन।।
वैशाखकृष्णा दोज तिथि को, चार अप्रैल दो हजार सात।
जम्बूद्वीप महावीर जिनालय, किया पूर्ण ग्रंथ यह मात।।1420।।

गुरुवर श्री वीरसागर जी, एक पंचाशत वर्षों पूर्व।
दिवस रहा आर्यिका दीक्षा, दिया नाम ज्ञानमती अपूर्व।।
पुण्यमयी संयोग यह रहा, ग्रंथ उसी दिन पूर्ण हुआ।
संज्ञा सार्थक कर दिखलाई, कारण प्रबल पुरुषार्थ रहा।।1421।।

पढ़ना-लिखना-प्रवचन करना, यदपि कठिन विद्या का कार्य।
किन्तु पठित का भू-पर चित्रण, महाकठिन कहते हैं आर्य।।
सकल कला नैपुण्य एक थल, मिल पाना सपनों की बात।
लेकिन गणिनी ज्ञानमती को, मिलीं सकल दिव्य सौगात।।1422।।

अभीक्ष्ण ज्ञानयोगिनी माता, श्रेष्ठलेखिका प्रवचनकार।
जम्बूद्वीप जैन भू-रचना, पाषाणों में की साकार।।
सन् पैंसठ में श्रवणबेलगुल, माता चातुर्मास किया।
बाहुबली के पद पंकज में, प्रतिदिन बैठी ध्यान किया।।1423।।

द्वीप-समुद्र असंख्य परस्पर, मध्यलोक में वलयाकार।
उनमें जम्बूद्वीप प्रथम है, स्वयंभूरमण अंत विस्तार।।

प्रारंभिक तेरहद्वीपों का, ध्यान में पाया दिव्य प्रकाश।
उसे उतारा हस्तिनागपुर, तेरहद्वीप जिनालय खास।।1424।।

अभूतपूर्व अनुपम रचना है, अब तक देखी नहीं कहीं।
चतुशत-अष्ट पंचाशत मंदिर, सभी अकृत्रिम बने यहीं।।
प्रथम बार यह हुआ विश्व में, दर्शन का सौभाग्य मिला।
श्रावक-मुनि-आर्यिका-क्षुल्लक, सबका मन उद्यान खिला।।1425।।

इसी निमित्त हुआ आयोजित, महामहोत्सव पंचकल्याण।
सत्ताईस अप्रैल-दो मई, हुए प्रयोजित विधि-विधान।।
परम पूज्य माँ ज्ञानमती का, सन्निधान था पावनतम।
प्रज्ञाश्रमणी मात चंदना, दिया महत्तम दिग् दर्शन।।1426।।

निर्देशन-नेतृत्व रहा है, मोतीसागर-रवीन्द्र कुमार।
अपने में बेजोड़ रहा यह, पंचकल्याणक सभी प्रकार।।
प्रतिदिन माता ज्ञानमती के, होते थे अमृत प्रवचन।
सुनकर श्रोता अनुभव करते, रोम-रोम अतिशय पुलकन।।1427।।

भारत के कोने-कोने से, आये थे उद्भट विद्वान्।
नरेन्द्र-श्रेयांस-अनुपम-भागेन्दु, शिव-सुशील-निर्मल-धीमान्।।
राज्य-समाज के नेता आये, माँ का चरण स्पर्श किया।
आशीर्वाद प्राप्त कर माँ का, सबने जीवन धन्य किया।।1429।।

माताजी के अमृत प्रवचन, समय-समय पर होते थे।
श्रोताओं की मनोभूमि में, बीज पुण्य के बोते थे।।
महामहोत्सव के पहले दिन, गई पताका फहराई।
पता पताका बतलाती है, उत्सव पुण्य घड़ी आई।।1430।।

पंचकल्याणक सुनो बन्धुवर! रही आत्मकल्याण क्रिया।
आत्मा से परमात्मा बनने, की यह धार्मिक प्रक्रिया।।
जिसने निज कल्याण किया है, संग करेंगे पर कल्याण।
ऐसे तीर्थंकर भगवन्तों, के होते हैं पंचकल्याण।।1431।।

जब तीर्थंकर गर्भ में आते, जननी देखें सोलह स्वप्न।
छह महिने पहले माँ आँगन, होने लगती वृष्टि सुरत्न।।

माता ने उपदेश दिया जग, भ्रूण की हत्या पाप महान।
अरहन्तादि हुए कन्या से, कन्या है मंगल पहचान।।1432।।

होता जन्म यहाँ तीर्थंकर, हलचल मचती स्वर्गों में।
धरती पर सुकाल छा जाता, सुख क्षण आते नरकों में।।
सहस अठोत्तर कलशों द्वारा, जिन सुमेरु होता अभिषेक।
प्रभु दर्शन से तृप्ति न पाता, एक सहस्र नयनों से देख।।1433।।

अनंतानंत भवों का संचित, पुण्य उदय जब आता है।
तीर्थंकर की पुण्य प्रकृति का, मनुष बंध कर पाता है।।
भव-तन-भोग विरक्त हुआ वह, कर लेता संयम धारण।
संयम ही है कर्म दहन का, सर्वोत्तम-समर्थ कारण।।1434।।

कर्म दग्ध जब हो जाते हैं, प्रकटित होता केवलज्ञान।
समवसरण की रचना होती, खिरती दिव्यध्वनि भगवान।।
बैर-विरोध त्याग सब प्राणी, धारण करते मैत्री भाव।
शेर-गाय मिल पानी पीते, वीतराग छवि अमित प्रभाव।।1435।।

आयुकर्म पूर्ण होने पर, प्रभुवर करते मोक्ष गमन।
सिद्धशिला पर जो विराजते, निराकार रूप भगवन।।
अग्निकुमार मुकुटाग्नि द्वारा, करते हैं शरीर संस्कार।
निर्वाणकल्याणक हर्ष मनाते, इंद्रादिक सब दीप प्रजार।।1436।।

गणिनी प्रमुख पूज्य माताजी, रखतीं विद्वज्जन अनुराग।
समय-समय पाते ही रहते, पुरस्कार पात्र बड़भाग।।
दीक्षा स्वर्णजयंति महोत्सव, हुआ समापन भलीप्रकार।
हुए पुरस्कृत पुरस्कार से, डॉक्टर श्री श्रेयांसकुमार।।1437।।

दीक्षा स्वर्ण जयंति भवन का, किया गया सुष्ठु निर्माण।
माताजी के स्वर्णकाल का, इससे होगा सबको ज्ञान।।
इसी वर्ष निर्माण हुआ है, सुन्दर पीठाधीश-भवन।
मोहन-धन्ना अजमेरा ने, किया भवन का उद्घाटन।।1438।।

जैन दिगम्बर सब संतों की, पिच्छी-कमण्डलु है पहचान।
प्राणि-रक्षा, शुद्धिक्रिया को, श्रावक करते उन्हें प्रदान।।

सुभाषचंद अंकुश दिल्ली ने, भेंट करी इस वर्ष नई।
गणिनी माँ के कर कमलों में, मयूर पंख निर्मित पिच्छी।।1439।।

तेरहद्वीप पंचकल्याणक, के सुमध्य में समय को देख।
हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी में, हुईं विमोचित कृती अनेक।।
जैनभारती अंग्रेजी में, संस्कृत पद्मनंदि-कातंत्र।
हिन्दी प्रवचन-जीवन दर्शन, जम्बूद्वीप-स्तोत्र स्वतंत्र।।1440।।

दीक्षा स्वर्णजयंति महोत्सव, हुआ सभी को मंगलमय।
एक पंचाशत उत्तम कृतियाँ, हुईं प्रकाशित इसी समय।।
एक लाख प्रतियों के दीपक, फैलाया जग उजियाला।
कार्य महत्तम किया है किसने, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला।।1441।।

हस्तिनागपुर जम्बूद्वीप में, ज्ञानयज्ञ प्रारंभ हुआ।
ज्ञानज्योति विद्वज्जन देने, शिविर प्रशिक्षण शुरू हुआ।।
शतकाधिक विद्वान् पधारे, तथा प्रशिक्षक अति-उत्तम।
एक जून से सात जून तक, चलता रहा व्यवस्थित क्रम।।1442।।

गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि, माताजी श्री ज्ञानमती।
दिया आशीष प्रवचन पद्धति, स्व-पर हितैषी ज्ञान अती।।
पूज्य आर्यिका प्रज्ञाश्रमणी, श्री चंदना माताजी।
सैद्धांतिक-जीवन उपयोगी, गूढ़तत्त्व की चर्चा की।।1443।।

श्री क्षुल्लक मोतीसागर जी, यथासमय निर्देशन दे।
कैसे सुष्ठु बनायें प्रवचन, सान्ध्यसभा इंगित करते।।
श्री ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमारजी, करें समन्वित सारे काम।
उनके बिना सभी कुछ फीका, जैसे बिन पानी पकवान।।1444।।

कुलपति पद को किया सुशोभित, श्री प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश।
उनकी अतिशय बुद्धि प्रखर है, ज्ञान क्षितिज विस्तृत आकाश।।
वाणी में माधुर्य अनोखा, स्वर बुलंद, अभिव्यक्ति अनूप।
कैसा भी हो विषय सामने, धारावाहिक रहे अटूट।।1445।।

जिनवाणी का संदोहन कर, पाये जो सिद्धांत रतन।
शिवचरणलालजी मैनपुरी ने, प्रतिदिन किया उन्हें वितरण।।

श्री डॉक्टर श्रेयांस कुमार जी, दर्शन के उद्भट विद्वान।
उमास्वामी के मोक्ष शास्त्र का, दिया सभी को सम्यग्ज्ञान।।1446।।

डॉक्टर श्री भागचंद भागेन्दु, दैनन्दिन आते उपयोग।
उन विनती स्तोत्र आदि का, सम्यक् सबै कराते बोध।।
श्री प्राचार्य निहालचंद बीना, करते थे प्रवचन दशधर्म।
आकर्षक शैली के द्वारा, बतलाते अंगों का मर्म।।1447।।

महावीर की जन्मभूमि है, श्री कुण्डलपुर क्षेत्र महान।
किन्तु कहाँ पर है यह स्थित, मत विभिन्न रखते विद्वान्।।
कुछ कहते बिहार नालंदा, कुछ कहते हैं वैशाली।
कुछ बिहार लिछुआड़ मानते, बुद्धि लगा तर्कशाली।।1448।।

विद्वज्जन स्पष्ट कथन है, सब ही स्थल करें विकास।
पूजा-अर्चा करें वहाँ पर, जिसका हो जिस पर विश्वास।।
लेकिन किसी अन्य के ऊपर, छोड़ें नहीं विषैले बाण।
कोई गर करता है ऐसा, स्तर से गिरता विद्वान्।।1449।।

जन्मभूमि श्री महावीर की, कुण्डलपुर नालंदा ही।
कई पीढ़ियों से इसके प्रति, जैन जगत् की श्रद्धा भी।।
माताजी, विद्वान् संगठन, सब सच इसे मानते हैं।
किन्तु आधुनिक कुछ ही व्यक्ति, वैशाली को जानते हैं।।1450।।

परम पूज्य माँ ज्ञानमती जी, साध्वी समता की अवतार।
ज्ञान-साधना-वयोवृद्ध हैं, रखतीं पौराणिक अधिकार।।
चिन्तन-सोच-सकारात्मक है, याथातथ्य कहें जिनवाणि।
उनके वचन प्रमाणिक मानें, वंदन करें जोड़ जुग पाणि।।1451।।

हुआ समापन शिविर प्रशिक्षण, विद्वज्जन सम्मान किया।
माताजी द्वय, द्वय-द्वय कर से, बहुत-बहुत आशीष दियाा।।
ज्ञानज्योति प्रकाशित करने, शिविर पूर्णतः हुआ सफल।
स्वास्थ्य और दीर्घायू पाये, माताजी का संघ सकल।।1452।।

जून माह में ग्रीष्म ऋतू ने, करी स्वयं की मनमानी।
तब जगती को शीतल करने, आ पहुँची वर्षा रानी।।
भारत के कोने-कोने से, श्रावक आये की अरदास।
हे माताजी! जम्बूद्वीप में, हो स्थापित चातुर्मास।।1453।।

जुलाई माह में माताजी ने, किया स्थापित चातुर्मास।
अभय-चंदना-मोतीसागर जी, शांतिमती क्षुल्लिका के साथ।।
गुरू पूर्णिमा के उपलक्ष्य में, शांति-वीर-माँ ज्ञानमती।
हुई अर्चना भक्तिभाव से, भर मन में उत्साह अती।।1454।।

माताजी का पद प्रक्षालन, कुसुमलता से किया गया।
नूतन पिच्छी तथा कमण्डलु, भेंट भी सविनय दिया गया।।
महाराष्ट्र भक्तमण्डल ने, किया प्रज्वलित दीप प्रथम।
वीर निधि का परिचय पुस्तक, हुआ विमोचन अपने क्रम।।1455।।

जिसको देखो, माताजी के, मृदु वचनों का दास हुआ।
वर्षाऋतु ऋतु बसंत के, आने का एहसास हुआ।।
हुआ नहीं जो कभी यहाँ पर, ऐसा ही कुछ खास हुआ।
जम्बूद्वीप में माताजी का, अद्भुत चातुर्मास हुआ।।1456।।

तरल-सरल भाषा औ उस पर, बोली कितनी भाव भरी।
इसीलिए तो बात हृदय की, सीधी दिल में जा उतरी।।
प्रवचन में वाणी के संग-संग, वीणा का आभास हुआ।
जम्बूद्वीप में माताजी का, अद्भुत चातुर्मास हुआ।।1457।।

ज्ञानोदधि से श्रीमाताजी, चुन-चुन मोती लाती हैं।
श्रोता-मन के तम स्तोम को, रवि-सम दूर भगाती हैं।।
चंदन सम शीतल वाणी में, स्वाति बिन्दु का वास हुआ।
जम्बूद्वीप में माताजी का, अद्भुत चातुर्मास हुआ।।1458।।

आचार्यश्री वीरसागर का, जन्मदिवस भी मना यहाँ।
श्री गुरुवर की पुण्यतिथि का, आयोजन भी हुआ यहाँ।।
दिवस पचहत्तर मना महोत्सव, भारत भर में खास हुआ।
जम्बूद्वीप में माताजी का, अद्भुत चातुर्मास हुआ।।1459।।

तेरहद्वीप की सुंदर रचना, माता भू-पै उतारी है।
मंदिर-मेरु-देव-जिनदर्शन, कोटि-कोटि बलिहारी है।।
तेरहद्वीप विधान स्वरों से, गुंजित भू-आकाश हुआ।
जम्बूद्वीप में माताजी का, अद्भुत चातुर्मास हुआ।।1460।।

गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि, पूज्या साध्वी वरिष्ठतमा।
माताजी श्री ज्ञानमती का, जन्म महोत्सव यहाँ मना।।
जन्म और दीक्षादिन दोनों, एक ही तिथि पर आते हैं।
शरदपूर्णिमा को उत्सव सब, सह उत्साह मनाते हैं।।1461।।

माताजी की हुई अर्चना, चढ़ा-चढ़ाकर अर्घ्य सहर्ष।
वर्ष चौहत्तर जन्म में बीते, त्याग के बीते छप्पन वर्ष।।
वीर प्रभू की रथयात्रा भी, निकली जम्बूद्वीप मंझार।
हुई शांतिधारा-प्रभुपूजा, प्रांगण गूँजे जय-जयकार।।1462।।

शरदपूर्णिमा के उत्सव में, हुए पुरस्कृत कई विद्वान्।
ऊषा-उत्तम-खेमचंदजी, संजीव सर्राफ-गजेन्द्र मतिमान।।
सहस्र-सहस्र जनता ने आकर, सविनय माँ को किया प्रणाम।
जुग-जुग जिएँ पूज्य माताजी, यावच्चन्द्र-दिवा हो नाम।।1463।।

परमपूज्य श्री माताजी का, महा व्यक्तित्व है बहुमुखी।
ज्ञान-साधना साथ क्षेत्र की, उन्नति करतीं चतुर्मुखी।।
तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ की, केवलभूमि क्षेत्र अहिच्छत्र।
किया विकास, नाम फैलाया, माताजी ने ही सर्वत्र।।1464।।

तीस चौबीसी महा जिनालय, की निर्मात्री माताजी।
पार्श्वनाथ खड्गासन प्रतिमा, की स्थापित माताजी।।
अतिशय सुंदर छटा बिखेरी, अहिच्छत्र में माताजी।
महामस्तक अभिषेक कराया, सहस्राब्दि का माताजी।।।1465।।

तीर्थक्षेत्र श्री अहिच्छत्र है, पार्श्वनाथ-उपसर्ग धरा।
भव-भव शत्रु कमठ-शंबर ने, प्रभु पर यहाँ उपसर्ग करा।।
पूर्व उपकृत नाग-नागिनी, ने आकर उपसर्ग हरा।
अहि ने फण का छत्र बनाया, अहिच्छत्र यह नाम परा।।1466।।

सुरनिर्मित तिखाल के भीतर, राजित हैं श्री पारसनाथ।
महामस्तक अभिषेक है होना, सहस्राब्दि उत्साह के साथ।।
माताजी के सन्निधान में, होना है यह आयोजन।
अतः संघ सह माताजी ने, अहिच्छत्र को किया गमन।।1467।।

पूज्य आर्यिका श्री चंदना, पीठाधीश श्री मोतीनिधि।
क्षुल्लक श्री समर्पणसागर, की भी है पावन सन्निधि।।
ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र कुमार जी, कुशल करेंगे निर्देशन।
उनके ही नेतृत्व में होगा, पूर्ण सफल यह आयोजन।।1468।।

जैनधर्म का ध्वज फहराते, नगर-गाँव में अलख जगा।
जहाँ गया संघ माताजी का, वहाँ धर्म का सूर्य उगा।।
पथकंकरीला-भीषण सर्दी, रहा काँपता दुर्बल तन।
आदि दिसम्बर अहिच्छत्र में, हुआ संघ का शुभागमन।।1469।।

माताजी का संघ चतुर्विध, यदा क्षेत्र नियराया है।
दौड़ पड़ी जनता स्वागत को, जय-जयकार सुनाया है।।
पद प्रक्षालन करन आरती, पुण्य कमाया बढ़-बढ़के।
पारस प्रभु के दर्शन करने, माँ पहुँचीं जीना चढ़ के।।1470।।

महा महोत्सव शुभारंभ में, झंडारोहण किया गया।
घटयात्रा पूजन विधान का, शुभ आयोजन किया गया।।
पंचकल्याणक हुई प्रतिष्ठा, दस दिनाँक से पंद्रह तक।
प्रथमाभिषेक हुआ सोलह का, चलता रहा क्रमिक अनथक।।1471।।

सत्रह से जनवरी चार तक, मुख्य-मुख्य हुए आयोजन।
पूजा-विधान-अभिषेक अधिवेशन, धरणेन्द्र-पद्मावती आराधन।
श्रीजी की रथयात्रा निकली, हुई प्रभावना जैन धरम।
माताजी के प्रवचन द्वारा, समझ में आया सच्चा मर्म।।1472।।

बंधु! इसे अत्युक्ति न समझें, हुआ क्षेत्र का आज विकास।
तीस-चौबीस जिनालय शिखरें, बातें करती हैं आकाश।।
तब धरणेन्द्र-पद्मावती जिनालय, अतिशय शोभा क्षेत्र बनी।
माताजी के सुप्रयास से, हुई तरक्की सहस गुनी।।1473।।

पार्श्वनाथ के श्री चरणों में, बारम्बार प्रणाम किया।
चरण-शरण मैं आई भगवन्! चाह रही आत्म कल्याण।
भवों-भवों तक कमठ जीव के, सहे आपने अत्याचार।
लेकिन क्षोभ न मन में आया, नहीं किया कुछ भी प्रतिकार।।1474।।

चरण-शरण मैं आई भगवन्! चाह रही आत्म कल्याण।
मुझको प्रभु वह शक्ति देवें, प्राप्त करूँ अंत निर्वाण।।
आयोजित है आपश्री का, महामहोत्सव श्री अभिषेक।
जन-जन के संताप दूर हों, कर-पूजन-मुद्रा को देख।।1475।।

पार्श्वनाथ जिन महामहोत्सव, सफल-शांति-सम्पन्न हुआ।
अहिच्छत्र से माताजी का, हस्तिनागपुर गमन हुआ।।
पाँच जनवरी पद विहार कर, मुरादाबाद पधराया संघ।
सकल समाज जागृति आई, मंगलप्रद सु-प्राप्त प्रसंग।।1476।।

मुरादाबाद से नगर सरधना, फिर वहाँ से मेरठ आईं।
नगर-ग्राम सब पावन करके, हस्तिनागपुर पधराईं।।
की अगवानी माताजी की, सहस्र-सहस्र भक्तों ने आ।
परम पूज्य श्री माताजी ने, सबको शुभ आशीष दिया।।1477।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनागपुर, मातृसंघ आगमन हुआ।
नवग्रहशांति जिनालय के हित, पंचकल्याणक शुरू हुआ।।
नवग्रहों की नवतीर्थंकर, अष्टधातु की प्रतिमा जी।
हुईं विराजित नव जिनमंदिर, सन्निधान श्रीमाताजी।।1478।।

प्रथमबार उत्तरभारत में, मंदिर नवग्रह शांति बना।
कोटि-कोटि जन इस विचार की, की अनुमोदन शीश नमा।।
नवग्रहों की शांति के लिए, जैन न भटकें यहाँ-वहाँ।
बचे रहें मिथ्यात्व से सभी, जिन चरणों में रमें यहाँ।।1478।।

ज्येष्ठ-माघ-आश्विन माहों का, शुक्ल पक्ष जब आता है।
पक्ष शारदा कहलाता है, यह अति शुभ माना जाता है।।
माँ जिनवाणी सरस्वती की, जो जन करते आराधन।
वे निश्चित ही प्राप्त करेंगे, केवलज्ञान लक्ष्मी धन।।1479।।

तब सांसारिक सुक्ख-अभ्युदय, पा जायें क्या बात बड़ी।
माताजी ने कहा सभी से, बिखराकर उपदेश लड़ी।।
माताजी के सन्निधान में, हुआ शारदा आराधन।
पद्मावती-महालक्ष्मी का, भक्तिभावपूर्वक पूजन।।1480।।

पंचम खण्ड

गणिनी आर्यिकाशिरोमणि १०५
श्री ज्ञानमती माताजी का व्यक्तित्व

समाहित विषयवस्तु

1. माताजी के व्यक्तित्व का वर्णन महा कठिन है।
2. माता पूर्णचंद्र का रूप।
3. मैना–यथा नाम तथा गुण।
4. मैना–सुंदर-सुसंस्कृत-सर्वगुणसम्पन्न-श्रेष्ठतमा
5. पुत्री के लक्षण पालने में प्रकट।
6. सम्यक्त्व गुणोपेता।
7. मिथ्यात्व तमस भंजिका।
8. देविस्वरूपा।
9. संवेदनशीला।
10. अबला नहीं प्रबला।
11. कुमारियों की पथदर्शिका।
12. संघर्ष विजेत्री।
13. जन्म और दीक्षा तिथि एक-अद्भुत संयोग।
14. बालयोगिनी, वरिष्ठतमा एवं श्रेष्ठतमा साध्वी।
15. बीसवीं सदी की प्रथम साध्वी, ऐतिहासिक साध्वी।
16. पदविहार में सुकुमाल की याद।
17. संयम भागीरथी।
18. क्षुल्लिका वीरमती एक सार्थक नाम।
19. आत्मकल्याण की प्रबलेच्छा।
20. वीरमती सर्वोत्तम साध्वी।
21. ज्ञानमती ने अपने नाम को सार्थक किया।
22. सर्वोत्तमता से शोभित आर्यिका।
23. सर्वमंगलमय आर्यिका।
24. लेखन प्रवचन-पठन-पाठन सभी विशेषताओं से भरपूर।
25. शशांक-सुधाकर की अभिरूप।
26. प्रखरबुद्धि-प्रत्युत्पन्नमति सम्पन्न।
27. गुरुणां गुरु।

28. आदि इतिहास की पुनरावृत्ति करने वाली।
29. समता स्वमुखी।
30. मद से दूर-विनयशील।
31. तप-त्याग में अग्रणी।
32. लेतीं कम, देतीं अधिक, सतत साधना काम।
33. उपसर्गजयी, परिषहजयी।
34. करुणा कलित हृदय।
35. वज्रादपि कठोर, कसुमादपि मृदु।
37. पूर्व संयमी नारियों का आदर्श अक्षुण्ण रखा।
38. चतुर्थकालीन निर्दोष चर्या की पालक।
39. चन्दा-चिट्ठा से दूर।
40. उद्दिष्ट आहार की त्यागी साध्वी।
41. विलक्षण प्रतिभा की धनी।
42. वाग्देवी, श्रुतदेवी, सरस्वती, शारदा की अवतार।
43. तीन सौ ग्रंथों की रचयित्री।
44. प्रथम नारी लेखिका।
45. भव-तन-भोग-विरक्ती।
46. अयाचकवृत्तिसम्पन्ना।
47. स्व-पर कल्याण निरत।
48. क्षेत्रोद्धारिका।
49. अद्भुत संकल्पशक्ति सम्पन्ना।
50. सिद्धान्तों को व्यवहारिक रूप प्रदान किया।
51. जम्बूद्वीप-तेरहद्वीप-जैन भूगोल की साकार प्रस्तुति।
52. नर से भारी नारी।
53. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगिनी।
54. सर्वात्म सुखाय साहित्य रचयित्री।
55. नूतन क्षेत्र निर्मात्री।
56. निस्पृह साध्वी।
57. प्रत्येक क्षण का सही उपयोग।
58. अमर-उत्कृष्ट साहित्य की निर्मात्री।
59. सर्वोपयोगी, सर्वस्तरीय साहित्य की लेखिका।
60. शिविर-सम्मेलन की प्रेरिका।

61. **सूरज एवं चंद्रमा के गुण एक साथ।**
62. **सागर एवं हिमालय की महिमा-गरिमा का समन्वय।**
63. **विद्वत् कल्पलता।**
64. **सबसे सुलभ दर्शन देने वाली माँ।**
65. **असाधारण-अनन्वय-अनुपम व्यक्तित्व की धनी।**
66. **अनेक उपाधियों से अलंकृत।**
67. **पदविहार कर सम्पूर्ण देश में अहिंसा-सदाचार-शाकाहार का प्रचार किया।**
68. **प्रासुक लेखन और प्रासुक लेखिनी।**
69. **परनिंदा और आत्मप्रशंसा से रहित।**
70. **लेखन में विषय वस्तु से तद्रूपता।**
71. **अनेक युगों के बाद कभी-कभी ऐसी प्रतिभा का जन्म होता है।**
72. **धरा सी सहनशील/क्षमाशील, जल सी शीतल वाणी, अग्नि सी ऊर्जा सम्पन्न, वायु सी सतत कर्मशील और आकाश सी उदार हृदयसम्पन्ना।**
73. **वात्सल्य मूर्ति**
74. **ज्ञान-ध्यान-तपोरक्ता।**

काव्य पद

कार्य असंभव, संभव करने, मन मेरा ललचाया है।
तुंग वृक्ष के फल चखने को, वामन हाथ बढ़ाया है।।
कागज की नौका से मैंने, ठाना है सागर तरना।
होकर पंगु, सुमेरु शिखर पर, चाहूँ आरोहण करना।।1481।।

मंद बुद्धि, मन मार के बैठूँ, यह तो पुरुष का अर्थ नहीं।
सद् प्रयत्न, एकाग्री मन के, कभी भी जाते व्यर्थ नहीं।।
फिर जिसके शिर के ऊपर हों, श्री गुरु के वरदायी कर।
कार्य सफल होने में उसके, रहती कोई नहीं कसर।।1482।।

यही सोच मैंने उमंग भर, शुरू किया यह कार्य कठिन।
क्योंकि सफलता उसे ही वरती, जिसका होता निर्भय मन॥
दृढ़श्रद्धा-संकल्प साथ ले, चला भक्ति का मेरा यान।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, नमन सहित करता गुणगान।।1483।।

नील गगन में, उगते रहते, आधे-अधूरे चंद्र अनेक।
किन्तु शरद पूर्णिमासी का, पूर्णचंद्र बस होता एक।।
फिर धरती पर, ऐसे चंद्र को, देखना चाहो बन्धु अगर।
यू.पी. मंडल बाराबंकी, चलो कस्बा टिकैतनगर।।1484।।

टिकैतनगर चंद्रिका उतरी, रूप में अतिशय सुंदर काम।
इसीलिए सुंदरी मैना, रखा गया पुत्री का नाम।।
धर्म-आचरण रस का सिंचन, गर्भ काल ही किया गया।
विद्या-बुद्धि-समर्पण-सेवा, संस्कार पुट दिया गया।।1485।।

गौर वर्ण, भालपट उन्नत, मुख जैसे शारद का चंद।
लोचन सुंदर, नील कमल ज्यों, छिपकर बैठे कृष्ण मिलिन्द।।
नाक नुकीली, अधर लाल हैं, कर-पग छोटे मन मोहैं।
फूट रही शैशव की आभा, अंग-अंग अनुपम सोहैं।।1486।।

जैसा नाम तथा ही पुत्री, सदा बोलती मीठे बोल।
सबका मन करती थीं मोहित, रखती आँगन अमृत घोल।।
रहीं बालक्रीड़ाएँ ऐसी, मात-पिता का शंकित मन।
रुचते नहीं कभी मैना को, स्वर्णरचित गृह के बंधन।।1487।।

नाम न केवल सम्बोधन है, नियति बता देता है यह।
मैं-ना घर में रह पाऊँगी, मैना नाम बताता कह।।
अहंकार का है प्रतीक मैं, नहीं करेगी यह बाला।
भव कानन में रहे भटकता, अहंकार करने वाला।।1488।।

मैना नाम सार्थक करती, वाणी सबको भाती थी।
जो भी सुनता अमृत लगता, जब मैना तुतलाती थी।।
माता यदा आरती पढ़ती, पूजा करतीं, गाती थी।
छोटी मैना साथ बैठकर, ताली खूब बजाती थी।।1489।।

रूप तो है, पर गुण अभाव है, ऐसा होता कभी-कहीं।
और कभी गुण सन्निधान में, होता है सौन्दर्य नहीं।।
किन्तु बालिका मैना को हम, पाते हैं सुंदर गुणखान।
ऐसे चिन्हों से होती हैं, पुण्यवंत जीव पहचान।।1490।।

कोई कहता यह देवी है, कहें बनेगी साध्वी महान्।
अतिशय होनहार यह कन्या, कहें मनोहर से विद्वान्।।
रहे सत्य अनुमान सभी के, देवोत्तम गुण प्रतिभा है।
साध्वीरत्न, श्रेष्ठतम विदुषी, जिसकी कोई न उपमा है।।1491।।

बाल्यावस्था को कहते हैं, अज्ञान अवस्था विद्वज्जन।
खाने-पीने खेल-कूद में, कट जाते अमृत के क्षण।।
किन्तु बालिका मैना ने तो, हर क्षण सद् उपयोग किया।
घर-विद्यालय-मंदिर जी में, ज्ञानार्जन उद्योग किया।।1492।।

पूत के लक्षण दिखे पालने, मैना में चरितार्थ कथन।
मिथ्यात्व-अभक्ष्य त्याग के द्वारा, हुआ अलंकृत था बचपन।।
नाटक-प्रहसन-इत्यादि को, समझे लोग मनोरंजन।
लेकिन ज्ञानवती मैना ने, किया उन्हीं से पाठ ग्रहण।।1493।।

जब मैना ने होश संभाला, छाया था मिथ्यात्व सघन।
घर में पूजें देव-बाँयना, बाहर पूजें पीपल जन।।
चेचक अगर निकल आये तो, पूजा करें शीतला माँ।
अतिशय रूप दुखी होती थीं, देख-देख इसको मैना।।1494।।

शांत नहीं बैठीं लख मैना, बार-बार समझाया है।
भूले-भटके मूढ़जनों को, सच्चा मार्ग दिखाया है।।
एकांतवाद की आँधी रोकी, अनेकांत का दीप जला।
आगमसम्मत उपदेशों से, घर समाज का किया भला।।1495।।

अकलंक और निकलंक चरित से, ब्रह्मचर्यव्रत पाया है।
संयम को धारण कर नारी, जीवन स्वर्ण बनाया है।।
ग्वालिन-घी-मृत देख चींटियाँ, मैना त्यागा घृत बाजार।
मात्र नहीं घी, सकल वस्तुएँ, जो होती बाहर तैयार।।1496।।

तदाकाल नारी का जीवन, अबला भरी कहानी थी।
आँचल में था दूध और, आँखों में प्रासुक पानी था।।
चारों ओर विरोधी बादल, उमड़-घुमड़ करते तर्जन।
कार्यक्षेत्र नारी का घर है, करते बाह्य क्षेत्र वर्जन।।1497।।

पर मैना को रोक न पाईं, घर-समाज की हथकड़ियाँ।
और नहीं बेड़ी बन पाईं, माँ के आँसू की लड़ियाँ।।
बाँध नहीं पाया बाँहों में, पूज्य पिता का लाड़-दुलार।
नहिं संकल्प क्षीण कर पाई, बड़े जनों की भी फटकार।।1498।।

आचार्यश्री देशभूषण के, जब मैना पाये दर्शन।
तब दीक्षा के भाव जगे थे, भव-विरक्त मैना के मन।।
लेकिन चारों ओर खड़ी थीं, घर-समाज की दीवारें।
नारी कैद बनी थी उनमें, सुनें न कोई चीत्कारें।।1499।।

अब तक नहीं किसी कन्या ने, यह साहस कर पाया था।
और न ही अन्याय रोकने, बीड़ा कोई उठाया था।।
मैना देवी ऐसी कन्या, जिसने तोड़ी यह जंजीर।
बन कुमारियों की पथ दर्शक, लिख दी सोने की तकदीर।।1500।।

यथा रसों में मधुर इक्षुरस, सर्व श्रेष्ठता पाता है।
ताप शमन में सरित जान्हवी, नाम शीर्ष पर आता है।।
तथा बालिका मैना को हम, उत्तम पाते बीस शती।
जिसकी निर्मल कीर्ति कौमुदी, दशों दिशा अधुना छिटकी।।1501।।

तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा, कली धर्म की खिलती है।
जन्म और दीक्षा तिथि उनकी, प्रायः एक ही मिलती है।।
शरद पूर्णिमा को ही मैना, ब्रह्मचर्यव्रत पाया है।
जानबूझ इतिहास ने मानों, खुद को ही दुहराया है।।1502।।

आचार्य प्रवर देशभूषण से, सप्तम प्रतिमा व्रत लेकर।
रहने लगीं संघ गुरुवर के, श्वेत साटिका धारण कर।।
निर्मल-धवल धार गंगा की, महावीर जी क्षेत्र बही।
आचार्यश्री से दीक्षा पाकर, हुईं क्षुल्लिका वीरमती।।1503।।

सन् त्रेपन उन्नीस वर्ष की, सुकुमारी, माँ वीरमती।
पदविहार में कोमल पगतल, छिलें बहे तब रुधिर अति।।
पढ़कर के इतिहास आपका, आँखों झूलें मुनिसुकुमाल।
लखकर धीरज वीरमती का, हम करबद्ध नमाते भाल।।1504।।

असौज कृष्ण एकम् सन् त्रेपन, दिवस रहा अतिशयकारी।
बीसशती में प्रथम कुमारी, कन्या ने दीक्षा धारी।।
संयम के इस स्वर्ण क्षेत्र में, रचा गया मणिमयइतिहास।
फैलाया माँ वीरमती ने, अनुपम संयम ज्ञान प्रकाश।।1506।।

आचार्य प्रवर देशभूषण जी, संघ सहित जब करें विहार।
श्री क्षुल्लिका वीरमती भी, करें अनुगमन संघ अनुसार।।
कवि मन में उपमा यों आई, आगे-आगे भागीरथ।
गंगा करे अनुसरण उनका, जैसा-जैसा जाते पथ।।1507।।

कार्य आपने किया वीर का, रूढ़ि श्रृंखला छिन्न करी।
संसार-शरीर-भोग-अनुरक्ति, तज विरागता सुदृढ़ वरी।।
वीर प्रभू का क्षेत्र अतिशयी, वहीं क्षुल्लिका पद आया।
नाम रहा अन्वर्थ-सार्थक, वीरमती हर मन भाया।।1508।।

सुरभित सकल पदार्थों जैसे, चंदन होता है शिरमौर।
अथवा जैसे कमल पुष्प-सा, उत्तम सुमन न होता और।।
वैसे सकल क्षुल्लिकाओं में, अगर करें गणना का काम।
तो फिर सबसे ऊपर आता, माता वीरमती का नाम।।1509।।

वीरमती ने भवविरागता, ओढ़ी नहीं थी ऊपर से।
दीक्षा ली थी, सोच-समझकर, स्वेच्छापूर्वक भीतर से।।
ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग-मार्ग में, और वृद्धि की इच्छा थी।
नारी जीवन शिखर चढ़ूँ, धुन लगी आर्यिका दीक्षा की।।1510।।

कार्यार्थी बढ़ता ही जाता, जब तक होता सफल नहीं।
सूरज भी चढ़ता ही जाता, जब तक पाता शिखर नहीं।।
वीरमती जी करी प्रार्थना, श्रीगुरुवर से बारम्बार।
प्रभो! आर्यिका दीक्षा देकर, करें, करें मेरा उद्धार।।1511।।

काललब्धि जब तक न आये, सफल नहीं होता है काम।
पर, कार्यार्थी चैन न लेता, जारी रखता यत्न तमाम।।
और एक दिन जन पुरुषार्थी, कर लेता साफल्य वरण।
वीरमती को प्राप्त हो गई, वीरनिधि की चरण शरण।।1512।।

गौरवर्ण, उन्नतकद विनयी, लघुवयस्क, प्रतिभा सम्पन्न।
ब्रह्मतेज मंडित मुख मंडल, मात शारदा-सी व्युत्पन्न।।
ज्ञान-ध्यान में निरत सर्वदा, हर चर्या पद के अनुरूप।
वीरमती में गुरुवर पाया, सर्वोत्तम साध्वी का रूप।।1513।।

आचार्य श्री शांतिसागर जी, बीस सदी के प्रथमाचार्य।
लुप्तप्राय मुनि परम्परा का, किया पुनर्जीवन उपकार।।
उनके शिष्य वीरसागर जी, प्रथम पट्ट आचार्य यती।
सन् छप्पन में दीक्षा पाकर, हुईं आर्यिका ज्ञानमती।।1514।।

जैसे तारों बीच चंद्रमा, शोभित होता नील गगन।
यथा श्रेष्ठता को पाता है, सकल वनों में नंदनवन।।
तथा ज्ञान-शील की सागर, बालयोगिनी बीसशती।
उत्तमता से शोभित होतीं, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।।1515।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, स्वयं ज्ञान की मूरत हैं।
दर्शन अतिशय मंगलकारी, साध्वी महामुहूरत हैं।।
कार्य शुरू करने के पहले, नाम मात्र लेना पर्याप्त।
विघ्न पलायन कर जाते हैं, कार्य सिद्ध हों अपने-आप।।1516।।

महा असंभव एक व्यक्ति में, हर विशेषता हो भरपूर।
कोई लेखन कर सकता है, पर प्रवचन से कोसों दूर।।
पायी जाती किसी व्यक्ति में, प्रवचन की उत्कृष्ट कला।
किन्तु बात जब लेखन की हो, अनुभव होती बुरी बला।।1517।।

पढ़ लेना बस, एक बात है, उसे समझ लेना है अन्य।
आप समझ पर समझा देना, कार्य महत्तम-श्रेष्ठ-अनन्य।।
जिसने मिश्री चखी नहीं है, उसे करा दे मिश्री स्वाद।
यह तो वह ही कर सकता है, जिसने स्वयं लिया है स्वाद।।1518।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती में, हर गुण विद्यमान भरपूर।
उत्तम वक्ता, सुष्ठु लेखिका, सम्प्रेषण विद्या में शूर।।
जिनवच गूढ़ गुत्थियों को माँ, खोल-खोल कर सुलझातीं।
हर्ष विभोर विद्वानों द्वारा, श्रुतकेवलि संज्ञा पाती।।1519।।

गौरवर्णतन, श्वेतसाटिका, पिछी-कमण्डलु धारें कर।
लगती हैं माताजी जैसे, उतरा हो शशांक भू-पर।।
माताजी का श्रीमुखमंडल, रहा सुधाकर से उत्तम।
अमृत-हितकर-मधुर निकलते, पूज्याश्री मुख से प्रवचन।।1520।।

व्यक्ति एवं व्यक्तित्व बहुत से, सभी अनन्य असाधारण।
बालब्रह्मचारिणी मैना, सम्यक् अष्ट अंग धारण।।
महाप्रबल मिथ्यात्व शत्रु से, निज परिवार बचाया है।
वीरमती-फिर-ज्ञानमती ने, जग शिवमार्ग दिखाया है।।1521।।

अकलंक और निकलंक सदृश है, माताजी की बुद्धिप्रखर।
एक बार के श्रवणमात्र से, पाठ याद लेती थीं कर।।
संस्कृत की कातंत्र व्याकरण, दो-क माह में कर ली पूर्ण।
पचा गईं वे अल्पकाल ही, लौह चनों को करके चूर्ण।।1522।।

सब ग्रंथों की नींव व्याकरण, उससे बढ़ता ज्ञान महल।
आत्मसात् कर लिए ग्रंथ बहु, स्वाध्याय श्रमसाध्य सकल।।
दीक्षित हो आचार्य संघ में, रहीं पढ़ाये शिष्य अनेक।
नित परिमार्जन किया ज्ञान का, आत्म उतारी गहरी रेख।।1523।।

संघ पढ़ाये मुनि-आर्यिका, गौरवमंडित गुरु का पद।
लेकिन श्रीमाताजी मन को, छू न सका गुरुता का मद।।
कांजी सीकर कर न सकने, क्षीर सिंधु में कोई विकार।
लघुता से नर ऊपर उठता, दबता है गुरुता के भार।।1524।।

मौन साधनारत माताजी, करतीं कुछ प्रतिवाद नहीं।
स्तुति-निंदा समता रखतीं, करतीं हर्ष-विषाद नहीं।।
माना चित्त उदधि सम गहरा, अनेकानेक सुगुण भंडार।
माताजी जग में रहती हैं, किन्तु न जग उनको स्वीकार।।1525।।

पिछी-कमण्डलु धारण करके, जब माताजी गमन करें।
मात-चंदना प्रज्ञाश्रमणी, माता संग अनुगमन करें।।
लगतीं जैसे ब्राह्मी-सुंदरी, पुरा आर्यिका मन भाई।
इस धरती को पावन करने, एक बार फिर से आईं।।1526।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, त्यागवृत्ति में आगे हैं।
मीठा-नमक-तेल-दधि त्यागे, इनके भाग न जागे हैं।।
अन्न एक-दो ग्रहण करें बस, लेती नीरस अल्पाहार।
लेकिन देतीं जगज्जनों को, धर्मामृत उत्तम उपहार।।1527।।

मात्र हथेली भर लेती माँ, लौटा देतीं दरिया भर।
एक बार करतीं अहार हैं, पर स्वाध्याय करें दिन भर।।
माताजी प्रासुक जल पीतीं, प्रासुक ही वे कहें वचन।
प्रासुक मसि-लेखनि माँ की, करती हैं प्रासुक लेखन।।1528।।

करुणाकलित हृदय माता का, जग जीवों पर भाव दया।
जो भी दर्शन करने आया, कोई नहीं निराश गया।।
सम्मुख आये भक्तजनों को, शुभाशीष देतीं भरपूर।
सन्तों के सब हैं कुटुम्ब के, नहीं किसी से रिश्ता दूर।।1529।।

श्वेतसाटिका धारे माता, लगतीं सभा बीच ऐसे।
मानों कोई ज्योतिपुंज ही, उतरा हो भू-पर जैसे।।
पिच्छी कर में लेकर माता, जब प्रारंभ करें प्रवचन।
लगतीं मानों बोल रही है, सुंदर केकी चंदन वन।।1530।।

माताजी का हृदय वज्र-सम, मोह शत्रु को दिया पछार।
मात-पिता प्रति ममता त्यागी, भाई-बहन का छोड़ा प्यार।।
किन्तु कुसुम-सी कोमलता भी, माता मन में रहती है।
सबके प्रति करुणा की धारा, वात्सल्य बन बहती है।।1531।।

ब्राह्मी-सुंदरी आदिकाल में, जो प्रस्तुत आदर्श किया।
अनन्तमती-चंदनबाला ने, जिसको आगे बढ़ा दिया।।
उसी महत्तम संयमपथ को, माता जीवित किया पुनः।
फलस्वरूप मिल रहीं देखने, व्रती-साधिकाएँ अधुना।।1532।।

आदिनाथ संयोग प्राप्त कर, संयम धारा घर परिवार।
ब्राह्मी-सुंदरी-बाहुबली ने, समझ लिया संसार असार।।
इस युग में विरले मानव ही, विषयभोग से हुए उदास।
ज्ञानमती जी के कुटुम्ब ने, भी दुहराया यह इतिहास।।1533।।

निर्माणकार्य, भोजनचर्या को, चंदा-चिट्ठा उचित नहीं।
इन प्रसंगवश, मेरे संयम, बाधा आये उचित नहीं।।
अगर आप अपने बलबूते, कर सकें, करें कोई निर्माण।
पर, मम संयम दोष न आवे, इसका रखना पूरा ध्यान।।1534।।

माताजी की चर्या सुनकर, अथवा उनकी चर्या देख।
किसके मन उत्पन्न न होता, आदर-श्रद्धा-हर्ष अतिरेक।।
आचार्य प्रवर श्री हेमचंद्र का, है यह अति उपयुक्त कथन।
वीतराग पथ संदर्शक का, सुकरणीय शतशः वन्दन।।1535।।

असामान्य होती है प्रतिभा, तथा न प्रतिभावान अनेक।
महाविलक्षण प्रतिभाधारी, ज्ञानमती माताजी एक।।
ज्ञान-ध्यान-तप करने वाली, बीस शती अन्यत्र नहीं।
साहित्य-तीर्थ सर्जना संगम, मिला न ऐसा मेल कहीं।।1536।।

फिर बचपन से ही हों जिसके, जगत् विरागी शुभ परिणाम।
अंगुलियों के प्रथम पोर पर, आ जाता है उनका नाम।।
गणिनी ज्ञानमती माताजी, उन अत्यल्पों में से एक।
जिनके मन जागी विरागता, जगत् काय भोगों को देख।।1537।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती ने, घुट्टी में पाये संस्कार।
इन्द्रिय सुख संसार विरक्ति, सकल जगत् के दृश्य असार।।
पद्मनंदिपंचविंशतिका, ग्रंथ महत्तम-सुंदरतम।
जग ज्वर शीघ्र नशाने वाली, उत्तम घुट्टी कहते हम।।1538।।

माताजी के पावन कर में, सुष्ठु लेखिनी शोभित है।
जैसे सरस्वती के कर में, वीणा मन को मोहित है।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, जिनवाणी को कर में धार।
लगतीं जैसे सरस्वती ने, माता रूप लिया अवतार।।1539।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, जब करती हैं धर्मोपदेश।
लगतीं मानों गंगा झरती, हिम अद्रि के उच्च प्रदेश।।
गौरवर्ण श्री माताजी के, श्वेत साटिका शोभै तन।
शारद पूनमचंद्र चन्द्रिका, लिपटी मानों चंद्र बदन।।1540।।

गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि, परमपूज्य माँ ज्ञानमती।
चारों ओर विराजित श्रोता, मंच सुशोभित माताजी।।
उपमा मन को सुंदर लगती, जैसे बीचों-बीच कमल।
सघनरूप से उसको घेरे, खिले हुए हैं नलिनी दल।।1541।।

साधक वही सराहा जाता, जिसकी वृत्ति अयाचक है।
निज आहार हेतु नहिं कहता, कभी भी सच्चा साधक है।।
परम पूज्य श्री माताजी की, मोक्षसाधना अतिनिर्दोष।
दान प्राप्त संस्था धन का, करतीं नहिं आहार सदोष।।1542।।

धर्म-क्षेत्र साहित्य सुरक्षा, जैसे उत्तम कार्य अनेक।
साधु प्रेरणा से सम्पन्ने, इतिहास पृष्ठ हम सकते देख।।
श्रीधरसेनाचार्य प्रवर से, श्रुत संरक्षण किया गया।
आचार्य श्री शांतिनिधि द्वारा, रूप स्थायी दिया गया।।1543।।

विमलसिंधु-विद्यासागर भी, इसके हैं जीवंत प्रमाण।
क्षेत्र सुरक्षा हेतु आपके, कार्य बने उत्तम वरदान।।
संकल्प शक्ति अद्भुत माँ गणिनी, जो भी मन में ठानतीं।।
उसे पूर्ण करके दम लेतीं, प्रथम न लेतीं अल्प विराम।।1544।।

जम्बूद्वीप धार्मिक रचना, ज्योतिर्लोक आदि साहित्य।
माताजी के शुभाशीष से, प्रकट हुए जैसे आदित्य।।
जो केवल सिद्धांत रूप थे, उन्हें व्यवहारिक बना दिया।
जो केवल नभ में दिखते थे, उन्हे सिद्धांत का रूप किया।।1545।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, जल में जैसे भिन्न कमल।
जग में रहतीं जग से ऊपर, मन-विचार अति हैं निर्मल।।
आदहिदं कादव्वं कारण, पूज्याश्री गृहत्याग किया।
स्त्रीपर्याय छेद करने को, दीक्षा धारी वृत्त लिया।।1546।।

स्वाध्याय साहित्य सर्जना, महापुण्य का कारण है।
आत्मा में पवित्रता आती, मन चांचल्य निवारण है।।
यही रहा उद्देश्य पूज्य श्री, भरा सरस्वती का भंडार।
अढ़ाई शतक से अधिक ग्रंथ रच, किया जगत का महदुपकार।1547।।

शिष्यों का निर्माण किया माँ, रहा स्व-पर कल्याणक भाव।
सम्यग्दर्शन गुण अभिवृद्धि, मोक्ष गमन-सह कर्म अभाव।।
कमल जिनालय, जम्बूद्वीप का, हुआ यहाँ उत्तम निर्माण।
यहाँ बैठकर करें भक्तगण, कर्म क्षपण हित पिण्डस्थ ध्यान।।1548।।

परम पूज्य श्री माताजी ने, किए महत्तम कार्य अनेक।
रचना जम्बूद्वीप अमर है, आगन्तुक कहता प्रत्येक।।
इतना सुंदर कहीं न देखा, जैनागम का नक्श विशाल।
नर ऐसा कुछ कर ना पाये, नारी ने कर दिया कमाल।।1549।।

इतना सब कुछ होने पर भी, माताजी की प्रकृति अनाम।
कहतीं मेरा कुछ ना इसमें, यह तो है जनता का काम।।
माताजी कहतीं मुस्काकर, हम तो साधु अकिंचन हैं।
मात्र बताई आगम रचना, किया नक्श दिग्दर्शन है।।1550।।

माता की दैनिक चर्या का, करें अगर हम अवलोकन।
अर्द्धभाग बीतता प्रतिदिन, करने में साहित्य सृजन।।
सृजन नहीं हो जाता ऐसे, घण्टों करतीं खूब मनन।
तदनंतर लेखन के द्वारा, लेता है साहित्य जनम।।1551।।

चतुर्थभाग बीतता माँ का, नित्य क्रियाओं में भाई।
तन रक्षा को देना पड़ता, मजबूरीवश चौथाई।।
लेतीं मात्र हथेली भर है, लौटा देतीं दरिया भर।
पूजा-विधान-सैद्धांतिक लेखन, तथा सामयिक प्रवचनकर।।1552।।

माताजी का निस्पृह जीवन, जैसे पूरी खुली किताब।
पढ़े साथ में रहकर कोई, दोषमुक्त जैसे आफताब।।
फ्रांस की महिला एन.शान्ता ने, किया अहर्निश अवलोकन।
आहार-विहार-स्वाध्याय-प्रतिक्रमण, जैन साध्विका रात्रि शयन।1553।।

उसने खाया माताजी का, बिना नमक-घी-मीठा अन्न।
लिखा शोध में नीरस खाकर, माता रहतीं सदा प्रसन्न।।
माताजी की चर्या पूरी, है जैनागम के अनुकूल।
लिख सकती सब नहीं लेखिनी, अर्पित हैं श्रद्धा के फूल।।1554।।

माताजी की साध्वी चर्या, करें सूक्ष्मतम अवलोकन।
शिथिलाचार कहीं भी उसमें, नाममात्र नहिं पाते हम।।
आत्महितंकर उनकी चर्या, करती है पर का उपकार।
माताजी हैं इस कलियुग में, मानों ब्राह्मी का अवतार।।1555।।

सन् तिरेपन में पहला-पहला, चातुर्मास टिकैतनगर।
दो हजार आठ सन् आया, उपकृत होगा कोई नगर।।
छप्पन चातुर्मास किये माँ, ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग लिए।
पूजा-विधान-शिविर इत्यादिक, अनेक महत्तम कार्य किए।।1556।।

सूरज और चंद्रमा दोनों, नहीं एक थल रह सकते।
लेकिन माता ज्ञानमती में, एकमेक होकर रहते।।
वचन प्रकृति है शशि-सी शीतल, ज्ञान आपका सूर्य प्रकाश।
दोनों रहते साथ-साथ हैं, माता के जीवन आकाश।।1557।।

है व्यक्तित्व विलक्षण माँ का, हैं असंख्य गुण की भंडार।
इसीलिए तो विद्वज्जन को, माँ सान्निध्य सदा स्वीकार।।
दर्शन-ज्ञान-चरित्र-क्षमादिक, माँ जीवन्त समाये हैं।
श्रेय-नरेन्दर-जय-शिव-शेखर, लाल चरण में आये हैं।।1558।।

विद्वज्जन रखते हैं अतिशय, माताजी चरणों अनुराग।
वात्सल्य पाकर माता का, अपने को मानें बड़भाग।।
सन्तों के संतान न होती, उनकी सन्तति शिष्य अवदान।
अतः सतत संतति को माता, देती रहतीं अमृत ज्ञान।।1559।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती मन, राग-द्वेष से है ऊपर।
मित्र-शत्रु, स्तुति-निन्दा का, उन पर होता नहीं असर।।
सुनी-सुनाई बात नहीं यह, अनुभव की सम्पत्ति है।
धैर्य-परीक्षा होती जब ही, आती कोई विपत्ति है।।1560।।

एक ओर तो माँ के चरणों, शीश नमाता हर विद्वान्।
उधर पूज्यश्री माताजी भी, उनका रखतीं पल-पल ध्यान।।
श्रीमाताजी विद्वानों को, कल्पलता से बढ़कर हैं।
उनकी शुभ आशीष छाँव में, पाते सब श्रेयस्कर हैं।।1561।।

परम पूज्य श्री माताजी का, है व्यक्तित्व असाधारण।
अतुलनीय-अनन्वय-अनुपम, निज-पर हेतु तरण-तारण।।
युगों-युगों में ऐसी प्रतिभा, इस भूतल को करे पवित्र।
जिसके मंगल सन्निधान में, सुख-शांति फैले सर्वत्र।।1562।।

माताजी उपसर्गजयी हैं, वीर - सहिष्णु - धीरमती।
आने वाले व्यवधानों में, रहतीं अचल-अडोल अती।।
ज्ञान-ध्यान आईं बाधाएँ, माँ ने उनका शमन किया।
मन-वच-काय विकार न आया, पंचेन्द्रिय का जयन किया।।1563।।

ज्ञान-ध्यान-तप-त्याग आदि हित, करती हैं माँ परिषह्जय।
स्वाध्याय लेखनरत रहकर, करतीं माता कर्मक्षय।।
गर्मी-सर्दी भूख प्यास में, माता समता भाव रखें।
शत्रु-मित्र, स्तुति-निंदक को, माता एकहि भाव लखें।।।1564।।

चौबीस परिग्रह बाहर-भीतर, का माताजी त्याग किया।
पिछी-कमण्डलु जिनमुद्रा को, श्रीमाता स्वीकार किया।।
श्वेतसाटिका तन पै धारैं, पाणिपात्र करें आहार।
करें पंचमहाव्रत पालन, अष्टबीस मूलगुण धार।।1565।।

न्याय प्रभाकर-सिद्धांतवाचस्पति, आर्यिकारत्न माँ ज्ञानमती।
चिंतक-विदुषी-साध्वी हैं ही, हैं विख्यात लेखिका भी।।
यथानाम तथागुण वेष्टित, ज्ञान-आचरण तीर्थ महान।
आतमहित कर्तव्य के सह, करतीं माँ जग का कल्याण।।1566।।

लौकिक शिक्षा मात्र तीसरी, संचित अमित ज्ञान भंडार।
महाविलक्षण प्रतिभाधारी, मातृ सरस्वती की अवतार।।
तीन शतक ग्रंथों की रचना, किया स्थापित कीर्तिमान।
अवध विश्वविद्यालय मेरठ, दिया आप डी.लिट्. सम्मान।।1567।।

है व्यक्तित्व प्रभावक अतिशय, पूज्य आर्यिका ज्ञानमती।
जो भी दर्शन करने आता, पड़ता है प्रभाव अति।।
स्वतः हाथ जुड़ते दर्शक के, श्रद्धासागर उमड़े मन।
मस्तक झुक जाता चरणों में, करता बारम्बार नमन।।1568।।

त्याग-तपस्या तेज सुशोभित, माताजी के मुख मंडल।
श्रद्धालु माँ के दर्शन कर, पा जाते हैं उत्तम फल।।
व्यसनमुक्त जीवन हो जाता, सदाचार पाते सम्मान।
जो आता है माँ के चरणों, हो जाता उसका कल्याण।।1569।।

लुंचन केश जैन साधु का, प्रमुख मूलगुण बतलाया।
उत्तम-मध्यम-जघन्य रूप से, तीन भेद आगम गाया।।
दीर्घ संयमित माँ जीवन में, लुंचन केश किया कई बार।
रहा सहारा आगम का ही, होवें स्वस्थ या कि बीमार।।1570।।

माताश्री स्पष्ट कथन है, तन मिलता है भव-भव में।
लेकिन संयम रत्न का मिलना, महा कठिन है जीवन में।।
यह तन-जीवन रहे न रहे, पर संयम को छोड़ें ना।
नश्वर तन रक्षा के पीछे, संयम से मुख मोड़ें ना।।1571।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, क्षण-क्षण का करतीं उपयोग
व्यर्थ नहीं जाने देती हैं, प्राप्त हुआ जो दुर्लभ योग।।
समय स्वर्ण है, समय महाधन, इसको खोना व्यर्थ नहीं।
नहीं समय की कीमत जानी, जीने का कोई अर्थ नहीं।।1572।।

तीन शतक ग्रंथों की रचना, समय बचाने का फल है।
महाव्रती की सकल क्रियाएँ, निशदिन चलतीं अविरल हैं।।
हों अस्वस्थ भले माताजी, कलम न रुकने पाती है।
और न ही संयम चर्या में, लेश शिथिलता आती है।।1573।।

प्रासुक-शुद्ध लेखिनी माँ की, कई अर्थों में पाते हैं।
हर रचना निर्दोष पूर्ण, आचार्य कथन ही आते हैं।।
नहीं मिलावट कुछ भी अपनी, नहीं नयों का असंतुलन।
कल-कल शब्द सुनाई देता, जिन गंगा का अनुगुंजन।।1574।।

डाल कमंडलु का प्रासुकजल, उसमें सूखी टिकिया घोल।
पैन डुबोकर लिखतीं माता, शब्द-शब्द मुक्ता अनमोल।।
अवधि पूर्व चौबिस घण्टे में, धो लेतीं निब-कलम-दवात।
अष्टसहस्री की नौ कॉपी, लिखी पैन्सिल से ही मात।।1575।।

परपीड़ा या परनिन्दा को, माता करतीं कभी नहीं।
आत्मप्रशंसा करने वाले, मिलें न खोजे शब्द कहीं।।
अपने दोष प्रकट करने में, संत नहीं करते संकोच।
अन्य दोष दर्शन करने का, कभी न उनका होता सोच।।1576।।

जब माताजी लेखन करतीं, हो जातीं तन्मय-तद्रूप।
मन को विचलित कर ना पातीं, गर्मी-सर्दी अथवा धूप।।
आते-जाते भक्तजनों का, उन्हें नहीं हो पाता भान।
फिर उनको आशिष देने का, कैसे रहे आपश्री ध्यान।।1577।।

पुस्तक कर में चित्त चंदेरी, स्वाध्याय यह रीति नहीं।
जब दीपक लौ हिलती रहती, करती अधिक प्रकाश नहीं।।
स्वर्णकार फुकनी से केन्द्रित, होकर दीपक अल्प किरण।
कठिन धातु को पिघला देती, अतः जरूरी स्थिर मन।।1578।।

माताजी जो लेखन करतीं, रखती हैं उसका ही ध्यान।
सिद्धचक्र मंडल विधान में, रमतीं सिद्धचक्र गुणगान।।
समवसरण में जा विराजतीं, जब रचतीं हैं उक्त विधान।
इसीलिए माँ की रचनाएँ, जीवित हैं, रखतीं हैं प्राण।।1579।।

शती बीसवीं प्रथम योगिनी, बालब्रह्मचारित्र धनी।
लेतीं जन्म अनेक युगों में, ऐसी प्रतिभा महागुणी।।
जैन समाज सर्वोच्च साधिका, वरिष्ठतमा आर्यिका आप।
दर्शन-ज्ञान-चरित्र त्रिवेणी, हरते वचन जगत् संताप।।1580।।

आर्यिका शिरोमणि, रत्न आर्यिका, गणिनीप्रमुख-ज्ञानवारिधि।
न्याय प्रभाकर-विश्वविभूति, जैनजगत की महानिधि।।
अप्रमत्त चर्या की पालक, कालजयी व्यक्तित्व महान्।
राष्ट्र की गौरव, युग प्रवर्तिका, चारित्रचंद्रिका-ज्ञान निधान।1581।।

वाग्देवी-सिद्धान्त वाचस्पति, श्रुतदेवी-वाचस्पति विधान।
नारीशक्ति प्रतीक-वत्सला, तीर्थोद्धारिका, दयानिधान।।
अभीक्ष्ण ज्ञानयोगिनी माता, उत्तम वक्ता, प्रवचनकार।
मौलिक लेखन, टीकाकर्त्री, कर्त्री जिन शासन प्रसार।।1582।।

अनेकानेक उपाधि अलंकृत, माताजी व्यक्तित्व महान्।
मैं अल्पज्ञ, मंदमति बालक, कर न सका तुतला गुणगान।।
लेकिन जैसे कमल पुष्प से, दर्दुर पाया स्वर्ग विमान।
वैसे मैं भी माताजी के, चरण कमल पाऊँ स्थान।।1583।।

है विशाल व्यक्तित्व आपका, है विराट कर्तृत्व अपार।
मैं अशक्त, बाहों का छोटा, कर ना सका उदधि को पार।।
आपश्री तो गुण समुद्र हैं, मुझे नहीं गणना का ज्ञान।
अपने अल्प बुद्धि बालक को, कीजे माता क्षमा प्रदान।।1584।।

देह देवालय, मनोवेदिका, में माता को बैठाकर।
पल-पल अर्घ्य चढ़ाया मैंने, श्रद्धापूर्वक गुण गाकर।।
जब से मैंने माताजी के, पाये पावन चरणकमल।
तब से अब तक, मेरी श्रद्धा, दूध से धोई, महाधवल।।1585।।

रहें कहीं पर भी माताजी, चरण तो मेरे मन में ही।
मेरी देह कहीं भी रहती, मन माता के चरणों में।।
माताजी का सन्निधान पा, मेरा जीवन धन्य हुआ।
गुण गा पुण्य कमाया इतना, भाग्यवन्त न अन्य हुआ।।1586।।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का कृतित्व

समाहित विषयवस्तु

1. शिष्यों-रचनाओं और कार्यों की गणना कठिन।
2. सम्पूर्णता-कार्यों की विशेषता।
3. श्रेष्ठता-रचनाओं की विशेषता।
4. रत्नत्रय निर्दोषता-शिष्यों की विशेषता।
5. कार्यकलाप-निष्काम, निस्पृह, निर्नाम भाव से।
6. कार्यों-कृतियों की निरंतरता, सूर्य-पवनवत्।
7. उत्तमोत्तम-सुपात्र शिष्य संग्रहण।
8. उदारचरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम्।
9. सबके लिए प्रेरक, ऊर्जावान-घर और बाहर का भेद नहीं।
10. श्रावक-श्राविका, मुनि-आर्यिका सभी को ज्ञानदान।
11. स्वयं अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग में लीन।
12. तीन सौ ग्रंथों की रचना-एक रिकार्ड।
13. विगत दो हजार वर्षों में प्रथम शास्त्र लेखिका।
14. हर वर्ग, हर स्तर, हर विधा, हर शैली का उत्तम साहित्य-सृजन।
15. साहित्य में भावपक्ष और कलापक्ष का सुंदर समन्वय।
16. हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत-कन्नड़ आदि भाषाओं में साहित्य सृजन।
17. साहित्य स्वान्तः सुखाय के साथ सर्वान्तः सुखाय भी।
18. एक ग्रंथ एक मंदिर निर्माण के समान उत्तम, ऐसे 300 ग्रंथ निर्माण किए।
19. स्व-पर के लिए स्वाध्याय के द्वार खोले।
20. माताजी ने जितना लिखा है, हम उतना पढ़ भी नहीं सकते।
21. चारों अनुयोगों के ग्रंथ लिखे।
22. सिद्धांतों को पुस्तकों से निकालकर व्यवहारिक रूप प्रदान किया।
23. जैन भूगोल को साकार प्रदान करने वाली प्रथम महान व्यक्तित्व।
24. नर से भी बढ़कर नारी ने कार्य कर दिखाया।

25. जम्बूद्वीप एवं तेरहद्वीप रचनाएँ अमर, अनुपम, अलौकिक, अनन्वय, बुद्धि कौशल को प्रकट करने वाली रचनाएँ हैं।
26. जम्बूद्वीप परिसर पृथ्वी पर मानव निर्मित स्वर्ग है।
27. जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करना माताजी जैसे दिव्य व्यक्तित्व की क्षमता से ही संभव हो सका।
28. पाठ्य पुस्तकों में वर्षों से मुद्रित भ्रमित अंशों को शुद्ध कराना माताजी का जैनधर्म के लिए अनुपम वरदान है।
29. तीर्थंकर जन्मभूमियों का जीर्णोद्धार माताजी के सकारात्मक उत्तम चिन्तन का फल है।
30. माताजी की प्रकृति उत्तम पुरुषार्थी है, जिस कार्य को हाथ में लेती हैं, उत्तमता से पूर्ण करके ही विराम लेती हैं।
31. माताजी के कार्यों को देखकर विस्मय विमुग्ध हो अहँ की भावना त्याग लोग दाँतों तले अंगुली दबा लेते हैं।
32. अधिक लेखन श्रम से माताजी कई बार अस्वस्थ हो गईं किन्तु निरंतरता में व्यवधान नहीं आया।
33. षट्खंडागम, अष्टसहस्री, मूलाचार जैसी कठिन कृतियों को सरल भाषा और सुपाच्य बनाकर सर्वोपयोगी बना देना माताजी की उत्तम शैली और क्षमता का प्रतीक है।
34. पूजाओं और विधानों की रचना इस युग के लिए माताजी का अनुपम अवदान है। सूखी कठिन भक्ति गंगा में आपने रस की महाधारा प्रवाहित कर दी है।
35. माताजी की रचनाओं की विशेषता यह है कि जो कुछ लिखती हैं, प्रामाणिक एवं उद्धरण के साथ लिखती हैं।
36. आपकी रचनाओं में अनेकांतवाद का सुंदर समन्वय है।
37. मांगीतुंगी में 108 फुट ऊँची भगवान आदिनाथ की खड्गासन प्रतिमा विश्व की प्रतिमाओं में सबसे ऊँची एवं बड़ी प्रतिमा होगी।
38. कुण्डलपुर (नालंदा) का विकास कराके भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि को माताजी ने भारत के नक्शे पर उजागर कर दिया।
39. माताजी की प्रेरणा से त्रिलोक शोध संस्थान एवं वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला जैसी जीवन्त संस्थाओं की स्थापना से ज्ञान और साहित्य के प्रसार में अनुपम योगदान हुआ है।

40. ज्ञानज्योति रथ एवं समवसरण रथ द्वारा माताजी ने जैनधर्म का भारत के कोने-कोने में प्रचार कर अनूठा कार्य किया है।

41. जैसे जल सदा प्रवाहमान रहता है, वैसे ही माताजी की कार्य श्रृंखला हमेशा आगे ही बढ़ती रहेगी।

काव्य पद

यथा महोदधि जलराशि का, रहा असंभव पाना पार।
अथवा जैसे नाम-नक्षत्रों, की संख्या है अपरम्पार।।
गिरि सुमेरु की शिखर शिखरियाँ, कोई नहीं गिन पाया है।
माताजी के कार्यों को भी, कोई नहीं लिख पाया है।।1587।।

लिखे कई ने, किन्तु अधूरे, नहीं पूर्णता आ पाई।
क्योंकि माता के कार्यों की, कभी नहीं इति आ पाई।।
चलते रहते पूज्याश्री के, क्षेत्र अनेकों क्रिया-कलाप।
वे भी अतिनिष्काम भाव से, निस्पृह-शांत और चुपचाप।।1588।।

जब तक हम करते हैं गणना, लिखते हैं कृतियों के नाम।
तब तक एक और लिख जाती, निष्फल होता प्राणायाम।।
क्या-क्या कार्य किए माताजी, हम तो गिन ना पाते हैं।
तब तक कार्यों की सूची में, नाम नये जुड़ जाते हैं।।1589।।

जैसे गंगा बिना स्पृहा, सबकी प्यास बुझाती है।
जैसे लदी फूलों की डाली, परहित को झुक जाती है।।
ज्यों पर्जन्य तो रहता नभ में, भू-पर करता है छाया।
बस, वैसा ही माताजी का, हम को कार्य समझ आया।।1590।।

सूर्य सदा चलता ही रहता, करता नहीं कभी विश्राम।
पवन सदा बहता ही रहता, नहिं लेता क्षण एक विराम।।
बस वैसे ही माताजी की, स्वर्ण लेखिनी का उपकार।
ज्ञानज्योति फैलाती जग में, करें क्षेत्र का जीर्णोद्धार।।1591।।

दीक्षा देकर शिष्य संग्रहण, रहता सब संतों का काम।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती भी, इसको दिया पूर्ण अंजाम।।

रहा नहीं उद्देश्य आपका, संख्या शिष्य बढ़ाना मात्र।
चंदन-मोती-रवि से उत्तम, चयन किए अत्यंत सुपात्र।।1592।।

माताजी हैं महा पारखी, मणि-मुक्ता सबका है ज्ञान।
जिसको शुभाशीष दे देतीं, हो जाता उसका कल्याण।।
किस-किस का उल्लेख करें हम, यहाँ तो लम्बी सूची है।
उदार नीति संतों की सचमुच, होती धरा समूची है।।1593।।

मोक्षमार्ग पर कदम बढ़ाने, किया स्वयं संयम स्वीकार।
अन्यों को भी मार्ग दिखाया, दी प्रेरणा बारम्बार।।
यही नहीं, दीक्षा दिलवाई, संयम पथ आरूढ़ किया।
धन्य-धन्य माँ ज्ञानमती ने, जग का अत्युपकार किया।।1594।।

आप कहेंगे नाम बताओ, तो कुछ एक गिनाये हैं।
पद्मा-जिनमति आदि आर्यिका, संभव-श्रेष्ठ बनाये हैं।।
श्री ब्रह्मचारी राजमल्लजी, बने हुए थे बस गागर।
प्रेरित कर दीक्षा दिलवाई, हुए आचार्य अजितसागर।।1595।।

माता श्री मोहिनीदेवी, का भी किया महत् उपकार।
गृहकारा से छुड़वा करके, बना दिया रत्नभंडार।।
नहिं केवल दीक्षा दिलवाई, अपितु स्वयं भी दीक्षा दी।
मनोवती अनुजा को माता, किया आर्यिका अभयमती।।1596।।

बहन माधुरी मार्ग दिखाया, संयम पथ आरूढ़ किया।
स्वयं आर्यिका दीक्षा देकर, पूज्य चंदना बना दिया।।
संगति का प्रभाव पड़ता है, यथा गुरू वैसी भगिनी।
ज्ञानाभ्यास निरन्तरता से, हुईं आप प्रज्ञाश्रमणी।।1597।।

नगर सनावद रहने वाले, चंदमोतियों के आगर।
माताजी के शुभाशीष से, हुए आप मोतीसागर।।
मोती-मोती ही रह जाते, अगर न जुड़ता स्वर्णिम तार।
माताजी के गुण प्रसाद से, मोती बने कंठ के हार।।1598।।

जिसके मन करुणा की धारा, बहती चाहे जगकल्याण।
उसका मन कैसे न रखता, अपने प्रिय अनुज का ध्यान।।

ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र कुमार जी, ये भी रही आपश्री देन।
नहीं कमी थी घर में कुछ भी, घर में रह पाते सुख चैन।।1599।।

बारम्बार प्रेरणा पाकर, आजन्म ब्रह्मव्रत ग्रहण किया।
अवधप्रांत के सबसे पहले, ब्रह्मयुवक सम्मान लिया।।
उत्तम वक्ता, सुष्ठुलेखक, कार्य कुशल, कर्मठ, विद्वान्।
सूझबूझ के धनी मनीषी, जगत् कर्मयोगी पहचान।।1600।।

माताजी के योग्य शिष्य दो, मोतीसिंधु-रवीन्द्रकुमार।
लगता ये सब पूर्व जन्म के, हैं आपस में रिश्तेदार।।
जैसे सुंदर-स्वरूप वृषभ दो, रथ को सफल बनाते हैं।
वैसे ज्ञानज्योति के रथ में, इन दोनों को पाते हैं।।1601।।

माताजी के सकल शिष्य हैं, दर्शन-ज्ञान-चारित्र धनी।
स्वाध्यायरत-लेखक-वक्ता, विनयशील, अत्यंत गुणी।।
ब्रह्मचारिणी बहनें माँ की, रहतीं सदा साधनारत।
इन्दु-सारिका-स्वाति-बीना, आस्था-सब भव-भोग विरत।।1602।।

माताजी के शिष्य उपवन में, खिले हैं सुंदर सुमन अनेक।
अपने गुण सौरभ के द्वारा, प्राप्त प्रतिष्ठा है प्रत्येक।।
कौन, कहाँ पर, कितने, क्या हैं, इसका कोई हिसाब नहीं।
दीक्षित पंचाशत वर्षों की, इनकी कोई किताब नहीं।।1603।।

मुनि-आर्यिका, श्रावक-गृहिणी, माँ ने सबै पढ़ाया है।
श्रमण संघ को शिक्षा देने, का भी गौरव पाया है।।
पंचाशत वर्षों में बोलो, किनको क्या-क्या दान दिया।
कितनों को सन्मार्ग दिखाया, जीवन का निर्माण किया।।1604।।

अब तक बात हुई चेतन की, अब साहित्य पे आते हैं।
तीन शतक ग्रंथों की रचना, माता द्वारा पाते हैं।।
बीते दो हजार वर्षों में, माताजी पहली नारी।
जिनने ग्रंथ रचे महकायी, चतुरनुयोगरूप क्यारी।।1605।।

अपना घर तो सभी बनाते, नर तो क्या पशु-पक्षी भी।
लेकिन मंदिर, धर्म के आलय, मनुज बनाते कोई-कभी।।

पुण्यवान ही कर पाते हैं, ऐसे पर-उपकारी काम।
वे ना रहें, रहेगा उनका, ध्रुवतारा-सा उज्ज्वल नाम।।1606।।

एक ग्रंथ का लेखन करना, उनसे भी है उत्तम कार्य।
सबके बलबूते के बाहर, चाहे खर्चें राशि अपार।।
कोई नर यदि लेखन करता, जाते उसकी बलिहारी।
महाभाग्य हम कहेंगे उसको, अगर लिखे होकर नारी।।1607।।

एक ग्रंथ का लिखना ऐसा, जैसे इक मंदिर निर्माण।
उसमें राजित है जिनवाणी, यथा देह में राजित प्राण।।
मंदिर को तो मूर्ति चाहिए, वरना रहे अधूरा है।
लेकिन ग्रंथ सहित जिनवाणी, रहे स्वयं में पूरा है।।1608।।

मंदिर या कि धर्मशाला का, पुण्य कार्य करना निर्माण।
एक ग्रंथ लिखना उससे भी, उत्तम है कहते धीमान्।।
श्रीमाताजी ज्ञानमती ने, लिखे तीन सौ ग्रंथ महान।
कितना पुण्य कमाया होगा, कौन लगा सकता अनुमान।।1609।।

बीते दो हजार वर्षों में, हुई नहीं ऐसी नारी।
जिसने तीन शतक ग्रंथों की, रचना की हो मनहारी।।
पकड़ी नहीं सलाई कर में, नहीं सुई से काम लिया।
ऐसी कलम चलाई माँ ने, अब तक नहीं विराम लिया।।1610।।

स्वाध्याय को कहा परम तप, लेखन है उससे बढ़कर।
अशुभ कर्म का संवर होता, बंधे नष्ट होते झड़कर।।
माताजी ने लेखन करके, अंतःकरण पवित्र किया।
वही उतारा आचरण में, जीवन भी निष्कलुष किया।।1611।।

माताजी की रचनाएँ सब, लिखी गयी हैं स्वान्त सुखाय।
या फिर झलक रहा है उनसे, रची गयी हैं शिष्य हिताय।।
आत्महितं कर्तव्यं पहले, फिर करणीय जगत् कल्याण।।
माताजी प्रत्येक कार्य में, रखतीं मूलमंत्र का ध्यान।।1612।।

पाँच दशक दीक्षित जीवन में, लिखे तीन सौ ग्रंथ अमर।
हम उनका स्वाध्याय करें तो, कर न सकेंगे जीवन भर।।

हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत-कन्नड़, रचे सभी में ग्रंथ महान।
पढ़कर अचरज में पड़ जाते, अहंमन्य तजते विद्वान्।।1613।।

तीन शतक ग्रंथों की रचना, क्या कहलाती बंधु प्रवर।
दीक्षानंतर के वर्षों में, ये रचनाएँ लिखीं अमर।।
छोटी-मोटी नहीं समझना, अपने-आपमें ग्रंथ महान।
दाँतों तले दबाते अँगुली, लख-पढ़ बड़े-बड़े विद्वान्।।1614।।

प्रशंसनीय रचनायें वे ही, जो रखतीं उद्देश्य महान।
जिनके द्वारा भव्यजनों का, होता है आत्मिक कल्याण।।
परम पूज्य श्रीमाताजी का, ऐसा ही साहित्य अमर।
मोक्ष प्राप्ति की प्रशस्त प्रेरणा, मिलती रहती जीवनभर।।1615।।

आर्यिका रत्न, परम विदुषी माँ, किए सम्पादित ग्रंथ अनेक।
विपुल ज्ञान के दर्पण हैं वे, विस्मय होता उनको देख।।
निर्दोष और प्रामाणिक सब कुछ, कठिन साधना श्रम के फल।
उनके भीतर जिनवच गंगा, प्रवहमान रहती अविरल।।1616।।

मुनिधर्म की व्याख्या वाला, प्राचीन ग्रंथ श्रीमूलाचार।
संस्कृत से हिन्दी टीका कर, माँ ने किया महत् उपकार।।
जैनभारती-मुनि दिगम्बर-जम्बूद्वीप-जैन भूगोल।
माताजी की मौलिक कृतियाँ, जैन धर्म की निधि अनमोल।1617।।

जिससे तत्त्व बोध होता है, जिससे होता चित्तनिरोध।
जिससे होती शुद्ध आत्मा, जिससे प्रशमित होता क्रोध।।
जिससे नशते राग-द्वेष हैं, मन विरक्ति के आते भाव।
वही ज्ञान है जिसके द्वारा, होता है संसार अभाव।।1618।।

श्रीमाताजी इसी ज्ञान से, रचनाएँ करतीं निर्दोष।
उनके कण-कण भरा हुआ है, जैनधर्म-ज्ञान का कोष।।
श्रीमाताजी की रचनाएँ, भू पर हैं अनमोल रतन।
धारण करें हृदय हम अपने, स्वाध्याय का करें यतन।।1619।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती की, प्रतिभा विस्मयकारी है।
मौलिक लेखन-टीका-प्रवचन-ज्ञान साधना वाली है।।

साधारण जनता के साथ ही, विद्वानों को लाभ मिला।
आपश्री साहित्य सूर्य से, भव्य कमल वन सकल खिला।।1620।।

साहित्य सृजन उत्कृष्ट तपस्या, अनुष्ठान है परम पवित्र।
कार्य महत्तम विद्वत्ता का, कठिन साधना है सर्वत्र।।
लगातार जो श्रम करते हैं, प्रायः हो जाते बीमार।
रहा भुक्तभोगी कवि इसका, लीना चार बरस उपचार।।1621।।

श्रीमाताजी ज्ञानमती को, कईयक अवसर आये हैं।
जब श्रम आधिक्य के कारण, रोग शत्रु घिर आये हैं।।
काल-गाल से लौटीं माता, जिनभक्ती का रहा प्रभाव।
जिनवाणी-जिनदेव भक्ति से, पूरण होते सभी अभाव।।1622।।

अभीक्ष्ण ज्ञानयोगिनी माता, लेखन-चिंतन-मनन करें।
पल भर को विश्राम न लेतीं, और न समुचित शयन करें।
हो व्यवधान न अन्य किसी को, नहीं किसी को होवे भान।
उठ-उठ बैठें अंकित करने, लौट न पाये कोई मेहमान।।1623।।

विविध विधाएँ हैं साहित्यिक, शैली खण्ड-प्रबंध यथा।
गद्य-पद्य-नाटक-एकांकी, उपन्यास-समीक्षा-आत्मकथा।।
कथा-कहानी कुछ न छूटे, सबमें ग्रंथ लिखे मनहर।
सर्व प्रशंसित, उच्चस्तरी, मन आह्लादित हो पढ़कर।।1624।।

बहु आयामी प्रतिभा माँ की, विषयों पर अधिकार अमित।
दर्शन-धर्म-अध्यात्म-न्याय-सह, भू-ख-नीति-इतिहास-गणित।।
सब पर कलम चलाई माता, लाईं मोती गहरे डूब।
नीरस की भी सरस प्रस्तुति, पढ़ने में आती न ऊब।।1625।।

बहुमुखी प्रतिभा है माँ की, बात न पूरी कह पायें।
षट्खंडागम-अष्टसहस्री, नियम-समय पर टीकाएँ।।
कष्टसहस्री को माताजी, मिष्टसहस्र बनाया है।
कुंदकुंद प्राकृत अमृत को, हिन्दी करके पिलाया है।।1626।।

श्रीमाताजी की रचनाएँ, जिनवच संजीवन बूटी।
जिसने कंठ उतारी मन से, उसकी भव-संगति टूटी।।

जैसे माता निज बालक को, दुलरा दवा पिलाती हैं।
वैसे सरल-सरस भाषा में, माताजी समझाती हैं।।1627।।

माताजी की रचनाएँ हैं, सभी वर्ग को उपयोगी।
बाल-युवा-विद्वान्-अल्पमति, साध्वी-श्रावक-मुनियोगी।।
सार्वभौम-सब काल के लिए, सृजित किया माँ ने साहित्य।
मिथ्यातमस हटाने वाला, जैसे प्रकटा हो आदित्य।।1628।।

कोमल बुद्धि बालकों के हित, माता लिखा श्रेष्ठ साहित्य।
संस्कार की किरणें उनमें, फूट रहीं जैसे आदित्य।।
कौन-कौन गुण श्लाघनीय हैं, जिनसे बनता बाल चरित्र।
कौन जान सकता है जिसका, माँ समान हो हृदय पवित्र।।1629।।

यथा नाम तथा गुण माता, आप ज्ञान अनुपम भंडार।
उनमें हम पाते प्रत्यक्ष हैं, जिनवाणी माता साकार।।
यह कलिकाल रहा अति दुर्लभ, इसमें पाना सम्यग्ज्ञान।
प्राप्त किया माँ ज्ञानमती ने, दिया अन्य को भी वरदान।।1630।।

सबसे पहले लिखे पूज्यश्री, सहस अठोत्तर प्रभु के नाम।
शुभारम्भ जब इतना सुंदर, क्यों न सफल हों सारे काम।।
तब से माता ज्ञानमती की, चली लेखिनी तीव्र गति।
रुकी न अब तक यदपि आये, आयु-स्वास्थ्य व्यवधान अति।।1631।।

शास्त्रों में माँ जिनवाणी को, कामधेनु भी कहा गया।
चार स्तनों का रूपक भी, अनुयोगों को दिया गया।।
पूज्याश्री की चली लेखिनी, सबके ऊपर एक समान।
हो जाता विस्मय विमुग्ध है, पढ़ने वाला हर विद्वान्।।1632।।

प्रथमानुयोग पंचपंचाशत, ग्रंथों का मिलता उल्लेख।
रोम-रोम पुलकित हो जाता, सरल-सरस भाषा को देख।।
कठिन कथ्य को सरल बनाना, माताश्री उद्देश्य ललाम।
उपकृत पाठक श्रीचरणों में, करता बारम्बार प्रणाम।।1633।।

माताजी की मनहर शैली, उपन्यास का रूप लिए।
बालसुलभ रचनाओं द्वारा, बच्चों को साहित्य दिये।।

जैसे माँ का दूध सभी को, अति सुपाच्य हितकारी है।
वैसे यह साहित्य आपश्री, सबको मंगलकारी है।।1634।।

तीर्थंकर चौबीस-स्मृतियाँ, क्षेत्र अयोध्या-बाहुबली।
भरत का भारत-सती अंजना, पढ़के खिलती हृदय कली।।
आटे का मुर्गा-भक्ति-प्रतिज्ञा, रोहिणी नाटक-बालविकास।
जीवनदान-संस्कार-आर्यिका, शांतिनिधि-रचनाएँ खास।।1635।।

आज व्यस्तता का युग आया, रहता सबको समय अभाव।
सभी चाहते अल्पकाल में, पा जायें पौराणिक भाव।।
इसीलिए श्रीमाताजी ने, गागर में सागर समा दिया।
चरित यशोधर का छोटा, आटे का मुर्गा बना दिया।।1636।।

आया युग कॉमिक्स आज है, कथा-कहानी चित्र सहित।
यह विचार कर माताजी ने, सृजा साहित्य बालकों हित।।
भरत-बाहुबली चरित आपने, चित्रकथा का रूप दिया।
माताजी ने समय देखकर, तथा सृजन साहित्य किया।।1637।।

चरणानुयोग का विषय कठिन है, माताजी ने किया सरल।
टीका-मौलिक-अनुवादन कर, विंशति ग्रंथ रचे अविरल।।
चिंतामणि सिद्धांत समन्वित, षट्खंडागम-गोम्मटसार।
भावत्रिभंगी-त्रिलोकभास्कर, आदि लिखे आगम अनुसार।।1638।।

चरणानुयोग आचारशास्त्र के, श्रुत-अष्टादश ग्रंथ लिखे।
एक विषय पर, एक व्यक्ति के, इतने नहिं अन्यत्र दिखे।।
मुनि-आर्यिका-श्रावक चर्या, उत्तम कृतियाँ लिखीं अनेक।
टीका-मौलिक-अनुवादन से, पाठ्य-सुपाच्य हुईं प्रत्येक।।1639।।

मुनिधर्म की व्याख्या वाला, प्राचीन ग्रंथ श्री मूलाचार।
संस्कृत से हिन्दी टीका कर, माता किया महत् उपकार।।
सहस्रनाम-कल्याणकल्पतरु-शिक्षण पद्धति मनहारी।
सामायिक-दशधर्म-आर्यिका, मुनि दिगम्बर उपकारी।।1640।।

सिद्धचक्र मंडलविधान का, पहले होता आयोजन।
अन्य नहीं कोई विधान का, रहा समाज में था प्रचलन।।

माताजी ने अति उपयोगी, लिखे सरस ब्यालीस विधान।
दिया जैन संस्कृति को माँ ने, अभूतपूर्व अक्षय अवदान।।1641।।

रही भक्ति में शक्ति अपरिमित, अल्पज्ञानियों की है प्राण।
उसके द्वारा वे चढ़ जाते, मोक्षमहल तक के सोपान।।
भक्ति मार्ग को माताजी ने, जीवन्त बनाया रच साहित्य।
चमक रहीं साहित्यगगन में, माँ कृतियाँ जैसे आदित्य।।1642।।

इन्द्रध्वज-कल्पद्रुम-शांति, सर्वतोभद्र-त्रैलोक्य विधान।
जम्बूद्वीप-नंदीश्वर-चौंसठ-श्रुतस्कंध-ऋषि-पंचकल्याण।।
लोकप्रिय पूजाएँ लिखकर, भक्तों का उपकार किया।
नवदेवताओं की पूजन, माँ उत्तम उपहार दिया।।1643।।

रत्न चवालिस माताजी ने, द्रव्यानुयोग के ग्रंथ रचे।
जैनभारती-अष्टसहस्री, कातंत्र रूपमाला विरचे।।
नियम-समय-न्याय-ज्ञानामृत, आलाप पद्धति-इष्टोपदेश।
सब अनुयोगी संग्रहीत हैं, आपश्री अमृत उपदेश।।1644।।

लेखक जैन गगन में अब तक, कोई नहीं नक्षत्र दिखे।
जिनने साध्वी या महिला ने, जैनधर्म पर ग्रंथ लिखे।।
माताश्री पहली महिला हैं, किया जिन्होंने उद्घाटन।
उनके पावन श्रीचरणों में, सम्यक् बारम्बार नमन।।1645।।

सम्यक् बोध करातीं सबको, माताजी की रचनाएँ।
यावच्चंद्र दिवाकर निश्चित, कीर्ति कौमुदी फैलाएँ।।
दो-क-चार पीढ़ियों भर ही, नाम बढ़ाती हैं संतान।
लेकिन नाम अमर कर देता, रचा गया साहित्य महान्।।1646।।

माताजी जो भी लिखती हैं, लिखती हैं उद्धरण के सह।
उनके कथन पूर्ण प्रामाणिक, कोई कुछ न सकता कह।।
प्रबल धारणाशक्ति आपश्री, ग्रंथ-पृष्ठ-पंक्ति तक याद।
अतः ग्रंथ-पृष्ठ अवलोकन, होता नहीं समय बर्बाद।।1647।।

विषय से हटकर यदि माताजी, रखतीं कोइ स्वतंत्र विचार।
तो वे पृथक्रूप से उनको, पाद टिप्पणी रखें उतार।।

आचार्यों के मूलकथन को, वे रखतीं अक्षुण्ण बना।
नहीं किसी पर थोपा चाहें, पूज्यश्री विचार अपना।।1648।।

सैद्धान्तिक ग्रंथों की माता, करतीं स्वयं प्रूफ की शुद्धि
ताकि शेष नहीं रह पाये, किसी ग्रंथ में लेश अशुद्धि।।
उच्चकोटि सुंदर रचना में, यदि अशुद्धि कुछ रहती है।
तो मिश्री में कंकड़ जैसी, विज्ञों को बहुत खटकती है।।1649।।

ज्ञानप्रभाकर हैं माताजी, जिह्वा करे शारदा वास।
विनयशीलता-निरभिमानता, यह तो है सौवर्ण्य सुवास।।
समाधान पाते जिज्ञासू, वात्सल्यरूप आशिष उपहार।
माताजी ने किया जगत् का, लेखन कर शत-शत उपकार।।1650।।

हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत-कन्नड़, मराठी पर अधिकार समान।
सबमें हैं सुंदर रचनाएँ, नहिं प्रत्यक्ष को कोई प्रमाण।।
छंद शास्त्र वैदुष्य अपरिमित, किए सैकड़ों छंद प्रयुक्त।
कौन-कहाँ पर है उपयोगी, रस-अनुभूति-भाव से युक्त।।1651।।

माता कण्ठेवास सरस्वती, भाषा पर अनुपम अधिकार।
लिखने का अवसर आने पर, सब साधन रहते तैयार।।
गाथा-श्लोक-उद्धरण आदि, शब्द व्यंजना को तत्पर।
करनी पड़ती नहीं प्रतीक्षा, भाव प्रकट होते सत्वर।।1652।।

माताजी के मनमंदिर में, भाव-देवता आते ज्यों।
भाषा, शब्द प्रसूनों द्वारा, उनका स्वागत करती त्यों।।
दस-गुण-शक्ति समन्वित भाषा, करे भाव का उद्घाटन।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती का, शतशः श्लाघनीय लेखन।।1653।।

साहित्य क्षेत्र में माताजी का, है अनन्य-अनुपम अवदान।
चारों अनुयोगों की शिक्षा, सबको देता सम्यग्ज्ञान।।
माताजी की कलम सन्तुलित, पक्षपात से रहित सुदृष्टि।
अनेकांतवाद से मंडित, आपश्री साहित्यिक सृष्टि।।1654।।

माताजी की कीर्ति कौमुदी, सात समुन्दर पार गई।
करें प्रशंसा रचनाओं की, पाश्चात्य विद्वान् कई।।

परम पूज्य श्रीमाताजी का, व्यक्तित्व महाविस्मयकारी।
कीर्तिमान किए स्थापित, विविध क्षेत्र अचरजकारी।।1655।।

नगर-गाँव औ डगर-डगर में, जैनधर्म का ज्ञान दिया।
जलविहार-रथयात्रायों से, अलख जगा, प्रचार किया।।
अनेक विधानों की रचनाकर, पूजाओं का कर निर्माण।
जो उपकार किया भक्तों का, कर सकता है कौन बखान।।1656।।

भारत के कोने-कोने में, माताजी ने किया विहार।
दिया जगत् को आपश्री ने, व्यसनमुक्ति जीवन उपहार।।
उनका सन्निधान पाने को, लालायित है देश सकल।
उनके मंगल शुभाशीष से, हो जाते सब काम सफल।।1657।।

माताजी ऐतिहासिक नारी, पुरुष से बढ़कर कार्य किए।
सच तो यह है माताजी ने, तीर्थों को नव प्राण दिए।।
जो दीपक बुझने वाले थे, उनको देकर के स्नेह।
अमर बनाया सोने जैसी, लगी चमकने उनकी देह।।1658।।

चमत्कार को नमस्कार है, रहा जगत् का यही चलन।
इसीलिए अतिशय क्षेत्रों का, होता रहा है उद्धारण।।
तीर्थंकर कल्याण भूमियाँ, सदा उपेक्षा रहीं शिकार।
जीर्ण-शीर्ण हो गईं बिचारीं, सहते-सहते यह व्यवहार।।1659।।

सुविधाहीन दशा के कारण, यात्री ठहरें नहीं वहाँ।
बिन यात्री आमद न होती, बिन आमद उत्थान कहाँ।।
माताजी का शत-शत वंदन, उन्हें उठाया, ध्यान दिया।
जीर्णोद्धार प्रेरणा देकर, उनको जीवनदान दिया।।1660।।

माताजी की प्राप्त प्रेरणा, हस्तिनागपुर स्वर्ग हुआ।
शाश्वत क्षेत्र अयोध्या जी का, अद्भुत कायाकल्प हुआ।।
कुण्डलपुर-प्रयाग-बनारस, क्षेत्र गुणावा-राजगृही।
जीर्णोद्धारित हुए प्रकाशित, सुंदर हो गईं पूज्यमही।।1661।।

महाराष्ट्र में मांगीतुंगी, दक्षिण का सम्मेदशिखर।
माताजी के शुभाशीष से, उसकी शोभा रही निखर।।

उस पर ऋषभदेव की प्रतिमा, शत-अठ फुट उत्तुंग खड़ी।
अखिल विश्व की प्रतिमाओं में, होगी ऊँची और बड़ी।।1662।।

बाहुबली भगवान की प्रतिमा, चामुण्डराय ने बनवाई।
उनकी अनुपम कीर्ति कौमुदी, अखिल विश्व में है छाई।।
सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी पर, यह प्रतिमा बन जायेगी।
माताजी की धर्म पताका, भी उन संग लहरायेगी।।1663।।

जैसे उडुगन बीच चंद्रमा, अतिशय शोभा पाता है।
वैसे क्षेत्रों में कुण्डलपुर, कुण्डल-सा मन भाता है।।
लख वीरानी रुकें न यात्री, मात्र दर्शनों से था काम।
आज वहाँ सौन्दर्य बरसता, लगता है अतिशय अभिराम।।1664।।

किष्किन्धापुर या काकंदी, उत्तरभारत क्षेत्र महान्।
हुए यहाँ पर पुष्पदंत जिन, गर्भ-जन्म-तप त्रय कल्याण।।
मात्र भग्न अवशेष वहाँ हैं, सबको काल ने खाया है।
क्षेत्र पुनर्स्थापित करना, माँ ने लक्ष्य बनाया है।।1665।।

माताजी कुछ काम न करतीं, वे साध्वी हैं नारी हैं।
मात्र प्रेरणा देतीं माता, हम उनके आभारी हैं।।
पर बिन संतों प्राप्त प्रेरणा, कार्य न करते श्रावकगण।
दान और पूजा द्वारा ही, होते उनके पाप क्षरण।।1666।।

ज्ञानगुणालंकृत माताजी, शिक्षा-शिक्षण करतीं प्रेम।
क्योंकि बिना ज्ञानगुण जग में, पाया नहीं किसी ने क्षेम।।
त्रिलोक शोध संस्थान के द्वारा, हुआ मुद्रित साहित्य अमर।
तथा अनेक हुए आयोजित, लघु-वृहत् सेमिनारशिविर।।1667।।

जैनधर्म के आदि प्रवर्तक, रहे आदिनाथ भगवान।
लेकिन भ्रमवश अज्ञानीजन, महावीर का लेते नाम।।
माताजी ने कुलपतियों का, सम्मेलन आहूत किया।
पाठ्य-पुस्तकों भूल सुधारी, माता अद्भुत कार्य किया।।1668।।

भक्ति मुक्ति का अनुपम साधन, मातृ विपुल साहित्य रचा
पूजा-विधान-स्तोत्र-विनतियाँ, उत्तम से उत्तम विरचा।।

छंदबद्ध रचनाएँ माँ की, पा जाती हैं जब संगीत।
झूम-झूम कर गाते हैं सब, लाख-लाख जनता के बीच।।1669।।

करणानुयोग ग्रंथों में वर्णित, रचना जम्बूद्वीप महान्।
दी उतार माता ने भू-पर, कर गजपुर अनुकृति निर्माण।।
ज्ञान ज्योतिरथ हुआ प्रवर्तित, इसका देने सबको ज्ञान।
इंदिरागाँधी कृत उद्घाटन, रहा धर्म अतिशय अवदान।।1670।।

नारी होकर नर से गुरुतर, कर दिखलाये काम बड़े।
जिनकी यशगाथा को सुनकर, हो जाते हैं कान खड़े।।
जिनकी देख मेरु-सी निर्मिति, सबके उठ जाते हैं माथ।
उन आर्यिका ज्ञानमती को, वंदन करूँ जोड़द्वय हाथ।।1671।।

माताजी की रचनाओं में, भाव-कला दोनों का योग।
भावप्राण हैं, कला देह है, दोनों का स्वर्णिम संयोग।।
भाव प्रमुख हैं, इसीलिए माँ, रखतीं सदा भाव का ध्यान।
भाव भासना बिना न होता, वस्तु-कथ्य का सच्चा ज्ञान।।1672।।

माँ कृतियों में भाव झलकते, जैसे दर्पण में प्रतिबिम्ब।
स्वच्छ-यथावत् भावभासना, पढ़ते हो जाती अविलम्ब।।
रसानुभूति यदि नहीं हुई तो, हो जाता श्रम व्यर्थ सकल।
अतः ध्यान रखतीं माताजी, सम्प्रेषण होवे अविकल।।1673।।

परम पूज्य श्री माताजी को, रस-गुण-रीति अपरिमित ज्ञान।
रचे गये अतिशयी प्रभावक, विनती-पूजा-स्तोत्र-विधान।।
कथा-कहानी-प्रहसन-नाटक, उपन्यास-सिद्धांत-पुराण।
माताजी की जीवित कृतियाँ, उनमें निहित भाव के प्राण।1674।।

माताजी की रचनाओं का, कलापक्ष भी उज्ज्वल है।
भाषा-छंद-अलंकारों का, हर प्रयोग अति सुंदर है।।
भाषा सरल प्रवाहमयी है, जैसे गंगा की कल-कल।
भाव प्रकट करने में सक्षम, परिमार्जित, निर्दोष विमल।।1675।।

हिन्दी-संस्कृत-प्राकृत-कन्नड़, सब पर माता का अधिकार।
शब्दकोष श्रीमाताजी का, रखता सागर-सा विस्तार।।

परम पूज्य श्रीमाताजी जब, करें सरस्वती का अर्चन।
स्वतः सद्य एकत्रित होते, मनस्थाल में शब्द-सुमन।।1676।।

शब्दरत्न को भाव मुद्रिका, जड़तीं माता सोच-विचार।
कौन शब्द उपयुक्त कहाँ है, करता अधिक भाव उजियार।।
सुगठित वाक्य, मनोहर भाषा, शब्द चयन सुंदर अनुकूल।
लगते वंशीवादन करते, यथा कृष्ण युमना के कूल।।1677।।

परम पूज्य श्रीमाताजी को, छन्द शास्त्र का पूरा ज्ञान।
भावानुकूल प्रयुक्त हुए हैं, स्तुति-पूजा-स्तोत्र-विधान।।
गीत अगर संगीत पकड़ ले, शोभा बढ़ती सहस गुनी।
भाव विशुद्धि भी बढ़ जाती है, कर्म निर्जरा सहस गुनी।।1678।।

शोभा काव्य बढ़ाने वाले, अलंकार भी हुए प्रयुक्त।
भाव व्यंजना करने वाले, यथायोग्य अतिशय उपयुक्त।।
केवल बाह्य प्रदर्शन करना, नहिं उनका उद्देश्य रहा।
किन्तु भावना को बल देना, केवल उनका लक्ष्य कहा।।1678।।

माताजी के कृतकार्यों का, कहाँ तक कोई करे बखान।
कहा गया जो स्वप्नमात्र है, यथा सिन्धु का बिन्दु समान।।
जो जन चाहें सचमुच लखना, करें वंदना पूज्य स्थान।
पुण्यार्जन-सह देख सकेंगे, माताजी के कार्य महान्।।1680।।

जितने कार्य किये माताजी, धर्म-समाज-साहित्यिक क्षेत्र।
रह जाते हैं देख अलौकिक, विस्मय से विस्फारित नेत्र।।
साहित्यिक कृतियों के बारे, नहीं पालना कोई भरम।
केवल स्वाध्याय करने में, लग जायेंगे कई जनम।।1681।।

परम पूज्य श्रीमाताजी के, हम पर हैं अनंत उपकार।
उनका वर्णन रहा असंभव, कैसे करें प्रकट आभार।।
पृथ्वी का यदि कागद कर लें, सकल समन्दर करें मसी।
सब वनराजी करें लेखिनी, नहिं जा सकती कथा लिखी।।1682।।

माताजी की प्रकृति महत्तम, जिसे लगाती पारस कर।
सर्वरूप करती हैं पूरा, स्थायी, अतिशय सुंदर।।

हस्तिनागपुर जम्बूद्वीप-सह, श्री कुण्डलपुर शोभाधाम।
काकंदी-प्रयाग-बनारस, अहि-अयोध्या हुए ललाम।।1683।।

क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी, ब्रह्मचारी जी रवीन्द्र कुमार।
सुंदर जोड़ी मन को भाती, लगते राम-लखन मनहार।।
माताजी के शिष्य बहुत हैं, लेकिन इनकी बात है अन्य।
नहीं देखने में आती है, ऐसी गुरु की भक्ति अनन्य।।1684।।

एक व्यक्ति व्यक्तित्व बहुत से, सभी पूर्ण आभालंकार।
बालयोगिनी शिखर विराजित, चतुरनुयोग ज्ञान भंडार।।
तीन शतक ग्रंथों की लेखक, उत्तम वक्ता, प्रवचनकार।
नूतन तीर्थ बनाए माँ ने, किए पुरातन जीर्णोद्धार।।1685।।

जल को जीवन कहा गया है, प्रगति रही जीवन पहचान।
साधक कभी न रुकते पथ में, करते प्रगति रहें गतिमान।।
वैसे माता ज्ञानमती भी, बढ़ें साधना ज्यों आदित्य।
स्वर्ण लेखिनी चलती रहती, होता प्रकट अमर साहित्य।।1686।।

द्वीप-समुद्र असंख्य परस्पर, मध्यलोक में वलयाकार।
उनमें जम्बूद्वीप प्रथम है, स्वयंभूरमण अंत विस्तार।।
प्रारंभिक तेरहद्वीपों का, ध्यान में आया दिव्य प्रकाश।
उसे उतारा हस्तिनागपुर, तेरहद्वीप जिनालय खास।।1687।।

मेरी अभिलाषा

समाहित विषयवस्तु

1. **पूज्य माताजी यशः काय से सदा अजर-अमर रहेंगी।**
2. **जब तक सूरज-चाँद, धरा-आकाश, नदियाँ-पहाड़ हैं, तब तक माताजी जीवित रहकर हम सबका उपकार करती रहें।**
3. **पूज्य माताजी स्त्रीलिंग छेद कर, मुनिव्रत धारण कर, केवलज्ञान प्राप्त कर निर्वाण प्राप्त करें-यही अभिलाषा है।**
4. **लेकिन जब तक माताजी ने निर्वाण नहीं पाया, तब तक उनके चरणों का साथ, उनका गुरुरूप में सान्निध्य हमें प्राप्त होता रहे।**
5. **माताजी सदा जयवंत रहें।**

काव्य पद

तन औदारिक, पुद्गल रचना, इसका होता सतत मरण।
लेकिन तन साहित्य अमर है, इसका होता नहीं क्षरण।।
है उत्कृष्ट साहित्य आपश्री, कालजयी हितकारी है।
सार्वभौम-सर्वत्र समादृत-सर्वकाल उपकारी है।।1688।।

जरा-मरण आता भौतिक तन, तन साहित्यिक अजर-अमर।
भौतिकतन तो जल बुदबुद है, यशःकाय है अविनश्वर।।
वरिष्ठतमा हैं साध्वी माता, बालयोगिनी बीस शती।
यशःकाय से अजर-अमर हैं, श्रीमाताजी ज्ञानमती।।1689।।

जब तक भूतल पर शोभित गिरि, सरिताएँ हैं प्रवहमान।
जब तक सूरज-चाँद सितारे, नील गगन में ज्योतिर्मान।।
जब तक हैं जिनवर-जिनवाणी, मंगल-उत्तम-शरणाचार।
तब तक माता ज्ञानमती जी, करती रहें स्व-पर कल्याण।।1690।।

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती जी, बनें स्वर्ग की अधिकारी।
पुरुषदेह पा मुनिव्रत धारें, हों द्वादश तप आचारी।।

श्रेणी मांड़ै, घात घातिया, पावें अक्षय केवलज्ञान।
भव्यजीव उपदेशन करके, अंतिम पद पावें निर्वाण।।1691।।

लेकिन तब तक माताजी के, श्रीचरणों का साथ रहे।
मेरे शिर पर आपश्री के, शुभाशीष का हाथ रहे।।
जनम-जनम हों गुरू आप ही, मैं भी शिष्य का पदपाऊँ।
चंदन-मोती-रवि संग बैठूँ, माताजी के गुण गाऊँ।।1692।।

व्रत और तप सर्वथा कार्यकारी ही हैं

सग्गं तवेण सव्वो वि पावए तह वि झाणजोएण।
जो पावइ सो पावइ परलोए सासयं सोक्खं।।
अइसोहणजोएणं सुद्धं हेमं हवेइ जह तह य।
कालाईलद्धीए अप्पा परमप्पओ हवदि।
वरवयतवेहिं सग्गो मा दुक्खं होउ निरइ इयरेहिं।
छायातवट्ठियाणं पडिवालंताण गुरु भेयं।।

तप से स्वर्ग सभी प्राप्त करते हैं, पर जो ध्यान से स्वर्ग प्राप्त करता है उसका स्वर्ग प्राप्त करना कहलाता है, ऐसा जीव परभव शाश्वत – मोक्ष सुख को प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार अत्यन्त शुभ सामग्री से – शोधन सामग्री से अथवा सुहागा से सुवर्ण शुद्ध हो जाता है उसी प्रकार काल आदि लब्धियों से आत्मा परमात्मा हो जाता है। व्रत और तप के द्वारा स्वर्ग का प्राप्त होना अच्छा है किन्तु अव्रत और अतप के द्वारा नरक के दुःख प्राप्त होना अच्छा नहीं है क्योंकि छाया और घाम में बैठ कर इष्ट स्थान की प्रतीक्षा करने वालों में बहुत ही अंतर है।

–आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव-मोक्षपाहुड़

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-देखो तेरहद्वीप के अंदर.....

हीरक जन्मजयंती आई, ज्ञानमती माताजी की-2।

ज्ञान की मूरत ज्ञान की सूरत, ज्ञान की गंगा हैं माता-2।
ज्ञानदीप से करें आरती, ज्ञानमती माताजी की।।1।।

जिनवर कन्या गणिनी माता, जग की पूज्य धरोहर हैं।
अष्टद्रव्य से करें अर्चना, ज्ञानमती माताजी की।।2।।

मूलाचार व नियमसार अरु समयसार इनमें दिखता।
इसीलिए हम करें वंदना, ज्ञानमती माताजी की।।3।।

कुंदकुंद अकलंक देव अरु, वीरसेन सूरी जैसी।
साहित्यिक कृतियाँ मिलती हैं, ज्ञानमती माताजी की।।4।।

हीरे सी प्रतिभा है मुख पर, स्वर्णिम छवि है आत्मा की।
जन्मतिथी है शरदपूर्णिमा, ज्ञानमती माताजी की।।5।।

हम को तेरा हीरे सम व्यक्तित्व सुहाना लगता है।
करे ''चंदनामती'' वंदना, ज्ञानमती माताजी की।।6।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-ऐ मालिक तेरे वंदे हम.....

शरदपूनों का ये चांद है गणिनी श्री ज्ञानमति मात है।
इनकी पूजा करें, इनकी भक्ति करें,
दिखती ये ब्राह्मी सी मात हैं।।शरद पूनो...।।टेक.।।
ज्ञान अमृत से ये तृप्त हैं।
हम तो जग में ही संतप्त हैं।।
इनको वंदन करें, ज्ञान के कण लहें,
देंगी श्रुतज्ञान की बात हैं।।शरद पूनो.....
दो सौ ग्रन्थों की रचना किया।
जम्बूद्वीप भी बनवा दिया।।
ज्ञान ज्योती जली, देश भर में चली,
प्रेरणास्रोत ये ख्यात हैं।।शरद पूनो.....
बालसतियों की बगिया खिली।
ज्ञानमति मात पहली मिलीं।।
इनसे शिक्षा लहें, ''चन्दनामति'' कहे,
ज्ञान की ये सदा बात हैं।।शरद पूनो.....

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –मनिहारों का रूप.....

शारद माता का रूप दिखाया,
ज्ञान का तूने अलख जगाया।।टेक.।।
दीक्षा लेती न थीं क्वांरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदी में तुमने प्रथम पद लिया।
ज्ञानमति नाम तब तूने पाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद....।।1।।
कोई साहित्य रचना न की साध्वी ने,
सैकड़ों ग्रंथ अब रच दिए मात ने।
कुन्दकुन्द का पथ दरशाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.....।।2।।
जैन भूगोल रचना नहीं थी कहीं,
मात्र प्राचीन ग्रंथों में वह थी कही।
जम्बूद्वीप का रूपक दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.....।।3।।
जिनवरों की जनमभूमि विकसित न थीं,
प्रेरणा उनके उद्धार की माँ ने दी।
ऋषभ-महावीर नाम गुंजाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.....।।4।।
जैन संस्कृति की तू इक धरोहर है मां,
युग युगों तक जिए तू कहे ''चन्दना''।
धरती चाहे सदा तेरी छाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।। शारद.....।।5।।